

Webb, J. T.

Contributors

Webb, J. T.

Publication/Creation

1827

Persistent URL

<https://wellcomecollection.org/works/aujpbetg>

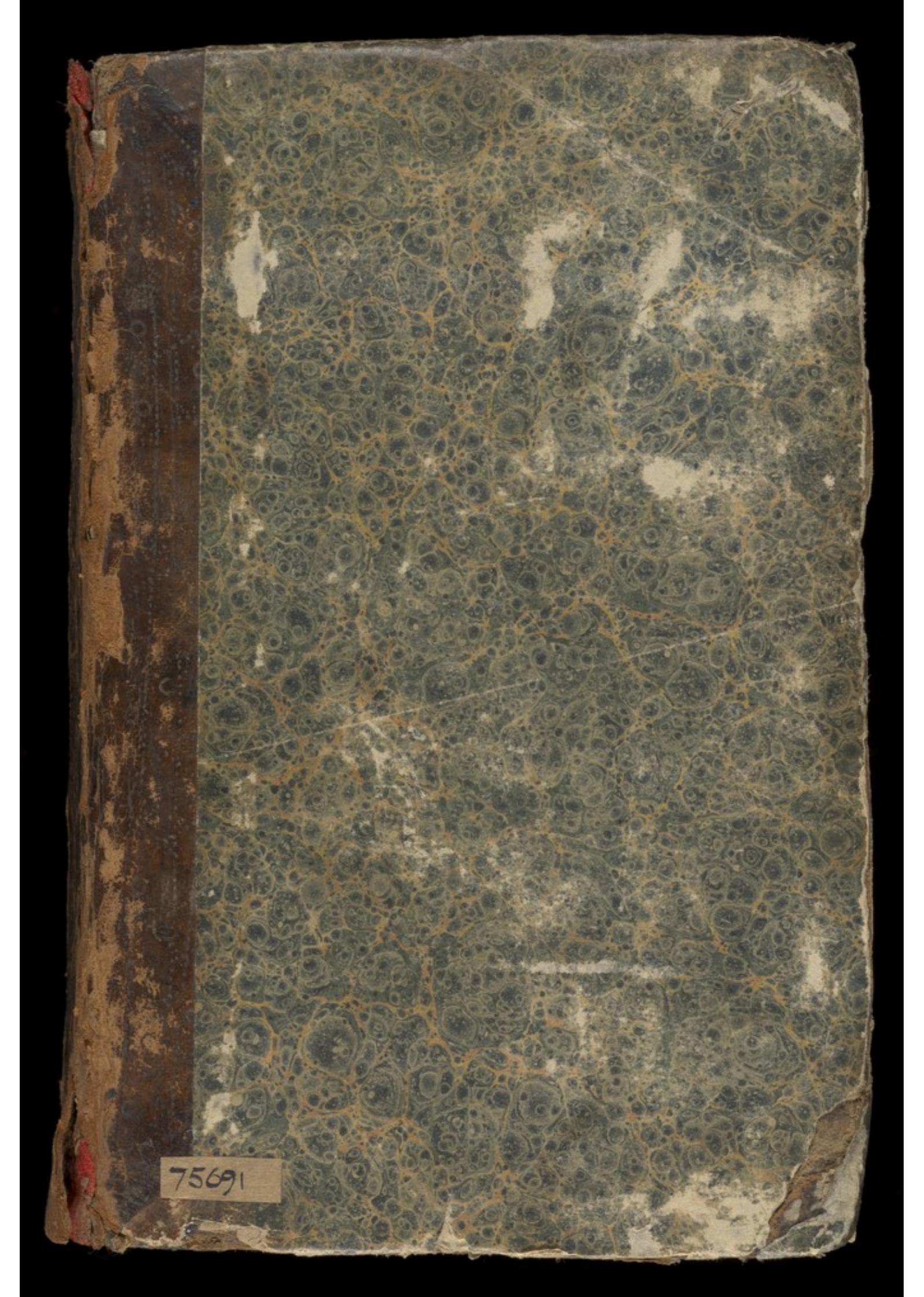
License and attribution

This work has been identified as being free of known restrictions under copyright law, including all related and neighbouring rights and is being made available under the Creative Commons, Public Domain Mark.

You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, without asking permission.



Wellcome Collection
183 Euston Road
London NW1 2BE UK
T +44 (0)20 7611 8722
E library@wellcomecollection.org
<https://wellcomecollection.org>



75691

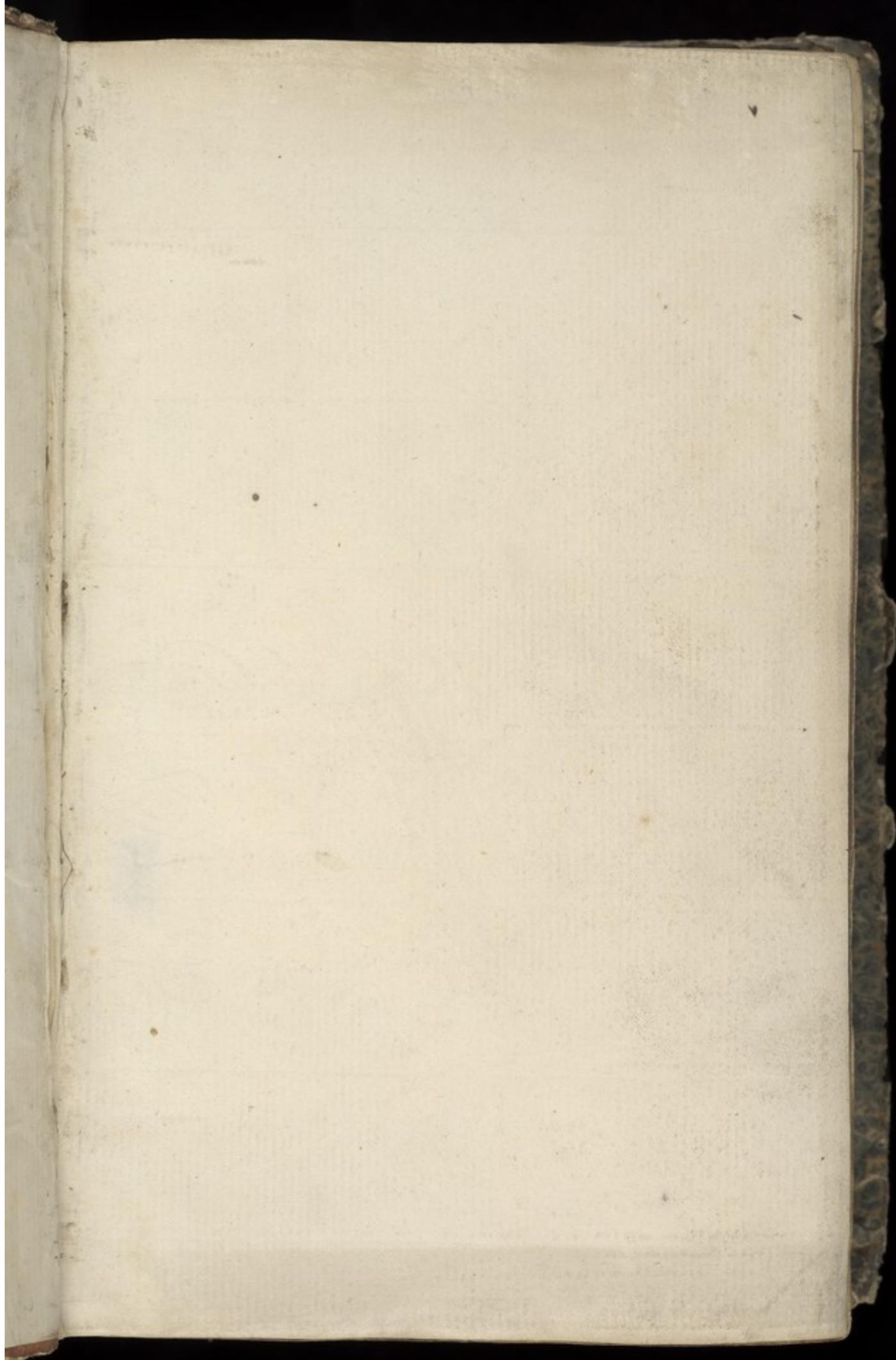
The Library of the
Wellcome Institute for
the History of Medicine

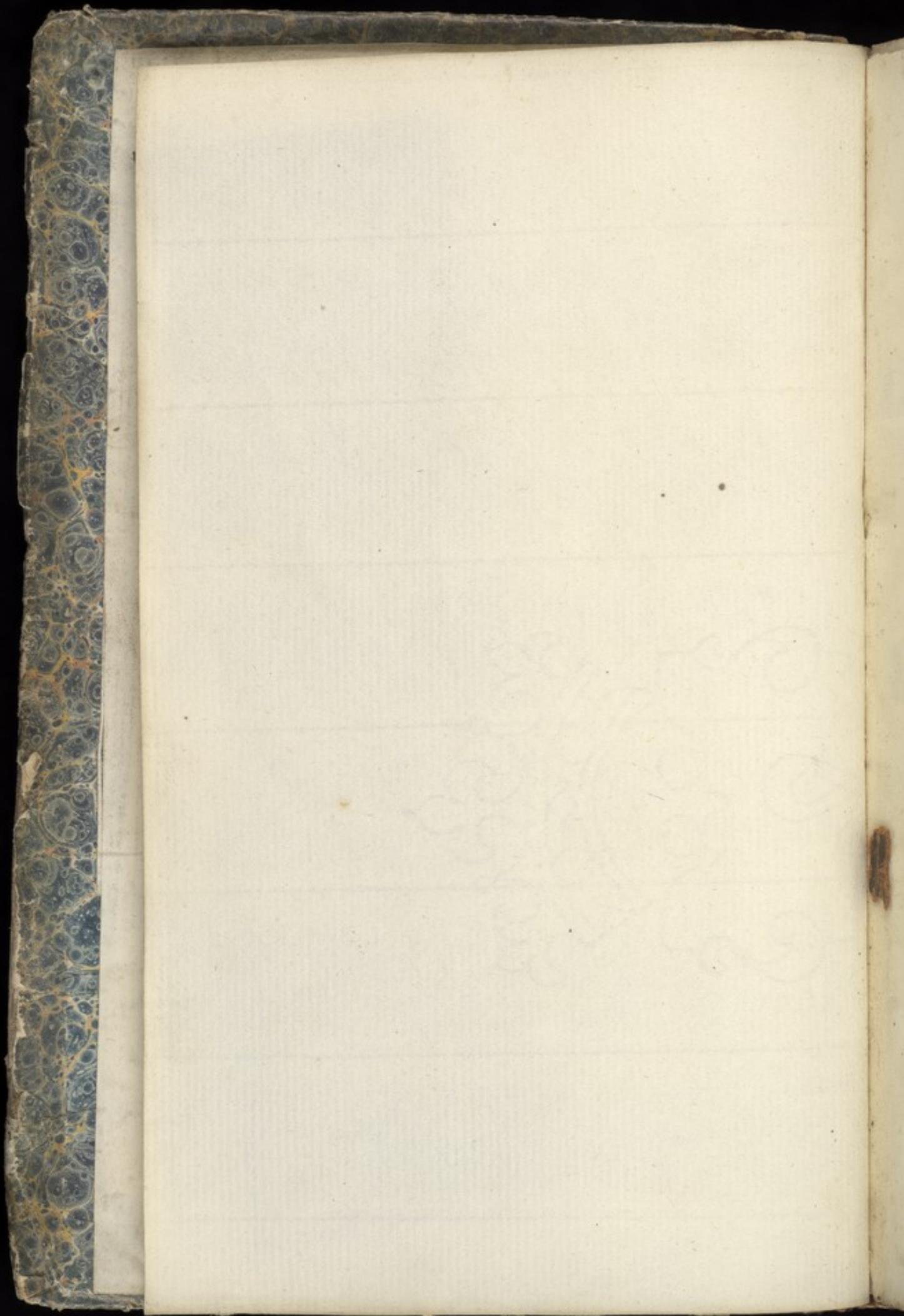
MS 4981

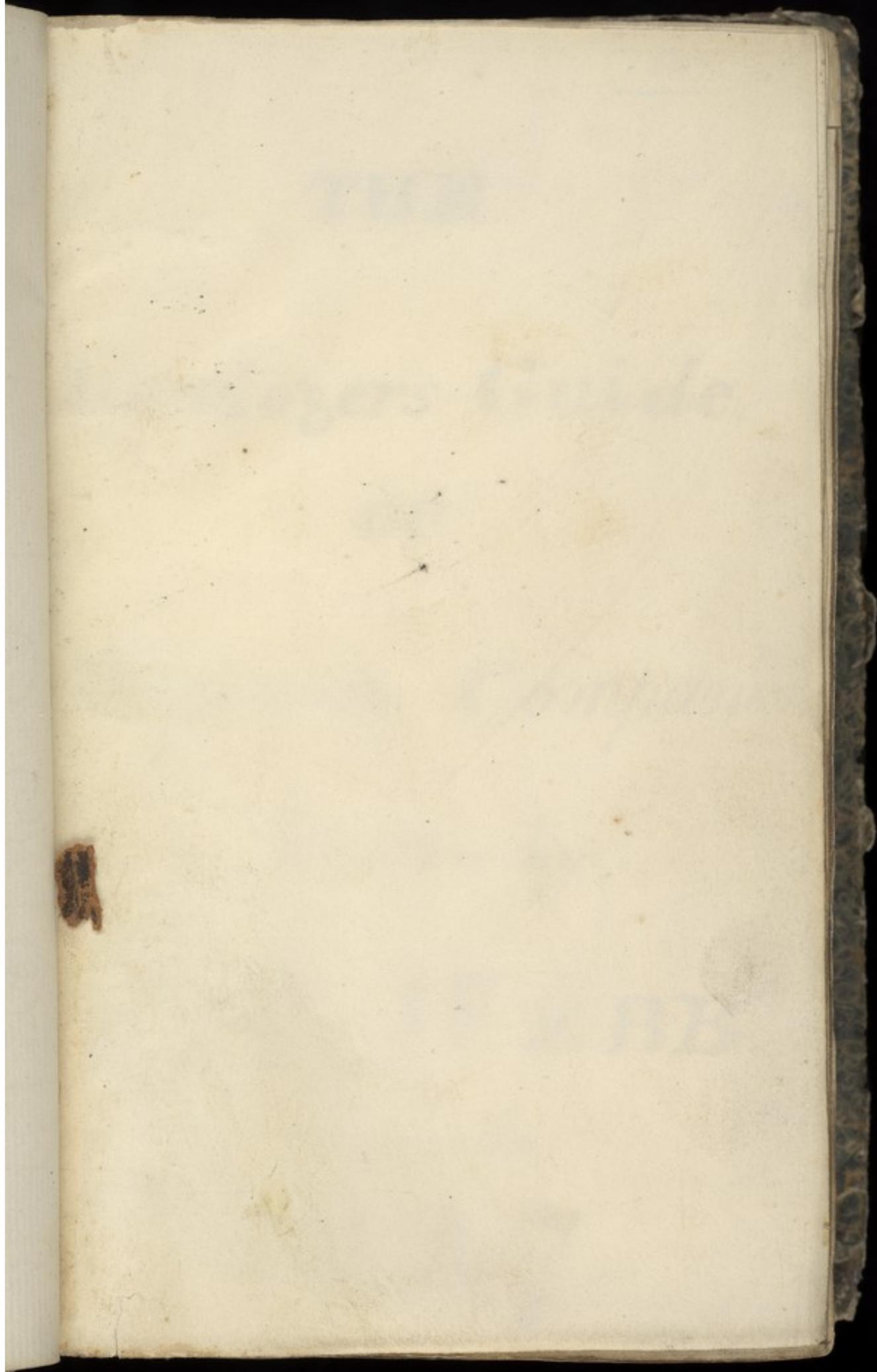
Accession Number

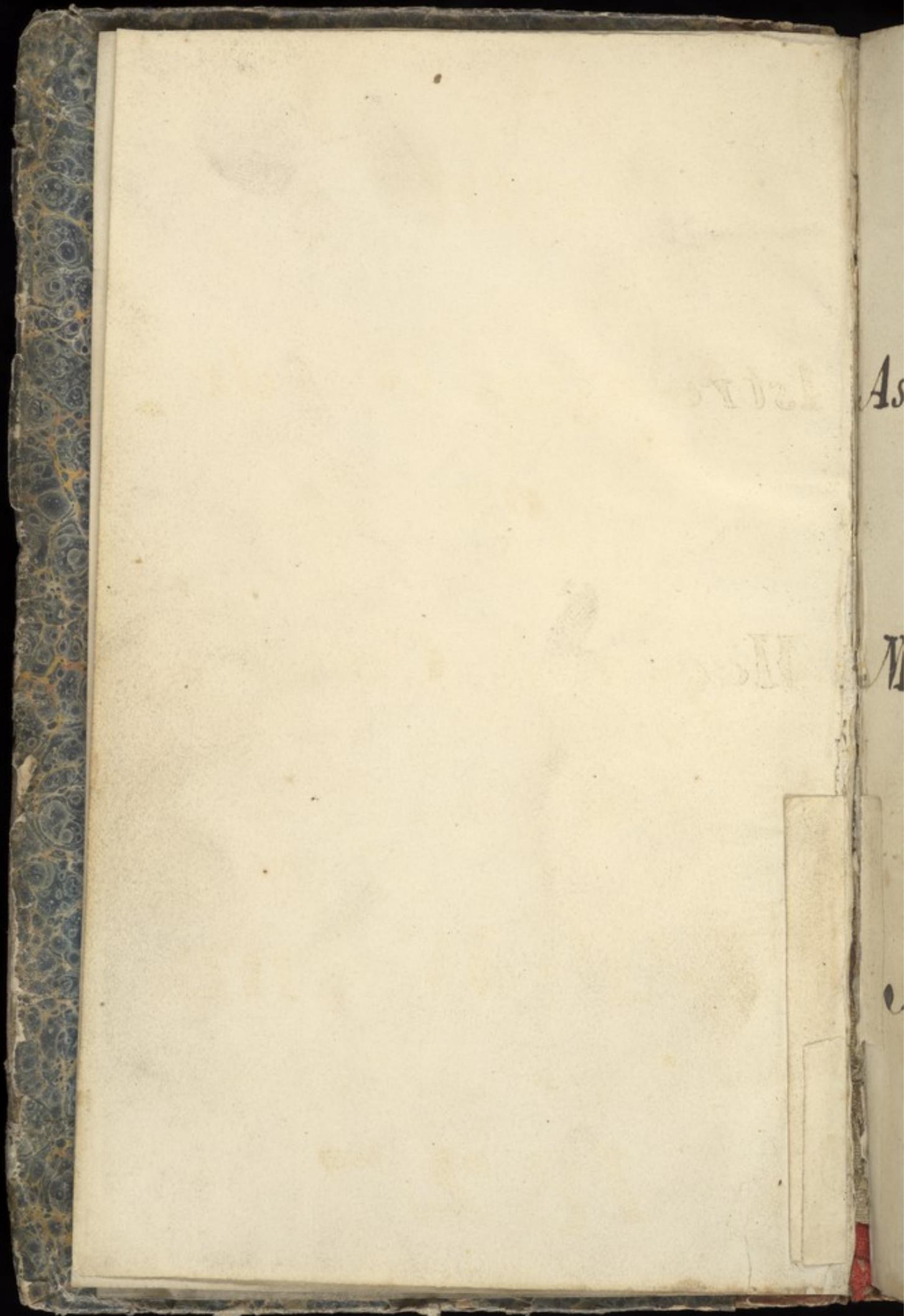
75691

Press Mark









75691

THE

Astrologers Guide

OR

Magicians Companion

Written by

J. T. WEBB.

September

1827

THE

Astronomers Guide

OR

Medicines Comparison

Written by

J. T. WEBB

1827

Faint handwritten text at the top of the page, possibly a title or header.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 10.

Faint handwritten text, possibly a name or identifier, including the number 11.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 13.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 14.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 15.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 16.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 17.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 18.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 19.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 20.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 21.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 22.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 23.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 24.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 25.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 26.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 27.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 28.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 29.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 30.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 31.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 32.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 33.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 34.

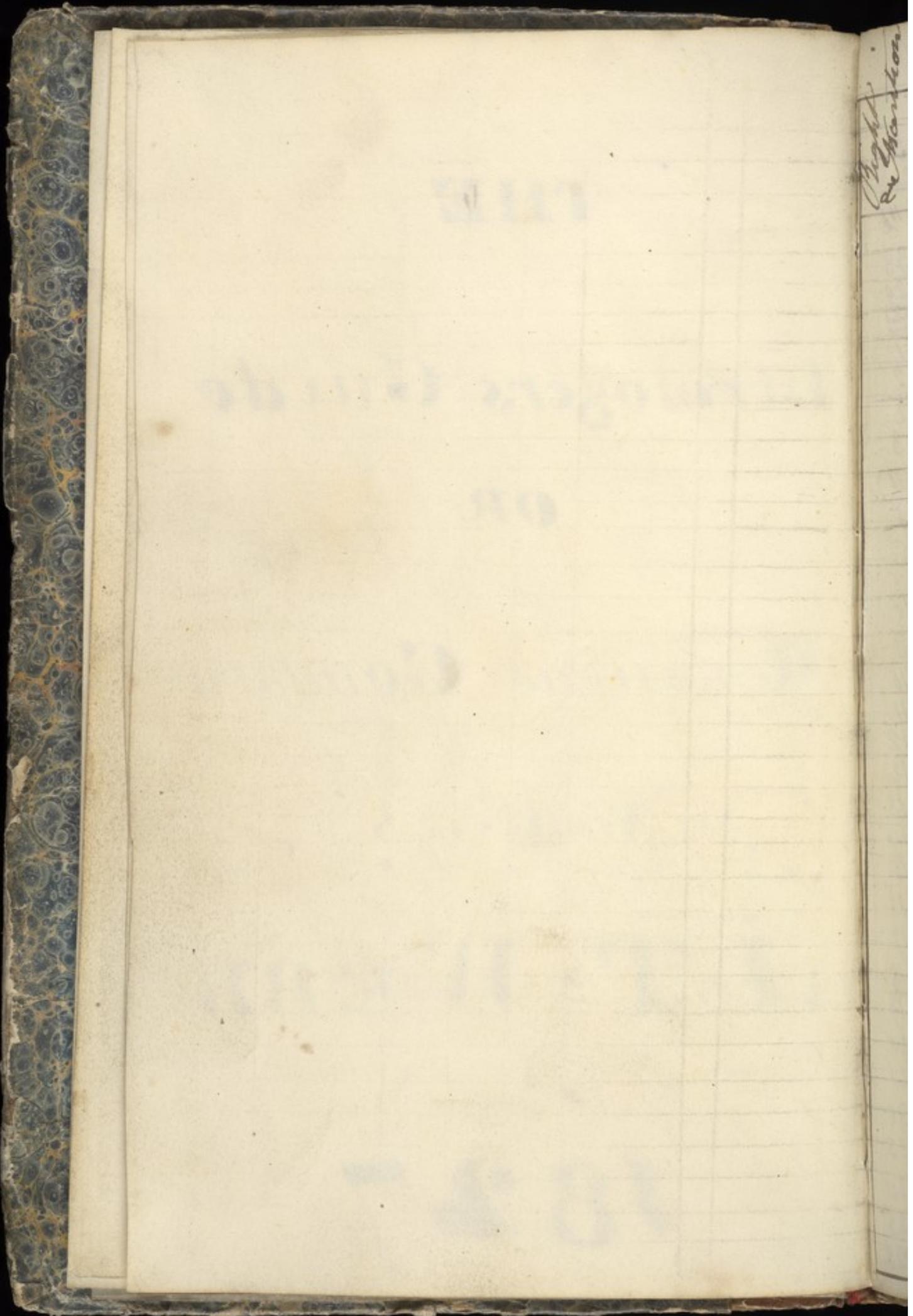
Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 35.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 36.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 37.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 38.

Faint handwritten text, possibly a date or location, including the number 39.



Eight
in London

Height
of Horizon

Sol in Aries

Time from 10 11 12 Ascend 2 3
noon
m h m d V d S d II d G m d Q d TP

| | | | | | | | | | | |
|---|---|----|----|----|----|----|---|----|----|----|
| 0 | : | 0 | 0 | 9 | 22 | 26 | : | 42 | 13 | 3 |
| 0 | : | 4 | 1 | 10 | 23 | 27 | : | 23 | 13 | 3 |
| 0 | : | 7 | 2 | 11 | 24 | 28 | : | 2 | 14 | 4 |
| 0 | : | 11 | 3 | 12 | 25 | 28 | : | 48 | 15 | 5 |
| 0 | : | 15 | 4 | 13 | 25 | 29 | : | 21 | 15 | 6 |
| 0 | : | 18 | 5 | 14 | 26 | 0 | : | 01 | 16 | 7 |
| 0 | : | 22 | 6 | 15 | 27 | 0 | : | 40 | 17 | 8 |
| 0 | : | 26 | 7 | 16 | 28 | 1 | : | 20 | 18 | 8 |
| 0 | : | 29 | 8 | 17 | 29 | 2 | : | 0 | 18 | 9 |
| 0 | : | 33 | 9 | 18 | 29 | 2 | : | 39 | 19 | 10 |
| 0 | : | 37 | 10 | 19 | 1 | 3 | : | 19 | 20 | 11 |
| 0 | : | 40 | 11 | 20 | 1 | 3 | : | 59 | 20 | 12 |
| 0 | : | 44 | 12 | 22 | 2 | 4 | : | 38 | 21 | 13 |
| 0 | : | 48 | 13 | 23 | 3 | 5 | : | 17 | 22 | 14 |
| 0 | : | 51 | 14 | 24 | 4 | 5 | : | 57 | 23 | 15 |
| 0 | : | 55 | 15 | 25 | 5 | 6 | : | 36 | 23 | 15 |
| 0 | : | 59 | 16 | 26 | 6 | 7 | : | 15 | 24 | 16 |
| 1 | : | 3 | 17 | 27 | 6 | 7 | : | 55 | 25 | 17 |
| 1 | : | 6 | 18 | 28 | 7 | 8 | : | 35 | 26 | 18 |
| 1 | : | 10 | 19 | 29 | 8 | 9 | : | 14 | 26 | 19 |
| 1 | : | 14 | 20 | II | 9 | 9 | : | 53 | 27 | 19 |
| 1 | : | 18 | 21 | 1 | 10 | 10 | : | 34 | 28 | 20 |
| 1 | : | 21 | 22 | 2 | 10 | 11 | : | 12 | 28 | 21 |
| 1 | : | 25 | 23 | 3 | 11 | 11 | : | 52 | 29 | 22 |
| 1 | : | 29 | 24 | 4 | 12 | 12 | : | 32 | TP | 23 |
| 1 | : | 33 | 25 | 5 | 13 | 13 | : | 12 | 1 | 24 |
| 1 | : | 36 | 26 | 6 | 14 | 13 | : | 52 | 1 | 25 |
| 1 | : | 40 | 27 | 7 | 14 | 14 | : | 32 | 2 | 25 |
| 1 | : | 44 | 28 | 7 | 15 | 15 | : | 12 | 3 | 26 |
| 1 | : | 48 | 29 | 8 | 16 | 15 | : | 51 | 4 | 27 |
| 1 | : | 52 | 30 | 9 | 17 | 16 | : | 31 | 4 | 28 |

Sol in Taurus

| Ret | Time from Noon | 10 | 11 | 12 | Ascend | 2 | 3 |
|-----|----------------|----|----|----|--------------------|----|----|
| d m | h m | d | d | d | d | d | d |
| | 1:52 | 0 | 9 | 17 | 16.31 | 4 | 38 |
| | 1:55 | 1 | 10 | 18 | 17:11 | 5 | 29 |
| | 1:59 | 2 | 11 | 19 | 17.51 | 6 | 14 |
| | 2:03 | 3 | 12 | 19 | 18.31 | 7 | 1 |
| | 2:07 | 4 | 13 | 20 | 19.12 | 8 | 2 |
| | 2:11 | 5 | 14 | 21 | 19.52 | 9 | 2 |
| | 2:15 | 6 | 15 | 22 | 20.32 | 9 | 3 |
| | 2:19 | 7 | 16 | 22 | 21.19 | 10 | 4 |
| | 2:23 | 8 | 17 | 23 | 21.54 | 11 | 5 |
| | 2:26 | 9 | 18 | 24 | 22.35 | 11 | 6 |
| | 2:30 | 10 | 19 | 25 | 23.16 | 12 | 7 |
| | 2:34 | 11 | 20 | 25 | 23.57 | 13 | 8 |
| | 2:38 | 12 | 21 | 26 | 24.38 | 14 | 9 |
| | 2:42 | 13 | 22 | 27 | 25.19 | 14 | 10 |
| | 2:46 | 14 | 23 | 28 | 26.0 | 15 | 11 |
| | 2:50 | 15 | 24 | 29 | 26.42 | 16 | 12 |
| | 2:54 | 16 | 25 | 29 | 27.24 | 17 | 12 |
| | 2:58 | 17 | 26 | 30 | 28.6 | 18 | 13 |
| | 3:02 | 18 | 21 | 1 | 28.47 | 18 | 14 |
| | 3:06 | 19 | 27 | 2 | 29.30 | 19 | 15 |
| | 3:10 | 20 | 28 | 3 | 0 ^{mp} 13 | 20 | 16 |
| | 3:14 | 21 | 29 | 3 | 0.55 | 21 | 17 |
| | 3:18 | 22 | 30 | 4 | 1.37 | 22 | 18 |
| | 3:22 | 23 | 1 | 5 | 2.20 | 22 | 19 |
| | 3:26 | 24 | 2 | 6 | 3.2 | 23 | 20 |
| | 3:31 | 25 | 3 | 7 | 3.46 | 24 | 21 |
| | 3:35 | 26 | 4 | 7 | 4.29 | 25 | 22 |
| | 3:39 | 27 | 5 | 8 | 5.12 | 26 | 23 |
| | 3:43 | 28 | 6 | 9 | 5.55 | 27 | 24 |
| | 3:47 | 29 | 7 | 10 | 6.39 | 27 | 25 |
| | 3:51 | 30 | 8 | 11 | 7.22 | 28 | 25 |

Sol in Gemini

3.

3
 38
 29
 1
 2
 2
 3
 4
 5
 5
 7
 8
 9
 10
 11
 12
 12
 13
 14
 15
 16
 17
 18
 19
 20
 21
 22
 23
 24
 25
 25

| R A | Time from noon | | Ascend | | | 2 | | 3 | |
|-----|----------------|-----|--------|----|----|----|-----|----|----|
| | d | m | d | d | d | d | m | d | m |
| 38 | 3 | :15 | 0 | 8 | 11 | 7 | .22 | 28 | 25 |
| 29 | 3 | :55 | 1 | 9 | 12 | 8 | .0 | 29 | 26 |
| 1 | 4 | :0 | 2 | 10 | 12 | 8 | .30 | 27 | 27 |
| 2 | 4 | :4 | 3 | 10 | 13 | 9 | .34 | 1 | 28 |
| 2 | 4 | :8 | 4 | 11 | 14 | 10 | .18 | 2 | 29 |
| 3 | 4 | :12 | 5 | 12 | 15 | 11 | .3 | 2 | m |
| 3 | 4 | :16 | 6 | 13 | 16 | 11 | .47 | 3 | 1 |
| 4 | 4 | :21 | 7 | 14 | 17 | 12 | .31 | 4 | 2 |
| 4 | 4 | :25 | 8 | 15 | 17 | 13 | .16 | 5 | 3 |
| 5 | 4 | :29 | 9 | 16 | 18 | 14 | .1 | 6 | 4 |
| 5 | 4 | :33 | 10 | 17 | 19 | 14 | .46 | 7 | 5 |
| 7 | 4 | :38 | 11 | 18 | 20 | 15 | .31 | 8 | 6 |
| 8 | 4 | :42 | 12 | 19 | 21 | 16 | .16 | 8 | 7 |
| 9 | 4 | :46 | 13 | 20 | 21 | 17 | .1 | 9 | 8 |
| 10 | 4 | :51 | 14 | 21 | 22 | 17 | .46 | 10 | 9 |
| 11 | 4 | :55 | 15 | 22 | 23 | 18 | .31 | 11 | 10 |
| 12 | 4 | :59 | 16 | 23 | 24 | 19 | .17 | 12 | 11 |
| 12 | 5 | :3 | 17 | 24 | 25 | 20 | .4 | 13 | 12 |
| 13 | 5 | :8 | 18 | 25 | 26 | 20 | .49 | 14 | 13 |
| 14 | 5 | :12 | 19 | 25 | 27 | 21 | .35 | 14 | 14 |
| 15 | 5 | :16 | 20 | 26 | 28 | 22 | .20 | 15 | 14 |
| 16 | 5 | :21 | 21 | 27 | 28 | 23 | .6 | 16 | 15 |
| 17 | 5 | :25 | 22 | 28 | 29 | 23 | .51 | 17 | 16 |
| 18 | 5 | :29 | 23 | 29 | m | 24 | .37 | 18 | 17 |
| 19 | 5 | :34 | 24 | 30 | 1 | 25 | .25 | 19 | 18 |
| 20 | 5 | :38 | 25 | 1 | 2 | 26 | .19 | 20 | 19 |
| 21 | 5 | :43 | 26 | 2 | 3 | 26 | .55 | 20 | 20 |
| 22 | 5 | :47 | 27 | 3 | 4 | 27 | .41 | 21 | 21 |
| 23 | 5 | :51 | 28 | 4 | 4 | 28 | .27 | 22 | 22 |
| 24 | 5 | :56 | 29 | 5 | 5 | 29 | .13 | 23 | 23 |
| 25 | 6 | :0 | 30 | 6 | 6 | 30 | .0 | 24 | 24 |

Sol in Cancer

| Time | | Ascend | | | | | | |
|------|------|--------|---------------|---------------|--------|----|---------------|---------------|
| R | A | 10 | 11 | 12 | ascend | 2 | 3 | |
| d | m | h | m | d | m | d | m | |
| 6 | : 0 | 0 | 6 | 6 | 0 | 0 | 24 | 24 |
| 6 | : 4 | 1 | 7 | 7 | 0 | 47 | 25 | 25 |
| 6 | : 8 | 2 | 8 | 8 | 1 | 33 | 26 | 26 |
| 6 | : 13 | 3 | 9 | 9 | 2 | 19 | 27 | 27 |
| 6 | : 17 | 4 | 10 | 10 | 3 | 5 | 27 | 28 |
| 6 | : 22 | 5 | 11 | 10 | 3 | 51 | 28 | 29 |
| 6 | : 26 | 6 | 12 | 11 | 4 | 37 | 29 | 30 |
| 6 | : 31 | 7 | 13 | 12 | 5 | 32 | 30 | 1 |
| 6 | : 35 | 8 | 14 | 13 | 6 | 9 | 1 | 2 |
| 6 | : 39 | 9 | 15 | 14 | 6 | 55 | 2 | 3 |
| 6 | : 41 | 10 | 16 | 15 | 7 | 40 | 2 | 4 |
| 6 | : 48 | 11 | 16 | 16 | 8 | 26 | 3 | 4 |
| 6 | : 52 | 12 | 17 | 16 | 9 | 12 | 4 | 5 |
| 6 | : 57 | 13 | 18 | 17 | 9 | 57 | 5 | 6 |
| 7 | : 1 | 14 | 19 | 18 | 10 | 41 | 6 | 7 |
| 7 | : 5 | 15 | 20 | 19 | 11 | 28 | 7 | 8 |
| 7 | : 9 | 16 | 21 | 20 | 12 | 14 | 8 | 9 |
| 7 | : 14 | 17 | 22 | 21 | 12 | 59 | 8 | 10 |
| 7 | : 18 | 18 | 23 | 22 | 13 | 45 | 9 | 11 |
| 7 | : 22 | 19 | 24 | 22 | 14 | 13 | 10 | 12 |
| 7 | : 27 | 20 | 25 | 23 | 15 | 14 | 11 | 13 |
| 7 | : 31 | 21 | 26 | 24 | 15 | 59 | 12 | 14 |
| 7 | : 35 | 22 | 27 | 25 | 16 | 44 | 13 | 15 |
| 7 | : 39 | 23 | 28 | 26 | 17 | 29 | 13 | 16 |
| 7 | : 44 | 24 | 29 | 27 | 18 | 14 | 14 | 17 |
| 7 | : 48 | 25 | 29 | 28 | 18 | 58 | 15 | 18 |
| 7 | : 51 | 26 | 1 | 28 | 19 | 42 | 16 | 19 |
| 7 | : 56 | 27 | 2 | 29 | 20 | 26 | 17 | 20 |
| 8 | : 0 | 28 | 3 | 29 | 21 | 10 | 18 | 20 |
| 8 | : 5 | 29 | 4 | 1 | 21 | 54 | 18 | 21 |
| 8 | : 9 | 30 | 5 | 2 | 22 | 38 | 19 | 22 |

Sol in Leo

| 3 d _m | R d | A m | Time from noon | | 10 d _o | 11 d _m | 12 d _m | Ascend d _m | 2 d _m | 3 d _m |
|---------------------|--------|--------|----------------------|----|----------------------|----------------------|----------------------|--------------------------|---------------------|---------------------|
| | | | h | m | | | | | | |
| 24 | | | 8 | 9 | 0 | 5 | 2 | 22.38 | 19 | 22 |
| 25 | | | 8 | 13 | 1 | 5 | 3 | 23.22 | 20 | 28 |
| 26 | | | 8 | 17 | 2 | 6 | 3 | 24.5 | 21 | 24 |
| 27 | | | 8 | 21 | 3 | 7 | 4 | 24.48 | 22 | 25 |
| 28 | | | 8 | 25 | 4 | 8 | 5 | 25.32 | 23 | 26 |
| 29 | | | 8 | 29 | 5 | 9 | 6 | 26.16 | 23 | 27 |
| 30 | | | 8 | 34 | 6 | 10 | 7 | 26.58 | 24 | 28 |
| 31 | | | 8 | 38 | 7 | 11 | 8 | 27.42 | 25 | 29 |
| 32 | | | 8 | 42 | 8 | 12 | 8 | 28.23 | 26 | 28 |
| 33 | | | 8 | 46 | 9 | 3 | 9 | 29.6 | 27 | 1 |
| 34 | | | 8 | 50 | 10 | 14 | 10 | 29.48 | 27 | 2 |
| 35 | | | 8 | 54 | 11 | 15 | 11 | 0 m 30 | 28 | 3 |
| 36 | | | 8 | 58 | 12 | 16 | 12 | 1.13 | 29 | 4 |
| 37 | | | 9 | 2 | 13 | 17 | 12 | 1.55 | 29 | 4 |
| 38 | | | 9 | 6 | 14 | 18 | 13 | 2.36 | 1 | 5 |
| 39 | | | 9 | 10 | 15 | 18 | 14 | 3.18 | 2 | 6 |
| 40 | | | 9 | 14 | 16 | 19 | 15 | 4.0 | 2 | 7 |
| 41 | | | 9 | 18 | 17 | 20 | 16 | 4.41 | 3 | 8 |
| 42 | | | 9 | 22 | 18 | 21 | 16 | 5.21 | 4 | 9 |
| 43 | | | 9 | 26 | 19 | 22 | 17 | 6.4 | 5 | 10 |
| 44 | | | 9 | 30 | 22 | 23 | 18 | 6.45 | 5 | 11 |
| 45 | | | 9 | 34 | 21 | 24 | 19 | 7.26 | 6 | 12 |
| 46 | | | 9 | 38 | 22 | 25 | 19 | 8.6 | 7 | 13 |
| 47 | | | 9 | 41 | 23 | 26 | 20 | 8.47 | 8 | 14 |
| 48 | | | 9 | 45 | 24 | 27 | 21 | 9.28 | 9 | 15 |
| 49 | | | 9 | 49 | 25 | 28 | 22 | 10.8 | 9 | 16 |
| 50 | | | 9 | 53 | 26 | 28 | 23 | 10.48 | 10 | 17 |
| 51 | | | 9 | 57 | 27 | 29 | 23 | 11.29 | 11 | 18 |
| 52 | | | 10 | 1 | 28 | 24 | 24 | 12.9 | 12 | 19 |
| 53 | | | 10 | 5 | 29 | 25 | 25 | 12.50 | 12 | 20 |
| 54 | | | 10 | 8 | 30 | 2 | 26 | 13.30 | 13 | 20 |

Sol in Virgo

| R d | A m | Time from noon | | 10 d | 11 d | 12 d | Aquad | | 2 d | 3 d |
|--------|--------|----------------------|------|---------|---------|---------|-------|----|--------|--------|
| | | h | m | | | | d | m | | |
| | | 10 | : 8 | 0 | 3 | 26 | 13 | 30 | 13 | 20 |
| | | 10 | : 12 | 1 | 3 | 26 | 14 | 9 | 14 | 21 |
| | | 10 | : 16 | 2 | 4 | 27 | 14 | 49 | 15 | 22 |
| | | 10 | : 20 | 3 | 5 | 28 | 15 | 29 | 16 | 23 |
| | | 10 | : 24 | 4 | 5 | 29 | 16 | 9 | 16 | 24 |
| | | 10 | : 28 | 5 | 6 | 29 | 16 | 48 | 17 | 25 |
| | | 10 | : 31 | 6 | 7 | 29 | 17 | 28 | 18 | 26 |
| | | 10 | : 35 | 7 | 8 | 30 | 18 | 9 | 19 | 27 |
| | | 10 | : 39 | 8 | 9 | 2 | 18 | 48 | 20 | 28 |
| | | 10 | : 42 | 9 | 10 | 2 | 19 | 28 | 20 | 29 |
| | | 10 | : 46 | 10 | 11 | 3 | 20 | 8 | 21 | 30 |
| | | 10 | : 50 | 11 | 11 | 4 | 20 | 48 | 22 | 1 |
| | | 10 | : 54 | 12 | 12 | 4 | 21 | 26 | 23 | 2 |
| | | 10 | : 57 | 13 | 13 | 5 | 22 | 5 | 24 | 3 |
| | | 11 | : 1 | 14 | 14 | 6 | 22 | 45 | 24 | 4 |
| | | 11 | : 5 | 15 | 15 | 7 | 23 | 24 | 25 | 5 |
| | | 11 | : 9 | 16 | 16 | 7 | 24 | 4 | 26 | 6 |
| | | 11 | : 12 | 17 | 17 | 8 | 24 | 43 | 27 | 8 |
| | | 11 | : 16 | 18 | 17 | 9 | 25 | 23 | 28 | 9 |
| | | 11 | : 20 | 19 | 18 | 10 | 26 | 1 | 29 | 10 |
| | | 11 | : 23 | 20 | 19 | 10 | 26 | 41 | 29 | 11 |
| | | 11 | : 27 | 21 | 20 | 11 | 27 | 22 | 0 | 12 |
| | | 11 | : 31 | 22 | 21 | 12 | 28 | 1 | 1 | 13 |
| | | 11 | : 34 | 23 | 22 | 13 | 28 | 40 | 2 | 14 |
| | | 11 | : 38 | 24 | 23 | 13 | 29 | 20 | 3 | 15 |
| | | 11 | : 42 | 25 | 23 | 14 | 29 | 59 | 4 | 16 |
| | | 11 | : 45 | 26 | 24 | 15 | 0 | 39 | 5 | 17 |
| | | 11 | : 49 | 27 | 25 | 15 | 1 | 19 | 5 | 18 |
| | | 11 | : 53 | 28 | 26 | 16 | 2 | 8 | 6 | 19 |
| | | 11 | : 56 | 29 | 26 | 17 | 2 | 39 | 7 | 20 |
| | | 12 | : 0 | 30 | 27 | 17 | 3 | 19 | 8 | 21 |

Sol in Scorpio

| R | A | Signe | | 10 | 11 | 12 | Ascend | | 2 | 3 | R |
|---|------|-------|------|------|------|------|--------|----|------|------|---|
| | | from | noon | | | | d | m | | | |
| | d. m | h | m | d. m | d. m | d. m | d. m | m | d. m | d. m | d |
| | 13 | 51 | 0 | 22 | 10 | 25 | 15 | 10 | 27 | | |
| | 13 | 55 | 1 | 23 | 11 | 26 | 5 | 11 | 28 | | |
| | 13 | 59 | 2 | 24 | 11 | 26 | 50 | 12 | 27 | | |
| | 14 | 3 | 3 | 25 | 12 | 27 | 47 | 14 | 1 | | |
| | 14 | 7 | 4 | 26 | 13 | 28 | 39 | 15 | 2 | | |
| | 14 | 11 | 5 | 26 | 14 | 29 | 31 | 16 | 4 | | |
| | 14 | 15 | 6 | 27 | 15 | 0 | NS 24 | 18 | 5 | | |
| | 14 | 19 | 7 | 28 | 15 | 1 | 18 | 19 | 6 | | |
| | 14 | 22 | 8 | 29 | 16 | 2 | 13 | 20 | 8 | | |
| | 14 | 26 | 9 | 29 | 17 | 3 | 10 | 22 | 9 | | |
| | 14 | 30 | 10 | 1 | 18 | 4 | 6 | 23 | 10 | | |
| | 14 | 34 | 11 | 2 | 19 | 5 | 3 | 25 | 11 | | |
| | 14 | 38 | 12 | 2 | 20 | 6 | 1 | 26 | 13 | | |
| | 14 | 42 | 13 | 3 | 20 | 7 | 0 | 28 | 14 | | |
| | 14 | 46 | 14 | 4 | 21 | 8 | 0 | 29 | 15 | | |
| | 14 | 50 | 15 | 5 | 22 | 9 | 2 | 30 | 17 | | |
| | 14 | 54 | 16 | 6 | 23 | 10 | 5 | 3 | 18 | | |
| | 14 | 58 | 17 | 7 | 24 | 11 | 9 | 4 | 19 | | |
| | 15 | 2 | 18 | 8 | 25 | 12 | 14 | 6 | 21 | | |
| | 15 | 6 | 19 | 9 | 26 | 13 | 21 | 8 | 22 | | |
| | 15 | 10 | 20 | 9 | 27 | 14 | 29 | 9 | 23 | | |
| | 15 | 14 | 21 | 10 | 27 | 15 | 37 | 11 | 24 | | |
| | 15 | 18 | 22 | 11 | 28 | 16 | 46 | 13 | 26 | | |
| | 15 | 22 | 23 | 12 | 29 | 17 | 58 | 14 | 27 | | |
| | 15 | 26 | 24 | 13 | 28 | 19 | 11 | 16 | 28 | | |
| | 15 | 31 | 25 | 14 | 1 | 20 | 27 | 17 | 29 | | |
| | 15 | 35 | 26 | 15 | 2 | 21 | 43 | 19 | 28 | | |
| | 15 | 39 | 27 | 16 | 3 | 22 | 3 | 21 | 2 | | |
| | 15 | 43 | 28 | 17 | 4 | 24 | 24 | 22 | 3 | | |
| | 15 | 47 | 29 | 18 | 5 | 25 | 46 | 24 | 5 | | |
| | 15 | 51 | 30 | 18 | 6 | 27 | 10 | 26 | 6 | | |

Sol in Sagittary

| R e A | | June from noon | | 10 | 11 | 12 | Ascend | | | 2 | 3 |
|-------|---|----------------|----|----|----|-----------------|-----------------|----|----|----|----|
| d | m | h | m | d | d | d | d | m | m | d | d |
| | | 15 | 51 | 0 | 18 | 6 | 27 | 10 | | 26 | 6 |
| | | 15 | 55 | 1 | 19 | 7 | 28 | 37 | | 28 | 7 |
| | | 16 | 0 | 2 | 20 | 8 | 0 ^{mm} | 6 | γ | | 9 |
| | | 16 | 4 | 3 | 21 | 9 | 1 | 37 | 1 | | 10 |
| | | 16 | 8 | 4 | 22 | 10 | 3 | 11 | 3 | | 11 |
| | | 16 | 12 | 5 | 23 | 11 | 4 | 48 | 5 | | 12 |
| | | 16 | 16 | 6 | 24 | 12 | 6 | 27 | 7 | | 14 |
| | | 16 | 21 | 7 | 25 | 13 | 8 | 8 | 9 | | 15 |
| | | 16 | 25 | 8 | 26 | 14 | 9 | 52 | 11 | | 16 |
| | | 16 | 29 | 9 | 27 | 16 | 11 | 40 | 12 | | 17 |
| | | 16 | 33 | 10 | 28 | 17 | 12 | 30 | 14 | | 18 |
| | | 16 | 38 | 11 | 29 | 18 | 15 | 20 | 16 | | 20 |
| | | 16 | 42 | 12 | NS | 19 | 17 | 16 | 18 | | 21 |
| | | 16 | 46 | 13 | 1 | 20 | 19 | 15 | 20 | | 22 |
| | | 16 | 51 | 14 | 2 | 21 | 21 | 17 | 21 | | 23 |
| | | 16 | 55 | 15 | 3 | 22 | 23 | 24 | 23 | | 25 |
| | | 16 | 59 | 16 | 4 | 24 | 25 | 32 | 25 | | 26 |
| | | 17 | 4 | 17 | 5 | 25 | 27 | 44 | 27 | | 27 |
| | | 17 | 8 | 18 | 6 | 26 | 29 | 58 | 28 | | 28 |
| | | 17 | 11 | 19 | 7 | 27 | 2 x | 17 | 8 | | 29 |
| | | 17 | 16 | 20 | 8 | 29 | 4 | 38 | 2 | | 31 |
| | | 17 | 20 | 21 | 9 | 3 ^{mm} | 7 | 0 | 3 | | 32 |
| | | 17 | 25 | 22 | 10 | 1 | 9 | 24 | 5 | | 2 |
| | | 17 | 30 | 23 | 11 | 3 | 11 | 53 | 7 | | 3 |
| | | 17 | 34 | 24 | 12 | 4 | 14 | 23 | 8 | | 5 |
| | | 17 | 38 | 25 | 13 | 5 | 16 | 59 | 10 | | 6 |
| | | 17 | 43 | 26 | 14 | 7 | 19 | 32 | 11 | | 7 |
| | | 17 | 47 | 27 | 15 | 8 | 22 | 5 | 13 | | 8 |
| | | 17 | 51 | 28 | 16 | 10 | 24 | 39 | 14 | | 9 |
| | | 17 | 56 | 29 | 17 | 11 | 27 | 20 | 16 | | 10 |
| | | 18 | 0 | 30 | 18 | 13 | 30 | 0 | 17 | | 11 |

27
 28
 29
 1
 2
 3
 4
 5
 6
 7
 8
 9
 10
 11
 12
 13
 14
 15
 16
 17
 18
 19
 20
 21
 22
 23
 24
 25
 26
 27
 28
 29
 30
 31
 1
 2
 3
 4
 5
 6

Sol in Capricorn

| R d | A m | Time from noon | | 10 | | 11 | | 12 | | abend | | 2 | 3 | |
|--------|--------|----------------------|---|----|---|---------------|---|----|---|-------|----|----|----|----|
| | | h | m | d | v | d | v | d | v | d | v | d | v | |
| 18 | : | 0 | | 0 | | 18 | | 13 | | 0 | | 17 | 11 | |
| 18 | : | 4 | | 1 | | 20 | | 14 | | 2 | 37 | 19 | 13 | |
| 18 | : | 9 | | 2 | | 21 | | 16 | | 5 | 19 | 20 | 14 | |
| 18 | : | 13 | | 3 | | 22 | | 17 | | 7 | 55 | 22 | 15 | |
| 18 | : | 17 | | 4 | | 23 | | 19 | | 10 | 29 | 23 | 16 | |
| 18 | : | 22 | | 5 | | 24 | | 20 | | 13 | 2 | 25 | 17 | |
| 18 | : | 28 | | 6 | | 25 | | 22 | | 15 | 37 | 26 | 18 | |
| 18 | : | 30 | | 7 | | 26 | | 23 | | 18 | 7 | 28 | 19 | |
| 18 | : | 35 | | 8 | | 27 | | 25 | | 20 | 35 | 29 | 20 | |
| 18 | : | 39 | | 9 | | 29 | | 27 | | 23 | 0 | II | 21 | |
| 18 | : | 44 | | 10 | | 29 | | 29 | | 25 | 22 | I | 22 | |
| 18 | : | 48 | | 11 | | 1 | | 26 | | 27 | 48 | 2 | 23 | |
| 18 | : | 52 | | 12 | | 2 | | 2 | | 0 | 8 | 0 | 4 | 24 |
| 18 | : | 57 | | 13 | | 3 | | 3 | | 2 | 16 | 5 | 25 | |
| 19 | : | 1 | | 14 | | 4 | | 5 | | 4 | 27 | 6 | 26 | |
| 19 | : | 5 | | 15 | | 6 | | 7 | | 6 | 33 | 8 | 27 | |
| 19 | : | 9 | | 16 | | 7 | | 9 | | 8 | 39 | 9 | 28 | |
| 19 | : | 14 | | 17 | | 8 | | 10 | | 10 | 43 | 10 | 29 | |
| 19 | : | 18 | | 18 | | 9 | | 12 | | 12 | 42 | 11 | 30 | |
| 19 | : | 22 | | 19 | | 10 | | 14 | | 14 | 40 | 12 | 1 | |
| 19 | : | 27 | | 20 | | 12 | | 16 | | 16 | 31 | 13 | 2 | |
| 19 | : | 31 | | 21 | | 13 | | 18 | | 18 | 20 | 14 | 3 | |
| 19 | : | 35 | | 22 | | 14 | | 19 | | 20 | 7 | 16 | 4 | |
| 19 | : | 39 | | 23 | | 15 | | 21 | | 21 | 52 | 17 | 5 | |
| 19 | : | 44 | | 24 | | 16 | | 23 | | 23 | 33 | 18 | 6 | |
| 19 | : | 48 | | 25 | | 18 | | 25 | | 25 | 13 | 19 | 7 | |
| 19 | : | 52 | | 26 | | 19 | | 27 | | 26 | 49 | 20 | 8 | |
| 19 | : | 56 | | 27 | | 20 | | 28 | | 28 | 22 | 21 | 9 | |
| 20 | : | 00 | | 28 | | 21 | | 7 | | 29 | 53 | 22 | 10 | |
| 20 | : | 5 | | 29 | | 23 | | 2 | | I | 23 | 23 | 11 | |
| 20 | : | 9 | | 30 | | 24 | | 4 | | 2 | 50 | 24 | 12 | |

Sol in Aquary

| R A | | Time from noon | 10 | 11 | 12 | Stand | 2 | 3 |
|-----|---|-------------------|------------------|------------------|-----------------|---------|------|-----|
| d | m | h m | d ^{min} | d ^{min} | d ^{yr} | d II m | d II | 100 |
| | | 20: 9 | 0 | 12 | 4 | 2 : 50 | 24 | 12 |
| | | 20: 13 | 1 | 25 | 6 | 4 : 14 | 25 | 12 |
| | | 20: 17 | 3 | 27 | 7 | 5 : 37 | 26 | 13 |
| | | 20: 21 | 3 | 28 | 9 | 6 : 58 | 27 | 14 |
| | | 20: 25 | 4 | 29 | 11 | 8 : 17 | 28 | 15 |
| | | 20: 29 | 5 | 30 | 13 | 9 : 33 | 29 | 16 |
| | | 20: 34 | 6 | 2 | 14 | 10 : 49 | 30 | 17 |
| | | 20: 38 | 7 | 3 | 16 | 12 : 3 | 1 | 18 |
| | | 20: 42 | 8 | 4 | 18 | 13 : 14 | 2 | 19 |
| | | 20: 46 | 9 | 6 | 19 | 14 : 24 | 3 | 20 |
| | | 20: 50 | 10 | 7 | 21 | 15 : 32 | 3 | 21 |
| | | 20: 54 | 11 | 8 | 23 | 16 : 40 | 4 | 21 |
| | | 20: 58 | 12 | 9 | 24 | 17 : 48 | 5 | 22 |
| | | 21: 2 | 13 | 11 | 26 | 18 : 51 | 6 | 23 |
| | | 21: 6 | 14 | 12 | 28 | 19 : 56 | 7 | 24 |
| | | 21: 10 | 15 | 13 | 29 | 20 : 58 | 8 | 25 |
| | | 21: 14 | 16 | 15 | 30 | 22 : 0 | 9 | 26 |
| | | 21: 18 | 17 | 16 | 2 | 23 : 0 | 10 | 27 |
| | | 21: 22 | 18 | 17 | 4 | 23 : 59 | 10 | 28 |
| | | 21: 26 | 19 | 19 | 5 | 24 : 58 | 11 | 28 |
| | | 21: 30 | 20 | 20 | 7 | 25 : 55 | 12 | 29 |
| | | 21: 34 | 21 | 22 | 8 | 26 : 51 | 13 | 30 |
| | | 21: 38 | 22 | 23 | 10 | 27 : 47 | 14 | 1 |
| | | 21: 41 | 23 | 24 | 11 | 28 : 41 | 15 | 2 |
| | | 21: 45 | 24 | 25 | 13 | 29 : 36 | 15 | 3 |
| | | 21: 49 | 25 | 26 | 14 | 0 29 29 | 16 | 4 |
| | | 21: 53 | 26 | 28 | 15 | 1 : 22 | 17 | 4 |
| | | 21: 57 | 27 | 29 | 16 | 2 : 14 | 18 | 5 |
| | | 22: 1 | 28 | 30 | 18 | 3 : 4 | 19 | 6 |
| | | 22: 5 | 29 | 2 | 19 | 3 : 56 | 19 | 7 |
| | | 22: 8 | 30 | 3 | 20 | 4 : 45 | 20 | 8 |

Sol in Pisces

| R | A | Time from noon | | Ascend. | | | 2 | 3 |
|----|----|----------------|----|---------|----|----|----|----|
| | | h | m | d | ° | ' | | |
| 22 | 8 | 0 | 3 | 20 | 4 | 42 | 20 | 8 |
| 22 | 12 | 1 | 4 | 21 | 5 | 35 | 21 | 8 |
| 22 | 16 | 2 | 6 | 23 | 6 | 23 | 22 | 9 |
| 22 | 20 | 3 | 7 | 24 | 7 | 12 | 23 | 10 |
| 22 | 24 | 4 | 8 | 25 | 8 | 0 | 23 | 11 |
| 22 | 27 | 5 | 9 | 26 | 8 | 48 | 24 | 12 |
| 22 | 31 | 6 | 10 | 28 | 9 | 35 | 25 | 13 |
| 22 | 35 | 7 | 12 | 29 | 10 | 22 | 26 | 14 |
| 22 | 39 | 8 | 13 | II | 11 | 7 | 26 | 14 |
| 22 | 42 | 9 | 14 | 1 | 11 | 52 | 27 | 15 |
| 22 | 46 | 10 | 15 | 2 | 12 | 37 | 28 | 16 |
| 22 | 50 | 11 | 17 | 3 | 13 | 28 | 29 | 17 |
| 22 | 54 | 12 | 18 | 4 | 14 | 7 | 29 | 18 |
| 22 | 57 | 13 | 19 | 5 | 14 | 52 | 30 | 19 |
| 23 | 1 | 14 | 20 | 6 | 15 | 35 | 31 | 19 |
| 23 | 5 | 15 | 21 | 7 | 16 | 17 | 2 | 20 |
| 23 | 9 | 16 | 23 | 8 | 17 | 1 | 2 | 21 |
| 23 | 12 | 17 | 24 | 9 | 17 | 44 | 3 | 22 |
| 23 | 16 | 18 | 25 | 10 | 18 | 26 | 4 | 23 |
| 23 | 20 | 19 | 26 | 11 | 19 | 9 | 5 | 24 |
| 23 | 23 | 20 | 27 | 12 | 19 | 52 | 5 | 24 |
| 23 | 27 | 21 | 29 | 13 | 20 | 32 | 6 | 25 |
| 23 | 31 | 22 | 30 | 14 | 21 | 14 | 7 | 26 |
| 23 | 34 | 23 | 1 | 15 | 21 | 56 | 7 | 27 |
| 23 | 38 | 24 | 2 | 16 | 22 | 34 | 8 | 28 |
| 23 | 42 | 25 | 3 | 17 | 23 | 18 | 9 | 28 |
| 23 | 45 | 26 | 4 | 18 | 23 | 59 | 9 | 29 |
| 23 | 49 | 27 | 5 | 19 | 24 | 39 | 10 | 29 |
| 23 | 53 | 28 | 6 | 20 | 25 | 21 | 11 | 30 |
| 23 | 56 | 29 | 8 | 21 | 26 | 2 | 12 | 31 |
| 24 | 0 | 30 | 9 | 22 | 26 | 42 | 12 | 3 |

132

To erect the scheme of the
Heavens. on any Time . . .

First, if you erect a figure
of the Heavens for Noon - find
the suns place in the Almanac
then refer to the table of the
Sun in that Sign, and find
the degree the \odot is in under the
10 house - and then you have the
exact position of the signs &
degrees occupying the 6 Oriental
houses - the Opposite houses have
opposite signs and degrees -

2nd if you erect before Noon
find the suns place in the Al-
manack of the day before. then
enter the table as before described
and to the left hand you will
find a column called time from Noon
To this time from Noon add the time
you set your figure for. and then

11/2
look for this time under the title
of time from noon - and then you
have the exact position of the Signs
As you must reckon the time from
noon to noon or 24 hours, thus 6 o'clock
in the Morning is called 18 hours -
if you set for the afternoon
find the Suns place for that day
and proceed as in the last example

Part of fortune

Take the Suns distance from
the Moon in signs and degrees
and then add that distance to
the Ascendant's sign and degrees
and that sum is the part of fortune
signs & degrees

Suppose the sun to be in \odot 10 deg
and the Moon in M 15 deg the differ
is 2 Signs 5 deg and if the Asc is A . 5
the \odot is in \odot 10 deg - Note if the
sun be greater than the Moon's you
must borrow 12 Signs

Signification of the twelve Houses of the Heavens --

in Nativities or Horary Questions

The first house bears Signification of the life of Man and of the Proportion Shape Colour of him -- Questions concerning Health life & accidents what part of days are most prosperous Journeys Ships at Sea about friends Success or Safety Accidents and in eclipse great & appearance of Comets. and other extraordinary phenomena in the Heavens and upon the annual ^{ingress} in 10^o ♍ - 1st house Signifies the community at large of that State or empire - it represents the head and face so if ☿ ☽ or ♃ be in this house either at the time of Question or Birth there is a blemish in a face or upon some member governed by the Sign upon the cusp. of the house

for instance if γ be in the Asc.
 the Mark & is in the head or face
 and if few deg. Asc the mark & in in
 the upper part of the face if the
 middle of γ Asc the Mark is in the middle
 of the face. if the latter end of γ Asc
 the mark is in the lower part of the
 face or upon the upper part of the neck

Second House we form Judg-
 ment upon all Questions about
 Poverty Wealth Prosperity or Adv.
 Loss or gain in any undertaking -
 moovable goods money lent or em-
 ployed in Speculation in Law it
 shews friends or Opponents. in private
 duels it shews the Second - in
 eclipse it shews a growing prosperity
 or Adversity of the Nation and
 at the suns ingress into γ . it ex-
 press the State or Strength of the Em-
 pire all questions of War or Self defence

17

The 3rd signifies Brethren Sisters
kindred and neighbours and of all
inland Journeys - and of moving one
manufactory from one place to
an other. So any thing related
to this house are answered by the
Planets in it

The 4th - signifies the father.
Land, Houses, towers & becciged of
Measures hid in the ground and
all things related to the earth

The 5th signifies Children and to
women in the state of Pregnancy?
the present Health of Absent Sons or
daughters - or the future Health of
those at home - relates to the
personal effects of the father

The Success of a Messenger -

The internal strength of a place
besceiged concerning Ammunition
&c are all answered from this House

18.

The 6th signifies Servants Cattle
Sick persons whether curable or
not the nature of the disease
whether of short or long duration
Uncles Aunts and all relations on
the fathers side Servants or the like
are resolved by the disposition of the
planets in this house

The 7th signifies love Marriages it
describes the Mate, the defendant
in law suits public enemies
in time of War In Astrology it
represents the Artist himself in
Physic the Physician in theft -
the Robber describes him) in an
eclipse it indicates peace or War
and prior to an engagement it shews
which side will be victorious - it
discovers fugitives out lawed men
and offenders escaped from Justice

19

The 8th signifies death its time & quality nature, Legacies Wills &c or who shall inherit the estate of the deceased - also the portion of Maids or Widows In duels concerning the Adversarys Second in Law suits - relative to the defendants success and friends and questions concerning public or private enemies also the substance of those we connect with in business are all answered by the situation of the planets in this house

The 9th signifies Voyages and Travel in foreign countries Clergy Church Government, Kindred and relation on the opposite Party Arts and Sciences Religion &c are resolved from this house

The 10 signifies Kings Princes
noblemen Judges - and magistrates
and all persons in power - Perfe-
rment Honour dignities offices
places pensions state of King-
doms &c common wealth and
societies of Men &c are all resolved
from this house

The 11th signifies friends friend-
ship hope trust - fidelity of
of friends or to the Councillors
advocates Princes or people in power

The 12th relations on the mother side
signifies Tribulation
Sorrow affliction Trouble anx-
iety of Mind Imprisonment
persecution malice secret enem-
ies Suicide Treason Conspiracy
Assassination and every thing ap-
pertaining to the Misfortune of Man
are answered from this house

Brief Observations
concerning a ...
The ... who ... of the ...

1. If the ... in ...
with the ... of the ...
then ... the ... of the ...

2. If the ... of the ...
changes ... in ...
then ... the ...

3. If the ... of the ...
should be ... at the
time of Birth ... judge the
... by the ... of the
... upon the ... of the ...

Principles
of Justice
Proportion
of Justice
King
and
Justice
Laws
of
in
their
tion
and
of
men
easy
of
Man
e

Brief Observations in
drawing a Description from
the Planet who is Lord of the
Ascendant

- 1 If no planet be in Aspect
with the Lord of the Ascendant
then judge the Native by the
Lord of the Ascendant wholly
without any regard to the sign in
which he is posited.
- 2 If the Lord of the Ascendant be
retrograde or in his fall or Detachment
then describe the Native with due
reference to the sign in which he
is posited.
- 3 If the Lord of the Ascendant
behold the Ascendant at the
time of Birth. then judge the
Native by the Quality of the
Sign upon the cusp of the Ascendant

24 4. If two planets respect
the Ascendant take your
Judgment from him who is
in ^{perfect} ~~most~~ Partile Aspect
and posited in his own house
rather than him who is
in his exaltation

This must be considered
in Disposition and Qualities
of the Mind as well as in
the form of his Body &c

215

Significations of the 12 Signs

♈

It is an equinoctial diurnal cardinal
movable masculine hot & dry eastern
of the fiery Trips. Choleric beastial
intemperate & Violent

It gives the native a dry body
lean and spare middle stature
big boned Oval visage piercing sight
blk eyebrows Broad shoulders redish
hair swarthy Complexion

♉

It is a cold earthy dry feminine melancholy
nocturnal Southern Sign Beastial furious

It is a short strong full well set person
and when provoked as furious as a Bull
a large broad forehead big face great
eyes large wide mouth thick lips
gross hands black hair - swarthy
Complexion

Hot and moist Aerial diurnal
 human double bodied Western Masc.
 of the Airy Trip It gives a tall
 upright stature well made body
 complexion somewhat Languine long
 Arms short and fleshy Hands and feet
 a curious hazel eye dark Hair
 good Understanding

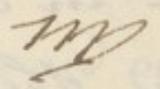
9

Its cold and moist phlegmatic
 liquid feminine nocturnal movable
 Watery Trip - It gives a middle
 stature the upper part of the body
 big strong and well set - round
 visage and indifferently handsome
 Complexion somewhat wan, sickly
 mean eyes dark brown hair

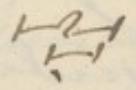
8

Hot and dry choleric Masculine
 diurnal bestial barren common -
 anding eastern & 2^o of the fiery Trip

It gives a large full body above
 the middle size broad shoulders narrow
 sides yellow or flaxen hair & curly
 a great round head large eyes and
 of a fierce countenance - ruddy
 and Sanguine Complexion & strong



Is a earthy barren cold melancholy
 feminine nocturnal ^{Louther} sign and 2nd
 earthy Trip It gives a mean height
 slender stature but very neat and
 decently composed darkish brown
 hair round visage not very beautiful
 yet well favoured small shrill voice
 all the members inclining to Briefly
 signifies the person is whittly discreet
 of a pleasant Conversation studious
 and given to all kind of learning



Is a cardinal equinoctial movable
 masculin diurnal sanguine hot

and moist Human and western
 Sign of the Airy Trigou It gives
 the person of a tall upright stature
 neat proportion more slender than
 gross of a round visage sanguine red
 complexion in youth in old age it
 gives spots or pimples the hair yellow
 or flaxen

♁

Is a phlegmatic watery feminine
 northern fixed and nocturnal
 It gives a strong able body face
 roundish complexion swarthy comp-
 -browed black hair curly thick
 short neck and a tolerable well
 made person

♂

This is a hot dry fiery choleric
 easterly common Masculine and
 bicorporal and is the last of the
 fiery Triplicity

It gives a person above or middle stature of a well favoured countenance visage longish full and fresh coloured or sunburnt lightish brown hair strong able body comely proportion

vs

Is a cold and dry feminine nocturnal earthy melancholy Cardinal movable Southern and four footed

It gives of an indifferent stature not verry tall his body is dry and spare of a long lean and slender visage long thin and narrow thin beard - dark brown or black Hair long neck and small narrow breath it generally inclines to brevity disposition witty and subtle

vs

Is and Aerial sanguine rational fixed human diurnal sanguine Muscular hot and moist sign besters.

It gives a well set, comely stature
 well composed but not very tall
 visage long and fleshy sanguine
 and moderately clear complexion
 dark flower Hair soft and clear
 skin

It

Is a nocturnal cold and moist
 phlegmatic feminine common
 bicorporal northern ~~Idle~~ effeminate
 sickly fruitless sign waters
 Frigor It gives low and short
 stature and ill composed body the
 face large white or pale complexion
 fleshy or swelling body rather stooping
 when vaulting and holding down
 the Head

Georgium Sidus or Herschel
 Is now considered the most elevated
 but not the largest of all the Planets
 approaching nearest - the stary
 firmament he has no house allotted
 him but participates in the Nature
 of the Manvolent planet ♃ in
 the hiest degree and is equally
 unfortunat in the place in
 which he falls in the Radical

♃

Is cold and dry melancholy earthy
 solitary diurnal Masculin manev-
 olent. when Lord of Asc, or principal su-
 ler of a geniter middle stature dark
 or pale complexion small black eyes
 lean face broad forehead lowering brow
 thick nose and lips. head stooping broad
 shoulders black or brown hair thin beard
 small lean thighs & Leggs if ♃ell digni-
 ed in the Nativity. he will be of

occult and penetrating imagination
 reserved in conversation austere
 very spare in speaking or giving
 grave in disputing. constant to
 his wife - severe cruel in prejudice
 severe in resentment but if ill
 disposed he will be heavy lumpy
 sordid envious mistrustfull cowardly
 sluggardly false dissatisfied with
 every thing evil nature when
 Oriental the stature will be short
 when Occidental thin lean and less
 hairy if N latitude hairy and
 corpulent. if no latitude large bones
 and muscles if meridional fat
 smooth fleshy in his first Station
 strong. and in the second ~~second~~
 Station weak and ill favoured
 these remarks hold good with respect
 to other Planets when ζ is Signi-
 ficator of Travelling - long and

labourious Journeys unfortunate
adventures Imprisonments he is friendly
to ♄ ☉ ♆ but enmity ♂ ♇ and ♃.

if ever ♃ or ♂ rises in a debilitated
state the child dies that year
unless ♄ or ♆ interposes their influence
strongly in the Sign

♄

Is a diurnal Masculine temperately
hot and moist Airy and Languine
when he rules. or is lord of a Geniture
he gives an erect and tall stature a
handsom complexion Rosy. Oval visage
high forehead grey eyes soft brown hair
a well set body short neck large wide
chest. well proportioned members long
feet sober. and manly in speech and
grave and commanding? and he gives
most excellent manners & disposition if
well dignified - faithfull prudent
honourably aspiring after Noble Actions

34
fair in dealing, desirous of serving
all men just honest religious kind
and affectionate to his family &
charitable - wise prudent - hating
all meanness - but if ♀ be afflicted
he indicates a proflicat careless
disposition mean abilities shallow
understanding - wicked - easily per-
suaded to folly extravagance & a
tyrant in his family - if ♀ be east-
more sanguine and ruddy with large
eyes more corpulent if Occidental
in a feminine it gives a more fair
complexion to the female shorter
stature hair thin brown or inclining
to flaxen thin round the temples and
forehead, when he signifies Journeys
pleasant & successful he is friendly
with ♃ ☉ ♀ ♄ ☽ but at enmity with
Mars - ~

♂

35.

To a Masculine nocturnal Mars-
 olent - hot and dry choleric fiery
 the lesser infortune author of quarrels
 war battle - when he rules a Geniture
 Gives a strong well set body short
 stature - large bones rather lean than
 fat - ruddy brown complexion lightish
 hair sharp hazel eye round visage
 bold - active fearless - if well dignified
 of a courageous & fearless - fond of war -
 contention unwilling to submit &
 endeavouring to triumph over his enemies
 prudent in management, if ill
 dignified - gives a trumpeter of his
 own fame indecent dishonest fond
 of malicious quarrels prone to
 wickedness and in danger of committing
 Murder, robbing, traitor turbulent spirit
 rash treacherous fearing nothing
 giving up to fraud & cruelly violence
 of prison if Oriental it gives

a short ruddy complexion small
 head yellow hair dry constitution he
 is only friendly only with ♀ and
 at enmity with all others In
 Journeys he pretends robbery death
 and all other Accidents to the travellers

3

Is feminine nocturnal cold moist
 and phlegmatic. she in his self is
 neither fortunate nor unfortunate but
 has she appears with the configuration
 of other planets. and is either ma-
 nevolent or otherwise as the Aspects
 are. and thus she is most powerful
 for she transmits to us the power
 of all the Superiors

When she rules a geniture she pro-
 duces a full stature fair pale
 complexion round face grey eyes
 lowering brow hairy short Arms

thick hands and feet smooth
 Body inclined to be corpulent
 phlegmatic. if impeded by ☉ gives
 a blemish near the Eye. if in Angles
 with nebulous. fix'd stars the blemish is in
 the Eye. If dignified. soft engaging
 disposition or lover of Arts Ingenious
 given to traveling. providing only for
 the present time timorous and easily
 affrighted loving peace and solitude
 If he be a Mechanic he will
 temper with many Trades pursuing
 none long together. If Unfortunate
 gives a Slothfull. and of no forecast
 Drunken hating Business. and
 of a Bawdry life. When Oriental
 inclines to corpulency when Occidental
 lean ill formed Clownd. She is
 friendly with ♃ ♀ ♁ but at
 Enmity with ♄ and ♀



Is a feminine nocturnal temper-
-ately cold and moist the Lesser
fortune author of Mirth. When
she Ascends. gives a handsome but
not tall fair complexion dark
eyes. sparkling. round visage
regularly smooth. hair. shining
brown. well proportioned neat
Disposition. generally with dimples
in the cheek or Chin or both
wandering eye. light nimble
voice soft early engaged in love.

If well dignified quiet even disposition
inclined to neatness. loving music
prone to Vencry yet Virtuous. yet
given to Jealousey without cause. If weak
Violous evil company lewd women
abandon careles of Character fond
of Taverns and Night houses &c. covetous
adulterous an Atheist given up to the
brutal passions of Nature

2

if Venus be Oriental, he will
 be tall and strait, if Occidental
 short and stooping though comely
 and well favoured, if significator
 of a Journey and well dignified
 with pleasure safety success &
 she is friendly with 4 3 0 9 and 11
 but at enmity with 2



Is the least of all cold dry melan-
 choly - Author of Wit & Ingenuity
 invention - he is Masculine or feminine
 lucky or unlucky as his position may
 happen to be when 6 with a Masculine
 but with a few feminine, good and
 fortunate when with fortunes but evil
 and malicious when in 6 with malign-
 nants, - when he rules - a tall strait
 thin shaped body narrow face deep forehead
 long strait nose eyes lightish thin lips
 & thin little beard brown complexion

light brown hair arms and
 fingers thighs legs long and thin
 if Oriental the stature shorter
 sandy hair sanguine complexion
 large limbs and joints well set with
 small grey eyes. if Occidental comp-
 lection salow - lank body slender limbs
 hollow eyes with a red cast of a dry
 constitution - if well dignified
 the person of a strong subtle imagi-
 nation retentive memory likely
 to become an Orator or Logician
 given to learning. stark. sharp with
 conversation - curious searcher of
 Natural and Occult knowledge inclin-
 ed to travel or trade in foreign parts
 if brought up in the Mercantile
 ambitious in merchandise and
 successfull in gain. but if ill
 will slander and abuse all people

a boaster flatterer, a tale bearer
pretending all knowledge - though
a mere Idiot - and incapable
of much learning boasting of honesty
addicted to mean and petty thievery
he is friendly with all except



Is a Masculine diurnal and dry but
more temperate than Mars If
well dignified is equivalent to one
of the fortunes - when he rules a geniture
a large bony strong body of a sunburnt
Complexion (salow) large high fore
head - with light or sandy curling
hair but inclining to be soon
bald - a fine hazel eye and all
the limbs well proportioned If well
dignified - of a noble and magni-
animous disposition high minded
but humane affable courteous
faithfull and sincere, slow in

and the other point Southward
 where she commences his S
 latitude - the Head is of a benevolent
 nature and almost equal to one of
 the fortunes - and when in Aspect
 with evils, are found to lessen their
 evil in a great degree - but the
 Tail is evil and of an evil tendency
 it increases the power of the evil
 Aspects and lessens the effects of the
 good when in Conjunction with
 them.

The effects of each Planet in all
the twelve Houses.

Saturn in the 1st shews melancholy
with many sorrows. if near the Asc-
endant, short life. if at a distance
innumerable Troubles - in the 2.
destroys the substance in 3 hatred betwixt
breathren, and danger of Loss in Journeys
in the 4 death to the father & Brother
before the native, loss of inheritance
and friends in the 5, death of Children
barrenness, and disobedient ones if living
in the 6 much sickness crosses by accident
loss by cattle in the 7 an ungovernable
wife, short and wretched life with
many public enemies in the 8 violent
death loss of Legacies in the 9 many
losses by sea in the 10 dishonour Imprison-
ment short life to parents death by
sentence of a Judge in the 11 despan
false friends, death of Children in the

12th sorrow trouble imprisonment
and Persecution by private Enemies
These are the common effects of 2
when significator - and weak or
meanly signified

Jupiter in the first gives good
happy & long life Just Honest.
in the 2 profusion of riches in the
3 friendship with breatheren good Jour-
neys in the 4 lands and inheritances
with An honourable life and end. in
the 5. many children obedient and
virtuous in the 6 Health and good
servants. y profits by dealing in cattle
in the 7 an honourable marriage
good wife a honest wise discreet virtuous
woman in the 8 a natural death
long life. legacies in the 9 a true Chris-
tian ecclesiastical yperferment yprof-
itable sea voyages in the 10 yperferment

great and durable Honours - riches
 by trading in the 11. increase of
 riches faithful and great friends
 in the 12. profit by cattle victory
 over private enemies this if he
 be strong. if weak the good will
 be much abated.

Mars in the 1. short life quar-
 relsome scars in the Head or face
 2. poverty want and many troubles
 in 3. evil brethren danger in
 traveling ungodly person in 4 short
 life to the father strife between him
 and Native. destruction to his inhe-
 ritance 5 wicked children of short life
 or sickly, 6 fevers bad servants
 loss of Cattle. 7 quarrels lawsuits
 public enemies. evil wife. sickness
 a follower of lewd women in 8 a
 violent death. loss of substance poverty

9 - changing of religion loss by sea
 by robbers - an Atheist in 10 Unfortu-
 nate Honour Trouble of Magistrates
 sickness to the Mother - Martial
 Spoilment - 11 false friends loss
 of substance 12 Imprisonment
 loss by servants and Cattle many
 private enemies - this if mans be
 weak and afflicted if strong these
 evil abate and sometimes the con-
 trary good takes place.

Sol in 1 gives Honour glory long
 life 2 flow or riches continually
 but a consumption of it. 3 good
 brethren Journeis a stickler for his
 religion 4. honour in Age Great inher-
 itance 5 few children good and virtuous
 6 disease of the Mind 7 good Wife
 Honourable Adversaries sickness. 8
 good portion with a wife danger
 of violent death. 9 truly religious

ecclesiastical preferment gain by
 sea. 10 greatness honour glory and
 power from Kings Princes and noble
 women - much exceeding the
 quality of the natives birth - friends
 of persons of High degree 11. great &
 noble friends - faithful and fulfilling
 ones hopes 12 powerful adversaries
 this, if strong, if weak in many
 things the contrary

Jenius in the 1. health inclined
 to the pleasure of woman 2 riches
 in abundance by womans means
 3 religious loving brethren good
 Journeis 4 an inheritance honour-
 able old age 5 many children
 comly obedient, 6 sickness from
 women kind - faithful servants.
 profit in small cattle 7. an
 incomparably good and virtuous
 wife - few enemies 8 good downy

with a wife a natural death
 9 ecclesiastical preferment a reli-
 gious man 10 profit at sea 10
 honour and preferment by womens
 means - the favour of great women
 11 honourable and faithful female
 friends 12 profit by great Cattle
 free from the power of private
 enemies - this if strong if weak the
 Contrary.

Mercury, in the 1. gives noble
 thoughts good invention graceful,
 near lover of Arts and sciences 2 profit
 good by Arts & books writing and the like
 3 Mathematician, swift and pros-
 perous Journey a scholar of an
 excellent invention crafty brother
 moral person, 4 the getting of an
 inheritance by cunning or deceit.
 5 ingenious children 6 theirish
 servants disease of the breath &
 brain 7. founder of quarrels vexations

Lawsuits. a discreet wife 8
 an Augmentation of estate by
 will and legacy. death by consump-
 tion 9 an incomparable Artist
 one that understands all science
 ever so obscure 10 liberal performer
 or a secretary of some great
 person 11 inconstant friends 12
 private enemies of little effect
 this if strong and not afflicted
 if weak the good will much abate
 Luna in the 1 shews the native
 will travel. will gain superiority
 over others the favour of princes
 and noble women and great ad-
 vantages thereby. 2 sometimes riches
 or poverty. Unstable fortune 3 Many
 Journeys 4 gain by traveling. 5
 many children 6 disease of the brain
 good servants gain by small Cattle
 7 an honourable Marriage. 8

danger of drowning - but other-
 wise a long and healthful life
 9 travels beyond sea inconstancy
 in religion - acquainted with
 Arts and sciences - 10 great honours
 profit by sea voyages favour by
 some noble women 11 friendship
 of Ladies good friends 12 common
 people will be his private enemies
 this if Luna be strong and free
 from affliction if weak and aff-
 licted the contrary

Dragons head in the 1. shews honesty
 2 good estate 3 fortunate journeyes trust
 kindred 4 gain by land and Travels
 5 long life happy and virtuous children
 6 health good servants good servants
 profit in cattle 7 virtuous wife 8
 many legacies natural death 9 sincere-
 ly prosperity at sea 10 durability of
 honours 11 everlasting friends 12 open enemies

but the tail in the same place signifies the contrary - the position of the part of fortune gives substance from all those things signified by the house in which it is posited unless afflicted - by malevolent planet -

General effects of the planets in all the 12 Signs of Zodiac
 Saturn in his own house - signifies wisdom stability in fortune in the Houses of 4 a just man and one that will be rich and receive honour in 8 a strong body and furious in 10 greatness of Honour in 12 a secret lover of women in 7 one that is studious of Arts and sciences in 10 infirmities of the Breast and Lungs

Jupiter in ♃'s houses signifies Avarice
 covetous living allways in fear of poverty
 in his own - infinite riches Honours
 dignities - and amongst great persons
 & clergy men in ♂'s, rises to honour
 by war. in ☉'s Honour from Kings treasure
 from great persons in ♀'s riches by
 women or an honourable wife in
 ♀'s a good Rhetorician in ♃'s increase
 of substance beyond expectation
 Mars in ♃'s houses shews a lofty in-
 genious spirit and wise in ♃'s accu-
 rance of Kings and Noblemen in
 his own a great ingenious what
 mathematician in ☉'s sovereignty of the
 eyes danger of violent death in ♀'s -
 luxuriousness - a Boaster given to
 falsehood - and deluding of woman
 in ♀'s ingenious in Arts - covetous know^l
 deceitful ♃'s wavering furious rash
 man one that may raise honour but will
 precipitate himself from it -

Sol in the house of ♄ shews a dejected
 man in ♃'s houses one that shall
 attain honou in the World. compi-
 anion of Princes. in ♃♂ a commander
 captain or general in an Army
 a subtle crafty politic statesman
 in his own one that may attain
 honour &c - according to the quality
 of his birth in ♄'s one that shall rise
 or fall by means of women in ♄'s
 a good ingenen a soldier a Soldier a
 mathematician. in ♃'s honou by
 difrent women - but such as he shall
 afterward receive prejudice from
 Venus in ♃'s houses signifies hopes
 of honou and many friends - many
 Children and old Age in ♃'s short
 Journeys imprisonments or death in
 ♃'s private and public enemies many
 Journeys a lover of difrent women
 in ♃'s a sincere lover of friends and

and Children in his own - a healthful long lived person Just religious in G's covetous sickly. Religious an enemy to himself - in D's - a traveler and one that will arrive to great honour and preferment.

Mercury in G's house shews - honour traveling by sea, with much pleasure and sickness in G's lands an honourable wife good friends in B's, private enemies sickness many Journeys short life in C's land inheritance - subject to imprisonment, private enemies in G's much health riches - Traveling by sea - Religious - some sickness in his own what ingenuity. Knowledge of Arts & Honour. a lover of Children in the D's. many good friends Journeys by land - - - -

Luna in 7's houses. signifies one
 religious and one that have many
 enemies - sore eyes - in 4's a sickly
 body - but shall obtain honour Res-
 own and favours of great men in
 5. a lover of friends and Children
 in 6's. one that shall be rich
 through his own industry in 7's - a
 great lover of Children and shall
 have many friends in 8's inheritance
 lands private enemies in his own
 happiness and a long life - -

General effects from the
 Positions of the Lords of the House
 The Lord of the 1st in the 1st shews a
 fortunate and happy life & overcome
 enemies in 2. riches and wealth
 by his own industry in 3 many
 Journeys 4 land and inheritance
 5. Children one given to pleasure
 6 sickness 7 Public Adversaries

The man will be an enemy to
 himself & legacies 9 religious -
 learned a traveler in foreign coun-
 tries - 10 honour favour of princes
 11 - friends - 12 danger of imprisonment

The Lord of 2nd in 2nd imports great
 wealth 3 wealth by bretheren and
 traveling 4 by the father in 5 by
 gaming 6 wealth by dealing in
 cattle - 7 by marriage and woman
 kind 8 by legacies - 9 by church Arts
 religion & Sea 10 by honour trade
 merchandize - 11 by friends 12 by
 Great Cattle - in the Ascendant by
 birth or good fortune

The Lord of the 3rd in 3rd shews affectionate
 bretheren good Journeys 4 gain by
 travelling in 5 pleasure in Travelling
 in the Couchness in travelling 7
 thieves and robbers and sometimes the
 native meets with a wife in the 8 -

death in traveling ^{l.} 9 religious
 Journeys 10 preferment Trade
 and the like. 11 study improvem-
 -ent. 12 imprisonment in trav-
 -elling. in 1. ^{for} pleasure and useful
 discoveries. 2 for profit wealth
 riches

The Lord of 4 in 4 shews a good estate
 a father of long life - 5. the estate
 shall go to the natives Children
 in 6 the estate may be acquired
 by Physic. 7 he may have an
 estate with a wife 8 by some
 gift legacy or some wifes portion
 in 9 by merchandize church
 arts. 10 by some office dignity
 or preferment. 11 by means of
 a friend 12 by dealing in great
 cattle in 1. by inheritance 2 by
 purchase 3 by traveling ^{l.} or death
 of Bretheren

The Lord of 5 in the 5 indicates strong
 lively and virtuous Children in 6 that
 his children shall be industrious to gain
 wealth and it may be by his servants
 in 7 that they will travel and that
 the native and they will disagree
 in 8 they shall pose the Mother dow-
 ny and 9 they shall be given to
 pleasure and go to sea for the father
 in 10 they shall be sickly and follow
 the fathers Trade in 11 they shall
 have many public adversaries and
 prove enemies to themselves in 12 they
 shall have many legacies yet
 prove enemies to their parents
 in the 1- they will prove religious
 and learned and love their parents in 2
 they will prove honourable and pose
 the natives substance in 3 they will
 have many friends and of their own
 kindred in 4. many private enemies

60 The Lord of 6th in 6th shews sickness
yet just servants - in 7 sickness
by women and quarrelling - in 8.
danger of violent death & sickness
in 9 sickness at sea in 10 sickness
from hard labour or Trade - 11 by
loss of some friend or frustration of
his expectation in 12 by resolution
of private enemies in 1. by irreg-
ularity of life in 2 by loss of some
estate in 3. by reason of some Journey
4 by loss of some inheritance or dis-
appointment in Trade in 5 by vex-
atious children and loathsomeness of life

The Lord of 7th in the 7th shews sickness
or death to the native yet a
good wife in 8 danger of losing
the wife's fortune in 9 she will
be a stranger to him or a traveller
in 10 she will be Honourable

61
and possess a good inheritance in 11 she
will be an entire lover of him and
of his children in 12 - his private ene-
my in the 1st she will a great lover
of his husband - in 2nd she will be
the augmentation of his estate in
3 she will be a lover of his husbands
kindred and desire to go beyond sea, in
4th ^{she} very honourable - the native will
have land by him in 5 a lover of
his children in 6. she will be a
great affliction to the native & his
self. The Lord of 8th in 8th shews
the native shall die a natural death
and have a rich wife in 9 he will
be in danger of drowning in 10 his
death may be by sentence of a Judge
in 11. by the conspiracy of some pretended
friend in 12 by conspiracy of a private
enemy in 1 by the natives own irregula-
rity in 2. by means on money or goods

62
in 3 either by conspiracy of a
brother Kinsman neighbour or
Thief. in 4 by means of a loss on
an estate or some grief in 5
by drunkenness and debauchery
in 6 by sickness in 7. by public
adversary or public grief
The Lord of the 9th in 9th shews
good sea voyez knowledge of Arts
a religious person in 10 that religion
will be profitable and honourable
and he will be famous for his learn-
ing in 11 church dignity Merchants
dezi by means of a friend in 12
church lands and that he will
have clergymen for his enemies
in the 1- makes him truly re-
ligious & learned. Merchant in
2 Riches by sea Arts and Science
and the Church in the 3 A
Sectarian in 4 Gain by the church

in 5th one of a loose religion
 in 6th honourable church pre-
 ferment - & yet he may be a
 slave in his religion in 7 an
 enemy to the Church in 8 death
 or persecution for his religion

The Lord of the 10th in the 10th shews
 great honour glory and renown in
 11 by means of a friend in the 12
 through an enemy in the 13 by
 the natives own industry in the 2
 by means of his money in 3 by
 a brother kinsman neighbour or
 travel in 4 by his father in 5 by
 a wife in 6 by a wifes fortune *
 in the 9th by religion arts science
 navigation

* It may also signify a violent
 death -

The Lord of the 11 in the 11 denotes
 great friends in 12 private friends
 in the Asc. friends indeed to the
 native in 2 such as shall augmen-
 the natives fortune in 3 his kindred
 or neighbours, or as he shall find
 in travelling in 4 his father
 in 5, some friends of his Wifes in
 the 6 his servants in 7 his wife
 in 8 some brothers servant. in
 the 9 a clergyman Merchant
 or lover of Arts. in 10 Kings
 princes or Great persons

The Lord of 12 in 12th denotes strong
 and powerful private enemies
 in the Asc such as are amongst
 his own family or household in the
 2 some person envying his situ-
 -ation or estate in 3 kindred and
 neighbours in 4th his father
 in 5th his children in 6 his

servants. in the of his wife in
 & some distant relation in 9 some
 merchant foreign dealer or
 dignity in the church in 10 kings
 princeps or men in power in 11
 some particular reputed friend.

AB. Those significations is when the Plan-
 -ets are Strong when weak it signifies Contrary
 Colours given by the planets
 and Signs - - - - -

♄ gives a blackish colour ♃ red
 mixed with green - ♃ a red fiery -
 ♁ all white spotted or light mixed -
 ♀ white & purple & light blue or
 a azure - ☉ all yellow or inclined
 to purple - ♃ white mixed with red
 & red mixed with citron - ♁ all mix.
 red and white ☽ green or Russet
 ♃ red and green ♁ Black speckled with
 blue ♁ Black dark Crimson or Tawny
 ♁ brown colour ♃ yellow green tending to
 red ♁ dark brown ♁ Blue ♁ pure white
 ♁ Glistening white

Signification of several fixed
stars in Nativities - - -

The significator of life joined
to caput Algol makes the
native surley, choleric, danger
of sudden death - To the Pleiades
is shews wantonness ambition
scorn - To Aldebaran courage in
war and a martial inclination
the Lord of the Asc D or ♃ in conjunc-
tion with this star shews a
murderer or a very wicked mind
To Hercules shews curiosity ore
desiring novelties yet steady -
To Cingula Orionis sharp mem-
ory industrious To Lynx an
angry proud fancy giddy To
Hercules subtilty craft boldness
and cruelty to Regules greatness
of spirit a generous magnanimous

mind - ambitious of Rule and
 dominion. To Antares an unweary
 rash person and likely to ruin him-
 self by obstinacy To Aristas a sweet
 noble generous soul a lover of Arts
 and in & be with a curious inventor
 of rare things but if & a violent
 rigid fellow sometimes a fool To
 Aquilla Boldness confidence valor
 but a wicked person To Cauda
 Delphinica delighting in sports
 game shooting hunting or the
 Significator of Substance or cusp
 of the second part of fortune or
 its disposer in & with Regulus
 or with Aristas shews much
 Riches

The Significator of Substance
 the Part of fortune or its Lords
 in & with Adbaran or Caput
 Algol shews loss of estate poverty

The \odot with the Pleiades or
 Praesepe Antares or deneb the
 native will suffer some hurt
 or defect in his eyes it is in-
 curable if it be Angular the \odot &
 with Cingula Orionis and Combust
 shews blindness of one eye the \odot sig-
 nificator of Honour in \odot or within 5°
 Aldebaran or with Hercules or
 Regulus. Aristas. Luna bore Alis
 or Antares shews great Honour
 and preferment - the \odot or \odot in \odot
 with the Pleiades or the Hyades
 shews military preferment the
 same if these stars columniate
 Caput Algol columniating give
^{him} authority over others, so also
 Aldebaran or Antares in \odot with
 \odot or \odot in 1 or 10 give the native
 honour with many difficulties
 and casualties - Aristas Ascending

or columniating gives the native
 religious preferment - *Imahant*
 and *Rigel* in the 1 or 10 - gives immor-
 tal name *Regulus Arcturus*
 or *Humerus Orionis* - in 8 with
 ☉ in 10 gives ample fortune
 great preferment - *Syrus* or
Procyon in 8 with ☉ in 1 or 10 gives
 royal preferment and favour

The *Luminaries* one or both in
 8 with *Caput Algol* or with *Aldabara*
Hercules *Humerus Orionis* or *Antares*
 presage a violent death - ☉ in 8
 with *Caput Algol* in 8 - and his disposition
 in 1 or 8 to ☉ the native will be
 in danger of losing his head - if
 the light culminate he may die
 of some wound. ☽ with *Hercules*
 or *Arcturus* in the Ascendant - 7th
 or 10th - in 8 with ☉ the native

will be in danger of suffocation.
 ♃ with Antares & ♄ in 4-7-10 & 12
 houses with Aldabaran - he will
 die with a sword blow or fall
 ♃ with Antares in 5 to 7 with Alda-
 aran - if he is not hanged he will
 die a violent death - ♃ or ♄
 with Caput Algol and ♃ with
 deneb - he dies by the sentence
 of a Judge, ♃ with Cor Hydna
 afflicted by ♃ or ♄ - he will be in
 danger of Poison or of drowning
 and if the infortune be Angular
 it is so much more Certain
 ♃ with Procyon with ☉ or ♄ with
 Lucida Vulturis or formahant -
 or Ultima in dorso Capricorni
 shews danger of being bit by a
 venenous beast - ♃ with Civus
 and ♃ or ♄ with Ultima in Ala
 Pegasi - a death - by violent

Beast or violent Martial Men
 D with Congula Orionis & ζ with
 Caput Hercules or Antares -
 he will be in danger of water
 or wicked persons - D with Pleadies
 ζ or δ with Regulus - loss of one or
 both eyes - and this is confirmed if
 D be at that time Combust, -

The Pleadies in δ with δ & Regulus
 with ζ are eminent significators
 of an untimely death - Thick
 stars of the 1 magnitude near the
 cusps of the 7 - shews a good and rich
 wife - - But his condition will
 much simpothise with the nature
 of the Stars - Significators joined
 with Stars of the 1 or 2 mag near
 the Eclipse shews great preferment
 and eminent honours - fixed \times stars
 of the nature of ζ in δ with \odot involves

live in many Miseries - fixed
 stars of the nature of ♃ and ☉ or ♄ &
 ♅. gives glory and renown of the
 nature of ♃ & ♄ or ♄ & ♅ Honour
 and wealth - fixed stars in Angle
 gives Admirable Performments - and
 many great gifts and elevates
 from poverty to an extreme
 height of fortune —

The
 VII
 Now
 from
 is also
 house
 any of
 if not
 the be
 take
 and if
 places
 if non
 When
 speak
 And he
 when
 Han
 give
 or ill

Hayleg or Giver of Life

The giver of Life are 5 in number

VII, ☉ Ascendant - Midheaven and ☽

Now the Aphetical Places in the World from whence the giver of life is Taken is also 5. - The Ascendant 11-10-9 and 7. houses - first regard the ☉ and if he be in any of those places he is giver of life But if not - next the ☽ is to be taken but if she be in none of those places - next take notice of ☽ if in the night time and if he be pointed in any of the said places he shall be giver of Life - But if none of these happen - then regard the Ascendant But if neither ☉ nor ☽ be pointed as aforesaid reject all and take the Midheaven - But this is to be understood when the native is likely to die by the Hand of Justice - There can be but one giver of life and when he comes to the body or ill aspect of the Starata the Native dies

The Anareta or Killing Star
 There are five places in the figure
 from whence the Anareta is taken
 and are as follows 2. 12. 8. 6 and 4 houses
 preferring the 8 and its lord first the 4
 and its lord next - the 12 and its Lord next
 the 6 and its Lord next and last of all
 the 2 and its Lord - - note this the 12
 house generally denotes self murder or wilful
 sickness diseases unnatural. The 6 diseases
 natural the 8 death both violent and
 natural, 2 death through covetousness
 and despair the 4 is the grave and end
 of all things - note that fix. Signs
 gives lingering diseases Common - Variable
 and Common gives quick - either of
 life or death - Fev. Signs - gives diseases
 of Cholera Earthy diseases of melancholy
 stercal diseases of Blood and wind - Watery
 Signs diseases of Phlegme - 3 & 9 gives melancholy
 distempers 4 & 9 diseases of the Blood 5 & 10 diseases
 of Cholera and Diseases of Phlegme

Of the Radiation of the Houses and Signs

Of the Houses

| H _o | * | □ | Δ | ∞ |
|----------------|------|------|------|----------------|
| 1 | 3:11 | 4:10 | 5:9 | 7 |
| 2 | 4:12 | 5:11 | 6:10 | 8 |
| 3 | 1:5 | 6:12 | 7:11 | 9 |
| 4 | 2:6 | 1:7 | 8:12 | 10 |
| 5 | 3:7 | 2:9 | 9:1 | 11 |
| 6 | 4:8 | 3:9 | 10:2 | 12 |
| ∞ | Δ | □ | * | H _o |

| | Dg | Si | Dg |
|-------------------------|----|------|----|
| ∞. a Conjunction is | 00 | 00 | 00 |
| *. a sextile is | 60 | or 2 | 00 |
| Semig. a semiquartal is | 45 | or 7 | 15 |
| Q. a quintile is | 72 | or 2 | 12 |
| II. a quartile is | 90 | or 3 | 00 |

Of the Signs

| Si | * | □ | Δ | ∞ |
|----|-------|-------|-------|----|
| γ | II. ∞ | ∞. ∞ | ∞. ∞ | ∞ |
| δ | ∞. ∞ | ∞. ∞ | ∞. ∞ | ∞ |
| II | γ. ∞ | γ. ∞ | γ. ∞ | ∞ |
| ∞ | δ. ∞ | δ. ∞ | δ. ∞ | ∞ |
| ∞ | II. ∞ | II. ∞ | II. ∞ | ∞ |
| ∞ | ∞. ∞ | ∞. ∞ | ∞. ∞ | ∞ |
| ∞ | Δ | □ | * | Si |

| | Dg | Si | Dg |
|----------------------|-----|------|----|
| Δ. a Trine is | 120 | or 4 | 00 |
| Sq. a Siquiquarte is | 135 | or 4 | 15 |
| Bq. a Biquinle is | 144 | or 4 | 24 |
| ∞. a Opposition is | 180 | or 6 | 00 |

A Table of Orbs and Mean
Motion of the Planets in 24 hours

| | Orbs | | Mean Motion | | | |
|------------|------|------|-------------|------|------|---------|
| | d | m | d | m | s | t |
| ♃ Herschel | | | 0 | : | 0 | : 42:41 |
| ♄ Saturn | 10 | - 0 | 0 | - 2 | - 1 | . 0 |
| ♃ Jupiter | 12 | - 0 | 0 | - 4 | - 59 | . 0 |
| ♂ Mars | 7 | - 0 | 0 | - 31 | - 57 | . 0 |
| ☾ Moon | 12 | - 30 | 13 | - 10 | - 36 | . 0 |
| ♀ Venus | 8 | - 0 | 0 | - 59 | - 8 | . 0 |
| ☿ Mercury | 7 | - 30 | 0 | - 59 | - 8 | . 0 |
| ☉ Sol | 17 | - 0 | 0 | - 59 | - 8 | . 0 |

A Table of the Planets greatest
North Latitude & South Latitude

| | North Latitude | | | South Latitude | | |
|------------|----------------|------|------|----------------|------|------|
| | d | m | s | d | m | s |
| ♃ Herschel | | | | | | |
| ♄ Saturn | 2 | . 48 | . 0 | 2 | - 49 | - 0 |
| ♃ Jupiter | 1 | . 38 | . 0 | 1 | - 40 | - 0 |
| ♂ Mars | 4 | . 31 | - 0 | 6 | - 47 | - 0 |
| ☾ Moon | 5 | . 0 | . 17 | 5 | - 0 | - 12 |
| ♀ Venus | 9 | . 2 | . 0 | 9 | - 2 | - 0 |
| ☿ Mercury | 3 | . 38 | . 0 | 3 | - 35 | - 0 |
| ☉ Sol | 0 | . 0 | - 0 | 0 | - 0 | - 0 |

A Table of the Antiscions of the Planets

| Signs into Signs | Degrees into Dg | minutes into m |
|------------------|-----------------|----------------|
| ♈ into ♏ | 1 into 29 | 1 into 59 |
| ♉ — ♎ | 2 — 28 | 2 — 58 |
| ♊ — ♍ | 3 — 27 | 3 — 57 |
| ♋ — ♌ | 4 — 26 | 4 — 56 |
| ♍ — ♋ | 5 — 25 | 5 — 55 |
| ♎ — ♊ | 6 — 24 | 6 — 54 |

| | |
|---|---|
| ♃ | ♏ |
| ♄ | ♏ |
| ♅ | ♏ |
| ♆ | ♏ |
| ♇ | ♏ |
| ♈ | ♏ |
| ♉ | ♏ |
| ♊ | ♏ |
| ♋ | ♏ |
| ♌ | ♏ |
| ♍ | ♏ |
| ♎ | ♏ |
| ♏ | ♏ |
| ♐ | ♏ |
| ♑ | ♏ |
| ♒ | ♏ |
| ♓ | ♏ |

A Planet is said to be in their Joys, when they are posited in those Houses where in they are most strong and Powerful

The Quarters of the Heavens
with the Houses and Signs signified

| | | | | |
|----------------|----|---------|---|--------|
| Angle | 1 | East | ♈ | East |
| Succedent | 2 | NE by E | ♉ | West |
| Cadent | 3 | NNE | ♊ | North |
| Angle of Earth | 4 | North | ♋ | South |
| Succedent | 5 | NW by W | ♌ | E by N |
| Cadent | 6 | WNW | ♍ | W by S |
| Angle | 7 | West | ♎ | N by E |
| Succedent | 8 | SW by S | ♏ | S by E |
| Cadent | 9 | SSW | ♐ | E by S |
| Angle MC | 10 | South | ♑ | W by N |
| Succedent | 11 | SE by S | ♒ | N by W |
| Cadent | 12 | SSE | ♓ | S by W |

Houses Masculine & Feminine

The 1st 3rd 5th 7th 9th 11th houses are
Masculine - The 2nd 4th 6th 8th 10th 12th

houses are Feminine Colours given to
the houses are - first house white 2nd green 3rd
red & yellow 4. red. 5 Black & white 6th Black 8th
Green & black. 9th Green & white 10 Red & white 11 yellow
12 Green

A Table of the Essential Dignity's according to Ptolemy

| Signs | Hours of Days | Exaltation of the Planets | Triplcity D.N | The terms of the Planets | | | | | | Forces of the Planets | | | Determinations | Falls | | |
|-------|---------------|---------------------------|---------------|--------------------------|----|----|---|----|----|-----------------------|----|---|----------------|-------|---|---|
| | | | | ♂ | ♀ | ☿ | ♁ | ♃ | ♄ | ♅ | ♆ | ♁ | | | ♂ | ♀ |
| ♈ | ♂ | ♁ | ♁ | 6 | 14 | 21 | ♂ | 26 | 30 | ♂ | 10 | ♁ | 20 | ♁ | ♁ | ♁ |
| ♉ | ♀ | ♁ | ♁ | 8 | 15 | 22 | ♂ | 26 | 30 | ♂ | 10 | ♁ | 20 | ♁ | ♁ | ♁ |
| ♊ | ♀ | ♁ | ♁ | 7 | 14 | 21 | ♂ | 25 | 30 | ♂ | 10 | ♁ | 20 | ♁ | ♁ | ♁ |
| ♋ | ♁ | ♁ | ♁ | 6 | 13 | 20 | ♂ | 27 | 30 | ♂ | 10 | ♁ | 20 | ♁ | ♁ | ♁ |
| ♌ | ♁ | ♁ | ♁ | 6 | 13 | 19 | ♂ | 25 | 30 | ♂ | 10 | ♁ | 20 | ♁ | ♁ | ♁ |
| ♍ | ♁ | ♁ | ♁ | 7 | 13 | 18 | ♂ | 24 | 30 | ♂ | 10 | ♁ | 20 | ♁ | ♁ | ♁ |
| ♎ | ♁ | ♁ | ♁ | 6 | 11 | 19 | ♂ | 24 | 30 | ♂ | 10 | ♁ | 20 | ♁ | ♁ | ♁ |
| ♏ | ♁ | ♁ | ♁ | 8 | 14 | 21 | ♂ | 27 | 30 | ♂ | 10 | ♁ | 20 | ♁ | ♁ | ♁ |
| ♐ | ♁ | ♁ | ♁ | 6 | 14 | 19 | ♂ | 25 | 30 | ♂ | 10 | ♁ | 20 | ♁ | ♁ | ♁ |
| ♑ | ♁ | ♁ | ♁ | 6 | 12 | 19 | ♂ | 25 | 30 | ♂ | 10 | ♁ | 20 | ♁ | ♁ | ♁ |
| ♒ | ♁ | ♁ | ♁ | 8 | 12 | 20 | ♂ | 25 | 30 | ♂ | 10 | ♁ | 20 | ♁ | ♁ | ♁ |
| ♓ | ♁ | ♁ | ♁ | 8 | 14 | 20 | ♂ | 26 | 30 | ♂ | 10 | ♁ | 20 | ♁ | ♁ | ♁ |

A Table shewing the Fortitudes and Debilities of the Planets

| | | |
|---|-----------|-----------|
| A planet in his own house or in mutual reception by house has dignities | Dignities | 5 |
| In Exaltation or reception by Exaltation | | 4 |
| In Triplicity | | 3 |
| In Terms | | 2 |
| In Decant of Phasis | | 1 |
| Debilities | | |
| In Determinant | | 5 |
| In Fall | | 4 |
| In Peregrine | | 5 |
| Accidental Fortitudes | | Dignities |
| In Medium Coeli or Ascendant | | 5 |
| In 7 th , 4 th or 11 th houses | | 4 |
| In 2 nd or 5 th house | | 3 |
| In 9 th House | | 2 |
| In 3 rd House | | 1 |
| Direct | | 4 |
| In Hayetze | | 1 |
| Swift in motion | | 2 |

| | Dignities |
|--|-----------|
| ♃ ♀ or ♂ Oriental - - - - - | 2 |
| ♀ ♀ and ♀ Occidental - - - - - | 2 |
| Free from Combustion - - - - - | 5 |
| In Capricorn or Heat of Sol - - - - - | 5 |
| Besieged by Jupiter and Venus - - - - - | 5 |
| Partil conjunction of ♂ - - - - - | 4 |
| In Partil Conjunction with ♀ or - - - - - | 5 |
| In Partil Trine of ♀ or ♀ - - - - - | 4 |
| In Partil sextile of ♀ or ♀ - - - - - | 3 |
| In Conjunction with Cor Leonis in 25 th - - - - - | 6 |
| In Conjunction with Spica Virginis in 18 th - - - - - | 5 |
| In terms of Jupiter or Venus - - - - - | 1 |
| Accidental Debilities | |
| In the 12 th House - - - - - | 5 |
| In the 8 th or 6 th House - - - - - | 4 |
| Retrograde - - - - - | 5 |
| Slow in Motion - - - - - | 2 |
| ♃ ♀ or ♂ Occidental - - - - - | 2 |
| ♀ or ♀ Oriental - - - - - | 2 |
| Decreasing in Light - - - - - | 2 |
| Combustion with the Sun - - - - - | 5 |

Debilities

| | Debilities |
|---|------------|
| Under the Sun beams - - - - - | 4 |
| Besieged by ♃ and ♂ - - - - - | 6 |
| Partil Conjunction of ♃ - - - - - | 4 |
| Partil Conjunction with ♃ or ♂ | 5 |
| Partil opposition of ♃ or ♂ - - - - - | 4 |
| Partil Quartil of ♃ or ♂ - - - - - | 3 |
| In Conjunction with Caput Algol in 25° of ♂ or within 5° - - - - - | 5 |
| In Terms of ♃ or ♂ - - - - - | 1 |

A Table of the Fortitudes and Debilities
of the Part of Fortune

| Dignities | | Debilities | |
|--|---|---|--------|
| The Part of fortune in ♂ or ♁ | 5 | The ☽ in 1 st ♃ or ♁ | 5 |
| In 1 st ♃ or ♁ - - - - - | 4 | In 12 th house - - - - - | 5 |
| In II - - - - - | 3 | In the 8 th or 6 th house | 4 |
| In III - - - - - | 2 | In ♂ of ♃ or ♂ - - - - - | 5 |
| In the Ascend or 10 house | 5 | In ♂ of ♃ - - - - - | 5 |
| In 7 th or 11 th house | 4 | In ♂ of ♃ or ♂ | 4 |
| In 2 nd or 5 th house | 3 | In ☐ of ♃ or ♂ | 3 |
| In 9 th house - - - - - | 2 | In Terms of ♃ or ♂ | 2 |
| In 3 rd house - - - - - | 1 | In ♂ Caput algol Combuot | 4 5 |

Moore Cold moist in the 384
 degree his Herbs are generally
 sweet Taste thick leaved
 juicy watery soon grow up in
 watery Places

Growing in Widderridge Rocks Hills
 mountains Forrest fountains Ponds
 Rivers Sea-shore springs High ways

Her Nature Opening Cooling Purging

Herbs growing by lakes are generally Cold and moist
 in marshy Places Cold and a little Dry The
 Fluviatile Hot and Dry mariene Cold & Dry
 Littoral mariene Hot & dry Fast Soil Hot and
 moist Hungary ground Hot & dry In mean
 Earth Suitable to Nature In Sandy Ground
 Hot & dry In mountains Hot & dry of subtile
 parts In fields moderately Hot & dry In hollow
 Places Cold & moist In Hilly Temperate In
 Springy Places Cold & dry

| A Synopsis of | |
|---------------|--|
| 1 | The Signs are |
| 2 | Points of the compass - |
| 3 | Masculin diurnal and hot - |
| 4 | Feminine nocturnal and cold |
| 5 | Moist Signs |
| 6 | Dry Signs - |
| 7 | Movable and Cardinal Signs - |
| 8 | Fixed Signs |
| 9 | Common Signs |
| 10 | Choleric fiery hot and dry eastern |
| 11 | Melancholy earthy cold and dry South |
| 12 | Sanguine Aeryal hot and moist West |
| 13 | Phlegmatic Watery cold moist. frigid North |
| 14 | Barren Signs |
| 15 | Commanding Motherly Signs - |
| 16 | Obeysing Sautherly |
| 17 | Signs of Right and Long Ascension |
| 18 | Signs of Oblique or short Ascension |
| 19 | Mute and slow of voice |
| 20 | The spring hot and moist |
| 21 | The summer dry and hot |
| 22 | Harvest cold and dry |
| 23 | winter cold and moist |
| 24 | Beastial Signs |
| 25 | Humane Signs |
| 26 | Double bodied Signs |

The Signs

| | | | | | | | | | | | | |
|----|---|----|----|---|----|----|---|----|----|---|---|---|
| 1 | γ | δ | II | Ϟ | Ω | ♃ | ♄ | ♅ | ♆ | ♇ | ♈ | ♉ |
| 2 | e | se | | n | en | sw | w | ne | es | s | | |
| 3 | γ | | II | | Ω | | ♃ | | ♆ | | ♈ | |
| 4 | | δ | | Ϟ | | ♃ | | ♄ | | ♇ | | ♉ |
| 5 | | | II | Ϟ | | | ♃ | ♄ | | | ♈ | ♉ |
| 6 | γ | δ | | | Ω | ♃ | | | ♆ | ♇ | | |
| 7 | γ | | | Ϟ | | | ♃ | | | ♇ | | |
| 8 | | δ | | | Ω | | | ♃ | | | ♈ | |
| 9 | | | II | | | ♃ | | | ♆ | | | ♉ |
| 10 | γ | | | | Ω | | | | ♆ | | | |
| 11 | | δ | | | | ♃ | | | | ♇ | | |
| 12 | | | II | | | | ♃ | | | | ♈ | |
| 13 | | | | Ϟ | | | | ♃ | | | | ♉ |
| 14 | | | II | | Ω | ♃ | | | | | | |
| 15 | γ | δ | II | Ϟ | Ω | ♃ | | | | | | |
| 16 | | | | | | | ♃ | ♄ | ♆ | ♇ | ♈ | ♉ |
| 17 | | | | Ϟ | Ω | ♃ | ♄ | ♅ | ♆ | | | |
| 18 | γ | δ | II | | | | | | ♇ | ♈ | ♉ | ♊ |
| 19 | | | | Ϟ | | | | ♃ | | | | ♉ |
| 20 | γ | δ | II | | | | | | | | | |
| 21 | | | | Ϟ | Ω | ♃ | | | | | | |
| 22 | | | | | | | ♃ | ♄ | ♆ | | | |
| 23 | | | | | | | | | | ♇ | ♈ | ♉ |
| 24 | γ | δ | | | Ω | | | | ♆ | ♇ | | |
| 25 | | | II | | | ♃ | ♄ | | | | ♈ | |
| 26 | | | II | | | | | | ♆ | | | ♉ |

| Dg | h | m | Dg | h | m | Dg | h | m |
|----|---|----|----|---|----|-----|----|----|
| 1 | 0 | 4 | 31 | 2 | 4 | 90 | 4 | 40 |
| 2 | 0 | 8 | 32 | 2 | 8 | 80 | 5 | 20 |
| 3 | 0 | 12 | 33 | 2 | 12 | 90 | 6 | 00 |
| 4 | 0 | 16 | 34 | 2 | 16 | 100 | 6 | 40 |
| 5 | 0 | 20 | 35 | 2 | 20 | 110 | 7 | 20 |
| 6 | 0 | 24 | 36 | 2 | 24 | 120 | 8 | 00 |
| 7 | 0 | 28 | 37 | 2 | 28 | 130 | 8 | 40 |
| 8 | 0 | 32 | 38 | 2 | 32 | 140 | 9 | 20 |
| 9 | 0 | 36 | 39 | 2 | 36 | 150 | 10 | 0 |
| 10 | 0 | 40 | 40 | 2 | 40 | 160 | 10 | 40 |
| 11 | 0 | 44 | 41 | 2 | 44 | 170 | 11 | 20 |
| 12 | 0 | 48 | 42 | 2 | 48 | 180 | 12 | 00 |
| 13 | 0 | 52 | 43 | 2 | 52 | 190 | 12 | 40 |
| 14 | 0 | 56 | 44 | 2 | 56 | 200 | 13 | 20 |
| 15 | 1 | 00 | 45 | 3 | 00 | 210 | 14 | 00 |
| 16 | 1 | 4 | 46 | 3 | 4 | 220 | 14 | 40 |
| 17 | 1 | 8 | 47 | 3 | 8 | 230 | 15 | 20 |
| 18 | 1 | 12 | 48 | 3 | 12 | 240 | 16 | 00 |
| 19 | 1 | 16 | 49 | 3 | 16 | 250 | 16 | 40 |
| 20 | 1 | 20 | 50 | 3 | 20 | 260 | 17 | 20 |
| 21 | 1 | 24 | 51 | 3 | 24 | 270 | 18 | 00 |
| 22 | 1 | 28 | 52 | 3 | 28 | 280 | 18 | 40 |
| 23 | 1 | 32 | 53 | 3 | 32 | 290 | 19 | 20 |
| 24 | 1 | 36 | 54 | 3 | 36 | 300 | 20 | 00 |
| 25 | 1 | 40 | 55 | 3 | 40 | 310 | 20 | 40 |
| 26 | 1 | 44 | 56 | 3 | 44 | 320 | 21 | 20 |
| 27 | 1 | 48 | 57 | 3 | 48 | 330 | 22 | 00 |
| 28 | 1 | 52 | 58 | 3 | 52 | 340 | 22 | 40 |
| 29 | 1 | 56 | 59 | 3 | 56 | 350 | 23 | 20 |
| 30 | 2 | 00 | 60 | 4 | 00 | 360 | 24 | 00 |

in
40
20
00
40
20
00
40
20
0
40
20
00
40
20
00
40
20
00
40
20
00
40
20
00
40
20
00

| Hours | Degrees | Minute | Degrees | Minute | Minute | Degrees | Minute |
|-------|---------|--------|---------|--------|--------|---------|--------|
| 1 | 15 | 1 | 0 | 15 | 31 | 7 | 45 |
| 2 | 30 | 2 | 0 | 30 | 32 | 8 | 00 |
| 3 | 45 | 3 | 0 | 45 | 33 | 8 | 15 |
| 4 | 60 | 4 | 1 | 00 | 34 | 8 | 30 |
| 5 | 75 | 5 | 1 | 15 | 35 | 8 | 45 |
| 6 | 90 | 6 | 1 | 30 | 36 | 9 | 00 |
| 7 | 105 | 7 | 1 | 45 | 37 | 9 | 15 |
| 8 | 120 | 8 | 2 | 00 | 38 | 9 | 30 |
| 9 | 135 | 9 | 2 | 15 | 39 | 9 | 45 |
| 10 | 150 | 10 | 2 | 30 | 40 | 10 | 00 |
| 11 | 168 | 11 | 2 | 45 | 41 | 10 | 15 |
| 12 | 180 | 12 | 3 | 00 | 42 | 10 | 30 |
| 13 | 195 | 13 | 3 | 15 | 43 | 10 | 45 |
| 14 | 210 | 14 | 3 | 30 | 44 | 11 | 00 |
| 15 | 225 | 15 | 3 | 45 | 45 | 11 | 15 |
| 16 | 240 | 16 | 4 | 00 | 46 | 11 | 30 |
| 17 | 255 | 17 | 4 | 15 | 47 | 11 | 45 |
| 18 | 270 | 18 | 4 | 30 | 48 | 12 | 00 |
| 19 | 285 | 19 | 4 | 45 | 49 | 12 | 15 |
| 20 | 300 | 20 | 5 | 00 | 50 | 12 | 30 |
| 21 | 315 | 21 | 5 | 15 | 51 | 12 | 45 |
| 22 | 330 | 22 | 5 | 30 | 52 | 13 | 00 |
| 23 | 345 | 23 | 5 | 45 | 53 | 13 | 15 |
| 24 | 360 | 24 | 6 | 00 | 54 | 13 | 30 |
| | | 25 | 6 | 15 | 55 | 13 | 45 |
| | | 26 | 6 | 30 | 56 | 14 | 00 |
| | | 27 | 6 | 45 | 57 | 14 | 15 |
| | | 28 | 7 | 00 | 58 | 14 | 30 |
| | | 29 | 7 | 15 | 59 | 14 | 45 |
| | | 30 | 7 | 30 | 60 | 15 | 00 |

The foregoing Table converts Equinoctial degrees into hours & minutes
 The latter Tables converts Hours & minutes of Time into Degrees and minutes of the Equator.

| D | ⁹⁰ y | day | h | D | y | day | h | D | y | day | h | no |
|----|-----------------|-----|----|----|----|-----|----|----|----|-----|----|----|
| 1 | 1 | 5 | 8 | 31 | 31 | 165 | 23 | 61 | 61 | 226 | 13 | 1 |
| 2 | 2 | 10 | 17 | 32 | 32 | 171 | 7 | 62 | 62 | 331 | 21 | 2 |
| 3 | 3 | 16 | 1 | 33 | 33 | 176 | 16 | 63 | 63 | 337 | 6 | 3 |
| 4 | 4 | 21 | 10 | 34 | 34 | 182 | 0 | 64 | 64 | 342 | 14 | 4 |
| 5 | 5 | 26 | 18 | 35 | 35 | 187 | 8 | 65 | 65 | 347 | 23 | 5 |
| 6 | 6 | 32 | 3 | 36 | 36 | 192 | 17 | 66 | 66 | 353 | 7 | 6 |
| 7 | 7 | 37 | 11 | 37 | 37 | 198 | 1 | 67 | 67 | 358 | 16 | 7 |
| 8 | 8 | 42 | 20 | 38 | 38 | 203 | 9 | 68 | 68 | 364 | 0 | 8 |
| 9 | 9 | 48 | 4 | 39 | 39 | 208 | 18 | 69 | 70 | 4 | 3 | 9 |
| 10 | 10 | 53 | 13 | 40 | 40 | 214 | 3 | 70 | 71 | 9 | 11 | 10 |
| 11 | 11 | 58 | 21 | 41 | 41 | 219 | 11 | 71 | 72 | 14 | 20 | 11 |
| 12 | 12 | 64 | 6 | 42 | 42 | 224 | 20 | 72 | 73 | 20 | 4 | 12 |
| 13 | 13 | 69 | 14 | 43 | 43 | 230 | 4 | 73 | 74 | 25 | 13 | 13 |
| 14 | 14 | 74 | 23 | 44 | 44 | 235 | 13 | 74 | 75 | 30 | 21 | 14 |
| 15 | 15 | 80 | 7 | 45 | 45 | 240 | 21 | 75 | 76 | 36 | 5 | 15 |
| 16 | 16 | 85 | 16 | 46 | 46 | 246 | 6 | 76 | 77 | 41 | 14 | 16 |
| 17 | 17 | 91 | 0 | 47 | 47 | 251 | 14 | 77 | 78 | 46 | 22 | 17 |
| 18 | 18 | 96 | 8 | 48 | 48 | 256 | 23 | 78 | 79 | 52 | 7 | 18 |
| 19 | 19 | 101 | 17 | 49 | 49 | 262 | 7 | 79 | 80 | 57 | 15 | 19 |
| 20 | 20 | 107 | 1 | 50 | 50 | 267 | 16 | 80 | 81 | 62 | 24 | 20 |
| 21 | 21 | 112 | 10 | 51 | 51 | 273 | 0 | 81 | 82 | 68 | 8 | 21 |
| 22 | 22 | 117 | 18 | 52 | 52 | 278 | 8 | 82 | 83 | 73 | 17 | 22 |
| 23 | 23 | 123 | 3 | 53 | 53 | 283 | 17 | 83 | 84 | 79 | 1 | 23 |
| 24 | 24 | 128 | 11 | 54 | 54 | 289 | 1 | 84 | 85 | 84 | 10 | 24 |
| 25 | 25 | 133 | 20 | 55 | 55 | 294 | 10 | 85 | 86 | 89 | 19 | 25 |
| 26 | 26 | 139 | 4 | 56 | 56 | 299 | 18 | 86 | 87 | 95 | 3 | 26 |
| 27 | 27 | 144 | 13 | 57 | 57 | 305 | 3 | 87 | 88 | 100 | 11 | 27 |
| 28 | 28 | 149 | 21 | 58 | 58 | 310 | 11 | 88 | 89 | 105 | 20 | 28 |
| 29 | 29 | 155 | 6 | 59 | 59 | 315 | 20 | 89 | 90 | 111 | 4 | 29 |
| 30 | 30 | 160 | 14 | 60 | 60 | 321 | 4 | 90 | 91 | 116 | 13 | 30 |

| m | day | h | m | day | h |
|----|-----|----|----|-----|----|
| 1 | 6 | 4 | 31 | 191 | 11 |
| 2 | 12 | 8 | 32 | 197 | 16 |
| 3 | 18 | 30 | 33 | 203 | 20 |
| 4 | 24 | 17 | 34 | 210 | 0 |
| 5 | 30 | 21 | 35 | 216 | 4 |
| 6 | 37 | 1 | 36 | 222 | 9 |
| 7 | 43 | 6 | 37 | 228 | 13 |
| 8 | 44 | 10 | 38 | 234 | 17 |
| 9 | 55 | 14 | 39 | 240 | 21 |
| 10 | 61 | 18 | 40 | 247 | 2 |
| 11 | 67 | 23 | 41 | 253 | 6 |
| 12 | 4 | 3 | 42 | 259 | 10 |
| 13 | 80 | 7 | 43 | 265 | 14 |
| 14 | 86 | 11 | 44 | 271 | 18 |
| 15 | 92 | 16 | 45 | 277 | 23 |
| 16 | 98 | 20 | 46 | 284 | 3 |
| 17 | 105 | 0 | 47 | 290 | 7 |
| 18 | 111 | 4 | 48 | 296 | 11 |
| 19 | 117 | 9 | 49 | 302 | 16 |
| 20 | 123 | 13 | 50 | 308 | 20 |
| 21 | 129 | 17 | 51 | 315 | 0 |
| 22 | 135 | 21 | 52 | 321 | 4 |
| 23 | 142 | 1 | 53 | 327 | 9 |
| 24 | 148 | 6 | 54 | 333 | 13 |
| 25 | 154 | 10 | 55 | 339 | 17 |
| 26 | 160 | 14 | 56 | 345 | 21 |
| 27 | 166 | 18 | 57 | 352 | 2 |
| 28 | 172 | 23 | 58 | 358 | 6 |
| 29 | 179 | 3 | 59 | 364 | 10 |
| 30 | 185 | 4 | 60 | 374 | 14 |

D represents degrees M minutes Y Years. day. days. h. Hours.

This measure of time was perfected by Valentine Nailor.

The first table turns day into years days and hours.

The second table turns minutes into days and hours.

Besieged, represents a Planet to
situated between two others —

CaZimy represents a Planet only
or within 17 minutes of ☉ Body

A planet within $8^{\circ} 30'$ of the ☉ Body
either before or behind him is in Conjunction

Prohibition is when two planets
are applying one to another but
before they can come to a partial
aspect a nother planet swifter
in motion interposes his rays and
hinder his application

Refrenation is when one signi-
ficator is applying to another by
body or aspect but before he
comes to a perfect aspect he falls
Retrograde

Translation of Light and Nature
is when a lighter Planet separates
from a more weighty and pre-
sently joins to a nother more
heavy or proponderous

Collection of Lights is when two planets are not in aspect one with another but both casts their aspects to a more mighty planet than themselves. and they receive him in some of their Dignities

Reception is when planets are in each others Dignities by Their houses Triplicity or Term The reception by house is Strongest. the Ex is next Triplicity Peregrination is when a planet is out of all his essential Dignities

Void of Course is when a Planet is separated from one planet and do not apply or meet with the body or Aspect of another during the time he remains in the sign they are posited It is often so and is then weak

⁹⁴
Hazy. or Hazy is when a
Masculin Diurnal Planet is above
the Earth in a Masculin Sign
and so when a feminine Nocturnal
Planet is ⁱⁿ a feminine sign in
the Night

Directiō. is when a Planet
mooves forward in a Sign
Retrogradation is when a Planet
moves backward, contrary to the
Order of the Signs

Stationery is when a Planet
stands still

Oriental is when a Planet
rises before the Sun

Occidental is when a Planet
seteth after the Sun

Longitude of a Planet or Star
is his distance from the beginning
of Aries

95.

Latitude of Planet is his distance from the Ecciptric

There are 3 ways for which Planets apply to each other -

The 1. is when a more swift Planet overtakes a more prolix - derous one

The 2. is when two Planets are Retrograde and apply to each other Backward. which is an evil application.

The 3. is when one Planet is direct and the other Retrograde and apply to an aspect of each other. or by Body

N.B. the superior Planets never apply to the Inferiors but when Retrograde which is an evil application

The Pars Mortis or Part of Death

Is taken by day from 7 to 4 and in
the night from 4 to 7 and project-
ed from the Ascendant as the
Part of fortune is from the ☉ to
the ☽.

Critical Times might be known
by the Critical Circle in Acute diseases
by the ☽ and in Chronic by the ☉ so that
1 year in Chronic is equal to $2\frac{1}{2}$ in Acute
or thus direct the ☉ or ☽ to the afflicting
Planets and L of 4 or 8. to ☽ or ☉. Δ or * ☽ or
any aspect infixed Signs Months' movable signs Days

On Sickness &c 97

If thou wish to know the dis-
ease of a person Erect the Scheme
of the Heavens for the time
he was taken (if that can be
obtained but if not erect it
for the time you are consulted)
and then observe the afflicting
Planets & Signs. then look in the
table and see what parts the
planets govern in that sign
then notice what part the Planet
rules (whether Blood, Bones Heart &c)
then see what diseases are under
the signs &c and Describe it
Accordingly.

also. thou may make
a critical circle to determine
his disease. such as to know when
the critical days falls. (thus)

28.
Divide the whole circle of
Zodiac into 16 Equal parts.
(then each will contain 22
degrees 30 minutes) } Now observe
the Sign degree and minute the
Dis in in your figure, which you
must call Decumbiture then add
22° 30' to it, and call that Intercedental
time, then add 22° 30' more and call
that Judicial then add 22° 30' more
and call that Intercedental time
then 22° 30' more and call that the
first Crisis or Mortal time and
so continue so you will have 3
Crisis & Intercedental times and
4 Judicial times and the Decumbiture
But remember this the Intercedental
time is not so dangerous as the Judicial
and a Judicial time is not so dangerous
as a Critical time. But a Inter-
cedental time seldom proves Mortal

Now if you find a Patient in
proving upon a Critical time it
gives great hopes of Recovery the
same upon a Judicial time &c

Now M^r Saunders
teacheth thus. In a
Question of Sickness &c if the
Lord of the Asc do not behold the
Ascendant, he is not to be considered
as Lord of the Ascendant -

But the Lord of the Exaltation
must be called Lord of the Ascendant
if he behold it. But if not
the Lord of the Triplcity must
be calld Lord of the Ascend. if he behold
it. But if not. the Lord of the
Terms must be calld Lord of the
Ascend. if he behold it. But if not
the L of the Hour if he behold it

As the Lord of the Hour must always
be considered as well as the Lord of the
Ascend if he be not Retrograde nor Combust &c

for her states that the Lord of
the Horn is as strong as the
Lord of the Ascendant, if he
is ⁱⁿ any of his own Dominions

He also gives this rule to
observe in all cases of Sickness
and if you find all to agree the
Patient surely Dies unless you
assist to save

If the Lord of the Ascendant
be combust ^{Ret.} or If the Lord of
the Ascendant be in \square or \circ
of ζ or δ or the \odot or if the Lord
of the Ascend be near the
cusp of the 8. or joined to the
L of 8. either by \square or \circ
Likewise if the \odot be combust
or if she be in \square or \circ of ζ
 δ or \odot if she be in the 8 or
joined to the Lord of the 8th.

either by δ \square or \circ -

Now if you find the number of fatal signs amount to three or four, and neither the Lord of the Ascend nor the \odot do respect or are respected by Υ or ♀ , by δ \times or Δ applying the one to the other Direct or with \square or \circ with Υ or ♀ with strong mutual reception for the \square or \circ of Υ or ♀ without mutual reception cannot save him again -

If the Lord of the Ascend and δ be one and the δ of the \odot with the significator of life is good - and in δ with the ♄ or significator of death is Bad

also if the Lord of the Ascend
be joined with the D she
being Lady of the 8 house
and 4 or ♀ especially ruling
the Ascend; and also a X or
Δ of 4 or ♀ planet (but
being combust or Retrograde
is not sufficient) may
be good

In giving Physic let not
the Lord of the 6 be in the 12. 3. or
9th or within 5° of it

Let not the Lord of the 6 be in
the 1. 10. 6. 4. 7. 5. or 11 nor let the
D apply to the Lord of the 6.

The time to apply Medicines
for the cure of any member or
part afflicted is when the Planets
and sign governing is free from
ill beams of Bad Planets. γ in Δ or δ
 \square or \circ and when the \odot is in δ Δ or \times
of γ or δ and in that sign which
rules the member pained

If γ be L of δ . the Disease will be
of long or at least longer than if
 γ or \odot be L of δ . except γ be in γ
or δ in γ . for then he will soon
recover

If L of Asc . and in δ . the Disease come
of Cold or much Grief &

If L of Asc in δ . the Disease come by
Wirth or cold upon heat Bloud or Wind
If so posited the Disease come by great
Anger or fretting or a heavy blow

♁ posited as aforesaid it came by
noting Love or Lechery

♁ posited it came by fear or over
much study or thin melancholy

♁ so posited it came by taking
cold thro' overmuch moisture or by
Traveling

If the Party has taken
* Physic

If an evil planet be in the 9
house he has taken Physic but
it has been improper consequently
has done him harm if a good
Planet be there it has done him
good and he is easily cured

The L of 6 Unfortunate it will
be a long continuance if he be in
an Angle

The L of 12 house shews the cause
and what humour aboundeth from
the New Moon to the full

Also the L of 6 house shews what
humour aboundeth from the point
of the 0° to the point of the 8
of the Disposition of the
Patient

If ♃ ♄ be in Ase. or in good
aspect to the L thereof the sick
will be ruled and take Medicine

If evil planets be there or in 15
or 0° thereof judge otherwise

of Medicines

Good planets in 4. apply your
medicines cheerfully. they will
do good the patient will receive
them willingly

But if ♃ ♄ or ♀ in 4 the Medicines
will grieve the Patient and his
servants will disgrace the Physician

The L of 10 fortunate and a good planet
there he will cure the sick and be
well rewarded - also get Credit.

If the Disease shall be
Long or short

If L of M and D be in an Angle
or in Δ or \ast with Υ or ζ the sickness
will Vanish in a short time

But if the significatus be
weak cadent. combust or
retrograde or otherwise afflicted
of Υ or δ or L of 8. 6. or 12. it is
an Argument. the Nature of the
Patient is Weak and the Disease
Long

The L of 6. in Msc. or L of Msc.
in 6. prolongeth the Disease
and much longer if in a fixed
sign The D in a moveable
sign at the beginning of the
sickness - it will soon change
if in a fixed sign it will con-
tinue long

If ζ or δ Ascend or in 6 or 8 house
the Distemper will encrease and
continue long, and without the
good aspects of γ or η it ends in
death.

δ slow in motion and increasing
increaseth the Sickness.

δ Departing from conjunction
of L of 6. or Asc. increaseth the
distemper

Disposition of δ afflicted shows
the same and more Dangerous
if he be in L of 6. 8. or 12 houses
The 6. house being a fixed sign
and ζ or δ L of 6 or in 6. denotes
long sickness

But if common signs be in
6 or the Planet from whence
the δ or L of Asc. is separated
in common signs denotes re-
covery & Short sickness

If L of Asc. apply Δ or \times the
sick will live.

But if ζ be recipient and
separate from the L of Asc
he shall die unless ζ good
put in their friendly rays
 \times If evil planet in Asc. and
an infortune with L of Asc
the L of ζ afflicted no medicine
will do him good

The L of Asc. or ν both asp-
ecting the L of ζ by \square or \circ it
is mortal

The L of Asc and ν in \square or \circ
especially by night is deadly
Good planets in Angles or House
or with L of Asc is good except
they are weak or afflicted
Any significator of the body
applying to an infortune

the Disease will encrease if
they separate

Of falling sick Under ζ or η ,
any person taking their bed
when ζ or η afflicts the D. they
are Dull heavy drowsy scarce
able to move their sick Members
being almost benumbed with cold
and stop'd with Defluations &
at first lying down can scarce
be awaked often sighing
and short winded is pulses
weak his limbs dry and cold
therefore wharm and hot things
which loosens and molifies
do soon remove the affliction

Of falling sick under ^{or} O & S
They are strangely read in
mind but know not for what
being verry unquiet and trouble-
- some. the body allover in burn-
- ing heats - verry Thasty and
angry coveting drinks. being
allways thirsty. eating verry
little reveling those near
them. their pulses. swift &
inordinate the face red and
usually swoln - bleeding in
this case is verry necessary
until the fifth day then
purging will be more bene-
- ficial to remove gross humours
which I shis Up.

Visit not the Sick in the
hour of 7 or 8

Visit in the hour of 7 9

when the L of 6 is in 11 or 0 of the
L of Use in Aquarius degrees
the patient is incurable

If the beginning of a Sign be on
the 6. the Disease will increase

If the middle of the Sign be
there it is at the height if the
latter end. it is decreasing -

If the D apply to a Planet direct
and swift in motion and Oriental
Short Sickness

If the D apply to a Retrograde Planet
or Slow in motion Occidental Long
Sickness

D apply to 4 or 9 Good
D apply to 7 or 8 Bad

8 of the L of 4 and L of 8 Bad

8 of the L of Use with the L of 8. 6. 4 or

12 Bad Division of L of Use Bad

L of 8 in 12 and L of Use in 4. 6 or 7
afflicted Death

It is more afflicted of 8. when increa-
sing in light. and more afflicted
of 7 when Decreasing

It Does more mischief when he is in
masculin Signis Oriental and above
the earth do contrary in the
judgment of 7

Diseases in Spring and Summer
is Acute Short and easy cured

Diseases of Autumn and Winter
Chronic Long and difficult to cure

The Asc. and despositon of Q and D
bears significaton of Mind & Spirit
The L of Asc and D the Body.

L of 8 in 1 or L of 1 in 8. Bad -
Significatos Occidental Old Disease
Significatos Oriental New do
L of 6 in 9. 11 or 10. the Disease is
manifest and known

L of 6 in 7-11-8 or 12 it is Occult or
Unknown.

Q in 1. Life Q in 6 Charge Sicknes
L of 8 Combust. Life
4 in X or D of Q life

of the Parts of the Body Governed
by the 7 Planets VIZ where the
Vital Animal and natural
spirit have their Residence

The Vital remains ⁱⁿ the Heart
and are governed by the ☉

The Animal is governed by ☽ & ♀
and resides in the Brain the ☽
governing the brain its self &

♀ the operating or working part
☽ and ♀ governs the natural part
which remains in the Liver

note also the ☉ governs the attractive
power ☽ rules the digestive power

♀ the imaginative or apprehensive
power the ☽ the expulsive and ♀
the retentive faculty

of the 12 Signs &c

☽ & ♀ governs the attractive faculty

☽ & ♀ in the digestive & ♀ & ♀ the
retentive ☽ & ♀ the expulsive power

J governs the right ear the Bones
the teeth - &c 24 rules the lungs
Liver ribs sides veins blood and
natural virtue in man

S rules the gall the Left ear the
taste the lapides the face

O rules the Heart the Right eye
the Back &c

Q rules the womb yord and ins-
trument of generation Kidneys
throat womans breast see and
milk J governs the tongue the
rational part the imagination
hands feet and other moving parts
of mans Body

D governs the Body Bowells
Bladder the left eye of a man
the right eye of a woman &c
Diseases the Planets Signifie
when loods thereof

2 governs deafness dropsie leprosy
canker consumption stone skurvy

4 governs short breath cramps

Plurices Apoplexies Convulsions

3 rules imposthumes yellow Jaundice

small Pox madness fistula's wounds
and scars

2 rules french Pock Ruinsey
vomiting love sick Passions

2 is the author of megrims fursy
lethargy hoarsness Ptsicks &c

2 governs green sickness all obstruct

Epilepsie Colicks and menstruous
in women

Disease of the 12 Ligins

2 all Pimples Head Ache

Vertigo appoplexy dead Polsy
madness cramps

2 Kings Evil all Wens in the throat
and neck all boils and all disease
in the Throat

II. Corruptions putrefactions of
blood broken limbs and out of joint
Aches Ring worms and all diseases
incident to the Arms and shoulders
Of diseases in the breast as want
of appetite coldness of the Stomach
Surfeit Coughs and Leprosy
Of burning fevers yellow Jaundies
them belongs all disease proceeding to treat
wth the spleen melancholy belly
ache and disease of the Belly
wth stone in the reins and kidneys
heat of the reins pains in the
small of the Back and stitches there
wth Gravel stone in the Bladder
inflammation and ulcers there
difficulty of Urin and all diseases
in the secrets
Of all diseases in the thighs hips
fevers falls from Storses and hurts
by them

Table
of the
James of the

A Table of the Principal fixed Stars
 Names of the Stars Planet sig

South end of the tail of the Whale
 Star in the Wings of Pegasus
 Head of Andromeda
 Whales Belly
 Guide of Andromeda
 Bright star in the Head of the Ram
 Left foot of Andromeda
 Bright star in the Whales Jaw
 Head of Algol Macosta
 The Pleiades or 7-Stars
 Middle star of the γ

Oculus Taurus
 Aldebaran
 Bowell
 Secret

Wings

Heart

Bowell

Secret

ζ

Breast
 Arm
 Head

α

Heart
 Breast
 Belly
 Throat

δ

Belly
 Heart

π

Back

Feet

Table of the Principal fixed Stars - for the Year 1827

| Names of the Stars | Longitude | Latitude | Magnitude | Nature |
|---------------------------------------|-----------|----------|-----------|--------|
| South end of the tail of the Whale | γ 1 1 | 20 47 S | 2 | ζ |
| Star in the wing of Pegasus | γ 6 47 | 22 35 N | 2 | ♂ ♀ |
| Head of Andromeda | γ 11 56 | 25 42 N | 2 | ♂ ♀ |
| Whales Belly | γ 15 34 | 25 15 S | 4 | ζ ♀ |
| Guide of Andromeda | γ 27 59 | 25 59 N | 2 | ♀ ♂ |
| Bright star in the Head of the Horn | δ 5 15 | 9 57 N | 3 | ζ ♀ ♂ |
| Left foot of Andromeda | δ 1 47 | 27 46 N | 2 | ζ ♀ |
| Bright star in the Whales Jaw | δ 12 5 | 12 37 S | 2 | ζ |
| Head of Ugel Madusa | δ 23 45 | 22 22 N | 3 | ζ ♂ |
| The Pleiades or 7-Stars | δ 26 36 | 4 30 N | 5 | ζ ♂ |
| Middle star of the 7--- | δ 27 32 | 4 0 N | 3 | ♂ |
| Oculus Taurus | II 6 1 | 2 36 | 3 | ♀ |
| Aldabaran | II 7 21 | 5 31 S | 1 | ♂ |
| Rigel | II 14 32 | 31 11 S | 1 | ♂ |
| The former shoulder of Orion | II 18 10 | 16 53 S | 2 | ♂ |
| The Goat | II 19 31 | 22 15 N | 1 | ♂ |
| The former star in Orions Belt- | II 19 55 | 23 38 S | 2 | ♂ |
| The middle star in Orions Belt- | II 20 59 | 24 33 S | 2 | ♂ |
| The highest in his head | II 21 16 | 13 26 S | 4 | ♂ |
| The Bright star in the Bulls Horn | II 22 17 | 2 14 S | 3 | ♂ |
| The following shoulder of Orion | II 26 17 | 16 6 S | 2 | ♂ |
| Propus | II 28 27 | 0 13 S | 4 | ♂ |
| The right shoulder of Auriga | II 28 57 | 21 27 N | 2 | ♂ |
| The bright star in the foot of Gemini | III 6 36 | 8 48 S | 2 | ♂ |
| Castor appollo | III 17 46 | 10 2 N | 2 | ♂ |
| Polux Hercules | III 20 48 | 5 38 N | 2 | ♂ |
| The Small Dog star | III 23 21 | 15 57 S | 2 | ♂ |
| Praesepse | III 4 51 | 1 14 N | Not | ♂ |
| North Apelus | III 4 56 | 3 8 N | 4 | ♂ |
| South Apelus | III 6 3 | 0 4 S | 4 | ♂ |
| Cor Leonis Regulus | III 27 3 | 0 26 N | 1 | ♂ |
| Heart of Hydra | III 24 48 | 22 24 N | 1 | ♂ |
| Vindemiatrix | III 7 28 | 16 15 S | 3 | ♂ |
| The Back of the Lyon | III 8 16 | 14 20 N | 2 | ♂ |
| The Tail of De | III 9 8 | 12 18 N | 1 | ♂ |
| Crater - bottom of the Pitcher | III 21 3 | 33 6 S | 4 | ♂ |
| Anturus | III 19 43 | 1 30 N | 1 | ♂ |
| Virgins spike Arista | III 21 21 | 1 59 N | 1 | ♂ |
| South Ballence | III 12 46 | 0 25 N | 2 | ♂ |
| North Ballence | III 6 53 | 8 35 N | 2 | ♂ |
| Left Hand of Ophiucus | III 20 51 | 17 9 N | 3 | ♂ |
| Higher star in the head of Scorpio | III 0 41 | 1 5 N | 2 | ♂ |
| Left knee of Ophiucus | III 6 45 | 11 30 N | 3 | ♂ |
| Cor Scorpio | III 6 33 | 4 0 S | 2 | ♂ |
| Scorpions Heart Antares | III 7 18 | 4 27 S | 1 | ♂ |
| Right knee of Ophiucus | III 15 31 | 7 48 N | 3 | ♂ |
| The Bright star of the Vulture | III 29 14 | 29 21 N | 2 | ♂ |
| The Mouth of Pegasus | III 9 7 | 22 7 N | 3 | ♂ |
| The Tail of the Goat | III 21 4 | 2 29 S | 3 | ♂ |
| Marshall | III 21 1 | 19 26 N | 2 | ♂ |
| Fornhaut | III 1 16 | 21 0 S | 1 | ♂ |
| Great Pegoffi | III 28 18 | 1 7 N | 2 | ♂ |

A Table shewing what members in Mans Body every Planet signifies in all the twelve Signs

| | ♄ | ♃ | ♂ | ☉ | ♀ | ♁ | ♅ |
|---|-------------------------------------|------------------------------------|---|---------------------------------------|---|---|--|
| ♈ | Breast Arms Head | Neck Throat Heart Belly | Belly Head | Thighs Head | Reins Fat | Secrets Legs | Arms Head |
| ♉ | Heart Breast Belly Throat | Shoulders Arms Belly Neck | Reins Throat | Knees Throat | Secret Arms Throat | Thighs Knee | Legs Throat |
| ♊ | Belly Heart Arms | Breast Reins Secrets | Secrets Arms Breast | Legs Shoulders Arms | Thighs Throat | Knees Head | Feet Shoulders Arms Thighs |
| ♋ | Reins Belly Secrets Breast | Heart Secrets Thighs | Breast Knee Stomach Thighs | Knees Shoulders Arms Breast | Knees Shoulders Arms Breast | Legs Throat Eyes | Head Breast Stomach |
| ♌ | Secrets Reins Heart | Belly Thighs Knees Heart | Knees Back Belly Heart Reins | Head Heart | Legs Breast Heart | Feet Arms Shoulders Throat | Throat Neck Stomach Heart |
| ♍ | Thighs Feet Secrets Knee | Guts Reins Knees | Legs Belly | Neck Throat Bowells | Back Stomach Heart Belly | Head Breast Heart Guts | Arms Shoulders Bowells |
| ♎ | Reins Knees Thighs | Secrets Legs Head Reins | Feet Reins Secrets | Shoulders Arms Reins | Reins Head small Guts | Throat Back Stomach Heart Belly | Breast Reins Heart Stomach Belly |
| ♏ | Feet Knees Legs Secrets | Thighs Feet Secrets | Head Secrets Arms Thighs | Breast Stomach Heart Secrets | Throat Reins Secrets | Shoulders Bowells Arms Back | |
| ♐ | Legs Feet Thighs | Knees Head Thighs | Throat Thighs Heart Neck Feet | Back Heart Belly Thighs | Shoulders Arms Secrets Thighs | Breast Reins Heart Secrets | Bowells Thighs Back Guts |
| ♑ | Head Feet Knees | Legs Neck Eyes Knees | Arms Shoulders Knees Legs | Back Belly Knees | Knees Breast Heart Thighs | Back Shoulders Heart Secrets | Reins Knees Thighs |
| ♒ | Neck Head Thighs | Feet Legs Arms Shoulders | Back Legs Heart Secrets | Reins Secrets Legs | Heart Knees Legs | Bowells Shoulders Heart Guts | Secrets Legs Arms |
| ♓ | Feet Arms Shoulders Neck | Head Breast Heart Feet | Heart Feet Belly Back | Secrets Thighs Feet | Feet Belly Legs Throat Neck | Reins Knees Secrets Thighs | Thighs Feet |

Sol all Diseases of the heart
and brain Palpitations swoonings
of the Vital Spirits Inflammations
of the Eyes rotten fevers Stinking breath
Venus all Diseases of the matrix
and members of Generation Pox
running of the Reins Grieps of
the Travel.

Mercury all Diseases of the brain
as Madnes Vertigos Jidyres in
the Head Phthisick Coughs
muffling humbness Defects of Urine
Noon Apoplexies Palsy
Cholic belly Ache Menstruous in
Women fluxes of the Belly all
Cold Rheumatic Diseases Surfeits
rotten Coughs Convulsions falling
Sickness King's-evil Small Pox
Measels &c

It gives vital heat to the Creation the Doxical
moisture by fixeth & Putrifieth this by Turneth it
into nourishment & Calcines it & makes it
fruitfull and & makes it Rational

Saturn

Cold & Dry in 3 and 4 degree
Its herbs are generally of an ill
shape & smell. Taste Lean (or like
Alum or Vitrol)

Growing in filthy
muddy woody solitary Dark Obscure
Places Deserts Caves by Lanes Alleys
Mountains Cole or Lead Mines Stone
Quarries Standing Pools

His nature is to Cause Stoppages
Bundings Coolings

Jupiter

Hot and Moist His Herbs are
generally shape good smell & taste (Sweet
) red or sky Coloured

Growing in fat Places. Publie Places
in Woods amongst Bushes Bryers or Bram-
bles in beautifull plain Places a Whose
stocks of Wood is made

This Nature is opening healing Strengthening

Mars

Hot and Dry in the 3 and 4 degree
his Herbs are generally

rough Prickly
Bitter Burning Taste

Growing in dry fiery or Bloody
places where battles have been fought
Bricks burnt. (smiths Shop &c

strengthening Purging by Heat Perspiration
Blistering

Sol

Hot and Dry in the 1 and 2 degree his herbs
are generally of a good shape smell and Taste
yellow flowered
Meridional Places

This Nature is Comforting the Heart and
Spirits Brain &c

Venus

Cold & moist in the 1 and 2nd degree

Herbs are generally of

a sweet Pleasant smell and

Taste smooth Leaved (not Lacinate)

Growing
in Pleasant Places. by fountains green
meadows flourishing Gardens by the Sea
sea Shore Baths

-ing the Urinary Passages is Opening Passages

Mercury

Cold and dry in the 1 and 2 degree

the Herbs are generally (Vinegar Lemon Juice)

Verticolar flowered

Coded^{or} Arenary

or the 3 fortunes the 1108 as containing

the mystery of justice and religion

for 3 represents sober priests. also

to which number Christ was crucified

is Purging Cooling &c
The Manner how to contribute
Herbs and other things Under
the Dominion of the Planets
♄ is cold and Dry in the third and
fourth Degree - his nature is to
cause
stopages Bindings Coolings &c
consequently such things are under
the Dominion of Saturn
♃ hot & Moist - . Opening
Healing Strengthening - consequently &c
♃. hot. and Dry in the 3 & 4 degree
Bitters - Healing & Strengthening but purges
by heat Perspiration &c
♃ hot & Dry in 1 & 2 degree and near
unto the 3. dg. Comforting the ^{Spirits} Heart & Brain
Sweet smelling - Resist Poisons -
♃ Cold & Moist in ^{1 & 2. degree} Opening Cleansing
Urinary Passages &c
Meridional Places

His Nature is Comforting the Heart and
Spirits Brain &c

Numbers attributed under
the 7 Planets with the reason
thereoff

Saturn

To this planet belongeth 3 numbers 2
2. 7. 9 the No 2 as being next the star 7
firmament and being 1 of the 2 infortunes 9
The No 7 as being the 7th in order and highest
from the Earth. and fatal and
climacterical as joined with the
No 9. and 9 is fatal &c as joined with
it for 9 times for 63. which number
is fatal and climacterical

It hath 3 numbers. 1. 3. 8 the No 1
as being the head fortune No 3 being
the 3rd planet in order from the
star firmament and for being one
of the 3 fortunes the No 8 as containing
the mystery of justice and religion
for 8 represents sober priests. also
to which number Christ was crucified

Mars. hath four numbers
2. 4. 7. 9 the No 2 as being one
of the 3 unfortunes the No 4 as
being 4th in numbers under the
starry firmament the No 7 as
being fatal & climacterical as
joined with 9, and 9 is a number
fatal &c as joined with 7 this
planet and 7 are enemies to nature

Sol hath 1. 3. 4. 10. 12 allotted
unto him - the No as being sole
monarch of the heavens No 3 as
being one of the 3 fortunes the No 4
from the 4 quarters of the Year
the No 10 as being the number of
the end of life as multiplied
by 7. the No 12 as passing through
the 12 signs of Zodiac

Venus hath 2.3.6 allotted unto
her the No 2 as being female the
No 3 as being one of the 3 fortunes
the No 6 as being the number of
generation consisting of two threes
Mercury hath 2.5. allotted him
the number 2 as being part male
and part female and therefore
called the Hermaphrodite the
No 5 as having predominancy over
the five senses

Moon hath 2.6.9 allotted her
the No 2 as being female the No 6
as being the number of Generation
the No 9 as being the utmost recep-
-tacle of all coelestial influe-
nces - - -

Of Purgations &c &c
When you give a purge, let
the ☽ be in a watery Sign or let a
watery Sign ascend and let the
☽ be aspected by any Planet which
is direct or swift in motion and
Under the Earth the better - but by
no means let the ☽ be aspected by
any Retrograde Planet for then the
patient will be apt to vomit
2ndly. if you desire to purge any
humor or Element predominant
do as followeth - let the planets
be weak which is of the nature
of the Element offending and let
the ☽ apply unto, or be in Δ or X
with that planet of contrary nature
as instance ☽ who ruleth Cholera
being by nature hot and dry now
if you desire to purge Cholera

let J be weak and let the D apply
to J - and if you purge Melancholy
which is under J - let J be weak &
let the D apply unto J - and if you
purge Flegm - let J be weak and the
decreasing and applying to the O in
 Δ or \ast and if to purge blood let J
be weak and D apply unto J you
must do the like in purging any
other member or parts of the Body
by observing what planet ha the
predominancy over it as instance
 J ruleth the Spleene J liver &c
Yet notwithstanding if any planet owns
the infirmity be lord of Use of the
patient and if he be strong it is
the better but let the D apply by
any friendly Aspect to a fortune
and if she be in a sign that repre-
sents the part of the body grieved it
is the Better

of the Manner of Purging the
Body, If the body require
a strong purge - eat no supper
if any - let it be verry light. also
take before you go to bed a little
Aloes in the pape of an Apple as
much as will heap upon a penny
but not bruised too small - or
take 2 or 3 small pills made sui-
table to the humor offending -
and if the body be much bound take
Suppository made with Sal. gem
or a Glyster ^{to prepare the Body then} - take the purge in
the morning early and let the
U be in a watery sign or else let
a watry sign ascend - take water.
Gruel or thin Broath, ^{1. hour after} and after
every stool also - and fast from
meat or any other diet for 6 hours
after

To Purge the Head or remote Parts
of the Body. Give the patient pills
made up in an hard form, for the
longer it remains in the Body
the better it operates upon the
remote humours offending

To Purge the Cholera - Peach
flowers blue Violets damask Roses
Centaury, (Aloes and rhubarb
if the Body be strong not else)

To purge Phegm and water, elder
buds - flowers - Broom flowers, flower
deluce roots hyssop spurge dwarf
Elder Orris, (Bittony root or
Jalap the body being strong)

To purge Melancholy - Polypodium
fumitory white and Black hellebore
Doder^d Epithimum Inde
Mirabilis Lapis Lazuli -
(Sena and Scammony if the
Body be strong)

To Purge Blood. is best done
by decoctions made with such
herbs. as are suitable to the grief
If to purge gross humors pro-
ceeding from corruption of the
blood. as Boils Botches Tumours
Itch or Scab. Use the powder
called. Pulvis. Sarcuts ortholy
Powder (made according to the
London Dispensatory)

Of Vomit let the either
or L of Use in an Earthy Sign
aspected by a planet R and
let the Sign Ascending be an
Earthy Sign when the vomit
is taken. Or let D be Aspected
by Planets Stationary or slow
in motion if about the earth
the better - Any of these Obs-
ervations will do if no testimony
against it

Of Baths. or Sweats If for hot
diseases enter the . . . when D is in
a Watery Sign as S. m. H. If
for Cold diseases enter the Bath
or Sweat. when D is in fiery Sign
as V. Q. J.

Of Fluxes Rheums Laxes &c
to Stay --
Let the D be in earthy signs as NS. O.
 m.

Take Clysters when D in Airy or
Watery Signs especially NS. m.

Let Blood on the right side at
spring and on the Left at the fall
Choleric Persons must be bled
when D in S. m. H. Watery Sign

Phlegmatick Persons, Bleed when D in
fiery signs as V. or J. but not in Q.
because that sign governs the Heart

Melancholy Persons Bleed when D in

Airy as I. or II. but not III. for he
governs the Arms { except you bleed in
some other part of Body }

Languine Persons Bleed - when
 the Dis is in any sign except ♄
 or the place signified by the sign
 where Dis is

Young People Bleed before the
 first quarter is Over Middle Age
 from the first quarter to the
 full Elder People from the
 full to the last quarter Old
 People from the last quarter to
 the Change

| | | | | | | | |
|--|--------------|--------|---------|-------------|---------|-------------|---------|
| Good to comf out the Virtue | } Attractive | } Moon | } ♃ ♄ ♀ | | | | |
| | | | | } Retentive | } ♁ ♂ ♆ | | |
| | | | | | | } Digestive | } ♀ ♃ ♄ |
| | | | | | | | |
| } in | } ♃ ♄ ♀ | | | | | | |

Names of Herbs - and Use

Abortion to hinder Snakeweed or Bistort
Madder Moss Sage Fanny Trefoil

Peches coming of a Cold. Rosemary
Camomil Rue Bays Johns wort

Lavender Marjoram Sage Linkfoil
Brain Worm Wood Mugwort Elmpeel

Smallage Comphrey Bervin wild
Sansey. Brooklime Calmint Hyssop
Charlock Scabious Sutherwood Marigolds

Stiches coming of heat taken under
Camomil Johns wort Baurin Rosmart

Groussel Foxe Archangel Mallows
Honyuckles violet leaves Elmpeel

Elder flowers Comphrey Mugwort
Smallage Honbane Chickweed Seac-

-green Linkfoil Plantan Endive
Aders Tongue Lettice Cabage Turnip
Trefoil Sowthistle

NB in any disorder Use only part of
those Herbs mentioned

After Birth - To expel - Angelica
Camomil Chervil W. Hound Malow
Mugwort Marigold peneroyal Turie
fenel garlic Thoustongue
Aques, Rosemary Camomil Rue
Centuary wood bitony Sage
Vervine fetter few Horsemint
Lavine wormwood Burdock
Mustard - Rheubarb Lovel Plantan
Linguefoil Rumitory B. helebor
Styrmony Hyosop. Vipersgrafs
Endive
Appetite - Lovel Apples Capers B. Cherrys
mintt Grapes &c or any Acids
St. Anthonies Fire Rheubarb Rue
Saffron Brooklime Aders tongue
houseleek Chickweed W. Poppy hemlock
mandrake hemlock hounds tongue
Aproplexies Lavender wall gily flowers
Lily Majoram Sage fenel master
wort

Apostumes Aders tongue, Bears breech
Melilot Onions Ryd Chickweed Daisie
Liverwort Privete Perren Mugwort

B-

Back & veins to strengthen St. wort
Baum Angleson Rosmary Clary prints
Comphrey Woodbitony Solomons Seal
Barrenness to help, Barrenwort Clary
St. wort Ladies mantle Mercury
Horsmint Sage Shepherds needle
Belching sore to refresh Anisseed Camomil
Bitony Majoram Wormwood Haresfoot
Woodbitony Burnet
Belly Ache Camomile Centory Sweet
Majoram Plantane Smallage Rue
Angleson Sage Southewood Fenic hyssop
Ground Ivy fennel root & Seed In Malow
Belly to loosen Baise W. Beets Elder
buds Fumitory H. Tongue Malow
Maiden hair Rhubarb Sena Poppy

Belly to bind Caltrop Eglantine St. y.
wort Lentiles Ginger Rice Medlars
Bladder to cleanse Anglesea Rosemary
Burdock Petherfew Yoder Southernwood
Bleeding to stay Aloe R. Beans Ladies
bedstraw Liverwort Archangel
Plantain Yarrow Comfrey Rosemary
If bleeding at the nose tie the
small of the Leg and hand wrist on
that side which bleedeth and
dry some of the blood into powder
and let them gruf it up into
their Nostrils

Blood to cleanse Anglesea Rue Sage
Survey grass Rhuobarb L^{or} wort
Hyssop Broom Fox gloves Elder buds
Brest and Stomach to cleanse
see Obstructions to open and remove
Breath stinking Rosemary Rue
wormwood Smalage Anglesea Sage
Burnet Butchers Broom

Broken bones to help knit Elm peel
B. Broom Self heal Seal yarrow
Burning & Scaldings to cure Alder tongue
Balm Apple Burdock Chickweed
Coltsfoot Dandelion Daffodil Henbane
Houseleek W. bilony Plantain
Bursting or Ruptures, St. J. wort
Comfrey Linkfoil Seal Rupture
wort Wervine yarrow Dazie
Snapweed Wervine Alder tongue
Balm Centaury Juniper
C

Carbuncles Spurge fennel
Colewort.

Prunes to stay Saffron Anglica
S. marjoram S. t. Maudin Lavender
St James wort Storax Calceint
Child birth to help Balm Apple
H. H. Motherwort mugwort parsley
woodbine Culumbine Caraway
Cinnamon Vine Spicknard Malows
M malows

Cholar & Phlegm to purge Aloes
Briony. Sentyory Elder buds Endive
Fenel Blk. Helebor Hyssop
Lung wort Spurge Sycamore
Samaritan wood violet Leaves Roots
flowerdeluce I wort Mezeron
Colick of wind to ease Agrimony
Anglica Aniseed Bitony Camomil
F. fenel seed Coriander seed Caraway
Goldt Caught Anglica Pennyroyal
Bitony Coltsfoot Cinqfoil Clary
H. Catmint Comfrey Saffire
Fenel Juniper Liquorice
Courses of women. or terms to provoke
Flowerwort Nep. Sage Dil. to. bitony
wild Carots. Germander Clary
W. beets Mugwort. flower de luce
Birth wort St. J. wort Calamint
Catmint featherfew H. Wound
Pennyroyal Rosemary Saffron Lavine
Bitony Finesel Fanny wolvesbane

Courses to stop N. J. wort. R. Beet
Red Nettles Yarrow Red Sorel Coriander
Juniper Ladies mantle Lentils Sanicle
Sanders R Poppy Termare Tree
Cramps to ease Calmint Wild Carot
Dane wort flure de luce Garlick
Penroyal Rosemary Saforin scathe
Wood Turpentine Woodbine fenel Camomil

D

Deafness to cure Anglesea Bay Baum
Lavender Wood bitony Holy Ivy
Rue walnuts. Helebore Savory Sena
Worm wood Cardus Henbane
Digestion to help Anglesea Baum
Smaragran Penroyal Spere mint
Elicampare Swt. Maudlin Camp
hire vine Eglantine Caraway Cloves
Mad Dogs biting to cure Hound's tongue Baum
Bitony Burdock Eglantine H. H. Mug
wort Mercury Mints Sena - Flesh of
the same dog present Cure

Dropsie to cure Agrimony Camomil
Centuany Broom burdock brook
-lime Oth-briony Ditany Elder
flour de luce Garlic - Helibore
Laurel Marjaron Sot-Maudlin
Peny royal Spurge Wwood Normony
Sage Thort Hygops Derrin Rheub.
arb bitony Anisfeed
E

Ears pain and nose to help Jews
yeare Bitony Bazil Asphodil
Cariander danewot Bitony
Hempseed Joy parsley Rhubarb
Baise leeks Peach Plantan
-Eye Sight to quicken Eyebright
Wt Roses Archangel Anglesea
Baum Centaury Lavender Rue
Savory Vine Vipers grass
Fievers to cure Marigolds Roses Hygops
Snakeweed Wwood.

Fever burning to cure Aderstongue

Barley - Crowfoot Currants clausus

ennine Hasel Tree Lilly - Semons

Feveres pestilential to cure Anglersea

Rue Saffron Carnations ducko-

-meat. Sorrel Scabious Wood Sage

Telegm to purge Butchers Broom Priny

Dafodil Doder featherfew fox glove -

Fumitory Stinking Gladon Endive

Hawk weed B. Heleboe Henbane

Hyrop holy berries Elder buds -

Fundament falling to remedy Snake

weed Galls Blue Pimpernel Star-

-wort Buckwheat wakerobin

Gall to Open Calmint Rhubarb

hemp seed bitony Century Endive

Saffron Ground Ivy Camomile

Green sickness Broon Centuany

marygold Rhubarb Maudlin vine

powder of Steel

Heart to fortify against infection
and likewise to comfort - Anglica

Rosmary manygolds Baum Büloß
Canations Saffron Rue Sage Sena
Motherwort Cinamon Damask roses

Hearing to restore Baum Lavender

Bay Herbane Woodbitony Souther
wood Wood Rue S. Margarom

Eyebright Cockshead turpentine

Kernels and knots in the flesh to
cure Archangel cinquefoil

mandrake mugwort mustard

Pondweed ribwort Rue Spick-

-and wood figwort W. Lily Root

Kidneys to cleanse Wall Pennyroyal

garden tansy fursbursh flowers

Doder. Elder Hops Juniper

maider hair parsley prony

Plantan fenel Broom Blossoms

Southern wood Shepherds Needle

Spiznel

Lithargy or drowsy evil to cure
Sow fencel watercresses Lavender Mustard
Penroyal Rosmary Sage Time Vine
Numbness to cure Hyssop Lavender
Bears Breach Nettles Wormwood Clary
Rosmary Chervil Burrage Costmary
Palsy. to cure Angkesea Bauron
Rosmary Clary Mace Mangolds
Blossoms Cowslips Sage Camomile
Chervil Hyssop Lavender Southerwood
St. wort Burnet Featherfew Daffodil
Parsnip sage Sena Juniper pepper
Quinsy to cure Cowweed Cinquefoil
Ragwort violets Wood Calmint
Vine Broom Blossoms Rhubarb St. J.
Itchles or pimples in the skin
to cure Basil Bayes Bel flowers
Broom blossoms Featherfew fumitory
Roses Calmint Celandine Cloewort
Daffodil Endive flower de luce
Lovage Onions Parsley Peny royal
radish Rosemary Savine Seal -

Urines to purge Aniseed Apples
Artichoke Asphodil Basil Bays
Bet. Beets Burdock Butchers
Broom Calmint Caraways Carots
Watercresses Dode. Endive fenel
funitory garlic Hartwort Horse
tongue J. wort Juniper Lavender
Lorage Mader & Marjoram Mau-
-dine maiden hair Onions
Penroyal Romary Rheubarb Rue
Saffron Sage Time Trefoil
Wind to expell Anglesea Aniseed
Camomile featherfew fenel Car-
aways Catmint Cinamon Cofey
Mints Oats Eldubuds Garlic
Ginger Hyssop Ivy Juniper
Peper Nutmegs Romary Rue
Saffron Sage Tansy

All Herbs must be gathered
in the Planetary hour ^{and when he is in an angle fortunate he} ^{and L of C if possible (and Rule of the Day)} ^{and all}
so mind what time you admin-
ister Physic in - for if Physic
be administered in a wrong time
be it a purge or vomit it will
have a contrary effect - Example
If a purge be given when ☽ is in an
Earthy Sign aspected by planet
Retrograde the Asc and its L agree
the purge will turn to vomit
and again if a vomit be given
the ☽ in watery Signs aspected
by planets in watery Signs and
Swift in motion the Asc and its
L do correspond the vomit will
purge &c &c

In all cases it is necessary to
Correct a Scheme of the heavens
to see what disorder and what

Planet does afflict and also
to see if the disease be natural
&c then after you have duly
considered those things the cure
must be brought through
Sympathy or Antipathy

N.B. If the Afflicting planet
be strong and more potent than
the planet of opposite nature
to him Use then the Herbs under
the dominion of the Afflicting
Planet - but if the Planet of
opposite nature to him be
stronger than he, then use

Herbs under the dominion of
the opposite Planet in nature
but if they are both strong Use
part of both and the cure
is produced - and again you
must have respect to the
nature of the Patient and Age
and season of the year

Example if δ be the Afflicter and Strong
♀ being weak. Use Herbs under δ
If Afflicter and Strong. ♀ being weak
Use Herbs under γ for the Cure
and if Contrary Use Contrary &c &c
Now again If a patient be old his
grief Cold. his Complexion Cold the
season of the Year Cold. then if
you apply cold remedies you destroy
nature &c &c

Cataplasms — are often
Used to help cure Agues. sometimes
applied to the feet to draw from other
parts as head &c — apply them to the
pults &c as opportunity require
The way to make them thus. Choose
such herbs according to their ^{virtue and} number
as are good to cure the grief Pound them
in a mortar with a little Salt a few Raisins
Honey a little Yenus of Turpentine or Burgelony Pitch

Names of Herbs Under the Planets

J Alder Black! Birdsfoot. Cats tail! Hawk
Clouds woundwort
 weed, Hemlock Henbane Mandrake
O-ak & Polip. ryeum
 Moss of Oak! Nightshade: B. Poppy
 two leaved Grass J wood & water
 Agrimony Alexanders Bitony Borrage
Culumbines. blue flowers
 Linguefoil, Cresses Comfrey Buglos Doderg
 Elm leaves and Bark Tetherfew flower
 de luce fools Heres fox Glove, Furnitory
 Gander goss Hearts tongue hypox knot
Perwincke Parsnip wild
 grass Malows Poppy Speenmoot Scurrey
 grass Smallage Time wild flax
 J

Groundivy Archangle Arsmant
 Antimony Bets R. Bell flowers Birth
 wort. Bishops weed Bitter sweet Box
 Broom Brooklime Butcher Broom
Buony
 Broom rape, Buckthorn Butterwort, Butter linn
Beh
 Cordius, Catmint Cotton Thistle
 Crowfoot Danerwort Sittander

Peppenwort Dock Dragons Dovesfoot
 Dropwort. Dyer sweet Elder buds fern
 Pipperidula Fleabane Garlic
 germander Glaudon Shinkin Glasswort
 Goutwort Ground pine Nolebore ^{HH}
 Hawthorn Hemp Hops Holy Horstail ^{Jack by the horse}
^{Trappweed} Leeks ^{hedge} Mouse ear Mustard
 Mercury Nettles Neph Onions
 Poppy R. Pilewort Redish Ragwort
 Rupturewort Sawwort Savine
 Saxifrage Scabious Scorpion grass
 Spurge self heal Shepherds needle
 Shepherds purse Sparewort Seal
 Swallowwort ^{Tamachis} wakerobin ^{Thistles Ladies} Cucow print
 Wormwood wood wallwort wood sage



Angelica Anissed Ash tree Avena
 Almonds Allgood Bazil tree Burnet
 Buple Calamint Commonil Lentory
 Chenivil Calandine Cary Catmint
 Cowslips Comfrey yellow Eglantian

○
 Eyebright Elicampare Fenel
 Figwort Goldenrod Gillyflowers Holy rose
 St J. wort St James wort Ladies bedstraw
 Juniper Lavender & Cotton Ladies mantle
 Lilies yellow Mangold ^{Savage} S. Marjoram
 S. Maudlin Waterwort garden
 Mint Mugwort motherwort Oxlips
 Parsley St Peterswort Penroyal
 Pimpernel Piony A. Roses
 Rosemary Samak Rores Saffron Rue
 Sanicle Sage Sanders Sutherwood
 Sunflower Tansy Tormentil Yervine
 Walnut leaves woodbine flowers
 Yipers Bugloss.

†
 Adentongue Aples Archangle WT
 Alkanat Barley Beans W Bears
 Creech. Beech leaves Buck horn
 Plantan Coltsfoot Crabtree Chemp
^{Cudweed} Cornfry roots ^{Dandelion} Dairies ducksonet
 Columbine with white flours Cranesbill

Elderflowers fleawort Groundsel
Houndstongue Larkspur ^{Heartsease} W. Lilies W
^{perb. Trilove moneywort}
Maidenhair Mulberries navelwort
Orach W. Pillyory of wal Plantain
Ponweed Pauls Bitony Primrose
W roses Saunders W Snakeweed
Sorrelwood Sowthistle Strawberries
Cinnamon Throatwort. 3 leaved grass
Vineleaves Violet leaved roots. Water

Cresses



Alkanet Allgood barberries Blood
root bellflowers bluebottles
Dog grass Ervay St Luellen Liver -
root. ^{Loofetife} Loofewort Lungwort Medlar
Maddan ^{millit} Quince ^{Privet} Rampion ^{Squony}
Sorrelg. Marwort. Woodbine leaves
Wild Tansy Yarrow ^{Whalle berries}
^{willow tree}

Cabbage Chickweed Colewort Cuck-
umber. Houseleek Lettuce Melons
Aspire Pumpions moonwort
Burslaie

As in all decoctions you must
always mix a certain quantity
of Herbs under ☉ for he comfor-
-teth the Head and Heart and
also you might in bad Cases
make an Amulet of Solar
Herbs in a bag to be worn round
the Patients neck and I think
those are verry powerfull
Rosemary Angelsea Baum
which must be gathered
in the hour of the Sun
P.S. all Herbs must be ga-
-thered in the right Planetary
Hour

Taken from Joh. Blagrove

u mu
iantly
ompo
and
Pass
lar
r now
of the
Lull
um
ed
n
ga
lary
ave

[Faint, illegible handwriting, likely bleed-through from the reverse side of the page.]



3 If the Lord of the Hour
be not of the Same Faculty as
the Lord of the Ascendant the
Question is only to try you

If the Ascendant be between
two signs the Querent is not
steadfast in the Question and
dont care whether it hits or
misses

If any propound a Question
of marriage as a maid or widow
refer to the Question whether Virgin
or corrupt and if you find them
Guilty say they are now married
or Guilty

In any Question observe the D
his applications tells what is to
come - But his separations tells
what is past (separations means
the aspects she has left)

If the Lord of Use or Use does
not describe the Decret give
no judgment

If either the beginning or latter
end of a Signi Ascend it is not
safe to give judgment

If a beginning of a signi Ascends
the Question is improperly pro-
pounded If the Latter end

he has been tampering with others
or the Question is forged

If D be combust. air combust way
or Void of Course give no judgment

If D or L of Use in or to L of Y
(which signify the Artist) he is
a Kave or fool (come to abuse &c)

If Y. house afflicted or in L. Religion
or combust Unless the Question
belong to that house you
will err in your judgment

When Γ is in the Asc of a Question
and infortunate - the matter
propounded is false or
past all hope and if at the
same time the L of Use be
combust or Retrograde the Querent
is a knave or fool
When the testimony of the
figures are equal give no
judgment

Some allow the Question to
be radical when L of Use and
L of Hour are of one Triplicity
or Nature

Suppose Γ Use and ♁ be Lord
of the hour. the Question is
radical because the ♁ and ♁ are
hot and Dry - If Υ be Lord of
the hour it is radical - because
 Υ is of the same Triplicity with
 ♁ and so of the rest

Whether the Ruerent may
enjoy Health Long Life &c

To resolve this - observe the Sign
^{1st house}
ascending the Lord thereof and the D
and if you find them free from
ill Aspects of ♃ and ♄ or the Lords
of the 6 8 4 and 12 houses and free
from combustion swift in motion

these are certain testimonies of a
long life - (provided the said signifi-
cators be not afflicted by the presence
of violent fixed Stars;

But if the L of Asc be combust
retrograde or in a ♄ or ♅ to inferiors
or Lord of 4 8-6 or 12 ^{and in an evil place of Heaven} the Ruerent
is Sickly and short lived especially
if ♃ ☉ and ♄ be weak and afflicted
the manner and time shall be
demonstrated in the Judgment of the
eighth houses

of the good or evil during life
When fortunate Planets are in the
Asc - or principal places of the figures
they denote much good to him during
the future part of life provided
they are in good Aspect of the D
and she applying to those Aspects
but if she be separating it shews
what is past according to the
nature of the Aspect - good or evil
If ♃ be in the Asc and afflict the
Moon or L of Asc he will be
melancholy subject to vexations
from aged persons &c
If ♁ he will be choleric and often
be oppressed by thieves or knaves and
many times suffer much by treachery
of kindred or pretended friends
if ♃ he is seldom free from scandal
and disgrace Have great regard
to the houses these afflictive plan

governs for from hence is known
by what means he shall be fortunate
or Unfortunate Unhappy &c

What time he may expect
a Change

Having erected a figure I draw
it in to a speculum (as in a
nativity) - and direct the several
significators to the Promitors, then
having the true distance of each
significator from his promitor
I convert the deg and minutes into
time as in a nativity and according
to the effects of directions Judge
thereof (This is necessary only when
the Nativity cannot be obtained)
and only to be used in very particular
Business) But in Questions of
Indifference or trivial concernment
observe the degrees of distance between
the significators by body or Aspect
and Judge certain enough

What part of the Querents
life is like to be the best.

Note what part of the figure the
fortunate stars are in and according
to their position judge thereof

If fortunates be in the Ascendant
of the 12 or 11 house he will be most
happy or fortunate in his younger Years

If in 10-9 or 8 the good fortune
will happen in 2 part of his Age

If 7-6 or 5 houses it will happen
after his middle age If in 4-3 and 2
his latter Age will be most happy

In this manner of Judgement give
to every house the fortunate Planet
are distance from the Ascend 5 years
and accordingly judge of his happy
or fortunate State - and when in

a question you find the significators
of life are strong - and signify long
life - you may add 1 year to every house
for he may live more than 60 years

Toward what part of the world
the Querent may go to Prosper
Note the whole Heaven is divided
into 4 Parts East West North and South
these quarters are again subdivided into the
first house East - 12 house East by South
11. is South East. 10. South. &c and ac-
cording to the quarters of Heaven thus
divided you mind in which of those
places you find ♃ ♄ or ♀ or ☽ or the
major part of them and direct him
there

If the Promising planets be in the
mid Heaven send him southward
If in 9. send him South West
If in 7. full West - &c.
observe the same of the rest -
also consider what is his desire
whether it be for Health Riches Honour
friends &c for by understanding the
Querents desire you may answer him

more Readily

If it be for health of Body he would
remove his habitation Observe in
what place of the figure the
L of Use and I be pointed and send
him that way

If for Wealth Take L of 2 and 8

If Honour take notice of O and L 10

If for friends make use of the L 11.
and so of the Rest — — —

of a Ship at sea

v the Breast -

I under the Breast toward the water

II the mider or stern

III the Bottom or floor

IV the top above water

V the Belly of the Ship

VI that part above the breast in the water

VII The place where the Mariners are

A The Mariners — — —

MS The ends of the Ship

the governor or Captain

the Oars

Now having made this Division
next consider what signs are fortunate
or Unfortunate at the time of the
Question for the parts of the Ship
and persons here signified are either
in danger or well, according as
the significators are fortunate or
unfortunate

The Asc and D are generally sig-
nificators of the Ship and Cargo

But the lord of the Asc the Persons
that sails therein - if in question
you find all these fortunate you
may Judge safety of the whole
but on the contrary you find
them all afflicted - they are in
danger if not lost - when a Manu-
olent Planet have dignities in 8 house
shall be placed in the Asc - or the
L Asc in 8 - 12 or 6-4 or if the D
be in combustion under the Earth
all these are dangerous testimonies

especially if the L of Asc afflict
the L of 8 - denotes the Ship tost
or in wreck But if none of these
impediments happen, you judge
them all safe and in good condition
if the Asc and D unfortunate and
the L of Asc Strong, and well aspect
the ship is in a bad condition - but
the men are safe or likely to be so
But if Asc and D be fortunate and
the L of Asc unfortunate, the
vessel is safe but the men in danger
If any enquire what success a
ship shall have in his voyage
upon his setting sail - observe the
angles of the figure - if the fortunate
Planets and D therein and the
infortunes cadent, it will sail
well and safe But if infortunes
be Angular or in succedent Houses
she will meet with Mis Fortune

in *fur vorage* . and it will fall
upon that part of the ship Person
or thing . signified by the sign
in which said infortune is placed
if the Planet γ threatens evil the
Ship will be split or sunk and
the men either drowned or subject
to much danger

But if he be δ . strong and aspecty
a place where he hath strength
denotes the same danger with
loss by Pirates Enemies &c . But if
 γ or δ cast their Aspects into the
aforesaid places and the L of Use
and depository of the D be free it
denotes safety to the major part
of the men and goods . Though the
ship receive some Damage . But if
 δ afflict the L of Angles and the
depository of D they will be in danger
of Enemies and not without cause

There will be quarreling cheating
and thefts among themselves in
the ships, especially if the Afflicting
planets are in those Signs which
dispose of the parts in the upper
division of the ship

But if ☿ afflict as is said of ☽
there will be several thefts and most
of other mischiefs but no blood spilt
by enemies - But if the infortunate
Signs denote the bottom or lower
part of the Ship - it signifies
wreck or dangerous leak but if
unfortunate Signs in 10 - and ☽ happen
be the Afflicting Planet - the ship will
be destroyed with fire and this more
certain when the Signs are fiery and
near violent fixed stars -

The Cause of the aforesaid disasters
may be known if ☽ be in a humane
Sign the Burning will be by some

fight with the Enemy and the
danger shall begin in that part
of the ship signified by the sign
wherein she is unfortunate is in the
figure

But if ♃ be the threatening Planet
and he posited in 10 house, she will
be damaged by high winds - leaks
bad sails &c and the damage
will be greater or less according
to the strength or weakness of the
unfortunate and is being remote
from good Aspects of fortune

If the L of ♄ shall afflict the L
of Asc the D and her disposer it
denotes the death of the Manager
if ♄ and L of Asc and disposer of D
be afflicted it denotes no good
sail of the goods but if well
aspected it denotes gain and good
voiage

The L of Asc and descender of D
be slow in motion the ship will
make a long and tedious voyage
especially if the dispositor of these
significators be slow also. But if
swift judge the contrary.

If there happen a \square or \circ between the
L of Asc and descender of the D without
reception and no good rays from the
fortunes the seamen will differ
amongst themselves with or against
the Captain if their significators be
the strongest they will prevail
but the Masters Significator be strong
he will get the Advantage.

If the L of 2 be far from his own
2 and the 2 house from the D the
L of fortune remote thence Cadent
from it or in \square or \circ to the Signifi-
cator it shews want of Provision
which will occasion much discontent

2nd house

Shall the Querent be rich or
Poor - observe the Sign of 2 house
and its Lord - the planets that are
therein and those that cast their
aspects thither or to the Lord thereof
the ☉ his place and disposition
1 when you find all the Signifi-
cators free or major Part of them
and well aspected by the fortunes
he will attain to a competent
degree of wealth - But if all
the Significators be afflicted and the
fortunes no way assisting he will
be very poor most part of his life
If the L of Asc or D be with the
L of the House of Substance or if
the L of 2 be in Ascend or L of Asc
or D be in the 2 or if the D or any
good Planet transfer the light of the
L of 2 to L of Asc - or of the L of Asc
to the L of 2 - he shall obtain riches

and live in credit according to
the Quality of his birth.

If none of these happen observe
4 who represents riches as ♀ who is
a fortune or ♂ - and if they are
free from all beams of Manser
or pointed in the house of Sab
ace - the Lucrent will be rich
and live in good repute. But

♂ or ♀ in 2 - or afflict the
L of 2, 4 ♀ or ♂ denotes he shall
not attain riches and if any
inheritance fall to him he shall
squander it away - and suddenly
reduced to want and live obscure

The Significators of Substance
swift in motion and in good place
of the figure and free from all
manner of affliction he shall
Attain riches suddenly

But if slow in motion though
not afflicted riches comes but
slowly especially if the Planets
signifying riches be in fixed signs

By what means shall the
riches be had

observe the significators of Substance
and their several Positions and as -
also the houses they govern - from
hence is known by what means
riches comes - if L of 2 or other
Significators of Substance be fortu-
nately placed in the Asc he will
attain riches without much labour
or at least unexpectedly But
if the L of 2 in the 2 he will
gain wealth by his own industry
If the Cusp of the 2 with L or Q in
disposition or ♃ in the Asc or 2 - or
the Planets in good Aspect to these
Places the Strongest in Water Signs

denotes gain by trading to sea
as matters relating to water

If the Significator be posited in
fixing Signs denotes gain by
some trade relating to fire as
a Chymist Instrument maker
Baker Barber &c &c

If in airy signifies wealth got
by ingenuity or without much
labour Dancing Singing fowling
&c hawking &c &c

Earthy signs signifies - more
of laborious - as Husbandmen
miners Coal Merchants -

If the ☽ be in 8th or its disposition
or L of 2 well dignified there
and in good aspect with L of Asc
or D denotes gifts Legacies from
persons diseased or By Marriage
The L of 8 in 10 in good aspect
with L of Asc or 2 or Cusp there

Promise Increase of wealth
from the Wills of the Dead and
if 5 be significator it is lands
if 4 Money If 9 rich household
stuff. and so of the Rest
If D strong in 2 promise riches
If weak and afflicted Judge con-
trary - and accordingly Judge of
the other Planets according as they
are strong or weak

The time when riches may
be expected -

observe the Application of D or L of
Asc to the significators of wealth
and by their distance is known
when the riches will come

Take notice of the degrees of distance
between the significators and turn
them into time, in movable Signs

so many degrees of distance
between the significators either
by body or aspect. then so many
weeks or days - it will be before
it happens in Common Signs
so many months or weeks in
fixed Signs so many years or
months according, as you find the
significator propped for angles
are equivalent to movable Signs
Succedent to Common Cadent
to fixed Signs the Best way is the

Take the Rise or Oblique
Ascension of your significators
and direct them (as in a Nativity)
to their several Promitors, this is
the only way of finding the time
of obtaining riches. But if the
Question be of a particular sum of
money observe the degrees of distance
and count your time by years months
or days as aforesaid

Condition of an absent
Brother

Consider the L of the 3 and the
House where he is present and
accordingly judge of his condition
as if you find the L of 3 in a Cadent
obscure house and in \square or \circ of the
unfortunate or in bad aspect to the
lord of the Cadent Houses the condi-
tion of him is very sorrowful
But if in good aspect of the fortunes
and in good Houses he is a cheer-
ful and happy condition If the
L of 3 in 4 he gains by his industry
in the place where he is it being
his house of Substance If the L 3
be in 5 not afflicted he is in health
and takes delight in the society of
persons he lives with But if
afflicted judge the contrary. If the
L of 3 be in 6 and afflicted - -

by the L thereof nor by any
infortunes he is not well and is
in a weak Condition if the L
of 6 in 3. shews the same. then
mind ^{whether} the L of 3 be in 6 with L 8
or applying to combustion for
that shews death or at least great
danger thereof. But if you find
the lord of 3 in 7. he is in the
same country he went into at
first and thinks to continue
there especially if in a fixed Sign.
If the Significator be in 8. he
is in danger of either death or impr-
isonment if the L 8 or 12 afflic-
t him there when the L-3 in the
9 he is removed from his first
Place and according to his Signi-
ficator wether good or ill respected
so Judge of his Success - if in 10
in 6 or good aspect of the fortunes

it denotes he is doing well
but if in \square or \circ of the infortunats
combust or other ways afflicted - he
is provably dead. If the Significator
be in 11 well aspected of the fortunes
it argues he is at the house of a
friend & well entertained But
if he be afflicted with the Unf-
ortunes - not well entertained
vexed &c If the Significator
in 12 - in \circ Δ * of the fortunes
and they no ways afflicted - shews
he trades and gain by great Cattle
But if afflicted there he is in
trouble perhaps Prison, Detet,
especially if the L of 7 or 8 cast
therein all aspects there when
the L of 3 in Ascend - he is merry
and pleased, all is well, if L 3
in 2 it being the 12 from 3 - he is
in fear of being detain'd for some

Unlawful action but if
his signification be rebogade
he will find some opportunity
to escape.

1 house
If treasure be hid in any
Place
where 2, 3 or 4 be in 1
in their dignities and no ways
afflicted for then it is more
than probable there is treasure
hid or if 5 or 6 be in their houses
or exaltation without impediments
there may be treasure though not
much. But if they are afflicted
it is in vain to stay in the place
supposed. The L of J discovers the
Quantity of treasure as well as
the Quality according as he is
strong or weak.

5

I shall the Querent find
the hidden treasure

If the L of 4 or significators of
treasure apply to a good aspect
to the L of Asc or 2 house the
former being in 2 the latter being
in the Asc It argues speeding
especially if ☉ be in an angle
* or Δ to 1 or 2 and well aspected
by ♃ or ♀ or if a fortune be in the
4 and behold the L of Asc or 2
with Δ or * or if ♃ or ♀ receive the
L of 1 or D in the Asc. Beholding
the L 4 with reception argues
he may find the treasure But
if the Significators be in ☐ or ☉
and no strong reception there
is no hopes of obtaining it If
the Significators be separated
from fortunes in Angles, ^{that is strong} shews the
treasure is already found

♃ ♄ or ♀ in the Asc or in ☐ or ☊
to the ♄ thereof it is useless to
search Good planets in angles

gives hopes Bad ones the contrary

The Significator Oriental it is
nuly hidden If Occidental it has
been hid a great while

When you search for treasure

Let all or most of the Signif-
icators be strong and well aspe-
cted and the ♄ of the hour be a
fortune in his own dignities in
a good place of the figure and
well aspected

A Thing hid lost or Mistaken

If it be the Querents own good
Judge thus - The ♄ of 2 be in an

angle the thing missing is
within the House of the Querent
chiefly if the dispositor of ♄ cast

his good aspect to him there
but if the Significator of goods
be in the Ascend - or in the Sign
the L of Ase is in or disposed ^{of} by
him the thing missing is in that
part of the house the Querent
most frequents - The L of 2 or D in
10 denotes the thing is in the Dining
rooms or hall - provided the Querent
has the whole house in his possession
but if he be a lodger the thing is
in that part of the House his
landlord most frequents But
if a tradesman ask it is in his
shop or counting house. If the
significator be in 7 it is where
the wife or woman kind most useth
if 4 where the father or mortgaged
lodge or in a decayed part of the house
note if the L of 2 and O with its
dispositor - and sign of 2 be in a

any Sign or the Strongest of
them it is misband on high sh.
elves eves of the house or some
where high from the ground
if they be in watery signs it
is in some moist place

If in fiery Signs near Chimneys
Walls or where Iron is laid &c
Earthy signs in the pavement
Cellar or under the Earth &c

If the significators be going out
of one sign into an other the
thing is between 2 things, or near the
going out of the Room and is
higher or lower according to the
nature of the Sign

M^r. Lilly directus to the
particular part of the House
where the thing is by the Sign
as followeth

| | |
|-----------------|-----------------|
| γ East | ☾ West by North |
| ☉ North | ♁ South by East |
| ♃ West | ♆ East by South |
| ♁ South | ♄ North by West |
| ♅ East by North | ♁ West by South |
| ♄ North by East | ♃ South by West |

Of thefts or Things lost.

If good Planets be in * or Δ to the L of 2 and Asc - and dispositor of ☉ in the Asc or 2 - it argues the Recovery of the goods

Either ♃ or ♆ be in the Ascend having dignities in the 2 - or ♃ in ♃ - in * Δ to the L of Asc these are certain Testimonies of recovery of the things Lost

♃ in 10 in good aspect to a planet in the 2 - or in the 2 in Δ to the Lord thereof or to the dispositor of ☉ the L of Asc in 2 - the ☉ in Δ to each other or the L 2 in 11 or 4 hours all these are great signs of recovery

The L of 8 in use or with its Lord
denotes recovery

Y ♀ or 86 in 11. gives great Hopes.
The D & his disponent or L of 2 in 8
shews no recovery if bothe the Lum-
inaries be under the earth it is hard
to be recovered and ♄- at the same
time the L of 2. be combust it is
in vain to seek after it -

♄ ♀ or ♃ in the 2- and out of their
essential dignities - or the L of 2 in 8
or in combustion or if the L of 8
afflict the L of 2 these are strong
testimonies of no recovery -

When the ♄- shall be joined to the
lord of 8 - and the L of 2 behold not
the first house nor its Lord - and
at the same time the O & D under
the Earth not respecting each other
nor the ♄ it is almost impossible
to recover the goods

How to find the Significator of
the Thief

a Planet afflicting the 2 house its
Lord or the ☽ whether he be Peregrine
or essentially dignified shall signify
the Thief and the more certain if
the at the same time the afflicting
Planet hath dignities in 7 house

If no Planet afflict the 2. his L
nor ☽ - if there be then a Peregrine
in an angle he shall signify Thief

If none of these happen take the
L of 7. for the Thief. and describe him
according to the Age & Sex of the

Thief -

If the Significator of the Thief be
a Masculin in a Masculin Sign
he is a male - or contrary - -

If the Significator be Oriental &
in the Beginning of a sign he is young

If Occidental and in the end of
a sign the thief is more aged
If ♄ signifies the thief he is Old
If ♃ ♂ & ☉ about 30 Years —
If ♀ more Young —

If ♀ youthfull

If ☽ if in first Quarter a Child if in
the beginning of a Sign — otherwise a
youth in 2. between 2 or 30 in
his 3. between 30 or 40 in his last
Quarter 40 or 50 — if in the latter
end of a sign between 50 or 60

If more thieves than One
Many planets afflicting the house
of substance his lord. ☉ or ☽
Planets Peregrine in Angles there
are more than One

To the thief known to the Quere
The Luminaries beholding the Asc
or its ♄ or Lord of * in the first
or in 6 to the ♄ of ♀ denotes the thief

is known to the Querent - The same
when the O & D be in their proper houses
or in the house of the L of Ascend -
The Significator of the Thief L of 3 in 3
or L of 3 in Asc denotes a kindredman Neighbor
If in 7 Belonging to the House the L of 7
in 7 or Asc the same The L of Asc
in 3 4 or 5 houses - servant or Lodger
If the L of 7 be significator of the Thief
in 3 - Brother - 4 a father 5 a Child
6 servant &c - The Significator in
3 or 9 it is a stranger

Whether the Goods be far from
the Owner

If the significators of the goods be
with the significators of the Thief
or with the L of 7 they are with
the Thief If the L of 2 in 2 they are
with the Owner - otherwise observe
the distance of the L of Asc and 2

or ☽ or its dispositor and allow
for every degree in Moovable signs
17 houses or furlongs in Common Signs
every dg gives 5 houses or furlongs
in fixed signs & dg gives 1 furlong or
House

In what time shall the
Goods be Recovered

Having testimony of recovery, notice
the significator of recovery and
then dist either by body or Aspect
and turn it into time If they are
Moovable signs gives so many weeks
or days as an dg of distance for the
time of recovery If Common weeks or
Months If in fixed Years or Months
If ☽ and ☉ both behold the Asc or
its L by a good aspect - it will
soon be recovered and more certain
if the L of Binⁿ Ascendant

The D with ♃ or ♄ in Asc it will
be quickly obtained

When the L of Asc comes to the
blabe of ♃ or cusps of 2 house or dispo
sitor ♃ to the L of the Ascendant
shews the day of recovery or meet
Of fugitives or Strays -
whether found or not

♃ and D are naturally significators of
fugitives but the 7 house and its L
particularly signifies them (if it be
not a beast that is Strayed - mind
if the L of 7 be Retrograde - then he
comes back of his own Accord and before
he is gone far If the L of Asc and 7
be in good aspect and the L of 7
be the Applying Planet he is coming
home But if the L of Asc - apply -
he may be found by enquiry -
and if the Significator be in ☐ or ☊
or in no Aspect he will not return

but hide himself. If L of 7 be in
9 or 3 he is gon a long journey
The L of 7 or D in 12. house afflicted
she is in Prison & so pointed the same
but if a Horse &c. be staid observe
the L of 12 and Judge as before
If a small beast the C House
and L thereof is to be minded
Which way are they gone
and what distance

If the D or Significator of the fu-
gitive be in 10 he is south If in
7 west If in 4 north If in 12
East. Observe if the significator
be in watery signs they are north-
ward near watery places If in airy
Signs - they are west ward in hills
Earthy Signs - Southward - woods &c
Fiery Signs Eastward in open fields
or newly dug up Earth -

Y^e refering allways - the sign before
the Quarter - if the Significator
be in the Arc or within 3 deg of its
Lord he is in the same town as the
Querent lives in

If his significator be in fixed
Signs Account for every deg of distance
between the L of Asc and him either
by body or Aspect - 3 Miles in Com-
mon Signs 1 mile in Moveable Signs
1/2 Mile in the Country if in a
City count them Houses

If the Significator is going
out of one Sign into an other he
is going out of town or if in \square or
with the L of Ascend the same

of Fishing

The most successful time for fishing
is when the D is in ♄ or ♃ in
the 10 house in ♃ or ♄ of ♀ in ♃
and the D applying and not sepa-
rating from any planet in a
watery sign let not the D be
afflicted by ♃ or ♄ neither let
them be in angles of the figure
especially in the 1 and 7 house

Of Hunting you shall know the
L of Hunting by Asc D and from the L of the
term of the dg of D and from L of house
for the L of hour is of strength ^{when} in Asc
if Asc ^{be} a sign of 4 footed beast or an
Earthy sign. these are good see if L of
asc and L of hour if they be fortunate or
not see if the behole each other or sepa-
rate one from an other. If a sign of 4
footed beast and the L thereof or L of hour in
or the L of angle fortunate it is good

Is one Bewitched or not

If L of 12 in 6. or L of 6 in 12. or L of Ascend
in 12. or L of 12 in Ascend or L of 8 in Ascend
or L of Asc in 8. in a question where sus-
-pition of Witchcraft is. It is provable
otherwise not so. But this is more certain.

If 1 Planet be L of Asc and 12. the sick-
ness is more than natural. When J is L
of Asc and 12 and in 12. Retrograde or in
7. or 8. Retrograde and D L of 6 applying
to J - the party is bewitched or that
evil spirit hath power over him.

If L of Asc be combust or unfortunate in
12. or joined with L of 12. they are bewitched.

If L of Asc be L of 12. and combust
you must observe what house \odot is L
of and in what sign and quarter
of Heaven. he and L of Ascend are
and judg the witch liveth that way
describe the \odot in sign as he is and
it represents the person

If L of Asc. be L of 12 combust or
unfortunate by L of 3 it is a neighbor
hath procured some witch to do it
or one of your hundred. se in what
house the L of Asc. is in and in
what house the L of 3 is in and
infortunates in. you may judge
the cause of the malice. To proceed
from something of the nature of that
house If the L of Asc be unfortunate
as aforesaid by L of 5. it is some
Wife Nurse or drunken companion
that occasions it. If the L of 10 aff
lict ^{by 1000} the L of Asc ^{The Lad of the hour & D.} in 12 it is the
hand of god or by some supernatural
power or cause If L of Asc be an
unfortunate Planet as δ or γ and be in
the 12 house combust and unfortunate
by L of 12. the person is bewitched by a
common witch

If L of 12 in Asc it argues Witchcraft
or that some evil spirit doth molest
him or that some about him do
bewitch him If D in 12 in S to L of
Asc or 12. If people suspect their
cattle bewitched, make the 12 house
their Asc and 11. then 12. if great
cattle and carry your rule according

The cure is elsewhere expressed

Of Lawsuit betwixt two which
shall overcome &c The L of Asc
and D are for the Querent. the 7 house
&c are for his enemy. observe which
is strongest and best respected he shall
gain the. the land γ in \circ * or Δ the
partys will agree soon without law
and the applying planet. that person
shall first make proposals of peace
&c whether he be L of Asc or γ . now if
they are in \square or \circ without reception

They will go to law - and the stron-
gest will gain. Now the L of
10 signifies the Judge and see if
he aspect the Ascend of γ . best
and it will shew which side he
will lean to But if any friend-
ly planet collect the Lights of the
Sun & γ . it may be setled by some
friend &c

If L of Asc and γ in Angle neither
shall overcome see which is joined
to an evil planet in a cadent house
that party shall be overcome if
both be joined to evil both partys will
be undone by the suit. he that is
meanly strong is fearful &c. Observe
this in Questions of Wars &c. the
fortitude of a Planet is greater in his
exaltation is greater than in his house
but in all other questions Contrary

Of Partnerships. The L of Asc
for the querent the L of Desc for the
partner observe the Planet in 7
and near the cusp of 7 and if the
party enquired after be more like the
Planet posited in 7 than the L of 7 take
that Planet for his significator who
is nearest his description and consider
him otherways as you would L of 7.
Let D be partner in signification 10.
shews what credit will come of the part-
nership whether it be good or ill
see A house and its L and planets there
in posited and the Planet to whome
the D applies. If L of Asc and D be
in movable signs without reception
then they will disagree but the
partnership will stand but to no good
If significators in fixed signs it will
continue long partners but if no recep-
tion

little profit to either - if in common
signs it promises generous partnerships
and faithfull to each other If ones
significator be in a Movable and the
other fixed Little disturbance If all
planets aspect L of Ase and L of 7
neither party will deal fairly see in
what house the evil planets are and
Judge the cause evil planet in Ase
the querent if false an evil in 7 contrary
If L of 7 or 8 cast good aspect to the
partner will embarras the Stock
to be or not to be

If good planets be in 1. and 7 it shall
be and good shall come of it If L of 1 & 7
agree in nature & the partners will
agree if not contrary

As the 2nd house signifies the
substance of the Querent the 8
signifies the Partners substance

If a person have a mind to speak
with another whether he shall find
him at home

if you would speak to him whome
you are familiar and constant

dealings - but by no means related

The 7. House and his lord to represent him

The Ascendant signifies the Querant -

if the Lord of the 7 be in - 1. 4. 7 or 10 house

he is at home - if the Lord of 7 in 2

5. 8 or 11 house he is not at home but

near it, and may be seen with

diligence - But if lord of 7 in 3. 6. 9

or 12 house (Cadent) he is then

far from home - But if the

L of 7. apply to lord of Asc - by a friendly

Aspect. you will meet him or hear

of him in your way or if D or any

other Planet transfer the light of

the lord of 7 to Lord Ascendant denotes

the same - observe the nature

50

& sect of the planet transferring
light, signifies what manner
of person will inform you
But then regard must be had to the
Sign and quarter such significations
is posited in

if you would speak with
a relation - - - not take the
7 house but the house that signi-
fies such a relation as if a
Brother The 3. if father 4 - if
Son or daughter 5 - and judge
of their positions as afore said

If - a absent person is dead
or alive - - - - -

First consider what relation
the querant is to the quesited and
accordingly take your significations
but if no relation Take the Ascen-
his Lord and D to signify the Absent
party - - - - -

if L Asc or D be in 6 with L of 8
or a Planet in the 8. and no good
testimonys to the contrary he is dead
when D and L of Asc in 5 to L of 8
from 2 & 8 or 6 & 12 houses - he is dead
or if L of Asc in 4 and D in 7 in
□ to him there - it shews great danger
to him if not dead or when an
evil Planet translate the light of
the L 8 onto the Asc or
L of Asc to the L 8 he is dead
L Asc or D be in 4 - or in 8. and
combust in their falls - or joined with
the L 8 he is dead. but if none of
these happen and you find the
Asc and his lord fortified - he is
alive and in health if L Asc or D
seperate from L of 6 he hath been
lately sick if from L 8 he has been
in danger of death - if from L 12
he has been in prison and much trouble

and by varying your rule you
may know his conditions accord-
ing to the significators separation
or application be good or evil

Shall the Quarent obtain
the Money lent

The Lord Asc and D signifies the
quarent - and L of 2. his substance
or any thing lent - but 7. and the
Lord shews the person that is in-
debted to you and the 8 and the L
denotes his substance - if the L of
Asc or D be joined to the L of 8
and see if either of them be joined
to or in good aspect - with a Plan-
in 8 - and he a fortunate you will
obtain the money enquired after
and if an unfortunate be with
Lord of 8 or in the 8th he Either near
the L of Asc or D the person shall obtain

but without reception it seldom
happens without much trouble
when the L of 8. in 1 or 2 and
L of 2. shall receive him it
denotes suddenly accomplished?
if the L of 7 or 8. be in the 1 and
not received by the L of Asc the D
or lord of 2. shews the person will
be disappointed. and lose by deman-
ding it

Whether one shall recover his
Wages

The Lord of Asc and Asc and D are
for the Debtor with 2 and its Lord
The 10 with his lord signifies the
person enquired after The 11 and
his lord for his substance if
you find Lord of asc or D joined
to the L of 11 or a fortunate Planet
in 11 free from affliction he shall
obtain it

and if the D or lord of Asce be joined
to an infortune and the infortune
Planet receive them - he shall obtain
it with difficulty and delay
But if no reception happen between
the said significators - he then
hardly obtain the Money
of Inland Journeys -

if ♀ or ♂ be in the 3 or the Lord of
3 no ways afflicted - either by presence
or ill aspects of infortunes and the
L of 3 be a fortunate it shews a
prosperous Journey

if L of Asc be swift in motion
and in dignities of the L of 3. or in
good aspect - with the lord of 3 or with
a good planet in 3 or the D in good
aspect to the significators, promise
a good Journey - and delight

If ♀ be upon the 3 - and ♀ in ill

if aspect to ☿ danger is threatened
in that Journey (bad ways wet weather)
if ☽ be in 3 it shews roberies - + - -

The Lord of Asc in 10 in a movable
sign he makes but little stay fixed
signs delay the time and common
signs make him go from one place
to another A fortune in the Asc
denotes good success at the beginning
of a Journey in 10 it happens in
the middle thereof in 7 in place where
he goes in 4 shews good conclusion of
his business, in order of his return
when evil planets are there Judge
contrary

of Buying or hiring Houses
or Lands &c &c

The Asc and Lord with 1 are for Tenant

The 4 signifies the House enquired after

The 7 and its L. the Landlord the 10 house

and M.L. and planets therein show
the price of the House or Land
if L of 7 apply to the L of use the
landlord will be willing to agree
with the quearant^r about it
and soon done, if good aspects happen
at the same time angular and strong
or if L Asc or D apply to L of 7 by
a \times \square or \square if the lord of 7 receive
them they will agree but he must
be sought after if the D, or any Planet
transfer or collect the lights of the
Significators it signify the same
observe the same rules between the
L of 4 and the Asc as you did by
L of 7 the \square or \circ may effect the
business if there be mutual reception
a fortune in 10 or in a \times or Δ to the
lord of 10 or Asc they will agree

But if in fortunes be there or in
□ or ∞. no bargain can be effected
and they differ about time or repairs &c
if L of Asc be strong in the Asc or in
a * or Δ to the cusp of the Asc. or
if 4 or 9 be in the Asc or if ☉ be there
and these not afflicted are testimony
he shall take the House
of the Seller

if a fortune be Lord of the 7 and
in the 7 or if they behold 7 by a * or
Δ the letter or Seller of the House
will prove punctual to his word
but he will gain thereby

If 5 or 6 be in 7 and not L thereof
you must act wearily in your
agreement - otherwise he will be to
hard for you. If good planets be in
4 they promise a good conclusion to the
Business if the L of 4. therein the same
If in fortunes in 4 afflicted Judge contrary
is ♀ bad is ♂ good — — —

If good to remove or stay
where he is

An unfortunate in the Ascendant
retrograde or Peregrine or in 4 or 2
in \square or \circ to their Lords it is not
good to stay, or if the lord of 7 be
with a good planet and L of Asc or
with an evil one (the same)

If the L of Asc or fourth be in 7
and the lord of the Asc and 7 fortunate
swift in motion and strong it
is best to remain where you are

If the L 8 or 12 do afflict the L
of Ascend, he is privately scandalized
if L of 6 be the Afflicting Planet
he has not is health where he lives
if L of 10 he has no trade and declines
in his credit if by L of 2 or \square afflic-
ted he wants stock and is in no
thriving condition

May the Quarent have
Children.

The signs upon the first and 5.
watery she will have children
The L of asc in 5 or L of 5 in Asc or
in 8 or 4 or ♄ of ♀ or ♃ in fruitful signs
promise issue. ☽ in 5 and ☿ in good
aspect with L of 5. out of proper
houses or with any Planet in 5. or
4 or ♀ in 5 or in angles or in 11.
direct and not afflicted especially
if the ☿ behold 4 or ♀ all these are
certain testimonies of having children
the like if good planets behold the
first and 5.

The Asc. unfortunate and the L of
1 & 5. cadent. and unfortunate ☽ & ♃
in 8 denotes few and if any very
sickly and short lived ♃ or ☽ may promise
children. if they be strong and in good
aspect with 4 & ♀ but judge contrary
when weak.

Whether the Quarent be with
Child

If the L. of Asc D or his dispositor be
in 5th and not afflicted and in fruitful
Signs and in ♄ or ♁ with L of 5. she
is with child

But if ♃ or ♄ or ♀ be angular or
in 5 or ascendant deny I have If
a planet - be in Capricorn or Heart of
the sun she is with child. The L of 5
with his dispositor the same

If she be conceived with more than
one If ♃ ♄ or ♀ be in common and
fruitful signs in 1 or 5. and the L of
the fifth cuts thereof the ☉ D and
their dispositors in common signs (or
major part of them) she may be
conceived of more than one: if

♃ ♄ or ♀ be in any angles in com
mon Signs the same chiefly if the
L of 5. behold them with good Aspect

○ I find lord of 5 in fixed Signs
shows single conception

How long has she conceived

The L of 5. or hour of D. observe what
of these lately separated from the
Aspect of any planet. if it was a ○
she has conceived 1 month if a ✕ the
2 or 5 month □ she is the fourth Mo
△ the 3 or 5 mo: if ○ she has conceived
6 months

Whether it be male or female

the Sign ascending Planets in the
Asc and the L of Asc - with the Lord
thereof Planet or Planets in 5 and then
that aspect the Lord of 5 according
to the greatest testimonies Judge
Masculin Planets and Signs denote
a Boy - Feminine a Girl
and to know which will live the
longest if the Masculin Planets be
Strongest the Boys, if feminine Girls

Whether win or loose at Gaming
If the L of 5 be fortunate and in
5 or Asc. and in good aspect with
the lord thereof, you are likely to
win or if ♀ or ♁ be in the 2. in
♂ or ♁ to the L of 5 or Asc. - you will
win if the lord of 2 be not weak
and afflicted

But if the lord of Asc or D and the 2
house and his lord unfortunate he
will loose: if fortunes be in the 5
and its L in ♀ and in ♂ or ♁ to the
Lord of ♀ he will loose if ♀ be in 2
and ♀ L of ♀ he will be cheated out
of his money though otherwise there
may be good testimonies

Whether the Servant or Lodger may
Be trusted

The L of Asc and D are for the Quarent
The 6 House his lord and planets there
for the Lodger or Servant

if either ζ or ν be in the 6 they
are not faithful ζ makes them
dull sluggish & sullen ν makes them
rash and given to unhappy actions
as theft &c ν to cheating and Lying
If the L of 6th be in \square or \circ to the L
of Use or 2 house the servant will
be very unprofitable and prove
a vexation to the Quarent especially
if no reception happen

But if L of 6 be in good Aspect to
the L of Use and 2, and strong
the Servant or lodger will prove honest
and profitable to the Quarent

If no aspect happen see if there
be a reception or translation of lights
between them provided their Sig-
nificator be not afflicted and
Judge Accordingly

Of Sickness

The Asc and its L. are significators
of the sick Party

The 6 house the L thereof and the
Planets therein and the signs where
they are with the D and his place
tells you the distemper and parts
afflicted considering the Asc and its L
the 7 house denotes the physician
the 10 his medicine

If 7 house and its L be afflicted
the Physician will hardly cure
if the 10 house & its Lord be afflicted
the medicine is contrary and
improper to the disease

The 4 shews the end thereof whether
long or short - fixed Signs prolong
the time Common Signs change
it from one distemper to another
movable Signs shews a quick
dispatch either life or Death

If the L of Ascend and D be comburst
of ☉ denotes death except 4 or 9
cast their Δ or ✕ aspects to them
and well dignified. the ☉ and D
afflicted under the earth denotes
great danger

If the ☉ and D and L of Ascend and
6 be no way afflicted, the sick
will certainly recover the L of
6 and Asc weak and afflicted by
the L of 8. and he an unfortunate
the sick hardly escapes

The L of 8 above the earth strong
the L of Ascend and 6 weak under
there is little hopes of recovery
if D be swift and increasing in
light and applying to the L of Asc
by ✕ or trine it performs the cure
with speed - especially if the L of
Ascend be not afflicted, and sooner
if the lord of the Ascend be above the
Earth

4 and ♀ strong and ☿ or ♀ weak.
hope well, but if the infirmities be
strong and the fortunes weak Judge
the contrary: The significator of
disease receptive signifies a rela-
tise more violent the ☿ and ♀ disea-
free from affliction and then long
oppressed the distemper lies in the
mind and not in the Body if
the Nativity can be obtained observe
at the time of the Question whether
the ☿ be in place of an infirmity
or in ☐ or ☉ for in this case the
cure will go on but slowly if
ever it be performed - - -

The ☉ in the ♀ in good aspect
with fortune, ^{and well disposed} brings health suddenly
If sickness takes place when the
☿ is separating from conjunction
it will increase till the ☉

The O in the 6 in a movable Sign
the disease is soon changed and that
for the better if 4 or 9 Δ him there
If the L of Asc in 6 - 8 or 12 the
sick is the cause of their own
disease and this chiefly if the
Sign Ascend and the 6th be fiery

Shall the Quereant Marry
Herein you are to consider the Lord of
Ascend - D and 9 and their position for
they signify the party enquiring in
this case if they or the major part
of them shall be in fruitful signs
it is a strong testimony of Marriage
or when the said significators be in
the 7th House or in the dignities of the
lord of 7 - and the L of 7 in the Ascend
or in Δ or * to the significator - he
will certainly marry - but if none
of these happen & on the contrary all the

significators of marriage be in
Barren signs and in \square or \circ to the
or L of γ . they will not marry
If marry how long first
If - the significators apply to each
other either by a friendly Aspect
in the Oriental part of Heaven
he will marry suddenly if in Occident
Septentrional parts the Marriage
will be delayed - -

Observe the degrees of distance
either by body or aspect between
the L γ and asc the \odot or ♀ and
Judge according to their position in
fixed common or moveable Signs
as to the time of marriage - especially
if at that time there be a good
transit to bring it on - moveable
give weeks Common signs give
months or weeks fixed signs years
or months $\left\{ \begin{array}{l} 13^+ \text{ if slow in motion years} \\ \text{or weeks} \end{array} \right.$

Shall the Querent Marry
more than Once

If most of the significators be in
doubled bodied signs declares marriage
more than once or the Significator
in good aspect with many Planets
denotes the same & C. if the from
of Asc

But if all or most of the Signif-
icators be in fixed signs and Aspect
but one Planet denotes but one
marriage

What manner of Person Shall
the Querent Marry
Mind that planet the L of Asc is ^{located}
in aspect with and observe the sign
he is in and describe him accordingly
for such a one the querent will
marry

If the said significators be in 6 or
aspect with ♀ the person is pleasant &

merry if with ☉ noble and a
great spirit if with ☽ a rash and
angry person if with ♃ inclined to
melancholy yet wise and prudent
if with ♄ honest just and religious
if with ♅ subtle cunning &c.

By observing the dignities and
debilities of the Planets aforesaid
the shape quality and condition
are known the better

I shall they agree After Marriage
If their several significatos apply
or be in good aspect with one an
other it shews agreement and plea-
-sure but if ill aspects and bad
planets judge the contrary and
this the more certain if there be
no reception

♃ ☽ or ♀ in the Ascend shews the Quere-
to be the occasion of differences by being
obstinate troublesome &c but if ♃ ☽ or ♀ be
in ♄ the opposite person will be the cause

Shall the Marriage be effected
or not -

If the Lord of the Asc or D be joined
to the L of 7. or vi \times Δ to him it
will be brought to perfection - provided
the aspect be from proper places of the
figure - but if \square or \circ Aspect between
their Significators and no manner
of Reception - it will be broken off
Then observe what house the
obstructing Planet is L of and
accordingly describe the person that
shall hinder it - as if of the 10
a mother the 4 a father the 3 a
brother or sister and so of the rest.
Judge of furthering the matter after
the same method in observing the
good aspects -

Whether the be Legitimate or not
whether the marriage be legitimate
if the Significators of them either
of the man or woman vitiated
or joined to ♃ or ♄. and they not
significators of the Question or if they
be with the ☽ it sheweth some
wangling ^{to the party} ~~own~~ claim laid by some
former man or woman

Whether the Wives portion will
be great or small

If the Cusps of the 8 house be in the
terms of ♃ or ♄ and the lord thereof strong
and no way afflicted denotes a comple-
tent portion or if the 8 be well beheld
by ♃ or ♄ and either of them in the 8
and the dispositor of the 8 be in \times or ♄
to them then there is certainly an
estate to be had with him.

But if ♃ or ♄ be in the 8. in bad
aspect to the lord thereof and there

weake never hope for any portion
or estate from such a person for
it is in vain the L of 8 combust
or retrograde though it be with
4 or 9 more will be promised than
is made good. if the L of 8 be strong
in 8. yet is 3 or 8 affect him there
with \square or \circ without mutual recep-
tion it shews there is money but
will not be obtained without
much trouble and expence the 9
in 8. shews cheating and embaslements
so that the Decent will not have
but part of what is promised

Whether Man or Wife die
first - -

Mind carefully whose significator
is strongest - best aspected and most
free from the beams of unfortunes and
combustions of the \odot or from the lord
of the 8 - that party will live longest

The L of Ascend in combustion retrograde
weak or in \square or \circ to the lord of 8
the querent dies first - the like observation
of the L of 7 - counting the 2 for his
8. and judge as before and see whose
significator comes first to combustion
for they die first and if it happens
in a movable sign denotes death
in a short time in common signs
the longer but if in fixed signs
a great while before the speedy
death - Consideration be had to
the strengths or weakness of the
Significators -

Whether a long Journey or Voyage
be prosperous or not -

4 or 9 in the 9 House or in
good aspect to the lord thereof
denotes a fortunate voyage or Journey
especially if the L of Asc and 2 House

be free from afflictions and in good aspect to the L of 10 if the L of 9 or Asc - be in \square or \circ to the L of 12 or 6 he will be in danger of imprisonment - before he returns - chiefly if the L of 4 be afflicted - but if it be a voice to sea observe the Asc for though the 9 & 10 be ever so well beheld - yet if the L of Asc be afflicted by the L of 8 he may die - or if the L of 6 be afflicted he may be slain or wounded L of 12 Imprisonment the L of 4 in a watery sign drowning - significators in movable signs his return will be quick in common signs not so soon fixed signs longest of all If the Significator be Oriental a short voyage or Journey - Occidental a long one - you must have regard to the possibility of the Journey

Shall the Querent profit by
his Studies

If the L of Asc and lord of 9 be in
♄ * or ♃ either in or from Angles or
succeedent houses - argues profit
as well as delight in his studies
♃ ♀ or ♁ in the 9 in their own
dignities and well beheld by the
L of Asc - gives assurance of the
same

Shall the Querent obtain
the dignity desired

The L of Asc and asc signifies the
Querent - and the 10 house its Lord with
the ☉ represents the office or dignity
If the L of Asc or ♃ be joined to the ☉
or L of 10 or friendly behold the 10 by
* or ♃ he shall obtain the office or
dignity - The L of Asc in the 10 or
L of 10 or ☉ in the Ascendant free
from affliction he will obtain the

When with dwelling in Houses
the Significator shall be in \times or Δ
to each other or where fortunate pl-
anets be in the Asc or 10 house it gives
assured hopes of obtaining the dignity &c
J. S. or P. unfortunate in the Ascend-
denotes obstruction but if they be
strong and joined to the L of 10. either
body or good Aspect. - Expresses hopes
of obtaining but with difficulty

If none of these happens but on
the contrary - Judge he will not
obtain it - -

If a person shall remain in the
Employment he Possesed - - -

In in this Question or any other of
the kind you are to make use of
the same rule as in the former - -
concerning office or dignity - - -

What profession will be best
to follow

Give the Asc his L and D to signify
the Querent and the L of 10 and the
planets S and ♀ to signify the Profession
&c and consider the aspect between
the significators according to the
sign you find them posited in and
so Judge thus - if the Significators
or Major part of them shall be in
fiery signs the profession will relate
therunto according to the capacity
of Birth fiery Signs

As if he be of quality sufficient
let he be a Physician Surgeon
Chemist - Goldsmith &c if of a mean
condition a Armourer Cutler Smith
Barker Glass Maker &c &c &c
if the Significator be in Aerial Signs
if of good capacity - Lawyer Astronomer

Arithmetician Geometrician or
Surveyor Clerk &c &c &c

If his significator be in earthy
signs - farmer Husbandman
Shoemaker Carpenter Butcher
or any kind of servile work

If in Watery Signs - Malster
Brewing selling wines Vintling
fishmonger Sailor or any trade
belonging to the watery element -

If the L of Asc and D and L of 10
be with fortunate planets be in
good aspect to each other the
person will gain much by his
profession

Shall the friends of the Quereant
Prove faithful or not

If there are friendly aspects be-
tween the L of Ascend- and 11 houses
or translations of lights, or if the
Asc and 11- be otherwise fortified
the friends will prove faithful

If ♀ ♀ or ♀♂ in 11 argues the same
If ♀ ♂ or ♂♂ bitaking the 11- denotes that
they are deceitful - The L of Asc
afflicted - the same

Both the Quereant Private
Enemies

observe what aspects there are between
the L Asc - and 12 house - and
from what house of heaven it happens
and so judge - If the aspect be
by ☐ or ☉ or out of the Malignant
houses then hat he private Enemy
If the L of 12 be a superior Planet

as \int 4 δ - and any ^{way} dignified the
enemies are more to be feared

The L of Ate and D in good aspect
to the L of 12 or any Planet in 12
or 4 \int or δ portend there the Querent
hath no private enemies and if
any they cannot hurt him

If Private Enemies who are they
observe the position of the sig-
nificators of his enemies - and judge
as followeth If the Afflictor be
from the 3 house the his Brothers
and Sisters are his chief enemies If
from the 4 his father If 5 his Children
If 6 his Servants &c &c

Describe the person from his Sig-
nificators and the Sign wherein he
is Located - &c

When shall the Prisoner or
 Captive be freed —
 The L of Asc and D swift in Motion
 argues enlargement in a short time
 The L of Asc or D stronger than
 the L of 12 denotes the same
 The L of Asc in * or Δ to 2 or 9
 and they or either of them have
 dignities in 11 or 12 houses denotes
 freedom by means of some friend
 and that in a little time
 If in Moveable Signs sooner
 But if the L of Ascend be in □ or ◊
 to the L of 12 and 7 and 8 or 9 be
 in angles and strong and the
 other significators weak and fixed
 signs argues long imprisonment
 especially if the L of Ascend be
 Cadent and the D in ♀ or ♁

Chose Aphorismes -

When you hear News or else in questions about news. Behold the L of the Asc. the Asc. its self the Lord of the Hour. if the ☿ ♀ or ☽ be in the Asc. or if Lord of the Ascend be with them it is not true

If ☿ ♀ or ☽ be there not afflicted it is true enough. If no Planet be in the Asc. behold the 5 house and if any Planet be there judge by the former rules - if no Planet be there neither. view the lord of the Hour and see if he be direct or Retrograde in what house he is and to what Planet Aspected and Judge from thence

If the Asc. be a Moveable Sign especially ♊ then be sure it is false. If the fortunes be in Angels it likely to be true

If infotunes be there it is false
Unless it be bad news and then
it is too true

If it belong to War or Bloodshed
and J in an Angle it is true
But if J be there it is false
If J be Angular the report be
concerning death imprisonment or
sickness it is true - of his nature

If in Questions of War the L of J
be in \square or \circ to the L Asc - no
peace can be expected

If the L of Asc and J be in \times or Δ
a peace may be concluded by treaty
if the treaty be made by such a
person as that planet signifies who
is lord of the figure

To know a persons thoughts before
he reveals them. to you

To this purpose mind where the
L of the Asc is provided he is not
combust Retrograde deterrment at fall
for then you must take the D and
L of the Horn for if they (of which
is strongest of them) be in the first house
he comes about himself but if they
are in 2 it is about money estate or
goods if the 1 part of 3 - he comes about
some short journey. if in 2 P. 3: about
his bretheren or kindred - If in 1 P. 4
about his father or Mother or Old Persons
in 2 P. 4 about house farm or Shop
if it be in a watery sign in 3 P. of 4
the conclusion of some Buisnes

In 1 P. of 5 it is of Children or Schollars

In 2 P. 5. of Joy or Play in 3 P. 5 Clothes
or Ornaments in 4 P. 5. Reports Letters
Books or Inventions or about Inventionary

If in the first part of the house of
sickness 2 part of Servants 3 P. small
cattle

In 1 P. of 7 house of his wife or sweet
Hearts - 2 P. of 7 it is of society the 3 P.
is of theft or goods lost

In 1 P. of 8 house, of death 2 P. dividing
inheritance in 3 P. of 8 of debts -

In 1 P. of 9 house of Religion or Laws

In 2 P. of 9 of Journeys or Voyages in
3 P. of 9 of dreams

In 1 P. of 10 house of Kings in 2 P.
of Honour in 3 P. his mother

In 1 P. of 11 house of merchants
or trading In 2 P. of Riches In 3 P.
of friends

In 1 P. of 12 house of Enemies

In 2 P. of Captivity or imprisonment

In 3 P. of Great Cattle

If the L of a be weak or afflicted then
take D if she be weak and not in sign of
her own Sex - then take the L of the house

Whether a woman be a Virgin
or corrupt - or hath a person
whom she loves better than her
husband if she be married
consider the Ascend - and its Lord
and the Significatrix, which is the
V (in this case the querent hath
no house or Planet to represent him)
and see if they are both in Angles
and in fixed signs - she is a Virgin
and . and never tempted by any

But if the L of Asc & Moon in
fixed signs and the Angles moorable
she hath been tempted but never
yielded and if the V be joined to J or S
bodily, or by aspect. so there be
between them 5° or less she is
tempted by one signified by that
Planet to whom the V is joined
But if the V be joined to Q or G

she is tempted by some woman
for a man - she refuses -
but if the moon be separated from
either of the said 3 minutes - she
is angry with her tempters

If the Angles fixed signs and the
L of Asc or the D in a moveable
or common Sign (common signs
are of less importance than moveables)
she hath and is tempted - yet
yielded not -

If L of Asc and D in moveable
Signs, or if they in common Sign
and D be joined with any Mars
or other Planets - she is embraced
by one signified by that Planet
to which the D is joined

If the D be with the D it's begun
but not perfected yet she has
lost her virginity by that means

But if the ♀ be with the ♀ she
has is and will be guilty

The Same may be Judged of ♂ if
he be found in the Place of the
♂ but he does not so wickedly as ♀
but if ♀ be joined to ♀ in like manner
in signs and Angles shews she hath
not done the Act yet is not a
virgin and sins against nature
but if the ♀ be impeded in the last
face of II the woman hath cor-
rupted her self and if the ♀ be
impeded in the last term of the
same Sign she will persist in
her wickedness And if the Asc be a
movable of common Sign or L Asc
or ♀ be in M or C Sign the woman hath
lately lost her virginity. If the Asc
be a fixed and L of Asc is a fixed Sign
although the ♀ be in M or C Sign
or if the ♀ be in a fixed Sign although in

The Asc or L of Asc be in M or C
signs. she hath not lost hir
maidenhead provably some man
hath defouled hir by violence
but hath not corrupted hir

And if the L of the Asc or D be
combust in a moovable sign
She hath been Ravished and lost hir
virginity by violence, if the
combustion be in a fixed sign one
hath forced hir but she overcame
him and is not corrupted

But if the D be in the Asc with
J and the Asc be a fixed or Common
Sign she is not deflowered

And if the L of Asc or D in 5th
or L of 5 - in Asc, or if they be conjun-
ctly joined in one sign it signifies
the woman hath already conceived
and if they be separated one from
another 3 dy or less she hath brought

forth a child But if the D be
impeded by δ and δ in a \square with
with q in perfect aspect or if q be
separated from δ a minute or more
and q in δ m or h and δ in v or in
his impetuosity and in \square to q so that
she being separated from him, she
is a virgin and not corrupt

Whether the child is the man's
it is reputed to be

If a wife conceive - he doubting
it not to be his and propose the
question - The L of Asc and D which
signifies the querent - and 5. house
and its Lord the significator of the
conceived and if they aspect one
another by a Δ or \times with reception
or without the conception is Legitimate
or if they behold one another by \square or \circ
with perfect and mutual Reception
or if the L of Asc or D be in the 5th
" "

or if the L of 5 be in the Asc
not aspected by evil Planets, or
if the fortunes behold the 5 house
or his Lord the conception is
Legitimate or child if it be born
But if it be not so see if the
evil Planets J or S behold the House
of Children or his lord. Then the
conception is by Whoredom and
the Child a Bastard

General Election belonging
to the Aspects of the Planet & Moon
Conjunction of J & D unfortunate day
do not go to Kings noble men con-
verse not with old men fly husband-
men all labour and Courtships

* J & D it is a good day with rural
People till the earth Plant &c
do not seek the love of women

□ of J & D is a bad day confer not
with Princes and aged men

take no Physic - Journeys nor seek thy
desire. Δ of ζ & D is good in all
things accompanying Rural People
Till Plant &c Repair Houses &c

\circ of ζ & D entertain no servants do
not undertake any kind of thing

Conjunction of ζ and D it is fortun-
ate day to go to great men and rulers
expect good Councell and Justice

* ζ & D a good day to converse Lawyers
and ecclesiastical men

\square of ζ & D good day to study Phylo-
sophy - you may entreat with
Lawyers and Clergymen

Δ of ζ and D begin all honest work
repair to Judges Prelates &c it is good
to meet them

\circ of ζ & D it is good to take a Journey
to meet persons ecclesiastical

Conjunction of δ & ν infortunate
day take no Journey avoid war-
faring men & Soldiers

* of δ & ν it is good to buy weapons
and horses for war & Journey to war
and deal with any one belonging to
fiery works

\square of δ & ν it is a day of fear beware
of contentions and dangers by fire

Δ of δ & ν dispose of all things necessary
for war make experience in Alchemy

\circ of δ & ν take no Journey hire no
servant seek not the love of women
avoid company of any sort -

Conjunction of \odot & ν begin nothing
but what must be kept secret

* \odot & ν a good day to go to kings &c
to effect the Office or Dignity -

\square \odot & ν take heed of Princes and great
men this day is to be avoided in all things

Δ \odot & ν give gifts to great men - and

ask and have a league between kings
shall hold o^o of ☉ & ♃ bad day come
not before great men. avoid this day
Conjunction of ♀ & ♃ this is a day
of Pleasure put on a new garment
seek the love of women, now they
are tractable ask and have

* of ♀ & ♃ good day to seek love of good
women take a wife women will be

☐ ♀ & ♃ hire servants good for sport
put on new apparel take a wife
but I doubt it

△ of ♀ & ♃ seek love of women - send your
children to school put on new app
arel - but let not the ♀ be in ☉

o^o of ♀ & ♃ hire servants take a Jovine
but I doubt it

Conjunction of ♀ & ♃ this is a good
day to begin calculations and writing
exercise Merchandize - Let the
messenger or Ambassador proceed

* of Q & D a good day to write Letters
seek offices be with whitty men
send children to school -

□ Q & D let ambassadors Post & ^{Bury}
proceed a journey excellent to Sel or
 Δ Q and D it is good for poets to
make verses exercise set thy children
to school or any such like Business

□ of Q & D it is a day to accompany
great men send mesenger take
Journys exercise mathematiks
or any other account -

This matter being duly
considered will answer the
expectation of the Courthouse
Reader

to do
 men
 to Sel
 to
 ch
 usmy
 nam
 lake
 tats
 le
 how

| | and feminine | smoothed Wood | or Pitta | or Deficient | fortune |
|-----|---------------------------------------|--|-------------------------|-----------------------------|------------------|
| γ | Mas. 8. 15. 20 fem. 9. 22 | d. 3. l. 8. d. 16. l. 20. v. 24. l. 29. v. 30. | 6 11 16 23 29 | | 19 |
| δ | Mas. 11. 21. 30 fem. 5. 17. 24 | d. 3. l. 4. v. 12. l. 15. v. 20. l. 28. d. 30. | 5. 12 24. 25 | 6. 7. 8 9. 10. | 3. 15 27 |
| II | Mas. 16. 26. fem. 5. 22. 30 | l. 4. d. 7. l. 12. v. 16. l. 22. d. 27. v. 30. | 2. 12. 17 26. 30. | | 11 |
| ω | Mas. 2. 10. 23. 30. fem. 8. 12. 27 | l. 12. d. 14. v. 18. sm. 20. l. 28 v. 30. | 12. 17. 23 26. 30. | 9. 10. 11. 12 13. 14. 15 | 1. 2. 3 4. 15 |
| Q | Mas. 5. 15. 30. fem. 8. 23. | d. 10. sm. 20. v. 25. l. 30. | 6. 13. 15 22. 23. 28 | 18. 27. 28. | 2. 5. 7. 19. |
| W | Mas. 12. 30 fem. 8. 20. | d. 5. l. 8. v. 10. l. 16. sm. 22 v. 27. d. 30. | 5. 13. 16 21. 22. | | 3. 14. 20. |
| 154 | Mas. 5. 20. 30. | l. 5. d. 10. l. 18 | 1. 4. | | |
| 57 | 59 | 58 | 57 | 56 | 55 |
| | 1 | 0 | 1 | 2 | 3 |
| | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 |
| | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 |
| | 19 | 20 | | | |

How

| | and feminine | smoothie boyd | or Pitta | or Deficient | fortune |
|----|---------------------------------------|---|---------------------------|-----------------------------|--------------------|
| γ | Mas 8. 15. 20 fem. 9. 22 | d. 3. l. 8. d. 16. l. 20. v. 24. l. 29. v. 30. | 6 11 16 23 29 | | 19 |
| δ | Mas. 11. 21. 30 fem 5. 17. 24 | d. 3. l. 7. v. 12. l. 15. v. 20. l. 28. d. 30. | 5. 12 24. 25 | 6. 7. 8 9. 10. | 3. 15 27 |
| II | Mas 16. 26. fem 5. 22. 30 | l. 4. d. 7. l. 12. v. 16. l. 22. d. 27. v. 30. | 2. 12. 17 26. 30. | | 11 |
| σ | Mas. 2. 10. 23. 30. fem. 8. 12. 27 | l. 12. d. 14. v. 18. sm. 20. l. 28 v. 30. | 12. 17. 23 26. 30. | 9. 10. 11. 12 13. 14. 15 | 1. 2. 3 4. 15 |
| Ϛ | Mas. 5. 15. 30. fem. 8. 23. | d. 10. fm. 20. v. 25. l. 30. | 6. 13. 15 22. 23. 28 | 18. 27. 28. | 2. 5. 7. 19. |
| ϛ | Mas. 12. 30 fem. 8. 20. | d. 5. l. 8. v. 10. l. 16. fm. 22 v. 27. d. 30. | 5. 13. 16 21. 22. | | 3. 14. 20. |
| Ϝ | Mas. 5. 20. 30. fem. 15. 27. | l. 5. d. 10. l. 18 d. 21. l. 27. v. 30 | 1. 7. 20. 30. | | 3. 15. 21. |
| ϝ | Mas. 4. 17. 30. fem. 14. 25. | d. 3. l. 8. v. 14. l. 22. sm. 24. v. 29. d. 30. | 9. 10. 22. 23. 27. | 19. 28. | 7. 18. 0. |
| Ϟ | Mas. 2. 12. 30. fem. 5. 24. | l. 9. d. 12. l. 19 sm. 23. l. 30. | 7. 12. 15. 24. 27. 30 | 1. 7. 8. 18. 19. | 13. 20. |
| ϟ | Mas. 11. 30. fem. 19. | d. 7. l. 10. sm. 15. l. 19. d. 22. v. 25. d. 30. | 7. 17. 22. 24. 29. | 26. 27 28. 29 | 12. 13. 14. 20. |
| Ϡ | Mas. 5. 21. 27. fem. 15. 25. 30. | sm. 4. l. 9. d. 13. l. 21. v. 25. d. 30. | 1. 12. 17. 22. 24. 29. | 18. 19. | 7. 16. 17. 20. |
| ϡ | Mas. 10. 23. 30. fem. 20. 28. | d. 6. l. 12. d. 18. l. 22. v. 25. l. 28. d. 30. | 4. 9. 24. 27. 28 | | 13. 20. |

Meteorological Table

| | Expect in Spring | Expect in Summer | Expect in Autumn | Expect in Winter |
|-------------------|---|--|---|--|
| Saturn & Jupiter | Wind & Rain | Rain & Thunder | Wind & Rain | Turbulent Air |
| Do & Mars | rain & Thunder | Thunder & til | rain & Storms | Mitigation of Cold |
| Do Sol | cold Rains | til rain Thunder | cold Rain | snow & Rain |
| Do Luna | clouds & moist Air | cooling rains | cloudy | clouds & Snow |
| Do Mercury | wind & rain | windy | winds & Clouds | winds & Snow |
| Do Venus | cold Rains | sweet rains | cold Rains | snow or Rains |
| Jupiter & Mars | Turbulent weather | heat & Thunder | winds but warm | Temperate |
| Do Sol | windy weather | Thunder Lightning | winds & warm | Mitigation of cold |
| Do Luna | Genial showers | favourable | calm temperate | mild for the Season |
| Do Mercury | high winds | winds Thunder | moist Air | rain and winds |
| Do Venus | Growing weather | Delightful | clear Air | Unusual warm |
| Mars & Sol | dry & windy | Thunder & light | dry & windy | Mitigation of Cold |
| Do Luna | Showers & til | Thunder & Storms | Temperate Air | Variable |
| Do Mercury | rain & winds | Thunder til | til or winds | Snow or Ice |
| Do Venus | abundant Rains | small Rain | Rainy weather | Rain or Snow |
| Venus & Sol | moist weather | Thunder showers | small rain | Misty |
| Do Luna | cloudy & moist | Mitigation of heat | cloudy & dark | winds & Fleet |
| Do Mercury | sweet showers | rainy or Cloudy | Variable | abundance of rain sometimes floods |
| Mercury & Moon | Variable weather according to the configuration & Sign | Variable according to the Sign &c | Variable &c | Variable &c |
| Mercury & Sol | in airy signs wind in watery Signs Rain if Q always Rain | Changeable & influenced by other con- figurations | Mutuable often dryly but observe other Planets | Various & Uncertain |
| Luna & Sol | weather according to the configuration made at the time | Observe other configuration &c | Observe &c | according to the aspect of ☉ and ☾ |

| | ♀ | ♂ | ♀ | ♂ | ♀ | ♂ | ♀ | ♂ | ♀ | ♂ |
|---|------------------|-----------------------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|-------------|
| H | fem. 15. 27. | d. 21. l. 27. v. 30 | 20. 30. | 20. 30. | 20. 30. | 20. 30. | 20. 30. | 20. 30. | 20. 30. | 20. 30. |
| M | Mas. 4. 17. 30. | d. 3. l. 8. v. 14. l. 22. | 9. 10. 22. | 9. 10. 22. | 9. 10. 22. | 9. 10. 22. | 9. 10. 22. | 9. 10. 22. | 9. 10. 22. | 9. 10. 22. |
| | fem. 14. 25. | Sm. 24. v. 29. d. 30. | 23. 24. | 23. 24. | 23. 24. | 23. 24. | 23. 24. | 23. 24. | 23. 24. | 23. 24. |
| A | Mas. 2. 12. 30. | l. 9. d. 12. l. 19 | 7. 12. 15. | 7. 12. 15. | 7. 12. 15. | 7. 12. 15. | 7. 12. 15. | 7. 12. 15. | 7. 12. 15. | 7. 12. 15. |
| | fem. 5. 24. | Sm. 23. l. 30. | 24. 27. 30 | 24. 27. 30 | 24. 27. 30 | 24. 27. 30 | 24. 27. 30 | 24. 27. 30 | 24. 27. 30 | 24. 27. 30 |
| N | Mas. 11. 30. | d. 4. l. 10. Sm. 15. l. 19. | 7. 17. 22. | 7. 17. 22. | 7. 17. 22. | 7. 17. 22. | 7. 17. 22. | 7. 17. 22. | 7. 17. 22. | 7. 17. 22. |
| | fem. 19. | d. 22. v. 25. d. 30. | 24. 29. | 24. 29. | 24. 29. | 24. 29. | 24. 29. | 24. 29. | 24. 29. | 24. 29. |
| N | Mas. 5. 21. 27. | Sm. 4. l. 9. d. 13. | 1. 12. 17. | 1. 12. 17. | 1. 12. 17. | 1. 12. 17. | 1. 12. 17. | 1. 12. 17. | 1. 12. 17. | 1. 12. 17. |
| | fem. 15. 25. 30. | l. 21. v. 25. d. 30. | 22. 24. 29. | 22. 24. 29. | 22. 24. 29. | 22. 24. 29. | 22. 24. 29. | 22. 24. 29. | 22. 24. 29. | 22. 24. 29. |
| X | Mas. 10. 23. 30. | d. 6. l. 12. d. 18. | 4. 9. 24. | 4. 9. 24. | 4. 9. 24. | 4. 9. 24. | 4. 9. 24. | 4. 9. 24. | 4. 9. 24. | 4. 9. 24. |
| | fem. 20. 28. | l. 22. v. 25. l. 28. d. 30. | 27. 28 | 27. 28 | 27. 28 | 27. 28 | 27. 28 | 27. 28 | 27. 28 | 27. 28 |

*
 occ
 sen
 □
 mu
 Δ
 ma
 no

Jan
 Jan
 Feb
 March

| Month | Day | Sign | Day | Break | Rises | | Sets | | Length of Day | | Hour | | Length of Night | | L. of N. | | Hour | | |
|----------|-----|------|-----|-------|-------|---|------|---|---------------|----|------|---|-----------------|----|----------|---|------|---|---|
| | | | | | h | m | h | m | h | m | h | m | h | m | h | m | h | m | h |
| January | 7 | ♊ | 6 | 5 | 59 | 8 | 0 | 4 | 0 | 8 | 0 | 0 | 40 | 16 | 0 | 1 | 20 | | |
| | 13 | ♋ | 22 | | | 7 | 54 | 4 | 6 | 8 | 12 | 0 | 41 | 15 | 48 | 1 | 19 | | |
| | 18 | ♌ | 27 | | | 7 | 48 | 4 | 12 | 8 | 24 | 0 | 42 | 15 | 36 | 1 | 18 | | |
| | 22 | ♍ | 7 | | | 7 | 42 | 4 | 18 | 8 | 36 | 0 | 43 | 15 | 24 | 1 | 17 | | |
| | 26 | ♎ | 5 | 5 | 35 | 7 | 36 | 4 | 24 | 8 | 48 | 0 | 44 | 15 | 12 | 1 | 16 | | |
| | 31 | ♏ | 11 | | | 7 | 30 | 4 | 30 | 9 | 0 | 0 | 45 | 15 | 0 | 1 | 15 | | |
| February | 3 | ♏ | 14 | | | 7 | 24 | 4 | 36 | 9 | 12 | 0 | 46 | 14 | 48 | 1 | 14 | | |
| | 7 | ♐ | 18 | | | 7 | 18 | 4 | 42 | 9 | 24 | 0 | 47 | 14 | 36 | 1 | 13 | | |
| | 9 | ♐ | 20 | | | 7 | 12 | 4 | 48 | 9 | 36 | 0 | 48 | 14 | 24 | 1 | 12 | | |
| | 13 | ♑ | 24 | | | 7 | 6 | 4 | 45 | 9 | 48 | 0 | 49 | 14 | 12 | 1 | 11 | | |
| | 16 | ♑ | 27 | | | 7 | 0 | 5 | 0 | 10 | 0 | 0 | 50 | 14 | 0 | 1 | 10 | | |
| | 19 | ♒ | 3 | | | 6 | 54 | 5 | 6 | 10 | 12 | 0 | 51 | 13 | 48 | 1 | 9 | | |
| | 22 | ♒ | 3 | | | 6 | 48 | 5 | 12 | 10 | 24 | 0 | 52 | 13 | 36 | 1 | 8 | | |
| | 26 | ♓ | 7 | 4 | 56 | 6 | 42 | 5 | 18 | 10 | 36 | 0 | 53 | 13 | 24 | 1 | 7 | | |
| | 28 | ♓ | 9 | | | 6 | 36 | 5 | 24 | 10 | 48 | 0 | 54 | 13 | 12 | 1 | 6 | | |
| March | 3 | ♓ | 13 | | | 6 | 30 | 5 | 30 | 11 | 0 | 0 | 55 | 13 | 0 | 1 | 5 | | |
| | 6 | ♈ | 16 | | | 6 | 24 | 5 | 36 | 11 | 12 | 0 | 56 | 12 | 48 | 1 | 4 | | |
| | 9 | ♈ | 19 | 4 | 26 | 6 | 18 | 5 | 42 | 11 | 24 | 0 | 57 | 12 | 36 | 1 | 3 | | |
| | 12 | ♈ | 22 | | | 6 | 12 | 5 | 48 | 11 | 36 | 0 | 58 | 12 | 24 | 1 | 2 | | |
| | 15 | ♈ | 25 | | | 6 | 6 | 5 | 54 | 11 | 48 | 0 | 59 | 12 | 12 | 1 | 1 | | |
| | 18 | ♉ | 28 | | | 6 | 0 | 6 | 0 | 12 | 0 | 1 | 0 | 12 | 0 | 1 | 0 | | |
| | 21 | ♉ | 7 | | | 5 | 54 | 6 | 6 | 12 | 12 | 1 | 1 | 11 | 48 | 0 | 59 | | |
| | 24 | ♉ | 4 | | | 5 | 48 | 6 | 12 | 12 | 24 | 1 | 2 | 11 | 36 | 0 | 58 | | |
| | 27 | ♊ | 7 | 3 | 48 | 5 | 42 | 6 | 18 | 12 | 36 | 1 | 3 | 11 | 24 | 0 | 57 | | |
| | 30 | ♊ | 10 | | | 5 | 36 | 6 | 24 | 12 | 48 | 1 | 4 | 11 | 12 | 0 | 56 | | |

Table with multiple columns and rows, containing faint handwritten entries, possibly a ledger or account book.

Monthly

April

May

June

July

| Month | day | ☉ | Sign | Daily Break | Sun Rise | Sun Set | length of Day | ☽ Rise | ☽ Set | length of Night | ☽ Rise | ☽ Set |
|-------|------|----|------|----------------|-------------|------------|------------------|-----------|----------|--------------------|-----------|----------|
| April | 2 | 13 | ♈ | | 5 30 | 6 30 | 13 0 | 1 5 | 11 0 | 0 55 | | |
| | 5 | 15 | | | 5 24 | 6 36 | 13 12 | 1 6 | 10 48 | 0 54 | | |
| | 8 | 18 | | | 5 18 | 6 42 | 13 24 | 1 7 | 10 36 | 0 53 | | |
| | 11 | 21 | | | 5 12 | 6 48 | 13 36 | 1 8 | 10 24 | 0 52 | | |
| | 14 | 24 | 3 0 | | 5 6 | 6 54 | 13 48 | 1 9 | 10 12 | 0 51 | | |
| | 17 | 27 | | | 5 0 | 7 0 | 14 0 | 1 10 | 10 0 | 0 50 | | |
| | 21 | ♅ | | | 4 54 | 7 6 | 14 12 | 1 11 | 9 48 | 0 49 | | |
| | 24 | 4 | | | 4 48 | 7 12 | 14 24 | 1 12 | 9 36 | 0 48 | | |
| | 27 | 7 | | | 4 42 | 7 18 | 14 36 | 1 13 | 9 24 | 0 47 | | |
| | 30 | 10 | | | 4 36 | 7 24 | 14 48 | 1 14 | 9 12 | 0 46 | | |
| May | 4 | 14 | 1 55 | | 4 30 | 7 30 | 15 0 | 1 15 | 9 0 | 0 45 | | |
| | 8 | 18 | | | 4 24 | 7 36 | 15 12 | 1 16 | 8 48 | 0 44 | | |
| | 12 | 22 | | | 4 18 | 7 42 | 15 24 | 1 17 | 8 36 | 0 43 | | |
| | 15 | 24 | | | 4 12 | 7 48 | 15 36 | 1 18 | 8 24 | 0 42 | | |
| | 20 | 29 | | | 4 6 | 7 54 | 15 48 | 1 19 | 8 12 | 0 41 | | |
| | 24 | ♁ | 3 | | 4 0 | 8 0 | 16 0 | 1 20 | 8 0 | 0 40 | | |
| | 30 | 9 | | | 3 54 | 8 6 | 16 12 | 1 21 | 7 48 | 0 39 | | |
| | June | 6 | 15 | | | 3 48 | 8 12 | 16 24 | 1 22 | 7 36 | 0 38 | |
| 21 | | ♅ | | | 3 42 | 8 18 | 16 36 | 1 23 | 7 24 | 0 37 | | |
| July | 4 | 12 | | | 3 40 | 8 12 | 16 24 | 1 22 | 7 36 | 0 38 | | |
| | 12 | 20 | | | 3 54 | 8 6 | 16 12 | 1 21 | 7 48 | 0 39 | | |
| | 17 | 25 | | | 4 0 | 8 0 | 16 0 | 1 20 | 8 0 | 0 40 | | |
| | 22 | 29 | | | 4 6 | 7 54 | 15 48 | 1 19 | 8 12 | 0 41 | | |
| | 27 | ♁ | 1 4 | | 4 12 | 7 48 | 15 36 | 1 18 | 8 24 | 0 42 | | |
| | 31 | 8 | | | 4 18 | 7 42 | 15 24 | 1 17 | 8 36 | 0 43 | | |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 | 97 | 98 | 99 | 100 |

100
100

100

| Month & Day | ° | Prime | Day | Break | Sun | Set | Sum | Set | Length of Day | Log P | Hour | Length of night | Log P | Hour |
|-------------|---------------|-------|-----|-------|------|------|-------|------|---------------|-------|------|-----------------|-------|------|
| August 3 | 11 | 2 | | | 4 24 | 7 36 | 15 12 | 1 16 | 8 48 | 0 | 44 | | | |
| 7 | 15 | | | | 4 30 | 7 30 | 15 0 | 1 15 | 9 0 | 0 | 45 | | | |
| 11 | 19 | | | | 4 36 | 7 24 | 14 48 | 1 14 | 9 12 | 0 | 46 | | | |
| 14 | 21 | | | | 4 42 | 7 18 | 14 36 | 1 13 | 9 24 | 0 | 47 | | | |
| 17 | 24 | 2 | 26 | | 4 48 | 7 12 | 14 24 | 1 12 | 9 36 | 0 | 48 | | | |
| 20 | 27 | | | | 4 54 | 7 6 | 14 12 | 1 11 | 9 48 | 0 | 49 | | | |
| 24 | 30 | | | | 5 0 | 7 0 | 14 0 | 1 10 | 10 0 | 0 | 50 | | | |
| 27 | 4 | | | | 5 6 | 6 54 | 13 48 | 1 9 | 10 12 | 0 | 51 | | | |
| 30 | 7 | | | | 5 12 | 6 48 | 13 36 | 1 8 | 10 24 | 0 | 52 | | | |
| September 2 | 10 | | | | 5 18 | 6 42 | 13 24 | 1 7 | 10 36 | 0 | 53 | | | |
| 6 | 14 | 3 | 21 | | 5 24 | 6 36 | 13 12 | 1 6 | 10 48 | 0 | 54 | | | |
| 9 | 17 | | | | 5 30 | 6 30 | 13 0 | 1 5 | 11 0 | 0 | 55 | | | |
| 12 | 19 | | | | 5 36 | 6 24 | 12 48 | 1 4 | 11 12 | 0 | 56 | | | |
| 14 | 21 | | | | 5 42 | 6 18 | 12 36 | 1 3 | 11 24 | 0 | 57 | | | |
| 17 | 24 | | | | 5 48 | 6 12 | 12 24 | 1 2 | 11 36 | 0 | 58 | | | |
| 20 | 27 | | | | 5 54 | 6 6 | 12 12 | 1 1 | 11 48 | 0 | 59 | | | |
| 24 | 30 | | | | 6 0 | 6 0 | 12 0 | 1 0 | 12 0 | 1 | 0 | | | |
| 27 | 4 | 4 | 12 | | 6 6 | 5 54 | 11 48 | 0 59 | 12 12 | 1 | 1 | | | |
| 30 | 7 | | | | 6 12 | 5 48 | 11 36 | 0 58 | 12 24 | 1 | 2 | | | |

| Month & day | Sign | Day | Break | Sun | Rise | Sun | Set | Length of Day | Day | Log A | Hour | Length of Night | Night | Log P. | Hour |
|-------------|------|-----|-------|-----|------|-----|-----|---------------|-----|-------|------|-----------------|-------|--------|------|
| October | ♏ | | | | | | | | | | | | | | |
| 3 | 10 | | | 6 | 18 | 5 | 42 | 11 | 24 | 0 | 57 | 12 | 36 | 1 | 3 |
| 6 | 13 | | | 6 | 24 | 5 | 36 | 11 | 12 | 0 | 56 | 12 | 48 | 1 | 4 |
| 9 | 16 | | | 6 | 30 | 5 | 30 | 11 | 0 | 0 | 55 | 13 | 0 | 1 | 5 |
| 12 | 19 | | | 6 | 36 | 5 | 24 | 10 | 48 | 0 | 54 | 13 | 12 | 1 | 6 |
| 15 | 22 | | | 6 | 42 | 5 | 18 | 10 | 36 | 0 | 33 | 13 | 24 | 1 | 7 |
| 18 | 25 | | | 6 | 48 | 5 | 12 | 10 | 24 | 0 | 52 | 13 | 36 | 1 | 8 |
| 21 | 28 | 4 | 57 | 6 | 54 | 5 | 6 | 10 | 12 | 0 | 51 | 13 | 48 | 1 | 9 |
| 25 | ♐ | | | 7 | 0 | 5 | 0 | 10 | 0 | 0 | 50 | 14 | 0 | 1 | 10 |
| 28 | 5 | | | 7 | 6 | 4 | 54 | 9 | 48 | 0 | 49 | 14 | 12 | 1 | 11 |
| 31 | 7 | | | 7 | 12 | 4 | 48 | 9 | 36 | 0 | 48 | 14 | 24 | 1 | 12 |
| November | | | | | | | | | | | | | | | |
| 3 | 11 | | | 7 | 18 | 4 | 42 | 9 | 24 | 0 | 47 | 14 | 36 | 1 | 13 |
| 7 | 15 | | | 7 | 24 | 4 | 36 | 9 | 12 | 0 | 46 | 14 | 48 | 1 | 14 |
| 11 | 19 | | | 7 | 30 | 4 | 30 | 9 | 0 | 0 | 45 | 15 | 0 | 1 | 15 |
| 14 | 22 | | | 7 | 36 | 4 | 24 | 8 | 48 | 0 | 44 | 15 | 12 | 1 | 16 |
| 18 | 26 | 5 | 41 | 7 | 42 | 4 | 18 | 8 | 36 | 0 | 43 | 15 | 24 | 1 | 17 |
| 23 | ♑ | | | 7 | 48 | 4 | 12 | 8 | 24 | 0 | 42 | 15 | 36 | 1 | 18 |
| 30 | 18 | | | 7 | 54 | 4 | 6 | 8 | 12 | 0 | 41 | 15 | 48 | 1 | 19 |
| December | | | | | | | | | | | | | | | |
| 3 | 11 | | | 8 | 0 | 4 | 0 | 8 | 0 | 0 | 40 | 16 | 0 | 1 | 20 |
| 11 | 19 | 5 | 59 | 8 | 6 | 3 | 54 | 7 | 48 | 0 | 39 | 16 | 12 | 1 | 21 |

A Table of Equation of Time for regulating Watches

Note signifies clock too fast (that is your clock to be right must be so much faster than the Sun dial &c. represents too slow, that is the clock must be so much slower than the sun dial

| | Jan ^r | Feb ^r | March | April | May | June | July | Aug | Sept ^r | Oct ^r | Nov ^r | Dec ^r |
|----|------------------|------------------|----------|---------|--------|---------|---------|---------|-------------------|------------------|------------------|------------------|
| 1 | 3 Fa 33 | 13 Fa 53 | 12 Fa 39 | 3 Fa 54 | 3 Fa 0 | 2 Fa 37 | 3 Fa 20 | 5 Fa 55 | 6 Fa 12 | 10 Fa 24 | 15 Fa 15 | 16 Fa 39 |
| 3 | 4 30 | 14 8 | 12 13 | 3 21 | 3 20 | 2 19 | 3 43 | 5 47 | 0 50 | 10 58 | 16 15 | 9 52 |
| 5 | 5 25 | 14 20 | 11 46 | 2 45 | 3 32 | 1 59 | 4 4 | 5 37 | 1 29 | 11 34 | 16 13 | 9 2 |
| 7 | 6 19 | 14 29 | 11 18 | 2 10 | 3 42 | 1 37 | 4 25 | 5 25 | 2 8 | 12 9 | 16 7 | 8 11 |
| 9 | 7 10 | 14 35 | 10 48 | 1 36 | 3 49 | 1 14 | 4 44 | 5 10 | 2 49 | 12 41 | 15 57 | 7 17 |
| 11 | 8 0 | 14 38 | 10 16 | 1 3 | 3 54 | 0 51 | 5 1 | 4 52 | 3 30 | 13 12 | 15 45 | 6 22 |
| 13 | 8 48 | 14 37 | 9 43 | 0 32 | 3 57 | 0 26 | 5 16 | 4 33 | 4 12 | 13 21 | 15 29 | 5 26 |
| 15 | 9 32 | 14 34 | 9 9 | 1 | 3 58 | 0 1 | 5 30 | 4 11 | 4 54 | 14 9 | 15 10 | 4 28 |
| 17 | 10 15 | 14 27 | 8 34 | 0 28 | 3 56 | fa | 5 41 | 3 46 | 5 36 | 14 34 | 14 47 | 3 36 |
| 19 | 10 54 | 14 18 | 7 59 | 0 56 | 3 52 | 0 24 | 5 51 | 3 20 | 6 18 | 14 56 | 14 21 | 2 30 |
| 21 | 11 30 | 14 5 | 7 22 | 1 22 | 3 46 | 0 56 | 5 58 | 2 52 | 7 0 | 15 16 | 13 52 | 1 31 |

25 12 33
13 53
13 13
13 8
2 16
2 8
8 6
5 5
5 3
3 28
1 41
1 50
1 17
1 12
16 0
12 44
12 5
12 29

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|---|----|---|----|---|----|---|----|---|----|---|----|---|---|---|----|----|----|----|----|----|----|---|------|
| 19 | 10 | 54 | 14 | 18 | 7 | 59 | 0 | 56 | 3 | 52 | 1 | 47 | 3 | 48 | 1 | 41 | 6 | 5 | 1 | 50 | 8 | 23 | 15 | 48 | 12 | 44 | 0 | 30 |
| 23 | 12 | 3 | 13 | 56 | 6 | 45 | 1 | 47 | 3 | 48 | 1 | 46 | 3 | 48 | 1 | 41 | 6 | 5 | 1 | 50 | 8 | 23 | 15 | 48 | 12 | 44 | 0 | 30 |
| 25 | 12 | 33 | 13 | 33 | 6 | 8 | 2 | 10 | 3 | 28 | 2 | 10 | 3 | 28 | 1 | 41 | 6 | 5 | 1 | 50 | 8 | 23 | 15 | 48 | 12 | 44 | 0 | 30 |
| 27 | 13 | 0 | 13 | 13 | 5 | 30 | 2 | 31 | 3 | 16 | 2 | 7 | 3 | 16 | 2 | 7 | 6 | 5 | 1 | 17 | 9 | 3 | 16 | 0 | 12 | 5 | 1 | 29 |
| 29 | 13 | 23 | 12 | 51 | 4 | 53 | 2 | 49 | 3 | 2 | 2 | 32 | 3 | 2 | 2 | 32 | 6 | 3 | 0 | 42 | 9 | 43 | 16 | 8 | 11 | 33 | 2 | 29 |
| 31 | 13 | 14 | - | - | 4 | 16 | - | - | 2 | 46 | 2 | 56 | 2 | 58 | 0 | 6 | - | - | - | 16 | 14 | - | - | - | - | - | - | 3.27 |

How to set a watch by this table: For example

Jan. 1. I find by looking in this table that a clock to be right must be 3 minutes 39 seconds faster than the

Sundial - therefore I set it so much faster accordingly

and so the rest: The best time to set a clock or

watch by a dial is at noon

Note the Dial shows solar or apparent Time but a clock &c should be set ^{to} equal or mean time as the table directs to go true

| | Rise | | | South | | Set | | | Rise | | | South | | Set | |
|----------|------|----|------|-------|------|-----|------|-----------|------|----|------|-------|------|-----|------|
| | h | m | | h | m | h | m | | h | m | h | m | h | m | |
| January | 1 | 0 | a 28 | 8 | a 44 | 5 | m 2 | July | 1 | 0 | m 38 | 8 | m 54 | 5 | a 10 |
| | 6 | 2 | 6 | 8 | 22 | 4 | 38 | | 6 | 0 | 18 | 8 | 34 | 4 | 50 |
| | 11 | 11 | m 44 | 8 | 0 | 4 | 16 | | 11 | 11 | a 57 | 8 | 13 | 4 | 29 |
| | 16 | 11 | 23 | 7 | 37 | 3 | 55 | | 16 | 11 | 57 | 7 | 53 | 4 | 9 |
| | 21 | 10 | 52 | 7 | 18 | 3 | 34 | | 21 | 11 | 17 | 7 | 33 | 3 | 49 |
| 26 | 10 | 40 | 6 | 56 | 3 | 12 | 26 | 10 | 57 | 7 | 13 | 3 | 29 | | |
| February | 1 | 10 | 17 | 6 | 33 | 2 | 49 | August | 1 | 10 | 33 | 6 | 49 | 3 | 5 |
| | 6 | 9 | 58 | 6 | 12 | 2 | 28 | | 6 | 10 | 14 | 6 | 30 | 2 | 46 |
| | 11 | 9 | 36 | 5 | 52 | 2 | 8 | | 11 | 9 | 55 | 6 | 11 | 2 | 27 |
| | 16 | 9 | 17 | 5 | 33 | 1 | 49 | | 16 | 9 | 36 | 5 | 52 | 2 | 8 |
| | 21 | 8 | 58 | 5 | 14 | 1 | 30 | | 21 | 9 | 17 | 5 | 33 | 1 | 49 |
| 26 | 8 | 39 | 4 | 55 | 1 | 11 | 26 | 8 | 59 | 5 | 15 | 1 | 31 | | |
| March | 1 | 8 | 28 | 4 | 44 | 1 | 0 | September | 1 | 8 | 37 | 4 | 53 | 1 | 9 |
| | 6 | 8 | 10 | 4 | 26 | 0 | 42 | | 6 | 8 | 19 | 4 | 35 | 0 | 57 |
| | 11 | 7 | 52 | 4 | 8 | 0 | 24 | | 11 | 8 | 1 | 4 | 17 | 0 | 33 |
| | 16 | 7 | 33 | 3 | 49 | 0 | 5 | | 16 | 7 | 43 | 3 | 59 | 0 | 5 |
| | 21 | 7 | 15 | 3 | 31 | 11 | a 47 | | 21 | 7 | 26 | 3 | 42 | 11 | m 58 |
| 26 | 6 | 57 | 3 | 13 | 11 | 29 | 26 | 7 | 8 | 3 | 24 | 11 | 40 | | |
| April | 1 | 6 | 35 | 2 | 57 | 11 | 2 | October | 1 | 6 | 56 | 3 | 6 | 11 | 22 |
| | 6 | 6 | 17 | 2 | 33 | 10 | 49 | | 6 | 6 | 32 | 2 | 48 | 11 | 4 |
| | 11 | 5 | 58 | 2 | 14 | 10 | 30 | | 11 | 6 | 13 | 2 | 29 | 10 | 45 |
| | 16 | 5 | 40 | 1 | 56 | 10 | 2 | | 16 | 5 | 54 | 2 | 10 | 10 | 26 |
| | 21 | 5 | 21 | 1 | 37 | 9 | 53 | | 21 | 5 | 36 | 1 | 52 | 10 | 8 |
| 26 | 5 | 2 | 1 | 18 | 9 | 34 | 26 | 5 | 11 | 1 | 31 | 9 | 47 | | |
| May | 1 | 4 | 33 | 0 | 59 | 9 | 15 | November | 1 | 4 | 54 | 1 | 10 | 9 | 26 |
| | 6 | 4 | 24 | 0 | 40 | 8 | 56 | | 6 | 4 | 34 | 0 | 50 | 9 | 6 |
| | 11 | 4 | 5 | 0 | 21 | 8 | 37 | | 11 | 4 | 14 | 0 | 30 | 8 | 46 |
| | 16 | 3 | 45 | 0 | 1 | 8 | 17 | | 16 | 3 | 33 | 0 | 9 | 8 | 25 |
| | 21 | 3 | 26 | 11 | m 42 | 7 | 58 | | 21 | 3 | 28 | 11 | a 44 | 8 | 0 |
| 26 | 2 | 56 | 11 | 22 | 7 | 38 | 26 | 3 | 7 | 11 | 23 | 7 | 39 | | |
| June | 1 | 2 | 41 | 10 | 57 | 7 | 13 | December | 1 | 2 | 46 | 11 | 2 | 7 | 18 |
| | 6 | 2 | 21 | 10 | 57 | 6 | 53 | | 6 | 2 | 24 | 10 | 40 | 6 | 56 |
| | 11 | 2 | 1 | 10 | 17 | 6 | 33 | | 11 | 2 | 2 | 10 | 18 | 6 | 34 |
| | 16 | 1 | 43 | 9 | 58 | 6 | 14 | | 16 | 1 | 40 | 9 | 56 | 6 | 12 |
| | 21 | 1 | 10 | 9 | 33 | 5 | 51 | | 21 | 1 | 18 | 9 | 34 | 5 | 50 |
| 26 | 0 | 59 | 9 | 15 | 5 | 31 | 26 | 0 | 56 | 9 | 12 | 5 | 20 | | |

This table shows the rising, southing, and setting of the Pleiades

This table shows the rising, setting and setting of the Pleiades

| Moons | No 1 | No 2 | No 3 | No 4 | No 5 | No 6 | No 7 | No 8 |
|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| Age | In m | h m | h m | h m | h m | h m | h m | h m |
| 1 | 12 48 | 2 18 | 3 48 | 6 3 | 6 48 | 7 33 | 11 18 | 3 3 |
| 2 | 1 36 | 3 6 | 4 36 | 7 51 | 7 36 | 8 21 | 12 6 | 51 51 |
| 3 | 2 24 | 3 54 | 5 24 | 7 39 | 8 24 | 9 9 | 12 54 | 19 19 |
| 4 | 3 12 | 4 42 | 6 12 | 8 27 | 9 12 | 9 57 | 1 42 | 27 27 |
| 5 | 4 0 | 5 30 | 7 0 | 9 15 | 10 0 | 10 45 | 2 30 | 15 15 |
| 6 | 4 48 | 6 18 | 7 48 | 10 3 | 10 48 | 11 33 | 3 18 | 3 3 |
| 7 | 5 36 | 7 6 | 8 36 | 10 51 | 11 36 | 12 21 | 4 6 | 51 51 |
| 8 | 6 24 | 7 54 | 9 24 | 11 39 | 12 24 | 1 9 | 4 54 | 39 39 |
| 9 | 7 12 | 8 42 | 10 12 | 12 27 | 1 12 | 1 57 | 5 42 | 27 27 |
| 10 | 8 0 | 9 30 | 11 0 | 1 15 | 2 0 | 2 45 | 6 30 | 15 15 |
| 11 | 8 48 | 10 18 | 11 48 | 2 3 | 2 48 | 3 33 | 7 18 | 1 1 |
| 12 | 9 36 | 11 6 | 12 36 | 2 51 | 3 36 | 4 21 | 8 6 | 51 51 |
| 13 | 10 24 | 11 54 | 1 24 | 3 39 | 4 24 | 5 9 | 8 54 | 39 39 |
| 14 | 11 12 | 12 42 | 2 12 | 4 27 | 5 12 | 5 57 | 9 42 | 27 27 |
| 15 | 12 0 | 1 30 | 3 0 | 5 15 | 6 0 | 6 45 | 10 30 | 15 15 |

No find the moons age in the
 the time of high water at all the
 high water on 1 and 16 day of the age is

| Date of Years | January | February | March | April | May | June | July | August | September | October | November | December | Date of Years |
|------------------|---------|----------|-------|-------|-----|------|------|--------|-----------|---------|----------|----------|---------------------|
| 1813 | 28 | 0 | 29 | 0 | 1 | 2 | 3 | 4 | 6 | 6 | 8 | 8 | 1832 |
| 1814 | 9 | 11 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 17 | 17 | 19 | 19 | 1833 |
| 1815 | 20 | 22 | 21 | 22 | 23 | 24 | 25 | 26 | 28 | 28 | 0 | 0 | 1834 |
| 1816 | 1 | 3 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 9 | 9 | 11 | 11 | 1835 |
| 1817 | 12 | 14 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 20 | 20 | 22 | 22 | 1836 |
| 1818 | 23 | 25 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 1 | 1 | 3 | 3 | 1837 |
| 1819 | 4 | 6 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 12 | 12 | 14 | 14 | 1838 |
| 1820 | 15 | 17 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 23 | 23 | 25 | 25 | 1839 |
| 1821 | 26 | 28 | 27 | 28 | 29 | 0 | 1 | 2 | 4 | 4 | 6 | 6 | 1840 |
| 1822 | 7 | 9 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 15 | 15 | 17 | 17 | 1841 |
| 1823 | 18 | 20 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 | 26 | 26 | 28 | 28 | 1842 |
| 1824 | 0 | 2 | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 8 | 8 | 10 | 10 | 1843 |
| 1825 | 11 | 13 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 19 | 19 | 21 | 21 | 1844 |
| 1826 | 22 | 24 | 23 | 24 | 25 | 26 | 27 | 28 | 0 | 0 | 2 | 2 | 1845 |
| 1827 | 3 | 5 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 11 | 11 | 13 | 13 | 1846 |
| 1828 | 14 | 16 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 22 | 22 | 24 | 24 | 1847 |
| 1829 | 25 | 27 | 26 | 27 | 28 | 29 | 0 | 1 | 3 | 3 | 5 | 5 | 1848 |
| 1830 | 6 | 8 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 14 | 14 | 16 | 16 | 1849 |
| 1831 | 17 | 19 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 25 | 25 | 27 | 27 | 1850 |

This table shows the moons age

Rule add the day of month to the number
corresponding to the month and year and it
is the moons age

Signification of Each Planetary Hour

In the hour of ♃ take no voiage or Journey
for crosses will shurely attend it
entertain no servants for they will
prove Idle take no physic not good
to put on new garments or cut hair. it
Is good to buy or take leaces of houses or
lands. to buy any kind of grain or dig in
the Earth flowe &c not good to borrow money
or fall sick for it will be lingering or Death

In the hour of ♆ tis good to apply to Eccle-
siastical Persons and all great men. Judges
Lawyers &c to gain their favours. take Journeys
good to sow plant lend or borrow money
Matrimony &c not good to enter a
Ship. let Blood buy Beast - he that falls
sick will soon recover ..

In the hour of ♂ begin no worthy Action
it is unfortunate in Journeys danger
of thieves dangerous in voiges and all thing
&c

In the hour of ☉ make applications to
receive preferment
great men &c Not good to begin build-
ing or put on new garments nor to enter
a mans own house for brawlings may be
expected. or court the females nor lay
down money on any Account danger-
ous to fall sick in

In the hour of ♀ tis good to court women
or begin a journey but not a voiage
to enter upon any pastime not good to
let Blood good to go out of a mans house
with success but not so good to return
good to take Physic if a man falls
sick in this hour is distemper in the
Veneral tis generally good to under-
take any business relating to women
Concerns or any delightful Actions
to begin a new garment but singu-
larly good for contracting marriage

The hour of ♀ is good to buy and sell
write letters - or send messengers - to take
Physic - to send children to school to
begin a journey - to lend or borrow money
to put forth apprentices to begin
any building to buy houses or Land
to plant graft and make suit to
great persons - not good to contract
Marriage - or to reenter your house
being abroad least brawling arise - not
good to take a servant or redeem Prisoners
The hour of the ☽ is good to court the
female sex send children to school and
in some cases to take a journey or to pur-
sue an enemy - leave your native
country in this hour if designed to travel
but choose another hour to return to
enter your native country again not
good to buy cattle especially the smaller
sort nor take Physic nor build nor lend
money nor begin new Cloaths to make

Goods lost in the hour of ♃

Look west by south and you will find him: he is pretty tall black or Brown hair lean swarthy face little eyes rather stooping and talks to himself. - the goods may be had but not quickly

In the Hour of ♃ seek north east
The thief is an indifferent stature grey eyes light brown hair it may be had again by threatening hard

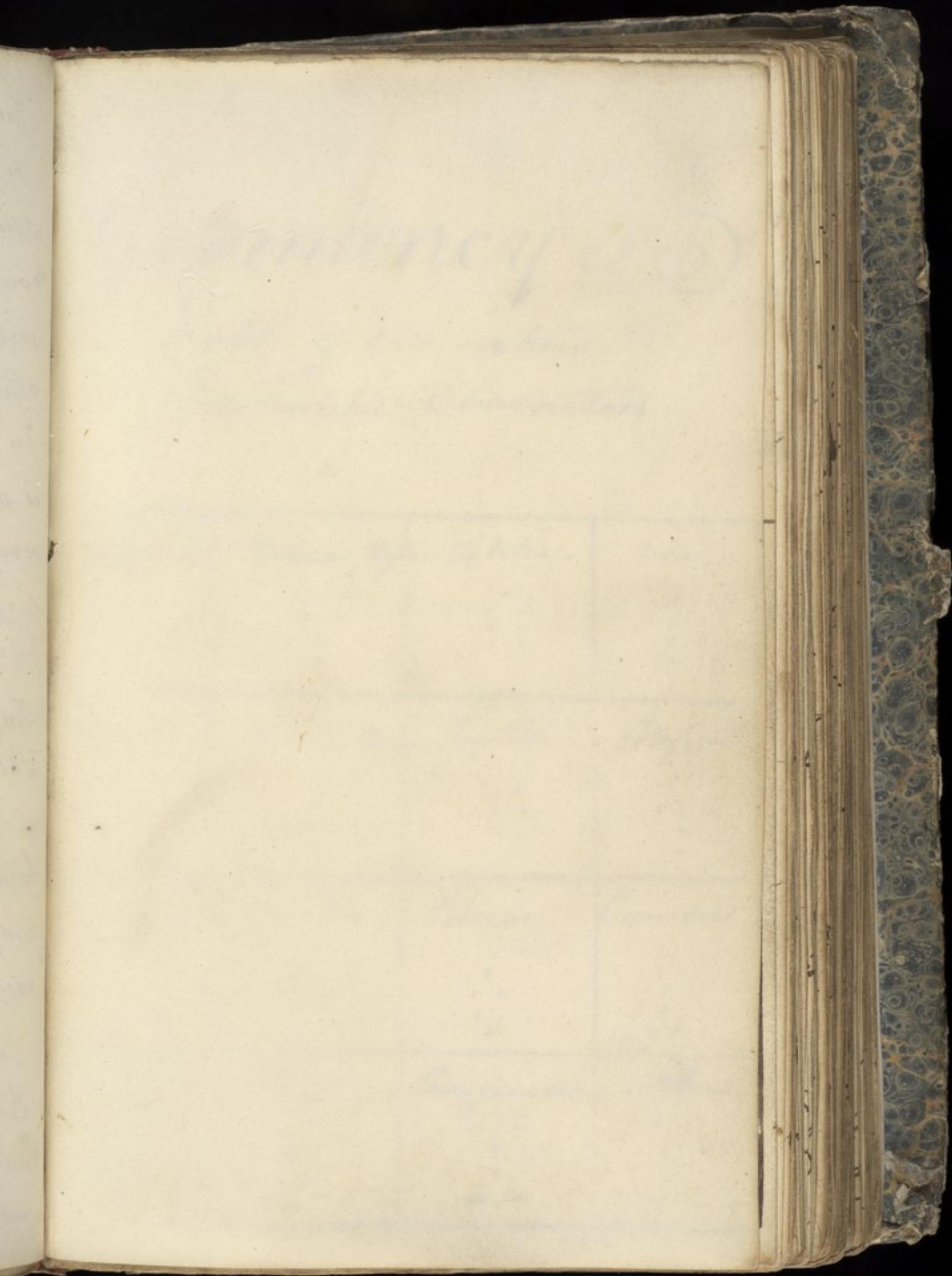
In the hour of Mars Look westward
The Thief has black hair Beard little long nose high coloured face he travels hard - the goods are hard to be recovered

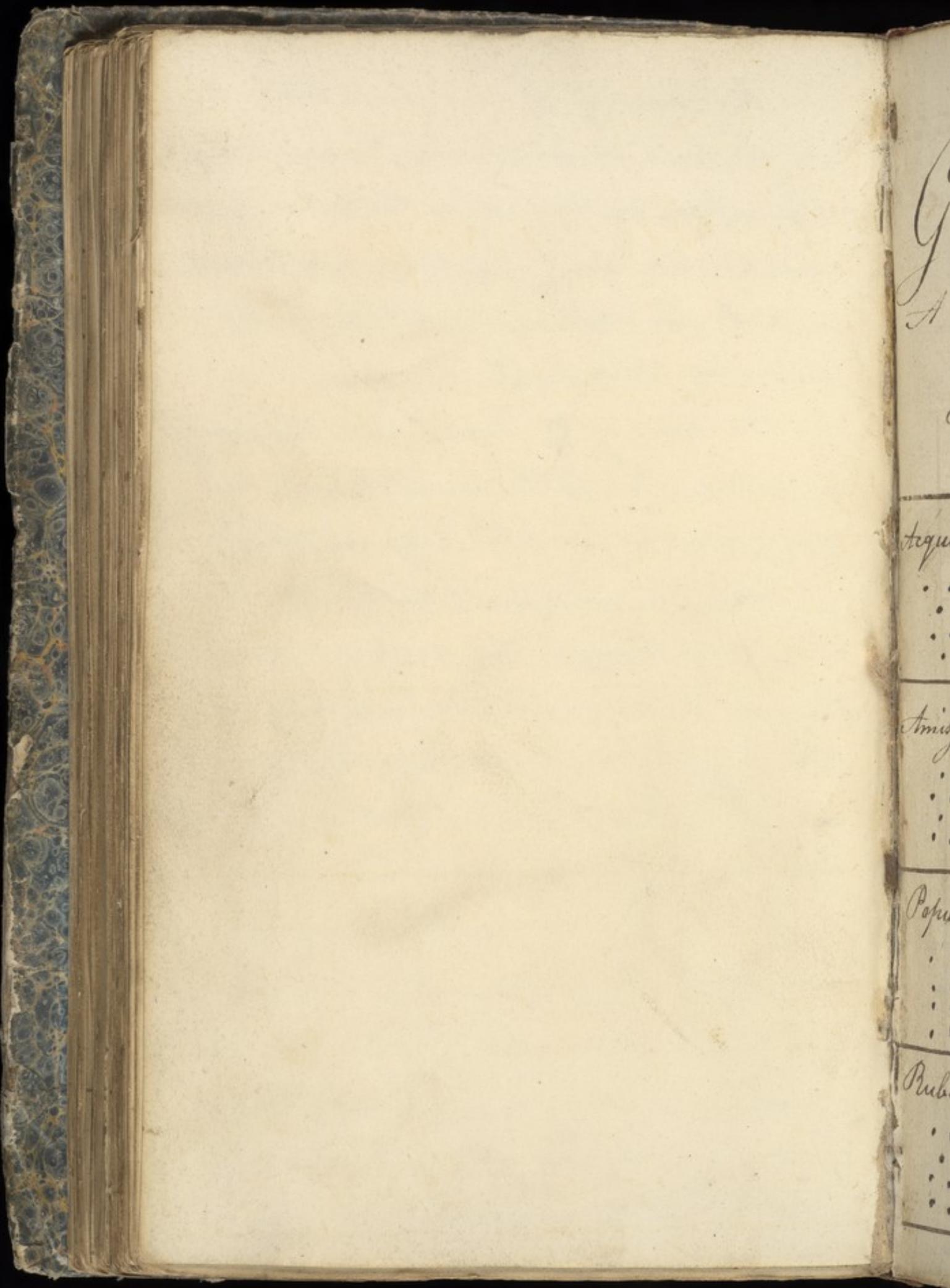
In the hour of ☉ look Eastward
The thief has red or sandy hair a great thick nose. fair face middle stature and is of a good family reduced
The goods may be discovered at the full Moon

In the Hour of ♀ look south East. he
or she hath round cheeks red and plump
the upper lip bigger than the lower. smiling
countenance but if ♀ be in any aspect
with ♂ the goods will not be found
otherwise they will

In the hour of ♀ Look North the party
is slender and tall round visage and
very much freckled. long and slender
fingers the goods will be had again
the Thief being fallen sick

In the hour of the ☽ Look north west
the Thief is very fickle and fearfull
of every body he sees. thinking they know
him he has grey eyes dark hair a
gross body in all parts the goods will
never be had again





G
A

triqu
.
.
.
.

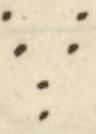
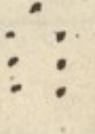
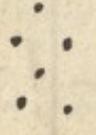
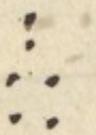
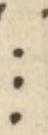
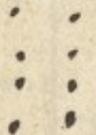
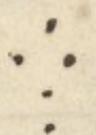
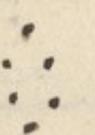
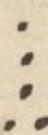
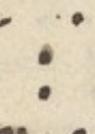
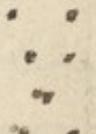
Amis
.
.
.
.

Popu
.
.
.
.

Publ
.
.
.
.

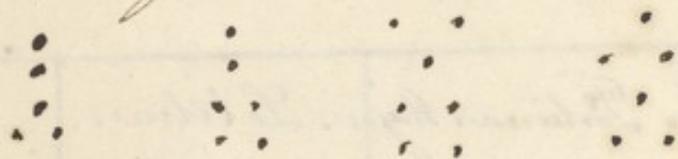
Geomancy

A Table of the sixteen
Geomantic Characters

| | | | |
|---|---|---|---|
| Acquisitio. | Fortuna Major. | Letitia. | Via. |
|  |  |  |  |
| Amisio. | Fortuna Minor. | Tristitia. | Caput. |
|  |  |  |  |
| Papulus. | Puella. | Carcer. | Cauda. |
|  |  |  |  |
| Rubeus. | Puer. | Conjunctio. | Albus. |
|  |  |  |  |

The figures in number sixteen
are constituted to the four Elements
and are thus

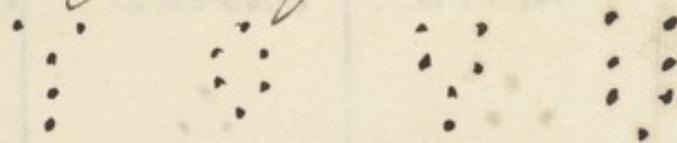
Figures of Fire



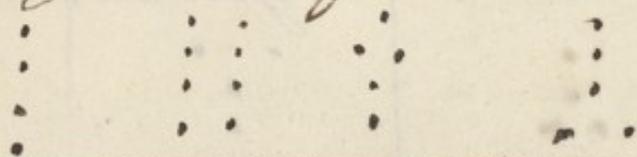
Figures of Air



Figures of Earth



Figures of Water



teen
ento

The modern method of casting
these celestial Lots are by making
points either upon paper or Slate
with any convenient Instrument
and Great variety may be found
in this Art - although the Antient
method is most exact -

The antient method - - procure
clean sand or earth. of which should
be mixed with water for seven
days in equal portions - and must
be done either under the Arising of
a fortunate Constellation or in the
hours of the seven planets -
and when thus done the earth
so formed in portions must be
mixed together in a fortunate
day and hour (some use tables of
wax) these figures must not be

made or cast at any time
and the divination should be
only made when the weather is
bright and Clear - and neither
dark or Windy - for distemperance
in the Elements - may cause changes
in the Passion of the Soul
and also when a figure is
made or Judged the Moon should
be free from all impediment
for if she apply to For & the soul
there by is inclined to lie and
also the figure must be made
with the most sincere desire to
ascertain the truth - -

Now this being seriously thought
of and the mode selected - make
sixteen lines of points from the
right to the left - you must
not count them but leave it entirely

to chance or to the sympathetic
impulse which will guide the hand
so as to produce a figure corresponding
to the true answer of the event sought
after

Example

Handwriting practice on ruled lines. Each line contains a series of small, connected strokes or dashes, followed by asterisks indicating the number of strokes. The strokes vary in length and spacing, demonstrating different rhythmic patterns.

| | |
|-------|----|
| ----- | ** |
| ----- | * |
| ----- | ** |
| ----- | * |
| ----- | ** |
| ----- | ** |
| ----- | * |
| ----- | * |
| ----- | ** |
| ----- | ** |
| ----- | * |
| ----- | * |
| ----- | ** |
| ----- | * |
| ----- | * |
| ----- | * |

The points being made as before directed join them by two's as in the Example leaving the last point unjoined in those lines that are even numbers leave two points out those that are odd then one point falls by himself - This being done arrange the four figures thus found in order from right to left calling the first No 1 the second No 2 and so the Others thus

| | | | |
|-----|-----|-----|-----|
| 4 | 3 | 2 | 1 |
| o o | o | o o | o o |
| o | o o | o o | o |
| o | o | o | o o |
| o | o | o | o |

Then proceed to take the points of each figure as they stand

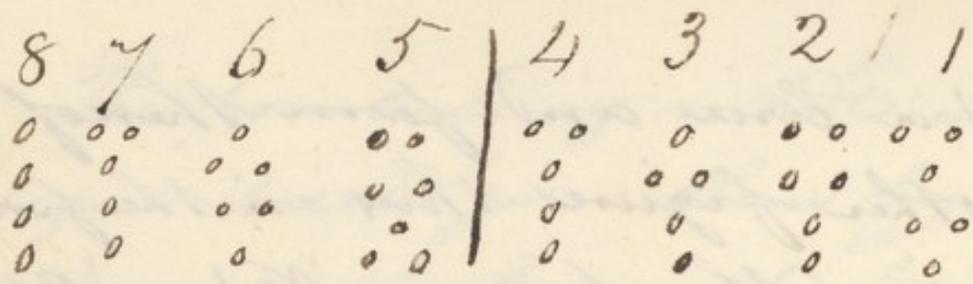
in a line and form thereof
 another figure thus in the first
 line of the figure No 1 are 2 points
 No 2 are two points No 3. 1 point
 and in No 4 - 2 points, which
 collected together form this
 Symbol

o o
 o o
 o o
 o o

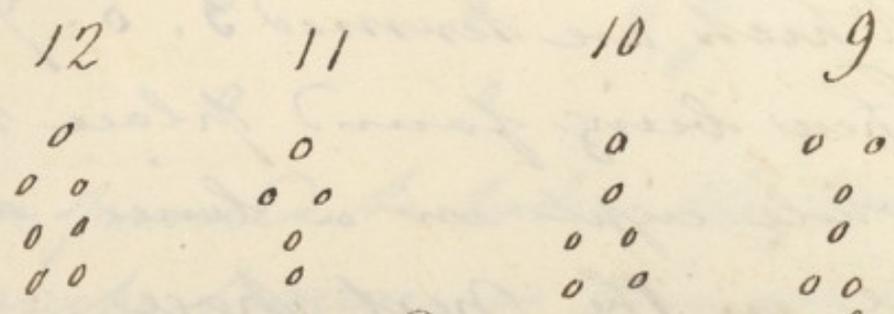
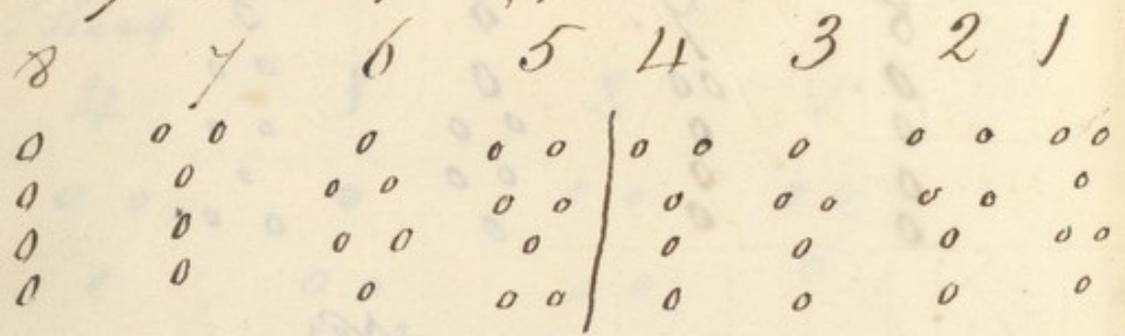
Do the same with the lines of the
 other three figures which will
 give a second row of figures thus

| | | | |
|---|----|----|----|
| 8 | 7 | 6 | 5 |
| o | oo | o | oo |
| o | o | oo | oo |
| o | o | oo | o |
| o | o | o | oo |

Which are termed ^{No 3} 5. 6. 7 & 8
 These being found place the
 whole eight in a line - as you
 see in the next page



And then join each to its com-
 parison, ^{that is to say,} take the number of
 points in the first and second,
 third and fourth, and so the rest
 calling two or four points even,
 and one and three points odd by
 which means you will find
 out four other figures which
 are placed thus; -



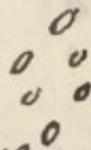
and which correspond to Nos. 9, 10, 11 & 12

This being done you have the whole of the figures which occupy the 12 Geometric houses which constitute the chief part of the Scheme. But there yet remain 4 accidental figures *viz* the 2 witnesses the Judge and the 16th figure

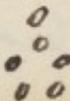
The witnesses are formed from the 9th & 10th, and two adjoining figures and are these



The Judge is formed in like manner out of those two and is

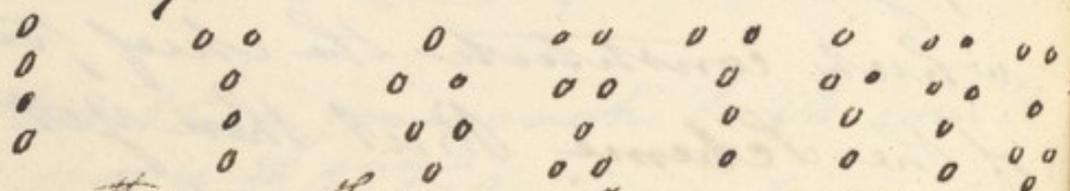


Now the 16th figure with is the final result if formed by joining together the 1st & 16th figures. and is

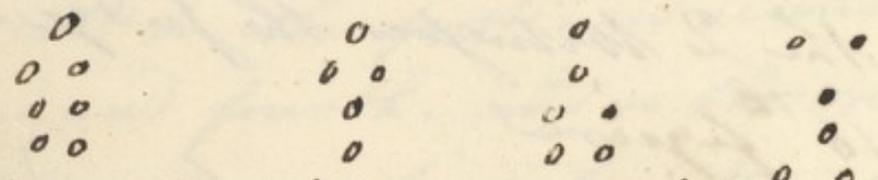


We will now place the figure
in its proper order

8th house 7th house 6th house 5th house 4th house 3th house 2nd house 1st house

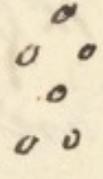
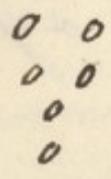


12th house 11th house 10th house 9th house

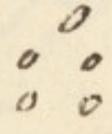


Left witness

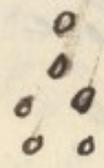
right witness



Judge



Sixteenth figure the final result



In order to be perfect in the use of
Geomancy the student must be well
acquainted with Astrology - as it regards
the Houses and the quality of the 7 Planets
which are made use of in Geomancy.

The Nature of the Sixteen
figures of Geomancy

o o
o o
o

Aquisitio

is the Best of all. it is a sign of
riches joy. gain profit and a good
end of all enterprises it is the Symbol
of good fortune honour happiness and
unknown it denotes long life fortunate
marriages and success in every under
taking it is the figure of ♀ under ♀
it is exalted in the 1st house and has its
fall in the 7th house which is to be
judged the same as in Astrology

o o
o o
o o

Amisio

It is an evil figure being a Symbol
of a loss & small profit: it is also generally
evil in most undertakings & is an
isuing figure it is under ♀ and the
Sign ♀ exalted in 8th house fall in 2nd

∴∴∴ Fortuna Major
Is the Symbol of wealth & rank
of power honour and dignity,
and of an excellent Great name
it is good for gain and to be
perferred to none but Acquisition
it is ruled by C under ^W ^W ex 11/5th

∴∴∴ Fortuna Minor
Is the lesser fortune shews disa
pointment and but small gain
being a wastefull figure it is
good for dignities but evil in motu
of Profit it is ruled by C under &
its exaltation is in the first and
fall in the 7th or Western Angle

∴∴∴ Letitia

Is a figure of Joy Gladness fullness
of Pleasure and gay delights endeav
ments Gain and all favourable
things under ♃ sign & exalted in 2nd fall 8th

o o
o o
o o

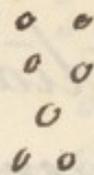
Tristitia

Is the source of sorrow melancholy
lowness of Spirits heaviness of
Heart - Grief malice mischief
and is unfortunate in all things
and shews loss disgrace and troubles
it is under ♄ and the Sign ♀ it is
exalted in the 8th and fall in the 2nd house

o o
o o
o o

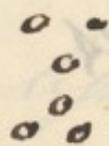
Rubens

Is no less vicious and wretched -
it is the source of war & bloodshed
signifying guile deceit and per-
version of the truth; and intestine
quarrels animosities discord it is
unfortunate in all things and when
it is found in the Ascendant
Geomancers frequently destroy the
figure it is under ♂ in the Sign
♁ it is exalted in the 3rd house
and has its fall in the 9th house



Albus

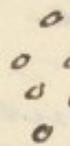
Is termed meanly good and
often times conduces to gain
especially in the affairs of
Science and learning it is
under ♄ in the sign ♋ it is
exalted in 6th and fall in 12 house



Conjunction

Con

Is a figure of joining it is a
controversable figure good with ♄
& bad with ♁ it is a Symbol of
a funeral - it is under ♄
retrograde in ♈ it is a bespoken
sign exalted in 6th and fall 12 house



Career

Is the emblem of a prison or
close shut up places and is very
evil it gives losses in all things poverty
& is unlucky in all things it is under ♄
ex in 12th fall 6th house

•••
••• Populus
•••

It is a symbol of multitude
and an Assembly a confused Sen-
tence, it is generally evil and
unpropitious and generally signifi-
cative of a journey
it is under the full ☽ in the Sign ♄
is exalted in the 2nd fall in 8th house

•••
••• Vicia
•••

It is a figure of quickness
and facility. of travelling Removal
Journeys of Voyages, it is a wastey
and dissipating figure and unlu-
cky in matter of profit - it
denotes hasty news and short
Journeys when found in the
Scheme it is under the new
☽ in ♄ and is exalted in the 5th house
and its fall is in the 11th house

∴ Caput

Is the Symbol of the Dragons
head - and is generally fortunate;
and propitious in the Undertakings
it is good for Matters of Gain and
Money affairs It signifies some-
thing coming quickly on
It is the ♂ in ♀ and is a commixture
of ♀ & ♀ conjoined

∴ Cauda

Is the Symbol of evil and Misfortune
disgrace scandal poverty and Ruin
it wastes the Substance Annoys
the asker and hinders the Undertaking
and is at all times evil

This is the ♀ Dragons Tail in
Sagittarius ♀ formed out of a
mixture of Saturn and Mars

o
o
o
o
o

Puella

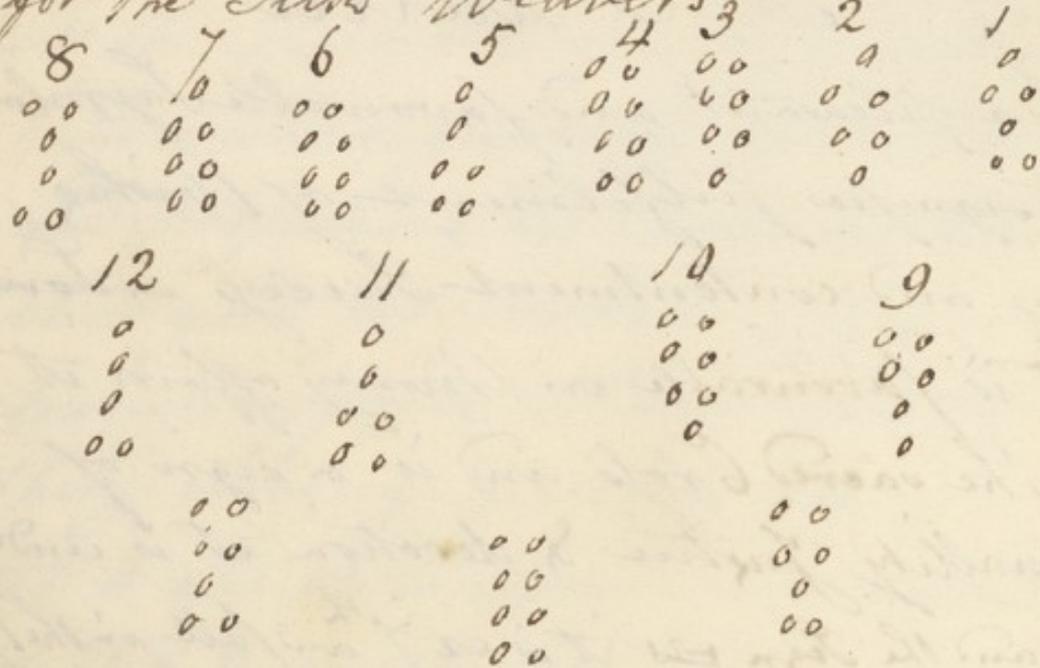
Is a pleasant and favourable Symbol
it signifies fulfilment of wishes
Joy and contentment Success in Love
it is favourable in Money affairs it
is the sacred Cross and is a sign of
equality Justice & devotion it is under
♀ and the Sign ~~is~~ it is ex 7th and fall in the 1st

o
o
o
o
o

Puer

Is the emblem of a drawn sword,
of War, Battles and hostility quarrels con-
tentions civil discords it conduces
but poorly to gain or profit being
naturally evil, so no success can attend
the question where it is a significator
it is under ♂ and the Warlike ♀ the Ascend
of England it is exalted in the 1st and
fall in the 7th house - -

A figure of Geomantic Scheme set
for the Silks Weavers



This was set to ascertain whether
the Silks Weavers should gain the
day or not -

Now Trisivio and ♀ rules the first house
their Ascendant. and represent the business
in hand - Trisivio a figure of ♄ in the 10th
is Symbolical of decline and falling off
in this trade and Career in the house of
gain almost evil figure and Governed by ♄
in his most manevolent debilities

sufficiently indicates great loss
to the Workmen and Masters -
part of it has taken place but more
remains to come

Now concerning whether the bill
will pass or be thrown out
it is evident that their opponents
will gain the Victory - but as the
2 witness' is ruled by the Judge
controvertible in nature while the
16 figure moves in the Ascendant
we expected that the bill would have
received a partial alteration favour-
able to the petitioners against it
There are several other topics relative
to the above persons as for instance
fortuna major in the 9th house shewing
success in foreign Manufactory,
Cauda Draconis in the 12 house
denotes coolness in the petitioners friends
and many secret enemies. and Populus

in the 4th denoting a depreciation
of the Article in question whilst
the fixed nature of several of the
significators cause the evil to be
of long duration and upon the en-
crease. Conjunction in the 8th
is also typical of short life so the
principal Agitators of the bill
and its supporters. which is yet
to be fulfilled - although many
season will elapse before it will be
Verified!!

of Oppositions
B Squares of the Symbols are
to be considered as in Astrology

The 3 is Nalgah - devoted to the
protection of those who are ass-
aulted by evil spirits of
and whose mind are sunk by
fearful and melancholy app-
rehensions of the Assaults of the
devil and the power of death
his office is to fortify the mind
and to lead the senses to the
contemplation of the Attributes of
God the Joys of heaven the reward
of all good works - he appears
is perfectly celestial, having a
crown of gold upon his head with
a shield and spear in his hand
for the protection of those over whom
he presides the following is his -
Magical Character -
and is worn round
the neck as a preser-
vative against
and suicide

The 4 is Maymor one of the
powers who hath the ability of sub-
servient administration and protec-
-tion, that is at one and the same
time to be present with many
his presence must be sought by
humility & prayer

The 5 good Genius is Gaonim and
angel of celestial brightness who hath
the particular ability of rendering
his Pupil - invisible to any evil
spirit whatsoever as often as
attacked by them. The 6 is - Galanu
the guardian and promoter of all
good and great Ideas by home
Bezaliah - and Atholiab - whose
divinely inspired for the structure
of the Tabernacle. The 7 is Barnah-
umi the genius of Geometrical
proportion and the power of Numbers
the extent of which are not yet
half known - even by the most Learn'd

There are also 4 Evil Steamons
and their office are to counteract
the effects of the good - for as the
power and capacity of the good proceeds
from the omnipotence of God in the
quality of Heaven, so is the force
of the evil Genii in the infernal
quality - made corresponding there
to by a principal of exact contraries
for those evil angels before they fell
enjoyed the same places as the good
Their office is to tempt and seduce
the mind to Abominations - that
they may be instrumental to
extend the kingdom of darkness

The 1 is Panalcarp in the like
ness of a Crocodile with two heads
The 2 is Baratron appearing
like a magician in a priestly
habit the 3 Londenrah in the
comparison and similitude of an
indian huntsman The 4 is

Greivzmodal in the fawning
shape of a large spaniel Dog
The 5. Ballisargon in the
similitude of a covetous miser
lusting after gold - he is a
seducer of Robbers Murderers and
will bring his followers to an In-
nominous end - The 6 Morborgran
who in likeness of a friendly erwing
man induces the worst hypocrisy
and deceit (and was an attendant
upon Judas Iscariot) The 7 is
Barman - ready to enter into
league with any witch Conjurers &c
but he professes the soul of those
he is in league with -

Those are said to be most easily
invoked by the magicians well
they being nearest to us - and
officially attendant upon Us -

Charms and Talismans

Against Furious Beasts &c
Repeat earnestly with sincere
faith; the 22^d & 23^d Verse of
the 5th Chapter of Job

Against Troubles in General
read Job 5th Ch & Verse 19. 20. 24th

Against Enemies

Isaiah ch 13 or 2^d ch 13 or 10 ch 17 or 14th

Against Peril by fire or Water
Isaiah 43rd ch. ver 2^d

Magical Spell
A Charm to Protect

Against Thieves. — Whoever
will protect him self against
Thieves by night or Day let
him wear this Charm (written
upon Virgin Parchment) about
him and repeat the words thereof
every morning so shall no theft
happen to him

Cabalistical Words of Great
Efficiency

To cause destruction to
Enemies . . . out of the follow-
ing passage "Let their ways be
dark and slippery, and let the
angel of the Lord pursue them
They Draw forth the name
of the evil Angel or messenger
of mischief - Mirael or Midael
of the spiritual order of
Warriors, and when they
would destroy an enemy, they
made a Talisman cast at the
time when the Moon was in
an evil aspect to Mars, affix-
ing thereon the above name
Mirael, and the name of
the enemy also, whom they
would subvert or Destroy, the
effect soon follows —

Those Waxen Images must
be made under certain constellations
which they compose of divers
forms whereby they are made
to represent the person of Revenge
and also the afflictions, for
instance if they wished to pierce or
consume by degrees the Life and
Health of a person they were offend
with the mould the Image of such
an ominous form and aspects as
be conducive to their Designs making
several magical characters upon the
sides of its head describing the charac-
ter of the Planetary hour upon its
breast and its name on its forehead
and the intended effect wrought upon
its back, for pains they stick pins
and thorns (for fevers they proceed certain
Planetary hours daily to warm them before
a lingering fire of certain gums &c -

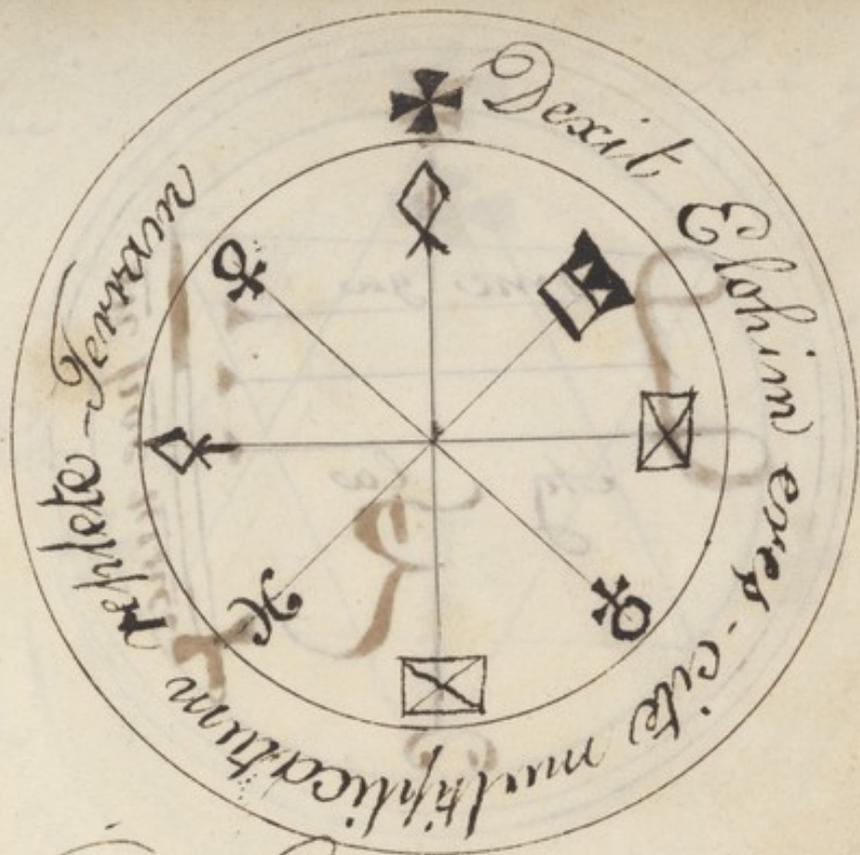


This Talisman is for destroying
 all kind of Venemous or Troublesome
 Insects Or Reptiles

Must be made on Iron when
 the Sun and Moon enters the
 Sign Scorpio. It is also said
 to be efficacious in Saturnine
 Diseases especially if made
 when the Moon enters the Constellation
 Cancer Conjoined with the Sun -



Against Enemies, according
 to the opinion of Theurgist
 this is under the Dominion of
 Sun and Jupiter, it is to be
 cast of the purest Grain in
 in the Day and hour of Jupiter
 at a time when these planets
 are in mutual reception from
 the Signs ν ρ ζ and During
 the Increase of the Moon, the
 characters are to be engraven on
 the same in the Day and hour of Mercury
 in the Moons Increase likewise



For Love It is said
 to be wonderfully efficacious
 in procuring success in Amour
 and Love adventures; it must
 be made in the day and hour
 of Venus when she is favourable
 to the planet Mars; it should
 be made on Pure Silver or
 Purified copper, if Venus be in
 the sign of Taurus or Libra it
 is still Better.



For War and Battle

He that beareth this
sign about him shall be
holpen in every need or
necessity

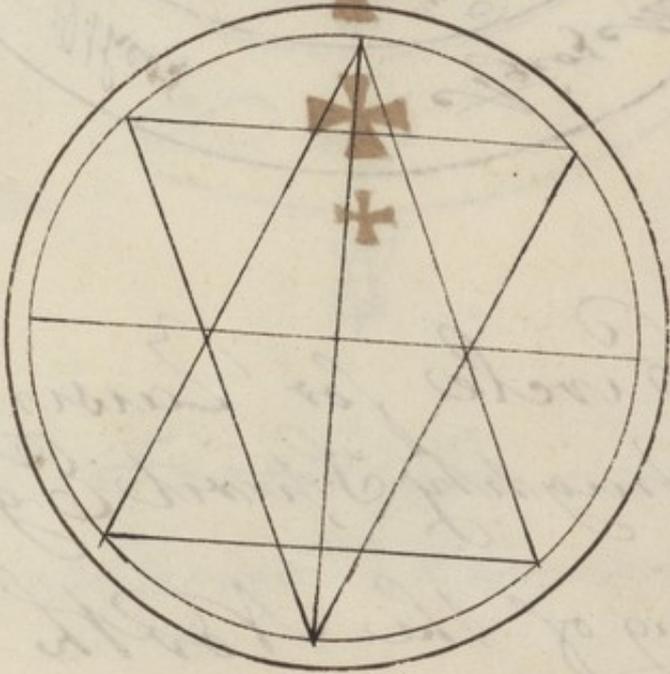
Taken from the Astrologer of
the Nineteenth Century

The

Seal of

David, or

Solomon



Stragles Athologus



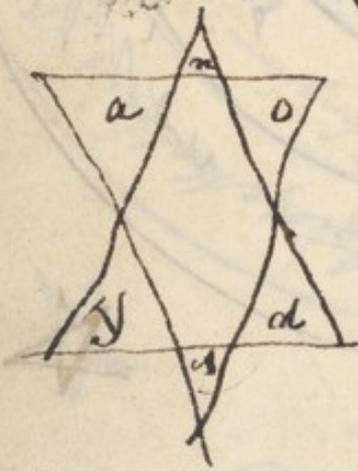
A Circle for Raising
 the mighty Spirit Eger
 King of the North



A Circle for raising
the Spirit Oberion



Character



Divine Names of 6

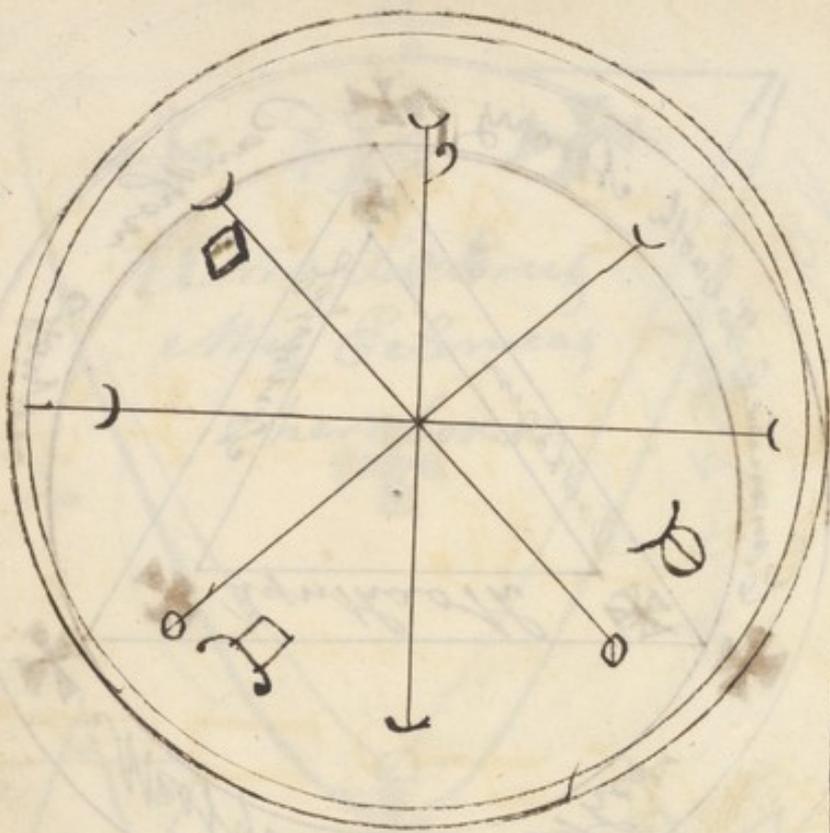
6 Pan a letter of the 7 name
6 he extended &

36 Helok 111 Nachiel Intelligence
666 Sorath Deamon of 6

9 Prod - 81 Elime 369 Hasmodie Deamon
3321 Schedbar Jehemouth sehar father
Deamon of the Deamons of the 3321
Malchabetharsium Ybedberuath secha-
nim In of the Intelligence of the)

The Great Character

Whoever beneath this sign all
 things shall do him homage



Whoever beneath this
 sign in each year may see



ACLA

on the other side

Le
 H
 E
 L
 C
 L
 E
 S
 L
 X

The figures of Divine Letters

The Letters of E

⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘

Letters or Characters of 2

⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘
⌘ ⌘ ⌘ ⌘

Letters or Characters of 3

^{cross} ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘

Letters or Characters of 4

⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘
⌘ ⌘ ⌘ ⌘

Letters or Characters of 5

⌘ ⌘ ⌘ ⌘

Letters or Characters of 6

⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘

Letters or Characters of 7

⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘ ⌘

ACLA

Divine names of 2 Jehovah
3 M. I. hod - 15 ^{Tab} 15 Hod 45. Tetra
grammaton extended - 45. Agiel
Intelligence of 5 45 Tazel Demon of 2

of 4 Jupiter

4 Abba
16 - 16 - 34 el ab 136 Job
which Intelligence of 4 136 Hismael
Demon of 4

of 6
5 He a letter of the holy name

25 - - 65 Donai 325 Graphiel
Intelligence of 6 325 Barzabel

of 9 Venus

7 Ma 49 Hagiel Intelligence

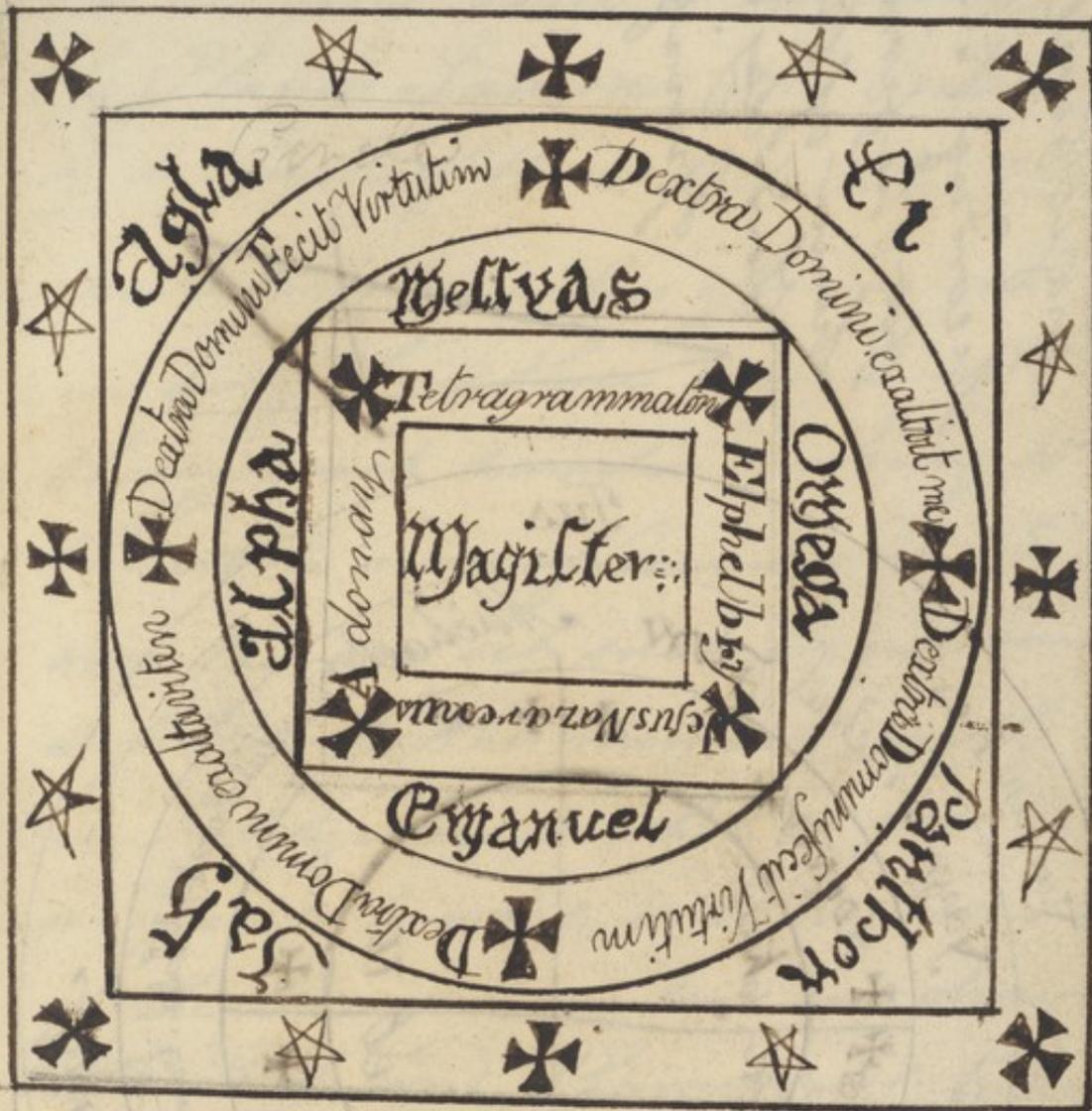
157 Kedemel Demon of 9 1225
Bore Seraphim Intelligence

Asoga eight of Mercury

8 Asoga Octonary Extended 64 Din
64 Doni 260 Simel Intelligence 2080

Thoth thov thar ath Demon of 8
Sapthantharath

Look Back for ()



The Magic Circle
According to Sibley

ovah
 the
 riel
 nong
 Joh
 nel
 and
 ap
 l
 cere
 1225
 Du
 80
 &

The first table is assigned to
the Planet Saturn and consists
of a square of three containing the
particular numbers of nine and
in every line three every way &
through each diameter making 15
the whole sum of numbers is 45
over this are set such divine names
as fill up the numbers, with
an Intelligence to what is good &
a Spirit to what is Bad: and out
of the same numbers are drawn
the Seal and Character of Saturn
and the spirits thereof as is beneath
Ascribed to the Table

Now this table with a fortunate
Saturn being engraven upon a plate
of Lead helps Child Birth makes a
man Powerfull Success Amongst Princes
if unfortunate hinders Building Planting
cast a man from honours detaches
cause discords, and despises an Army

Charactars

The Second is the table of Jupiter
which consists of a square drawn
into its self it contains sixteen
particular numbers and in every
line and diameter four, making
34; the Sum of all is 136 there are
over it divine names; with an
Intelligence to that which is good
and a spirit to that which is
bad, and out of it is drawn the
Character of Jupiter and the
Spirits thereof, if this is
Engraven upon a plate of Silver
with Jupiter being powerfull
and ruling in the Heavens it conduces
to gain riches and favour, love peace
Concord and to appease enemies
and to confer Honours and dignities
counsel &c and dissolves Enchant-
ment if Engraven upon a
Coral

The Third table Belongs to Mars
which is made of a square of five
containing 25 numbers, in every
side and diameter five which makes
65 and the sum of all is 325 and
there are over it divine names
with an Intelligence to good and a
Spirits to evil and out of it is
Drawn the Characters of Mars
and his Spirits These with most
fortunate being engraven upon
an Iron plate or Sword makes
a man potent in War and Judgments
victorious terrible to his Enemies &c
But if engraven upon a plate or
Brass & unfortunate Hinders Building
casts down the powerfull from dignities
honours and riches causes discord and
hatred amongst men and Beasts drives
a way Bees Pidgeons and fish and hinders
mills from working renders Hunters and
fishers unfortunate causes Barrenness &c

The fourth Table is of the Sun and
is made of a square of Six and
contains 36 particular numbers
whereoff six in every side and
Diameter produce 111 and the
sum of all is 666 there are over it
Divine names with an Intelligence
to good and a Spirit to evil and
out of it is Drawn the Character
of the Sun and his Spirit, This
being engraven upon a plate of
Pure Gold & Being fortunate renders
him that wears it renowned
amiable acceptable potent in all
his works equaling him to a King
elevating his fortunes and enabling
him to do whatsoever he will
But with an unfortunate Sol
makes one a Tyrant Proud ambi-
tious, insatiable, and finally to
come to an ill ending

The fifth Table is of Venus consist-
ing of a square of seven drawn into
its self VIZ of 49 numbers whereoff
7 on each side & diameter produces
175 the Sum of all is 1225 there
are over it divine Names with
an Intelligence to good and a spirit
to evil there are drawn out of it
the Character of Venus and her Spirit
This Being engraven upon a plate
of Silver, & being fortunate, promotes
Concord ends Strife, procures the love
of Women helps Conception dissolves
enchantment it causes increase
drives away Melancholy distempers
and this being carried about Travel-
ers makes them fortunate But
if formed upon Brass Venus being
unfortunate It acts contrary
to all that has been before
said.

The Sixth Table is of Mercury
inculking of a square of eight drawn
into its self containing 64 numbers
whereoff eight on every side and by
boath diameters makes 200 the
Sum of all is 2080: and over it
are its divine names with an
Intelligence to good and a Spirit to
evil and out of it is drawn the
Characters of ♃ and the Spirit there
and if being fortunate you engrave
it upon Silver Tin or Yellow Brass
or write it upon Virgin Parchment
it renders the Bearer thereof grateful
acceptable and fortunate and do
what he pleases it Brings gain
and prevents Poverty. helps the
memory understanding divination
Occult things by Dreams But if
Unfortunate every thing contrary
to this

The seventh table is of the Moon
it consist of a square of nine having
81 numbers in every side and diame-
ter nine, producing 369, the sum
of all is 3321 and over it is set di-
vine names with an Intelligence to
good and a Spirit to Bad and from
it is drawn the Characters of the
Moon and of the Spirits thereof

This the ☾ being fortunate engraven
on silver makes the wearer Amiable
Pleasant, cheerfull and Honourable
removing all Malice and ill will
causes security in journeys increase
of riches and health of Body
Drives away enemies and other evil
things from what place soever
thou shalt wish them to be expelled
But if the Moon be unfortunate
& it be engraven upon a plate of
Lead whomever it shall be burje

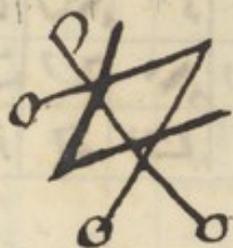
it makes that place unfortunate
and the Inhabitants there about
also Ships Rivers fountains and
Mills, and it makes every man
unfortunate against whom it
shall be directly done making
him fly his place and Abode
and even his Country where it
shall be banded, and it hinders
Physicians Orators and all
men whatsoever in their office
against whom it shall be
made

Now how those Seals and
Characters of the Planets are
Drawn from these Tables the
Wise Searcher and he who shall
under stand: the Verifying of
these tables shall easily find
out

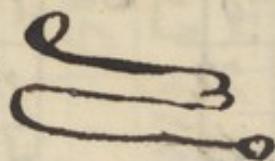
Table of *Y* in Compass, The same in Hebrew

| | | |
|---|---|---|
| 4 | 9 | 2 |
| 3 | 5 | 7 |
| 8 | 1 | 6 |

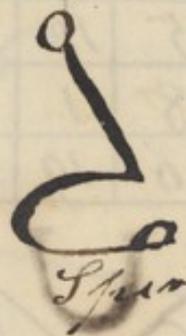
| | | |
|---|---|---|
| ך | ט | כ |
| נ | ה | ז |
| ח | א | י |



Seal of *Y*



Intelligence

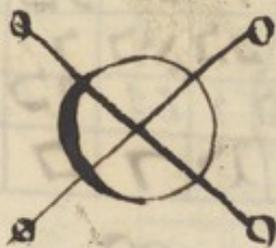


Spirit

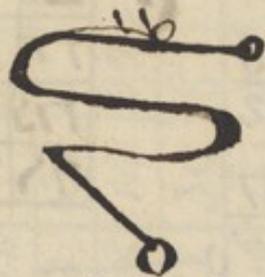
Table of *Jupiter* The Same in
In Compass Hebrew

| | | | |
|----|----|----|----|
| 4 | 14 | 15 | 1 |
| 9 | 7 | 6 | 12 |
| 5 | 11 | 10 | 8 |
| 16 | 2 | 3 | 13 |

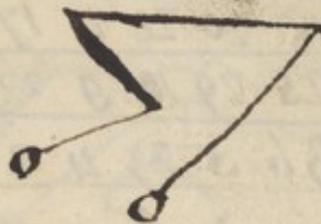
| | | | |
|---|----|----|----|
| ך | יד | טו | א |
| ט | ז | ו | יב |
| ה | א | י | ח |
| י | כ | ג | יג |



Seal



Intelligence



Spirit

Table of Mars
in Compass

The Same in
Hebrew

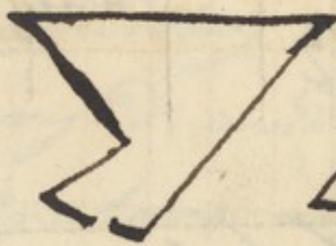
| | | | | |
|----|----|----|----|----|
| 11 | 24 | 7 | 20 | 3 |
| 4 | 12 | 25 | 8 | 16 |
| 14 | 5 | 13 | 21 | 9 |
| 10 | 18 | 1 | 14 | 22 |
| 23 | 6 | 19 | 2 | 15 |



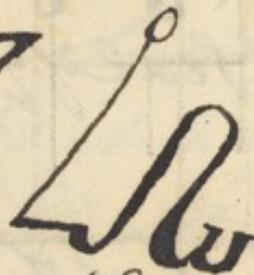
| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ו | י | כ | ז | נ | ד |
| ו | י | כ | ז | נ | ד |
| ו | י | כ | ז | נ | ד |
| ו | י | כ | ז | נ | ד |
| ו | י | כ | ז | נ | ד |



Seal



Intelligence



Spirit

Table of the Sun
in Compass

The same in
Hebrew

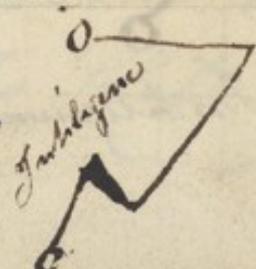
| | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|
| 6 | 32 | 3 | 34 | 35 | 1 |
| 7 | 11 | 27 | 28 | 8 | 30 |
| 19 | 14 | 16 | 15 | 23 | 24 |
| 18 | 20 | 22 | 21 | 17 | 13 |
| 25 | 29 | 10 | 9 | 26 | 12 |
| 36 | 5 | 33 | 4 | 2 | 31 |



| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ו | י | כ | ז | נ | ד |
| ו | י | כ | ז | נ | ד |
| ו | י | כ | ז | נ | ד |
| ו | י | כ | ז | נ | ד |
| ו | י | כ | ז | נ | ד |
| ו | י | כ | ז | נ | ד |



Seal



Intelligence

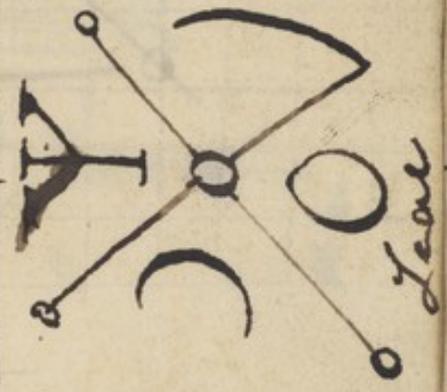


Spirit

| | | | | |
|----|----|----|----|----|
| א | ב | ג | ד | ה |
| ו | ז | ח | ט | י |
| יא | יב | יג | יד | טו |
| טז | יז | יח | יט | כ |
| כא | כב | כג | כד | כה |

Table of Venus
Sun Compass

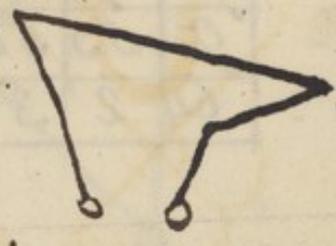
| | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|
| 22 | 44 | 16 | 41 | 10 | 35 | 4 |
| 5 | 23 | 43 | 17 | 42 | 11 | 29 |
| 30 | 6 | 24 | 49 | 81 | 36 | 12 |
| 13 | 31 | 04 | 25 | 43 | 19 | 37 |
| 38 | 14 | 32 | 1 | 26 | 44 | 20 |
| 21 | 39 | 8 | 33 | 2 | 27 | 45 |
| 46 | 15 | 40 | 9 | 34 | 13 | 28 |



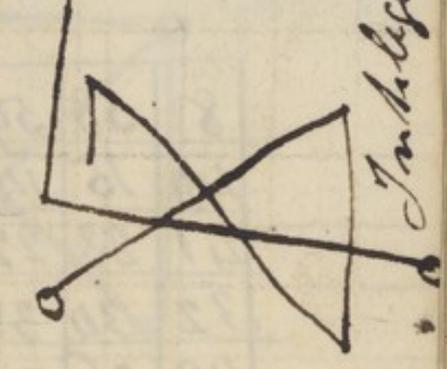
Indisgen

The Same in
Hebrew

| | | | | | |
|----|---|---|---|---|---|
| כב | י | פ | י | ל | ל |
| ק | מ | י | מ | י | ט |
| א | כ | מ | י | ל | י |
| ד | י | כ | מ | י | ל |
| ה | י | כ | מ | י | ל |
| ו | י | כ | מ | י | ל |
| ז | י | כ | מ | י | ל |
| ח | י | כ | מ | י | ל |
| ט | י | כ | מ | י | ל |
| י | י | כ | מ | י | ל |

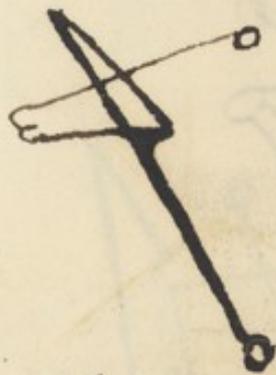
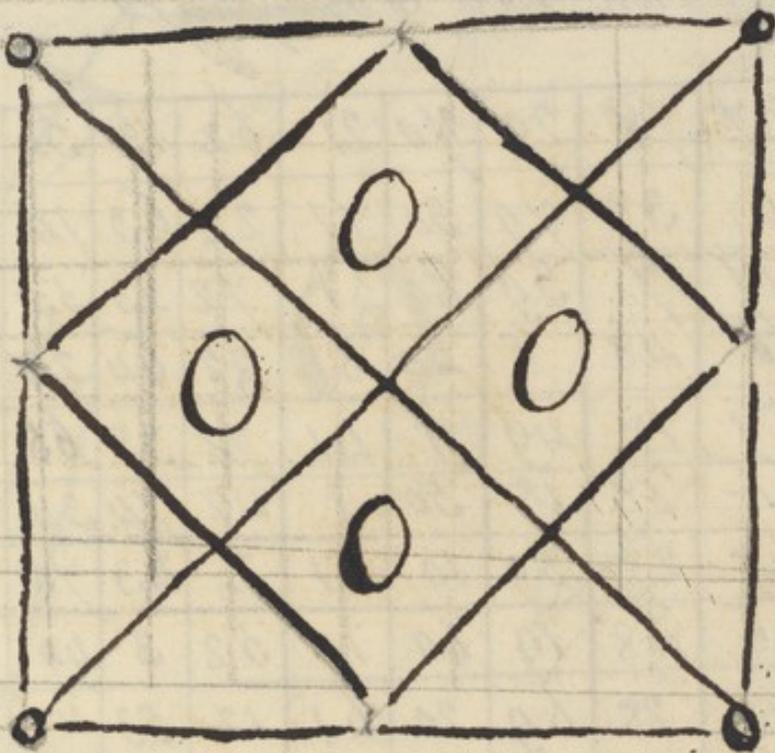


Sund



Indisgen

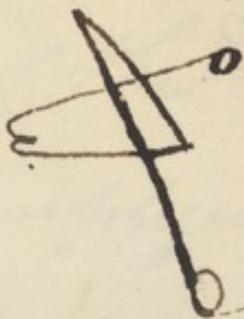
Seal of Mercury



Intelligence

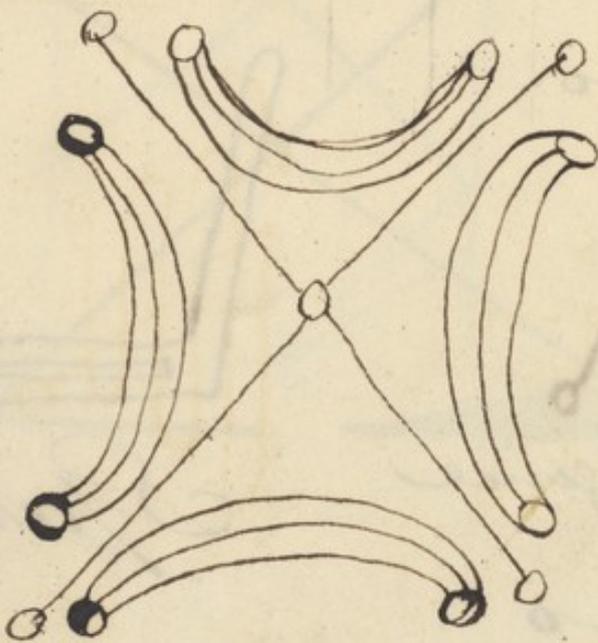


Spirit



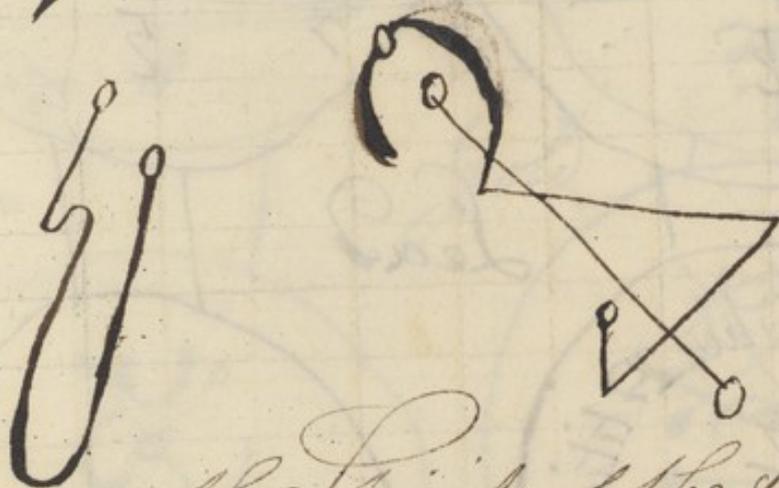
The table of the Moon
in her Compass

| | | | | | | | | |
|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| 37 | 78 | 29 | 70 | 21 | 62 | 13 | 54 | 5 |
| 6 | 38 | 79 | 30 | 71 | 22 | 63 | 14 | 46 |
| 47 | 7 | 39 | 80 | 31 | 72 | 23 | 55 | 15 |
| 16 | 48 | 8 | 40 | 81 | 32 | 64 | 24 | 56 |
| 57 | 17 | 49 | 9 | 41 | 73 | 33 | 65 | 25 |
| 26 | 58 | 18 | 50 | 1 | 42 | 74 | 34 | 66 |
| 67 | 27 | 59 | 10 | 51 | 2 | 43 | 75 | 35 |
| 36 | 68 | 19 | 60 | 11 | 52 | 3 | 44 | 76 |
| 77 | 28 | 69 | 20 | 61 | 12 | 53 | 4 | 45 |

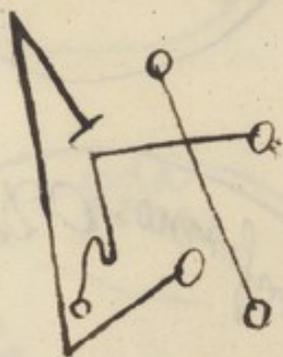




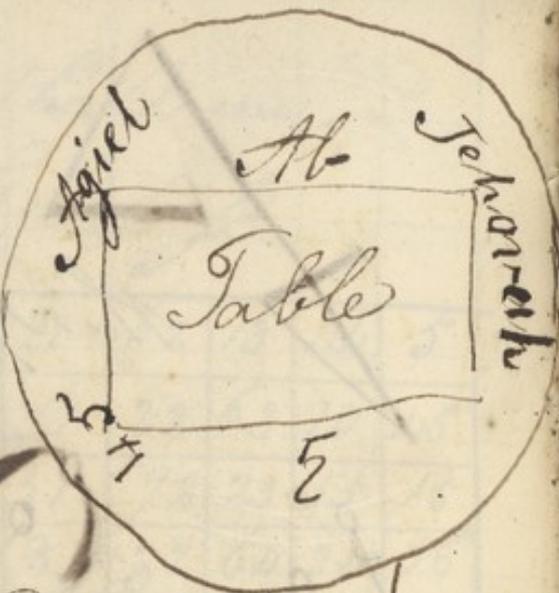
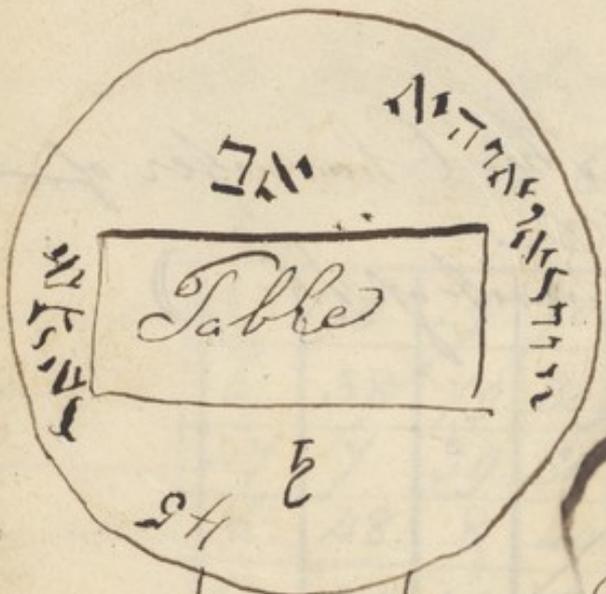
The Character of
the Spirit of the Moon



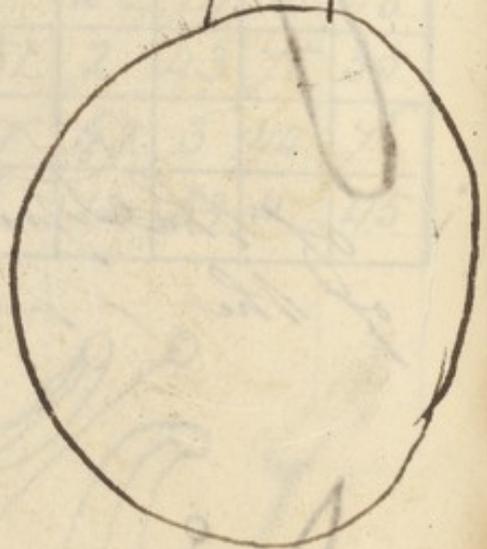
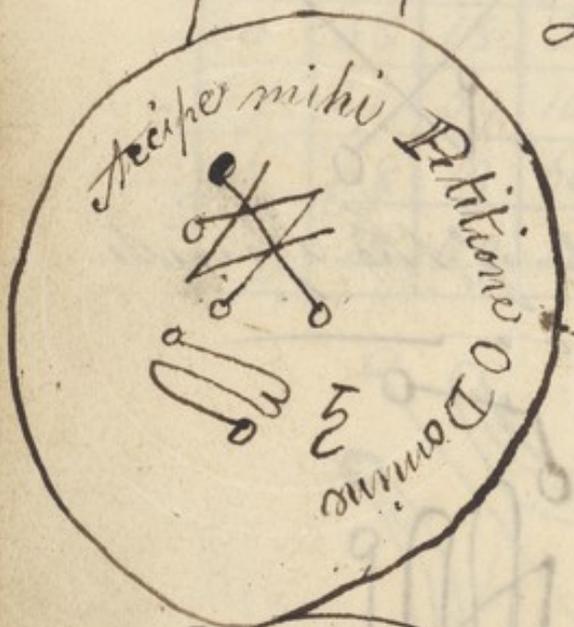
of the Spirit of the Spirit
of the Moon



of the Intelligence of the
Intelligences of the Moon

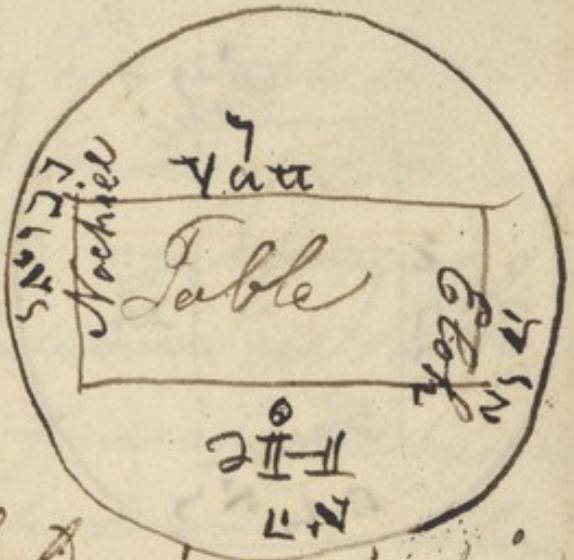


Lead



Silver

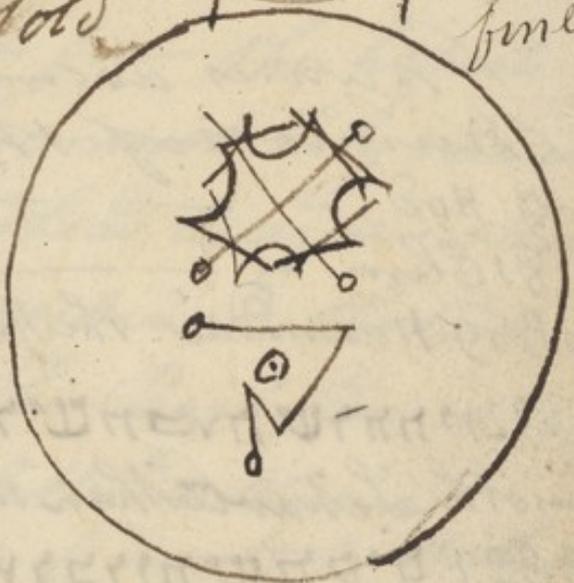
Jeharweih



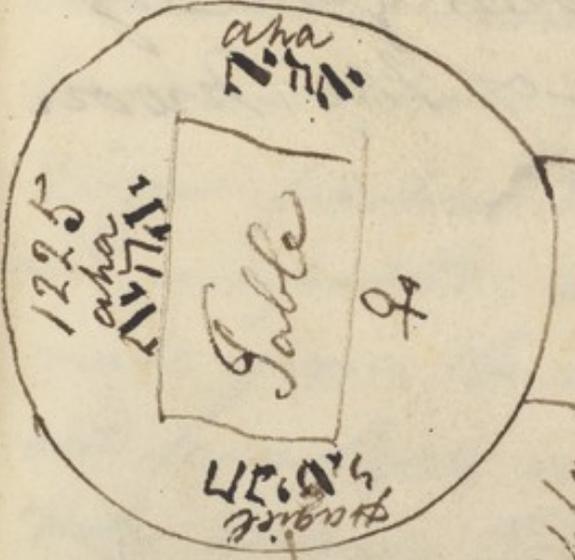
Iron

Gold

fine



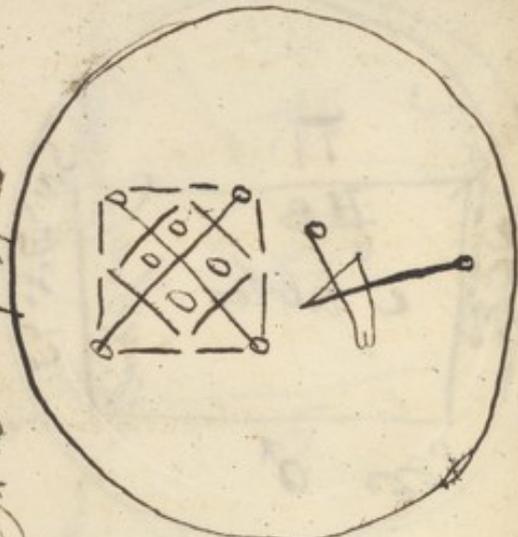
1225



Paper



Silver & Tin



Names answering to the numbers of the Moon

9 Hod ————— ה ה

81 Elim ————— ילים

369 Hasmodai. The Spirit of the ————— ה ש פ ו ר י א

33210 ש ר כ ר ש ה פ צ ה ש ד ח ח י The Darsche-moth Schartathan the Top of the Moon

3321 ח ל נ י א ב ח ר ל ש י ס י ט ע ז פ צ ו י ח ש ח ק י מ

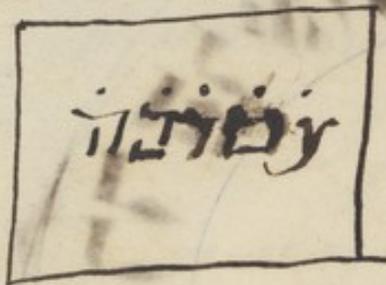
Malchabetharissim hed bevuah scheidim - the Intelligence of the Intelligence of the Moon

The following Seal which is
the Calaba of the Names of God - is
efficacious against any disease of
Man or griefs whatsoever in the
fore Side are the four square Names
of God so subordinate to one another
in a square that from the highest
to the lowest, those most holy names
or seals of the Godhead do arise, whose
Intention is inscribed in the Circum-
ference; but on the Backside is in-
scribed the seven lettered Name
Itranitha, and his interpretation
written about VII the verse from
which it is extracted. This must
be done upon pure Gold - or
Virgin parchment pure Clean
and unspotted; also with Ink
made from the smock of conser-
vated wax lights or Incense and
Holy water. The operator must

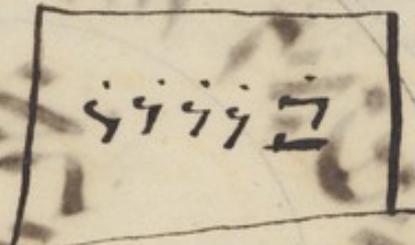
must be purified and Cleanse
and have an infallible hope a
constant faith. and have his
mind lifted up to the most high
God if he would surely obtain
this divine Power

Now against depredations
of evil spirits and Men and
what dangers soever in journey
waters, enemies, Arms &c in
the same manner as above
said, these characters ^{ייהוה} on one side
and these on the other ^{יהוה} which
are the beginning ands of the five
first verses of Genes, and rep-
resentation of the Creation of
the World and by this ligature
they say a man shall be freed
from all mischiefs if he
firmly believes in the Creator
of all things

A Seal against all Dangers
of Spirits and Witches

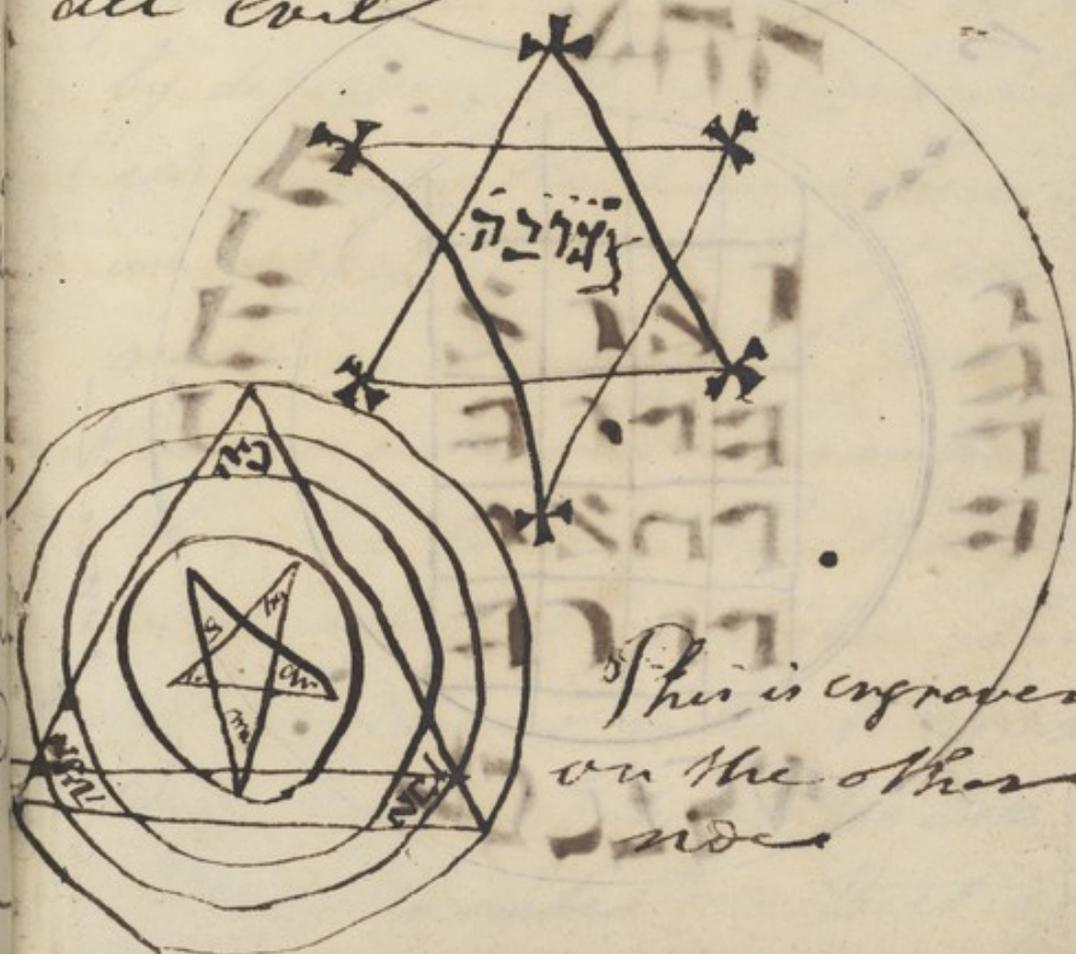


four part



under Part

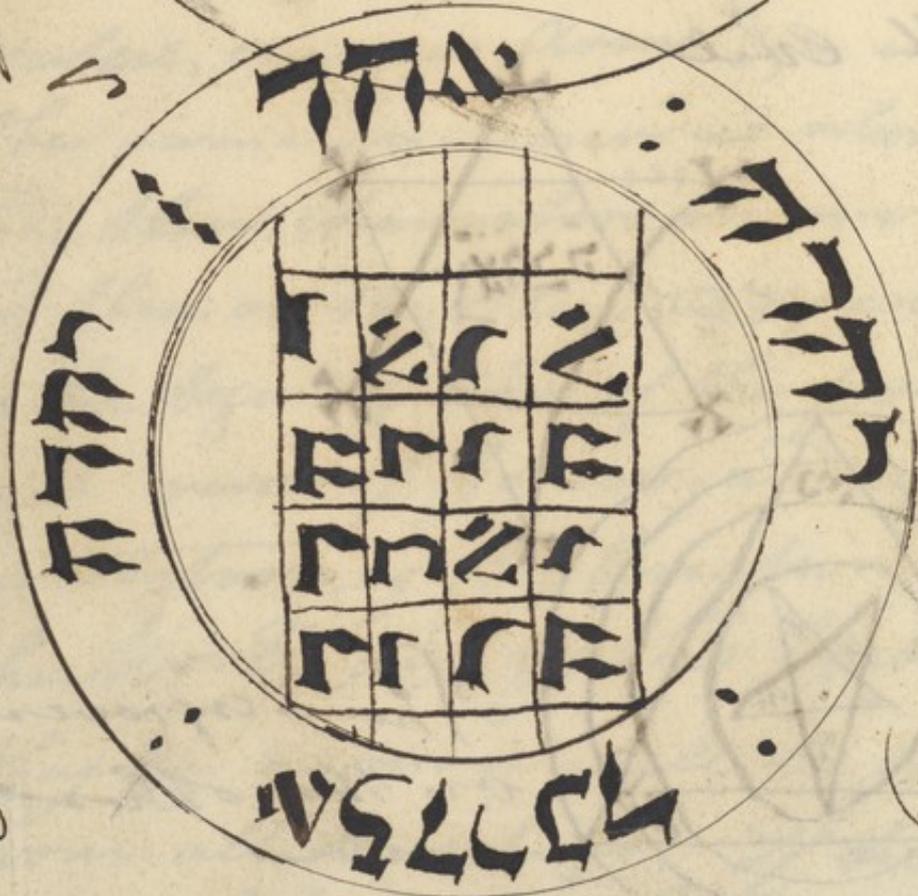
This Seal is used as a preservative
against all Casualties Dangers
and Mishaps being worn
engraven upon pure Gold
it Secures the Bearer from
all Evil



This is engraven
on the other
side

Holy Seals of the Names of God

The Calaha



The word

3 Constellatory Practice

To make fortunate - make
an Image at that time in which
the Significator of Life the giver of
life or Nyleech - the Signs and Planets
are fortunate; Let the Use and
midheaven and the Lords thereof be
fortunate; and also place the ☽
☉ and Lord of the conjunction or
prevention made before the habit
by depressing the malignant Planets
(ie) taking the times when they
are depressed -- But if we would
make an Image to procure
misery we must do contrary to
this, by taking the malignant
stars when they rule and the
same means take to make
any Region City or House
Unfortunate -- But if you

would make unfortunat any
one that have injured you
make an Image under the
ascendant of that man whome
thou wouldst make unfortu-
nate and thou shall take when
unfortunat the Lord of the House
of his life the lord of the Asc
and the Moon and the Lord of
the House of the Moon and
the Lord of the house of the lord
Ascending, and the 10 house and
the Lord thereof Now for the
Building or success of filling
of any Place place fortunes
in the Asc thereof and in
the 1-10-2-8 houses thou shall
make fortunate the lord of the
Asc and the lord of the House
of the Moon But to

Chase away certain animals
from any place that are noxious
to thee, that they may not gene-
rate or abide there make an im-
mage under the Ascension of that
Animal that thou wouldst
chase away or Destroy and After
the likeness thereof: for instance
now supposing thou wouldst
wish to chase away Scorpions
make an Image of a Scorpion
when the Sign Scorpio Ascends
with the Moon - thou shalt
make unfortunate the Ascend-
ant Lord thereof and the Lord
of the House of Mars and thou
shalt make unfortunate the
Lord of the Asc in the 8 and
let them be joined with an
aspect Malignant as ☐ or ☉ and

write upon the Image the
name of the Sun and the Lord
thereof and the Moon the Lord
of the Day and hour: and let
there be a pit made in the
middle of a place from which
you drive them and put in
some earth taken out of the
four corners of the same place
then Bury the Image there
with the head downward Saying

This is the Burying of Scorpions
that they may be forced
to leave and come no more
to this Place - and so
do for the rest —

Now for Gain

make an Image under the
Ascendant of that man to whom
thou wouldst appoint gain
and make the lord of the Use
and 2 house (which is the House
of Substance) to be joined by \times or Δ
and let there be Reception am-
ongst them make fortunate //
and the Lord thereof and the 8
and if thou canst put the Θ
in the Use or 2. and let the
Image be buried in that
place or from that place
to which thou wouldst appoint
the Gain Likewill for Agreement
of Love make an Image in
the Day of Jupiter under the
Ascendant of the Nativity of him
you would have Beloved: make
fortunate the Ascendant and

and 10 house and bid the
evils from the Ascen. and you
must have the Lord of the 10
and the Planets of the 11 fortunate
joined to the Lord of the Asc by
a \times or Δ with Reception then
proceed to make an Image
for him you would stir up to
love wheather it be a friend
a female or a Brother Relation
or Companion of him those
would he have favoured or
Beloved if so make it un-
der the Asc of the 11 house from
the Asc of the first Image
but if a Wife or Husband make
it under the 7th House if a
Brother Sister or Cousin under
the Asc of the 3rd house. if a
mother the 10 and so on

Now let the Significator of the
Use of the second Image be joined
to the significator of the first
and let there be Reception between
them and let the rest be forth
as in the first Image
afterward join both Images
together in a Mutual embrace
or Put the face of the second
to the back of the first, and
let them be wrapped up in
silke, and cast a way over the

Also for the success of
petitions, and obtaining of a
thing denied, or taken or possessed
by an other make an image
under the ascendant of him who
petitiones for the thing; and
cause the Lord of the 2nd to be joined
to the Lord of the Use -- from a
 Δ or \times aspects and let there be a

reception between them; and
if it can be so let the Lord of
the 2 be in obeying Signs and
the Lord of the Ascend in Ruling
make fortunate the Use and
the Lord thereof; and beware
that the Lord of the Use be
not retrograde or cumbrous or
easent or in the House of op-
position (ie) in the house from
his own house let him not be
hindered by malignant Planets
but let him be strong and in
an angle and make fortunate
the Use & Lord of 2nd and the 1
and make another Image
for him that is Rationed to
and begin it under the Ascend
belonging to him, as if he is a
King or Prince &c begin it under
the Use of the 10 house from the
Use of the first Image

If a father under the fourth
if a Son under the fifth house
and so of the like. Then put
the Significator of the second
Image joined with the lord
of the Use of the first Image
from a Δ or \times and let him receive
it And put them both strong
and fortunate, without any
hinderance; make all evil
fall from them - make fortu-
nate the 10 and 4. if thou canst
or any of them - And when the
second Image is perfected - join
it to the first face to face
and wrap them in clean brim
and bury them in the middle
of his house of who is petitioner
under a fortunate Significator
the fortune being strong - and
let the face of the first Im-
use

See toward the North - or rather
toward that place where the
thing petitioned doth remain
or if it happen that the peti-
tioner doth go forward to obt-
ain the thing petitioned - let
him carry the said Images
with him. Thus I have given
in a few examples the key to
all Talismanical operations
whatsoever by which wonder-
full effects may be wrought
either by Images by glasses by
rings by seals by Tables or any
other magical Instrument
whatsoever - But these have
their chief grounds in the
effects of the Planets and in
the rising of Constellations -
I recommend an earnest attention
to the Science of Astrology

of the twenty-eight mansions
of the

Moon and her Virtues

And seeing the Moon mea-
sures the Whole space of Zodiac
in the time of 28 days hence
it is that the wise men of
the Indians and most of the
antient astrologers have granted
28 Mansions to the Moon
which being fixed in the eighth
Sphere do enjoy (as Alpharus says)
divers names and properties
from the Various Signs and
Stars which are contained
in them, through which while
the Moon wanders, it obtains
many other powers and Virtues
by every one of these Mansions
according to the opinion of Abraham

contained $12^{\circ} 51'$ and almost $26''$
whose names and also their be-
ginnings in the Zodiac of the
eighth Sphere are these The
first is called Almath that is in
the Horns of Aries; and his beg-
inning is from the Head of Aries in
the eighth sphere it conduces dis-
cords in journeys

The Second is called Allothaim
or Albachan that is the Belly
of Aries, and its beginning is from
the 12° of the same Sign $51' 22''$
complete it conduces to the find-
ing of Treasures and to the retain-
ing of Captives

The third is called, Achaomaz-
on or Atharay that is shewing
or Pleiades its beginning is from
the 25° of Aries complete $42' 51''$
its profitable to Sailors Huntsmen
Astronomers &c &c

26"
is be
the
he
is in
is beg
hies in
is du
The 4th. is called Aldebaran
or Aldebaran that is the eye
of Taurus his beginning is from
the 8° of Taurus 32' 17" of the same
Taurus being excluded it causes
the destruction and hindrance
of Buildings fountains Wells
goals Mines the flight of creep-
ing things begets discord

Althou
Belly
from
22"
e fin
Altho
The 5th. is called Alchabaz
or Alchabaz the beginning of
it is after the 21° of Taurus
25' 40" it helps to return from a
journey to the Instruction of
Schollars it confirms edifices
it gives health and good will

acorn
veny
The 6th is called Athanna
or Alchaya that is the little
Star of great light his beginning
is after the 4° 17' 9" it con-
duces to Hunting and besieging of

Lawns. and revenge of Princes
it destroys harvest and fruits
and hinders the operation of
the Physician

The 7. is called Aldineach
or Alargach - that is the
Ann of Gemini and begins
from the 17^o of Gem 8. 34 -
and lasts even to the end of the
Sign it confirms gain and
friendship its profitable to
Lovers - and destroys Magistra-
cies and so is one quarter of the
Heaven completed in these 4.
mansions and in the like
order of def mii. and see -
the remaining mansions in
every quarter have their
several beginnings namely
so that in the first Sign of this
Quarter 3 mansions takes their

Beginnings in the other two
Signes 2 Mansions in each
Therefore the 7 following Man-
sions begins with Cancer whose
names are Alraya Anatrach
ya that is misty or cloudy
namely the 8 mansion it
causes love friendships and
Society of fellow travellers drive
away vice and afflictions -
Caphris confirm their impri-
sonment after this the 9th
called Anchaam or Anceph
that is the eye of the Lion
it hinders Harvest and Travelling
and puts divisions amongst
men the 10 is called
Algeliacke or Alblgebh
that is the neck or forehead
of Leo it strengthens Buildings
promotes Love Benevolence
and helps against Enemies

The 11th is called *Azobra*
or *Stradaf* that is the hair of
the Lions head it is good for
Voiges redemption of Captives
gain by merchandize - -

The 12th is called - *Azarapha*
or *Azarapha* that is in the
tail of Leo it gives proffing
to harvest and plantation but
hinders Seamen and is good
for the bettering of Servants &
Companions The 13th is called
Alhaire that is the Dog Stars
or Wings of Virgo it is profitable
for Benovelence gain Voiges
harvest & freedom of Captive
14th is called *Achureth* or
Arinet that is the Spike of
Virgo it causes the love of
married folks it cures the neck
is profitable to Sailors but hinders

Journeys by Land. and these
the Second quarter is completed
the other 7 follow the first of
which begins in the Head of Libra
viz the 15. Mansion and its
name is Agrapha or Agrapha
that is covered or covered flying
it is profitable for extracting
Treasures for Digging pits its
assists Divorces discord and Distruc-
tion of houses and Enemies and
hinders Travellers the 16th is
called Azubene or Azubene
that is the horn of Scorpio
it hinders Journeys and wedlock
harvest and Merchandise and
prevails for Redemption of
Captives the 17 is called
Achel that is the crown of 4
it better a bad fortune makes
love Durable strengthenes buddy
helps Seamen

The 18th is called Akhas or
Akob that is the heart of Scorpio
it causes dision Sedition Conspira
cy against Princes and mighty
ones revenge from Enemies but
it frees Captives and helps
Edefices The 19th is called
Akatha or Akhala that is the
Tail of Scorpio it helps the
Falling towers & an sin driving
men from their Places and
Destruction of Seamen and
Redition of Captives The 20th
is called Akahaya that is
a beam it helps for the tame
ing of wild beasts for strength
ening of prisoners it destroys the
wealth of Societies it compells
a man to come to a certain place
The 21 is called Akada or
Akeldach which is a Desert

it is good for harvest building
and Travellers and equises divorce
and in this the 3rd Quarter of
heaven is completed - there remains
the 7 last mansions completing
the last quarter of heaven the
first of which being in order
to the 22 - beginning from the
head of Capricorn called Sadahack
or Zedeboluch that is a Pastor
it Promotes the flight of Servants
and Captives that they may escape
and helps the curing of diseases
23 - is called Labadola or
Labrach that is swallowing it
is for divorce liberty of Captives
health to the sick the 24th is called
Sadabath or Chadegoad that is
the Star of fortune it is prevalent
for the Benevolence of married
people Victory of Souldiers

hunts the execution of govern-
ment and prevents its being exer-
cised 25th is called Sadalabra
or Sadalachia that is a Butte-
fly or a Spreading forth it
favours Beneficency and Revenge
destroys Enemies and Causes
divorce confirms Prisons hastens
messengers it condemes to spells
against copulation and so binds
every member of man that he
cannot perform his duty
the 26 is called Alphang or
Phragalmocaden that is the
first drawing it causes union
health of Caphris destroys Bur-
digs and Prisons 27th is called
Alchava Alghalmoad or
the Second drawing it encreases
harvest and renews gain
heals Infirmities it hinders

hindring prolongs Prisons
caused danger to Seamen and
it helps to infer mischief on
whome you please 28 is
Called Albotham or Alchaley
that is Pees it encreases howver
merchandize it secures travellers
through dangerous places it
makes for the joy of married
people but it strenghtens
prisons and causes loss of
Treasures and in those 28
mansions he hid many secrets
of the wisdom of The Ancients
by which they wrought wonder
on all things under the circle
of the Moon

Over the 12 Signes are set
those Angles. over Vore set
Malabidael over & Asmodel
II Anbriel & Miriel & Verchiel
III Hamahiel & Zuruel over III
Barchiel over & Adrachiel & S
Hanuel & Cambiel & Barchiel
of these Spirits set over the
Signes There are 28 Angles
who rule 28 mansions of the Moon
whose names are these
Geniel Emediel Anixiel
Azaniel Gabiel Dirachiel
Scheliel Anmediel Barbiel
Ardefiel Neciel Abdizuel
Jageriel Engediel Alhel
Ayeruel Atmiel Egibiel
Amutiel Kyriel Bethnael
Geliel Requiel Abrinael
Azuel Tagniel Atheneiel
Annixiel

There are also 4 Princes of ^{the} Angels
which are set over the 4 winds
and over the four parts of the World
Michael is over the East wind
Raphael West Gabriel over
North Uriel who by some
is called true South, there
are also assigned to the elements
then *viz* the Air Cherub
to the Water Thauris to the
Earth Ariel to the fire -
Seraph now every one of these
Spirits is a Great Prince and
much power in his own
office and times and rules
over many legions and after
the same manner amongst the
evil Spirits there are four who as
most Potent Kings are set over
the rest according to the 4 parts
of the World whose names are
Hecub

Urucius King of the East
Amazmoo King of the South
Paymon King of the West
Egin King of the North
with the Hebrew Doctors perhaps
call more rightly thus Samuel
Ayazel Ayael and Mahael
all under whose many other
rule as Princes of Legions and
rulers likewise there are innum-
erable Demons of private office
There also 6 Demons - Telchines or
Mastories which bearing ill will to
men take up the water out of Pools with
their hands and through it upon the
Earth whence follows all disorder
Tetens, Megalexius, Ormenus,
Lycus, Nicou, Murrion but to
find the distinct times and names
offices of Angels and Demons, see
the Book of Rabbi Simon of the Temple
and in his Book of Lights and the Greatness
of Nature Treatise of Temple Rabbi Ismael Cori
Book of Fortune

Of Oracles ³ by Dreams

But natural things and
their own combinations do likewise
belong to Magicians and we
often use such to receive Oracles
from a Spirit by a dream
which are either by perfumes
unctions Meats drinks Rings
Seals &c . . . To Receive Oracles
by a dream Make a Ring of Sun
or Saturn for this purpose
there are likewise Images of
dreams which being put under
the head when he goes to sleep
doth effectually give true dreams
of what the mind have determined
before or consulted upon
Thou shalt make an Image of
the Sun (the figure) A Man
sleeping upon the bosom of an
Angel which thou shalt make

when Leo Ascends the sun being in
the 9th house in ♄ write upon the
figure the name of the effects
desired and in the Angels Hand the
name of the Inhibitor of the Sun
let the same Amulet be made
w^{ch} ascending mercury being fortu-
nate in ♄ in 9th house - or II are
♄ being fortunate in the 9th in ♄
and let it be received with ♄ with
a fortunate Aspect and let the
name of the Spirit be written
upon it. let the same be made
in ♄ ascending ♄ being received by
♄ in in II in the 9th - and write
upon it the name of the Angel
of Venus - - make the same ♄
ascending ♄ fortunately possetting
the 9 in his exaltation which is
♄ and write upon it the name
of the Angel of ♄ the same

may be made by ascending
the moon being received by
Jupiter and Venus in Pices
and being fortunately placed in
the 9th house and write upon
it the Spirit of the Moon

There are rings of dreams
of wonderful efficacy and
there are rings of O and Y and
the Concellations of them is
when the O or Y Ascends in their
exaltation in the 9th and when
the moon is joined to Y in the
9th and in that Sign which
was the 9 in the Nativity &
write upon the ring the Name
of the Spirit of Y or O and by
these rules you may know
how and by what means to con-
stitute more of thy self. But
know this that such Images

work nothing (as they are simply
Instruments) unless vivified by a
divine and celestial virtue
and chiefly by the ardent
desire and firm intent of the
soul of the operator - But
who can give a soul to an
image or make Stone Clay
wood wax or paper to live certainly
no man for this Arcanum
doth not enter into an artist
of a stiff neck - He only hath
it who transcends the progress
of Angels and comes to the very
Archtype himself - The Tables
of Numbers likewise confer to
the receiving of Oracles being
duly performed under their
own Constellation - Holy
Tables and papers serves to
this effect being especially

composed and consecrated such
as the Alphabet of Solomon
and the table of the Revolution
of the name of Tetragrammaton
and those things which are of
this kind, and written to
produce this effecte out of
various figures numbers
holy Scriptures Pictures with
inscriptions of the divine names
of God and holy Angels the com-
position thereof is taken out of
obvious places of holy scrip-
tures psalms and Versicles and
other certain promises out of
the divine revelation and Pro-
phesias To the same effect
do conduce likewise holy prayers
and deprecation to God as well
as to the Blessed angels, the
deprecations of which prayers

are to be compared as I have
before shewn according to the
religious Similitudes making
mention of those things which
we intend to do as out of the
old Testament of the Dream of
Jacob - Joseph Pharoah
Daniel Nebuchadnezzar
if out of the New Testament
of the dream of Joseph that
of the 3 wise men or magicians
of John the Evangelist sleeping
upon the Breast of our Lord
and what ever of the like kind
can be found in religious
mysteries Revelation &c
according to which the depre-
cation may be composed If when
he go to sleep it be with or
given intention and then
without doubt they will

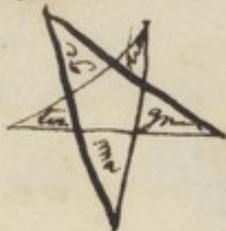
affords a wonderfull effect

To receive true oracles by
dreams let him obtain from
supper from drink and be other
ways he be well disposed that
his brain be free from Turbulent
Vapours - The Bed chamber on-
not be clean and exorcised if
he will let him perfume the
same with some convenient
fumigation - and anoint
your Temples with some liquid
efficator therunto and put
the ring of dreams on - take
the Image or Paper - put
it under your head make
a devout prayer and then
address your self to sleep med-
itating upon that thing you
desire to know so you will
receive an Oracle certain

by a Dream when the moon
goes through that sign which
was in the 9 house in his
nativity and also when she
goes through the sign of the
9th of the revolution of his
nativity and when she is
in the 9th Sign from the Sign
of perfection - By this we
may obtain all Science and
arts whatsoever whether Action
or else suddenly and perfectly
with a true illumination
of our intellect - although
all inferior familiar
spirits whatsoever conduce to
this effect and sometimes
also evil spirits inform us
intrinsically and extrinsically

Written in August 1827.
By J. J. Webb

The Lamen



The Magic Ring



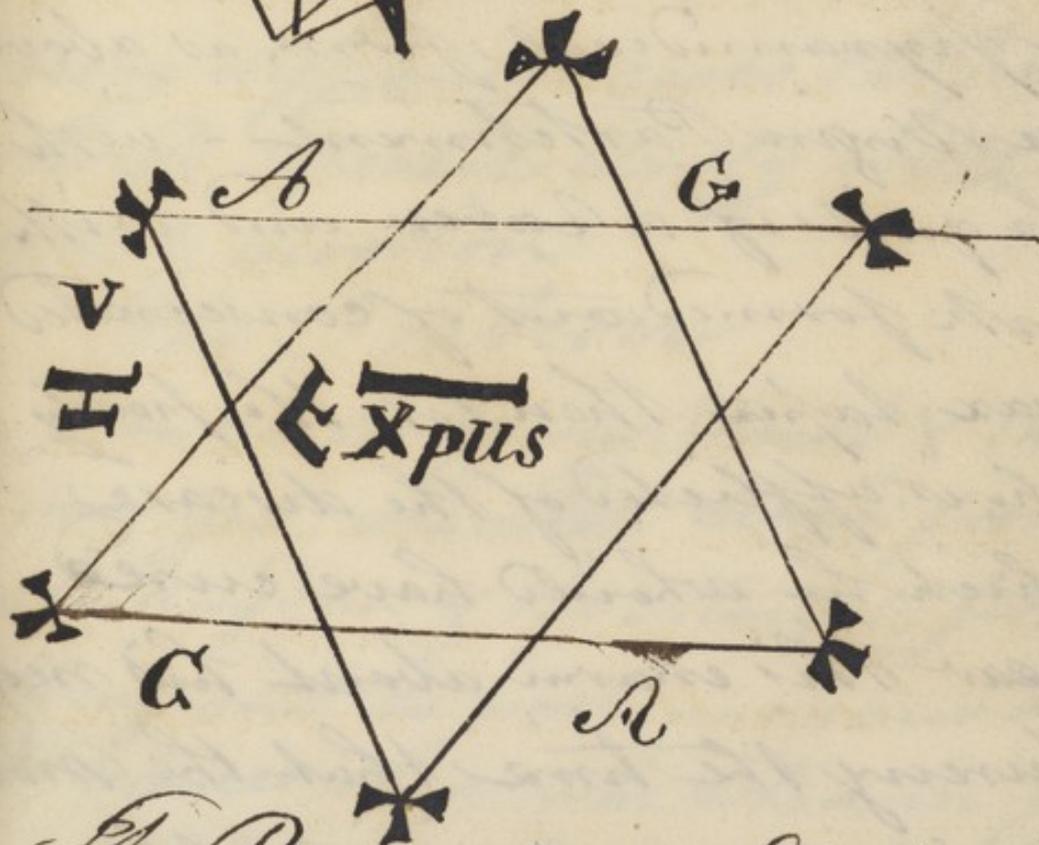
The magic sword



There is no guard to the
magic sword, on the other side
O not tetragrammaton



The shaft
points is $\frac{1}{2}$ as long
as the uprights



The Pentacle of Solomon

A b r a c a d a b r a
 a b r a c a d a b r
 a b r a c a d a b
 a b r a c a d a
 a b r a c a d
 a b r a c a
 a b r a c
 a b r a
 a b r
 a b
 a

The Letters which compose this
 Charm must be written in
 a pyramidical form, as above
 on Virgin Parchment - with
 the quill of a Raven and with
 Ink formed out of consecrated
 wax tapers then let the party
 who is afflicted of the disease
 which he would have cured
 wear this charm about his neck
 during the time that the moor
 performs one circuit through

~~the~~
the 12 signs of the Zodiac: and let
it be performed, on the day of the
full moon, and if possible while
the moon is in the magical
Signs of ♄ or ♃

It is necessary that the wearer
have a firm and confident faith
in the Power of divine omnipotence
and the following oration must
be said upon first beginning to wear
the said Holy Charm and in
very difficult cases the patient
should repeat it daily with
great devotion.

The Oration

O sweet lord Jesus Christ X the
true God, who didst descend from
the Kingdom of thy Almighty father
being sent to wash away our sins
to release those who were in prison
and the afflicted to console the

The sorrowfull and the needy
to absolve and to liberate me thy
servant, from my afflictions
and tribulations in which I
am placed O Omnipotent
Father thou dost receive us again
by his expiation, into that
Paradise by thy Blood, Jesus
obtained, and dost make us
equal amongst angels and
men. Thou O Lord Jesus Christ
wert worthy to stand between
me and mine enemies and
to establish my peace - and
to show thy grace upon me
and to power out thy mercy
and thou O Lord dost extinguish
the anger of mine enemies
which they contained against
me, as thou dost take away

the wrath of Esau which he had
against Jacob his Brother

O Lord Jesus etern'd thine arm
towards me and deliver me
from mine afflictions even
as thou didst deliver Abraham
from the hands of the Chaldean
and his son Isaac from the sacri-
fice and Jacob from the hand
of his brethren; Noah from the
deluge; and ever as thou didst
deliver thy servant Lot - thy ser-
vants Moses and Aaron and thy
^{Israel} people from the hands of
Pharaoh; and out of the land of
Egypt; David from the hands of
Saul and the giant Goliath;
or as thou deliverdst Susannah
from his Accusers; Judith from
the hands Holofernes; Daniel from
the den of lions the three youths

from the fiery furnace, Jonah
from the Whales belly or as thou
didst deliver the son Cananea
who was tormented by the devil
even as thou didst deliver
Adam from hell by thy most
precious blood, and Peter and
Paul from chains. O O
most sweet Jesus X son of the
living God preserve me thy servant
from my afflictions and mine
enemies, and be my assistant
and my blessing by thy holy
Incarnation, by thy fasting
and thirst, by thy labour and
affliction by thy stripes by thy
thorny crown, by thy drink of
Gall and vinegar, by thy most
cruel death, by the words which
thou speakest upon the cross
by thy descent to hell by the conse

lation of thy disciples by thy wonder-
ful ascension, and by the appearance
of the holy spirit, by the day of
judgment by thy great gifts &
by the Holy names Adonay x
Elouym x Telouym x Yacy x Lazael
Paliel x Sadaay x Yzoel x Yaras x
Caelpheix Sadaay x and by thy
ineffable name יהוה Jehovah x By
all these holy, omnipotent and all
powerful names of singular efficacy
and extraordinary power, which the
elements obey, and at which the
devil tremble. O most gracious
Jesus grant I beseech thee that
this holy charm which I wear
about my ^{person} neck, may be the
means of healing my lamentable
sickness - so shall the praise
thereof be ascribed to thee alone
O Lord and thou alone shall
have the glory Amen - Fiat
fiat fiat —

Another Way If it were require
to performe a cure upon a person
at a distance or without the
afflicted party's knowledge - write
it upon Virgin Parchment - -
scrape out one line of the charm every
day with a New Knife kept for this
purpose and at scraping out each line
say So as I destroy the letters of this charm
Abracadabra, so by the virtue of this
sacred name may all grief and dolor
depart from **AB** in the name of the Father
San and Holy Ghost - In the name of the
father I destroy this disease In the name
of the son I destroy this disease in the
name of the holy Ghost I destroy this
disease Amen

This is supposed to be an Original
of Thos Bacon's

Magic Pentacles -
and their Composition

We now proceed to speak of holy
and Sacred Pentacles and Seals
for these are certain holy signs &
characters preserving us from evil
chances and events and helping us
to bind exterminate evil Spirits
alluring the good and reconciling
them to us These pentacles consists
either of Characters of Good Spirits of
the Superior order or Sacred Pictures
of Holy letters or Revelations with
apt and proper Versicles which
are composed either of Geometrical
figures and holy names of God
according to the manner of them
or they are compounded of all
of them, or many of them mixed
The Characters which are usefull
for us to constitute and make the

Pentacles are the Characters of
the Good Spirits of the first and
Second order and sometimes of the
third These kind of Characters
are especially to be named holy
whatever ^{so} characters of this kind
are to be instituted we must draw
about him a double circle,
wherein we must write the
name of his Angell and if we
will add some divine name
congruent with his spirit and
office it will be of greater force
and if we draw about him an
angular figure, according to the
manner of his number that
Lawfull to be done But the
holy pictures which make the
Pentacles are they which are
every where delivered to us by the
prophets and Sacred ~~wrightings~~
writings

boath in the old and New Testaments
even as the figure of a serpent
hanging upon the Cross and such
like as may be found in the
Vision of the prophets as in
Isaiah Daniel Esdras and others
and likewise in the Revelations
of the Apocalypse Therefore
where any picture is printed of
any of these holy Images let
a circle be drawn round it on
each side wherein let there be
written some divine name
that is apt and conformed to
the effect of that figure or else
may be written round some
Verse taken out of that part
of the Body of the holy Scriptures
that may asertain or Deprecate
the Desired effect

and if there should be written
any angular figures let it be
taken according to the rule of
numbers. There are 2 packets
of Sublime virtues and great
power very usefull and fitting
to be used in the consecration
of experiments and Spirits one
whereoff is that in the first chap
of the Apokalypse to wit the
majesty of God sitting upon a
Throne having in his mouth
a 2 edged Sword as there is dis-
cussed about which let there be
written I am A D O. the begin-
ing and end which D — Then there
shall be written about it these
3 Versicles, Munda Deus
Virtute tuae & Give com-
mandment to thy strength O God
confirm O God thy Strength us

Let them be as dust before
the face of the wind and
let the Angel of ^{the Lord} God scatter
them Let all their ways be
darkness and uncertain & let
the Angel of the Lord persecute
them Moreover let there be
written the 10 General names
El, Elohim, Elohe, Zebaoth
Eliou, Escherchie Adonay
Jeh Tetragrammaton Sadaay
There is another Pentacle
the figure is a lamb slain
having 7 eyes and 7 horns and
under his feet a book sealed
with 7 seals as it is written
in the 5 ch of Apolyse round
it let be written the Versicle
Behold the Lion have over
come &c

seals, things
ma

An other I am sathan like
lightening fall from heaven
&c Behold I give you power
to tread upon Serpents & Scorpions
and over all the powers of
your enemies and nothing shall
be able to hurt you and let
there be written the 10 Names
before said These pentacles that
are thus made let them keep
this order for when any figure
is pointed conformable to any
number to produce any certain
effect or virtue, there must
be written thereon in all
the several Angles some divine
name obtaining the force and
efficacy of the thing desired
yet nevertheless the name of
this sort do consist of just so
many letters as the figure may

constitute a number or
of so many letters of a name
as joined together amongst
themselves make the number
of a figure

As if a Deprecation were
made to overthrow ones Enemy
we ought to mind and call to rem-
embrance how god Destroyed
the whole earth with a Deluge
of waters and the Destruction
Sodom. . . by brimstones.

Likewise how god overthrew
Pharough and his host in
the red Sea or any other
Such like things Curses &c
So in deprecating and praying
against perils and Dangers of Water
we ought call to remembrance

Noah Childre Israel Crise

walk? on Water and how
he saved the Ship in danger
of being cast away by the
tempests Commanding the
winds the waves and they
obeyed him he drew peter
out of the water Being in
danger of drowning and the
like and lastly with these
we Invoke and call upon
some certain holy names
of God to wit those things to
accomplish our desire
as if it were to over through
Enemies we to Invoke and
Call upon names of Wrath
revenge fear Justice and
fortitude of God and if we
would avoid and escape any
evil or danger we then call
upon the names of Mercy

defence Salvation fortitude
goodness and such like
names of god when like-
wise we pray to God that
he would grant us our
desires we are likewise to
intercede therewith the
name of Some good Spirit
whether one or more
whose office it is to ex-
ecute our desires and
sometimes we require some
evil spirit to restrain or
compell whose name we
likewise intermingel
and that rightly especially
if it be to execute an evil
work as Revenge punishment
evil or Destruction

Consecration of all
Magical Instruments &
Materials that are used in
this Art

The Virtue of Consecrations
briefly consists of two things
VIZ the power of the person
consecrating and the Virtue
of the prayer by the Consecra-
tion is made. For in the

person consecrating, there
is required a firmness con-
stancy and holiness of life
and that the consecrator
himself shall with a firm
and Unstable faith believe
the Virtue power and effect
thereof. Then in prayer
by which the consecration
is made derives the virtue
either by Divine Inspiration or -

else by composing it from sundry
places in the holy Scriptures in
commemoration of some won-
derfull Miracles of God
effects promises sacraments
sacramental things of which
we have abundance in holy
writ. There must be
used the invocation of divine
names that are significative
of the work in hand likewise
a sanctification and expiation
which is wrought by sprinkling
ing with holy water unction
oil holy, and odoriferous
fumigations. Therefore in
every consecration there
is generally used a benediction
and consecration of water
Bark Oil Live Suffumigation
&c with Consecrated water

Lights ^{or} Lamps burning for
without lights no consecration
is rightly performed you
must particularly observe
this that when any thing which
is called profane is to be used
in which there is any pollution
it must be first of all be
purified by an exorcism
composed only for that purpose
which ought to precede the
consecration which things
being so made pure are
most apt to receive the
Influence of Divine
Virtue - at the end of
any consecration after the
prayer is rightly performed the
Operator must bless the
thing consecrated by breaking

out some sentence with
divine virtue and
power of the present con-
secration with a commemo-
ration of his virtue & au-
thority that so it may be
more duly performed and
by an earnest and attentive
mind

Consecration of Water

So in the consecration of
water we must commemorate
that God has placed the foun-
tament in the midst of the
waters and that God placed
the fountain of water in
the earthly paradise from
whence springs 4 holy rivers
that watered the whole
earth God caused the water

to be an Instrument of
his justice in destroying the
Giants by bringing on the
deluge which covered the face
of the whole earth and
in overthrowing Sargon in
the Red Sea God led the Chil-
dren of I. through upon dry
land and through the midst
of the River Jordan and the
miraculous drawing of water
out of the Flint rock in
the wilderness and at the
prayer of Samson he caused
water to flow out of the
jaw bone of an ox and
likewise God has made the
water the instrument of his
mercy & Salvation for the
expiation of original Sin
also that Christ was baptised

in the river Jordan, that
hath hereby sanctified and
cleansed the water likewise
certain divine names
are to be invoked which
are conformable here to
as that God is a living foun-
tain living water the
fountain of mercy and
names of the *Ette Sol*

The Consecration of Five

And likewise in the consecra-
tion of five we are to commemora-
te that God hath created the
five to be an instrument to
execute his justice for punish-
ment, vengeance, and the
expiation of sins; also when
God comes to judge the world

That he will command a
conflagration of fire to go before
him. Likewise mention that
God appeared to Moses in a
burning bush and his
going before the Children of
Israel in a pillar of fire nothing
can be duly offered or Sacrifice
or Sacrificed without fire
God instituted fire to be kept
continually in the Tabernacle
of the Covenant and how
miraculously he kindled the
same being extinct and preserv-
ed it elsewhere from going
out being hidden under the
waters and things of this sort
then call upon the names
of God -- God is a consuming
fire Glory of God the
light of God &c &c

Consecration of Oil

And likewise in the consecration of Oil and perfumes - we are to mention such things as are consonant to this purpose as the Holy anointing Oil mentioned in Exodus and divine names significant thereof; such as is the name of Christ which signifies Anointed and whatever significances there are relative to Oil in the Scriptures as the two Olive Trees distilling holy oil into the lamps that burn before the face of God mentioned in the Revelations

Of the Benediction of
Lights Lamps Wax &c &c

Now the blessing of the lights
&c is taken from the fire and
what ever contains the substance
of the flame and what ever
similar are in the mixture
as the 7 Golden Candelsticks which
burn before God

Nothing is fit for magical
performances without Consecration

Consecration of Places
Ground Places &c &c
when you consecrate any
place use the prayer of
Solomon in the Dedication
and consecration of the Temple
Bless the place by sprinkling
it with holy water and with

a suffumigation and
commemorates in the Ben-
edictions holy mysteries such
as then the Sanctification of the
Throne of God - of Mount Sinai
of the Tabernacle of the Covenant
- of the holy of holies of the Temple
of Jerusalem - The Sanctifi-
cation of Mount Gogotha by
the Crucifixion ^{of} C. The Sanctifi-
cation of the Temple of Christ
of Mount Tabor by the Transfi-
guration &c then Invoke all
divine names which are
significant to this such as
The Throne of G the Throne of G
the Chair of G - The tabernacle
of G the Altar of G the habita-
tion of G and like divine
names of this world to
be written about the place Consort
& ⁱⁿ ^{the} ^{place} ^{Consort}

Consecration of a Sword

Remember in the Gospell he
that has two Coats &c. an 2^d,
Maccabees, a sword was divinely
and miraculously sent to Judas
Machabees and names of the
like take unto you a two
edged Sword &c.

Consecration of Books

The table of 10 Commandments
Sanctification of the Old and
new Testament Divine
names must be Invoke
as the Testament of G the Book
of G the book of life the knowledge
of G the wisdom of G and the
like Thus is the personal
consecration Performe

Fumigations

The Sun

Take of Saffron, ambergris, musk
lynum aloes, lygium balsam, the
fruit of the laurel, cloves, myrrh
and frankincense of each a like
quantity - - Bruise and mixe all
together corrolate with the Brains
of an Eagle, or the Blood of a White
cock after the Manner of Pills

)

Make a fume with the Head of a
frog dried the Eyes of a Bull, the
seed of white poppies, Frankincense
and camphire which must be cor-
porated with Mensures Blood or
the Blood of a Goose —

5

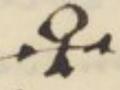
Take the seeds of Black Poppies, hen-
bane mandrake root loadstone
and myrrh, and mix them up
with The Brain of a Cat and the
Blood of a Bat

4

Take seeds of *Sth*, *lignum Aloes*
storax the Gum Benjamin the
lapis lazuli the tops of peacocks
feathers and incorporate with
the blood of a stork or swallow
or the brain of a Hart



Take uphorbium Bdellium
Gum Ammoniac the roots of
both Hellebores the Lead stone and
a little Sulphur incorporate
them all together with the brains
of a Hart the Blood of a man &
the Blood of a Black Cat --



Take Muste Ambergris Lignum
Aloes Red roses Red Corral and make
them up with swallows Brains &
Pidgeons Blood



Take Mastich Frankincense Cloves
and the herb Cinquefoil and the
Agate Stone and incorporate
them with the Brains of a fox
or Weasel & the Blood of a Magpie

General Names of the Planets

To ♄ is appointed Oderiferous roots
as pepperwort root & - and the frankincense
tree To ♃ all Oderiferous fruits

as nutmegs Cloves &c

To ♁ all Oderiferous woods as Sandal
Cypress Lignum Balsam & lignum Aloe

To ♀ all gums of frankincense mastic
Benjamin and Storax Laudanum Amber

gris & musk To ♀ all flowers as roses
Violets Saffron &c To ♃ all the perfume

of wood or fruit as cinnamon lignum
Cassia mace citron peel & Bay berry &c

To the ♄ the leaves of all Vegetables. as the leaf
Indian the leaf of myrtle and Bay tree

In every good matter such as love good will
there must be a good perfume Oderiferous
and precious - In all evil as Hatred
misery &c must be made a stinking
perfume that is of no worth -

12 Signs - Zodiac

To ♄ myrror & Pepperwort II mastic
I Camphire II Frankincense III Sandal
IV Galbanum V Oppopanax VI Lignum

Aloe VII Benjamin VIII Sphorbium IX
red Storax But Hermes Describes that
that of stomach is more powerfull for all

and is thus by pepperwort IV Nutmegs V
Lignum Aloe O Mastic I Saffron II Cinamon

III myrtle

Saturday h Cassiel
Ruler

Conjuro & confirmo supra vos Cassiel
Macatoris & Seraquell Angelis fortes &
potentis cum per nomen. et donai
et donai et donai Eie Eie Eie. Aum
Aum Cados Cados Tona vel Tona Sadey
Ja Sa Dominis formatoris Peculorum
qui septimo die qui orit & per illum
qui bene placito suo Filius Israel
in hereditatem observandum dedit
at cum firmiter custodierit &
Sanctificaverit ad habendum inde
bonam in alio secula remuneration^{em}
& per nomina Angelorum Servientium
in exercitu septimo Beel Thyll magno
& per potentis principi & per nomen stellam
que est saturnus & per sanctam sigillum
ejus & per nomina predicta & c. & c.

Cassiel

Angel that rule the day
in which you work and
the names of his ministers -
The name of the present time
6thly - the name of the spirits
ruling in that part of time
and their presidents 7thly
the name of the head of the Sign
ruling in the time 8thly
the name of the Earth according
to the time of working 9thly
and completing the middle circle
write the name of the Sun & Moon
according to the said rule of time
for as the times are changed
so are the names and in
the outer circle let there be
drawn in the four Angles
the names of the great
Presidential spirits of the Air
that Day wherein you work

The Name of the King and
his 3 Ministers - without the
circle in four angles let
pentagons be made - in
the inner circle write 4
Divine names with 4 crosses
interposed - in the middle
of the circle - toward the
East write Alpha and
west Omega and let a
cross divide the circle
it is thus finished -

Consecration

In the name of the Glorious
blessed and holy Trinity proce-
eed we to our work in these mite-
ries to accomplish that we
desire we therefore in the
names above said consecrate
this piece of Ground for our

defence so that no spirit
whatsoever shall be able
to break these boundaries
neither be able to cause inj-
ury nor detriment to any of
us here assembled but that
they may be compelled to stand
before this circle and answer
truly our demands so far
as it pleaseth him who ~~with~~
liveth for ever and ever
who says I am A & O - the beginning
and the end, which was, which
which is to come the Almighty
I am the first and the last who
am alive and was dead and beh.
old I live for ever more I have
the keys of Death and Hell
Bless O Lord this creature
wherein we stand confirm
O God thy strength in us

So that neither the Devils
nor any evil thing may
cause us to fail through
the merits of Jesus christ
Amen

The magical names of the
Hours both Day and night

| Day | Night |
|------------|------------|
| 1 Yaim | 1 Beron |
| 2 Janon | 2 Barol |
| 3 Nasma | 3 Thame |
| 4 Talla | 4 Athar |
| 5 Sadedali | 5 Methon |
| 6 Thamus | 6 Rana |
| 7 Ouer | 7 Netos |
| 8 Thame | 8 Tafrae |
| 9 Veron | 9 Jusfur |
| 10 Jayon | 10 Akle |
| 11 Abai | 11 Calerra |
| 12 Natalon | 12 Salam |

A year is fourfold namely
Spring Summer Autumn Winter
and the names are these

The Spring Falvi Summer -
Casmaran Autumn Adared
Winter, Farlas

The Angel of the Spring Caracasa
Cove, Amatiel Commiseros
The Head of the Head of the Sign in
Spring Sprugliuel -

The name of the Earth in Spring
Amadaia the Sun Athraym
Moon Agusita

The Angels of the Summer -
Gargatel Daniel Gavriel
Head Sign Tubiel
Earth Gestativie
Sun Athemay
Moon Armatus

The Angels of the Autumn
Jarquann Guabarel

Head of the Sign Torquavet

Earth Rabinara

Sun Abragini

Moon Matasignais

The Angels of the Winter
Amabacl Cetarari

Head of the Sign Attarib

Earth Jeremiah

Sun Commutoff

Moon Afaterim

These things being known
finish the consecration by

saying: Thou shalt purge
me with hyssop, ^{Lord} and I shall
be clean Thou shalt wash me
and I shall be whiter than
snow - Sprinkle it with
holy water proceed with per-
fumes

Benediction of Perfumes
The God of Abraham the G of Isaac
the G of Jacob bless here the creature
of this kind that may fill
up the power and virtues
of their odours so that neither
the Enemy nor any false
imagination may be able to
enter in to them through
and Lord Jesus Christ &c
then sprinkle it with Holy
water

an exorcism of five
I exorcise the o^rther creature
of five by the only true God
Jehovah Adonay Tetragramm
that thou forthwith cast away
ever phantasm from thee that
thou shall do no hurt to any
one here We beseech thee
O Lord to bless this creature

of fire and Sanctify it ^{so} that
it may be blessed to set forth
the praise and glory of thy
Holy name and that no
hurt may be permitted to
come to the exorcist nor
spectator through our Lord
Jesus christ Amen

Pentacle of Solomon

It shall be made in the
Day and hour of Mercury
made upon paper or Parchment
and the Letters of Gold must
be consecrated and Sprinkled

NB No Spirit have any
power over any one fortified
with the Pentacle

An Oration when the
Vesture is put on
Anno, Anacor Anides
Theodinus Anitor by the
merit of angels I will put on
the Garment of Salvation that
the thing which I desire I
may bring to effect through
the most holy eternal
whose Kingdom endureth for
ever and ever Amen

The Manner of Working
Let the moon be increasing
and equal: if it can then be
conveniently done but especial-
ly not let her be combust or
Via Combusta which is be-
tween 14^o and 14^o M₄

The operator ought to be clean
and purified for 9 Days before he
does the work have ready the
perfume ^{appropriated} for the day in which
you work Holy water, a new
vessel of earth with fire - the
vesture, and the pentacle
and it must all be duly
consecrated Let one of the comp-
anions carry the vessel with
fire and the perfume and let
another bear the Book vesture
pentacle and the operator
carry the sword - over which
should be said a prayer of con-
secration; and on the middle
of the sword on one side let
there be engraven $\text{A} \text{G} \text{L} \text{D} \text{ } \dagger$ and on
the other side \dagger on \dagger Tetragrammaton
 \dagger and the place being fixed upon
where the circle is to be erected

Let him draw the lines as we
have before taught - and sprin-
kle the same with holy water
consecrating &c &c

The operator ought therefore
to be prepared with fasting for
the space of 3 days before the
day of operation on on the
day on which he would do
this work being cloathed with
the before mentioned vesture
and furnished with pentacle
perfume a sword bible pen
paper and consecrated Incense and
all things necessary there unto
let him enter the circle and
call the Angels from the
four parts of the World which
do rule the 7 Planets Days
Colours and Metals - then with
bended knees repeat the Paternoster

or Lords Prayer and then invoke
the said Angels saying

O Angeli! Supradicti estote
adjutores mihi petitionum
& in adiutorium mihi in
meis rebus et petitionibus
Then Call the Angels from the
four parts of the World that
Circle the Air the same day on
which you work - having em-
ployed ^{all} the names and Spirits
within the Circle - Say O.
Vos omnes adjutores atque
contestor per sedem Adonai
per Hagios Etheros Ischyros
Athantos Paracletos Alpha
and Omega & per haec tria
nomina Secreta styla on
Tetragrammaton quod bodie
debeat adimplere quod
cupio these things being per-

performed read the Conjuratur
assigned for the Day - But if
they will not appear. to
the conjuration assigned to
the Day nor any prayers before
said. then use the following

A General Exorcism
of the Spirits of the Air
We being made after the
Image of God Endued with
power from God and made after
his will - do exorcise you
by the most mighty and
powerfull names of God
El Strong and Wonderfull
(here name the Spirit which is
to appear) and we command
you by him who spoke the
word and it was done And
by all the names of God and
by the Names of Adonai El

Elohim Elohe Zebaoth Elion
Eserchie Jeh Tetragrammaton
Sadai Lord God most high
and we exercise you and pow-
erfully command you that you
forthwith appear unto us
here before this circle in a
fair Human shape without
any deformity or Tortuosity
come ye all such because
We command you by the Name
Yaw and Vau which Adam
eard and spoke and by the
name of God Jgla which
Lot eard and was saved with
family, and by the name of
Joth which Jacob ^{heard} from
the Angel wrestling within
and was saved from his brother
Esau and by the Name of
Tanapheton which Aaron

heard and spoke and was
made wise and by the Name
"Zebaoth which Moses named
and all the rivers were turned
into Blood and by the Name
Eserchie ^{Christon} which Moses
named and all the rivers brought
forth frogs and they ascended into
the houses of the Egyptians
destroying all things and by
the Name Elion which Moses
named and there was a Great
hail such as was not since
the Beginning of the world &
by the Name Adonay which Moses
named and there came up Locust
which appeared upon the whole
land of Egypt and devoured
all things which the hail had
left and by the Name Schema
Amathia which Joshua

called upon and the Sun stand
his course and by the Name
A & O which Daniel named
destroyed hell and slew the
Dragon, and in the name
Emmanuel which the 3 Children
Sidae Misac & Abednego sang
in the midst of the fiery furn-
ace and were delivered and
by the ^{name} Hagios and by the Seal
of Adonai and by Ischros
Athanasos Paracletos and by
these 3 Sacred names Agla Om
Petragammaton I do assure
and contest you and by these
names and all the other names
of the Living and true God our
lord Almighty I exorcise &
command you by him who
spoke the word and it was
done to whome all creature

are obedient and by the
Dreadfull judgment of God and
by the uncertain sea of Glass
which is before his divine majesty
mighty and powerfull by
the 4 Beasts before the Throne
having eyes before and behind
by the fire round about his
Throne and by the holy Angels
of Heaven by the mighty wind
of God we do powerfull exor-
cise you that you appear
here before this circle ~~in~~
~~fair and true~~ to fulfill
our wills in all things which
shall seem good unto us by the
seal of Baldochia and by
this Name Prim^{us} ~~Exorcism~~
which mores named and
the earth opened and swallowed
up Corah Dathan and Abiram

and in the power of that name
Prænumerator commanding
the Whole host of heaven We
curse you and deprive you
of your office joy and place
and do bind you in the depths
of the Bottomless Pit there to
remain until the dreadfull
day of Last ^{the} Judgment and
we bind you in to eternal
fire and into the lake of fire
and Brimstone unless you
forthwith appear before this
Circle to do our will - therefore
come ye by these names Adonai
Lebaoth Adonai Anioram
Come ye come ye Com ye
Adonay commandeth Saday
Saday the most mighty King
of Kings whose power no creature
is able to resist be unto you

most dreadful unless ye
obey and forthwith affably
appear before this circle
let miserable ruin and
fire unquenchable remain
with you therefore come
ye in the name of Adairi
Leaoth Adonai Amioram
come come why stay you ^{hasten}
Adonai Adair the king of
kings commands you
El Atty Atty Atty Atty
Jen Minosel Achadan Vay
Yaah Ey Exe A. El El El
hy Hau Hau Hau Van Van
Van Van

A Prayer to God to be said
in the 4 Parts of the World in
the circle

Amorule Taneha Latisten
Rabur Teneba Latisten
Escha Hadia B. D.

Leyste Orision Adonai
O most mercifull heavenly
father! have mercy upon me
although a sinner make appear
~~in me~~ the Arm of thy power
in me this day against these
obstinate Spirits - that I by
thy will may be made a
contemplator of thy divine
works and may be illustrated
with all wisdom to the honour
and glory of thy holy name
I humbly beseech thee
that these spirits which I
call By thy judgment may
be bound and constrained to
come and give true and
perfect answers to those
things which I shall ask of
them: and that they may do
and declare those things unto

us which by me may be
commanded of them not
hurting any creature, neither
injuring or Terrifying me or
my fellows nor hurting any
creature nor affrighting no
man but let them be obedient
to those things that are required
of them

Then standing in the mid
dle of the circle stretch out thy
hand towards the Pentacle saying
By the pentacle of Solomon
I have called you; Give me
a true answer

Then follows this Oration
Beralanensis, Baldachiensis,
Pannachia, and Apologia
Sedes, by the most mighty
Kings and powers and the most
Powerfull Princes, genii

Liachidae. Ministers of the
Tartarean seat, chief Prince
of the seat of Apologia in the
9 Legion I invoke you and by in-
voking conjure you and being
armed with power from the
supreme Majesty I strongly
command you by him who sp
oke and it was done and to whom
all creatures are obedient and
by this ineffable name Tetrag-
rammaton Jehovah which being
heard the Elements are overthro
wn the Air is shaken the sea
runeth back the fire is quenched
the Earth Trembles, ^{all} the Hosts
of the Caelestials Terrestrials & Infernals
do tremble together and are ^{troubled} and
foundered, wherefore forthwith
and without delay, do you come
from all parts of the World

and make rational Answers
unto all things I shall ask
of you and come ye peaceably
visibly and affably now without
delay manifesting what we
desire being conveyed by the
name of the Living and true
God Heavens and fulfil our
commands and persist unto
the end according to our inten-
tions visibly & affably speaking
unto us with a clear Voice
intelligible and without any
Ambiguity

The Appearance of the
Spirits - - -
These things being performed
there will appear an Infinite
visions Apparitions & Beauty
of drums the sound of Musical
Instruments &c which is

done by the spirits that with
the terror they may force the
companions out of the circle
because they can effect nothing
against the exorcist - after this
there will be an Infinite com-
pany of trekers with a great
multitude of horrible beast which
will annoy themselves as if
they would devour the company
nevertheless fear nothing

The exorcist holding the
Pentacle in his Hand. say now
hence these Iniquities by virtue
of the Banner of God - Then they
will be compelled to obey - him
and the company shall see them
no more - - Then say Behold
the Pentacle of Solomon which
I have brought into your presence
Behold the person of the exorcist

in the middle of the exorcism
who is armed by God and without
fear and well provided who pater-
ly Invoketh and calleth you
by exorcism, come therefore
with speed by the virtue of
these names tye Sarays tye
Sarays defer not to come by
the Eternal names of the Living
and true God Eloy Archima
Rabur and by the Pentacle of
Solomon here present which
powerfully reign over you
and by the power of the Eternal
spirits your lords and by the
person of the exorcist in the
middle of the Exorcism being
conjured make haste and come
and yield obedience to your
master who is called Octinomos

This being performed imme-
diately there will be signs
in the 4 parts of the World and
you will see great motions
when you see it say - Why
stay you wherefore do you
delay what do you - Prepare
your selves to be obedient unto
your Master in the name
of the Lord Bathat or Vachal
rushing upon Abrae Abeor
coming upon Aberer...

Then they will come in
their proper forms and when
you see them - shew them the
pentacle covered with fine linen
Uncover it and say behold your
confusion if you refuse to obey

Then they will appear in
peaceable form and say ask what
you will for we are prepared
to fulfil your commands for the

Lord hath subjected us herunto
Then say welcome spirit of
most noble Princes because
I have called you through
him to whome every knee doth
Bow both of thing in Heaven and
things in Earth and things under
the Earth in whose hand are all
kingdoms of kings, neither is
there any able to contradict
his majesty therefore I Bid
you that you remain affable
and visible before this circle
so long and so constant. neither
shall you depart without my
Licence until you have truly
and without any fallacy per-
formed my will by virtue
of his power who have set
the sea his bounds beyond which
it cannot pass nor go beyond

the law of his Providence
VIZ of the most high God Lord
and King who hath created all
things Amen

Here mentoon what you
would have done after
whick say

In the Name of the Father
Son and Holy Ghost go in peace
unto your places and peace
be between us and you be ye
ready to come when you are
called

The Considerations of Sunday
(For the figures of the Solid Planets
signs names of the Angels of the sev-
eral days and name of the fourth
Heaven with characters & magic
Book see the Plates

The Angels of the Lords Day is
Michael, Dardiel, Huratapel
The Angels of the six ruling the
Lords day, Varcen King, his minister
Ius, Andas Cynabal -

The wind which the Angels are
said to rule is the North Wind
The Angels of the fourth heaven
ruling on the Lords day which
should be called from the four
parts of the world are -
east Samael, Baciell Abel
Gabriel Vionatraba ^{from the} - west
Anael, Pabel, Ustael Burchat
Luceratos, Capabili ^{from the}

Michael
North Michael vel. Michael,
Mazgabriel, Saphiel, Matruel
of the South Haniel,
Machael, Chassiel, Uriel,
Naromiel.

The Perfume of Sunday
is Red Sanders

The Conjuraton of Sunday
I Conjure and confirm upon
you, ye strong and holy Angels
of God, in the name of Adonai
Eye, Eye, Eya, which is he who
was and is to come Eye Saray
and in the name of Sunday
Cados ^{Cados} sitting on high upon
the cherubim, and by the
great name of God his self
strong and powerfull who is
exalted above all the Heavens
Eye Saray who created the

world the heavens the sea and
all that in them is on the
first day and sealed them with
his Holy name Phaa and by
the name of the Angels who
rule the fourth heaven and serve
before the most mighty Salarnia
an Angel great and honourable
and by the name of his star
which is Sol and by his sign
and by the immense name
of the Living God and by all
the names before said I conjure
the Michael O Great Angel
who art chief ruler of this
day and by the name of Adona
The God of Israel I conjure thee
O Michael that thou labour
for me and fulfil my petition
according to my will and desire
in my Cause and Business

The Spirits of the Air of
the Lords day are under the
North Wind their nature
is to procure gold gems
carbuncles Diamonds & Rubies
and to cause one to obtain
favour and Benevolence
to resolve enmity amongst
men to raise to honour and
to take away infirmities

They appear for the most part
in a large full and great
Boddy sanguine and gross in
a gold colour with a tincture
of Blood Their motion is like
the Lightning of heaven the
sign of their coming, visible
is they that they move the person
to sweat that calls them.

But their particular powers
are as follows VIZ

A King having a scepter riding upon
a Lion A King Crowned a queen
with a Scepter - A Bird A
Lion A Cock - A yellow
garment A Scepter -

Consideration &c of Monday

For the Angel of Monday his
sigil Planet. sign of the Planet the
name of the first Heaven see the Plate

The Angels of Monday Gabriel
Michael Samael The Angel
of the Air riding Monday Arcan
King - his ministers Bileth Misabur
Abubarza the wind which these
are subject to is the West wind.

The Angels of the ~~1st~~ Heaven Aulay
and Monday to be called from the
4 parts of the World - . . . from the east
Gabriel Madiel Deamiel

Janak, - from the West Sachiel
Daniel Habiel Bacharoe
Corobael - north Mael Waal
Valnum Baliel Balay
Humastraw - South Curaniel
Gabriel Darguiel Harum
Vetuel The Perfume Monday Aboes

The Conjuraton of Monday

I conjure and confirm upon
you ye strong and good Angels
In the name Adonai Adonai
Adonai Adonai Eye Eye Eye
Cados Cados Cados Achin tetim
Ja Ya Strong Ja who appeared in
mount sinai with the glorification
of King Adonai Sadai Gebath
Anathay Ya Ya Ya Maranata
Achim Jera who created the sea
and all the Lakes and waters in
the Second Day... which are above
the Heavens and ⁱⁿ below the Earth

and sealed the sea in his high
name and gave it its bounds
beyond which it cannot pass
and by the names of the Angels
who rule in the first Legion
and who serve before Raphael
a great precious and Honourable
Angel and by the name of his Star
which is Luna and by all the
names aforesaid I conjure thee
Gabriel who art the Chief Ruler
of Monday the 2^d Day that for me
thou labour and fulfill my
petitions according to my will
and desire in my Cause and
Business

The spirits of the Air of Monday
are subject to the West Wind
which is the Wind of the Moon
Their nature is to give silver
and to convey things from place
to place to make Horrors

swift and to disclose the
secrets of persons both Past
Present - and future - they
appear generally of a full
stature soft and Phlegmatic
of Colour like a Black obscure
Cloud having a swollen counte-
nance with eyes red and full of
water a Bold head and teeth
like a wild bove their motion
is like an exceeding great tempest
of the Sea for their signs there
will appear an exceeding great
rain their Particular shapes are
A King like an Archer riding upon
a Doe A little Boy A Woman
Hunter with a Bow and arrow
A Cow a little Doe a Goose
a Green or Silver Colour Garment
an arrow a creature with
many feet

Consideration of Tuesday

For the Angel of Tuesday his sigil plane
sign governing the Planet the name
of the 5th Heaven see the Plate

The Angels of the Air on Tuesday
Samael Satael Amabiel

The Angels of the Air ruling on
Tuesday Samas king his ministers
Carnas Ismoli Paffran

The Wind to which the said
Angels are subject to the East
Wind the Angels of the 6th
Heaven ruling on Tuesday - at the
east ~~Amiagne~~ Guel Damael
Calzas Aragon. west Sama
Aragua Labquin Joneas
Jazel ~~Amabiel~~ Isiael Irel.

The North - Phauonel Hymiel
Rayel Seraphiel Praciel
Mathiel South Sacriel Janiel
Galdel Orael Vⁱⁿael Labiel

Perfume of Tuesday Pepper

The Conjuraton of Tuesday

I Conjure and call upon you ye
strong and good Angels in the names
Ya Ya Ya He He He Va by
Hy Ha Ha Ha Va Va Va An An
An An An An El Ay Elebra
Elohim Elohim Elohim and by the
names of the high God who hath
made the Sea and the Dry land
and by his word hath made the
Earth and produced Trees and hath
set his seal upon the Planets with
his precious honoured revered and
holy name and by the name
of the Angels governing in the fifth
house who are subsevient to the
Great Angel Steimoy who is strong
powerfull and honoured and by the
name of his star which is called

Mars I call upon thee Samael
by the names afore mentioned
thou great Angel who presides
over the Day of Mars and by the
name of Adonai the Living and true
God that you assist me in Accomplish-
ing my Labours &c &c.

The Spirits of Tuesday are under
the East Wind their Nature is to
bring or cause War Mortality or Death
Combustions and to give two thousand
Soldiers at a time to bring Death
Infirmity or Health

Familiar Shapes of the
Spirits of Mars

They appear in a tall Body and
Cholerick filthy countenance of
colour brown swarthy or red having
horns like Harts and griffins claws
and bellowing like wild Bulls
their motion is like fire living
their signs - Thunder and lightning
round about the Circle

Their particulare shapes
are a King armed riding upon
a Wolf. A man turned a woman
with a buckler on his thigh
a she goat. A Horse A Stag
A red Garment a Piece of Wood
A Cowslip - - -

Consideration of Wednesday
For the Angel of Wednesday his Sign
is he see the (Yolater)
The Angels of Wednesday - Raphael
Michael, Seraphiel - -

The Angels of the Air ruling on
Wednesday, Mediat King his
Ministers Luquinos Sallales the
said Angels of the Air are subject
to the south west Wind

The Angels of the Second Heaven
governing Wednesday that
are to be called & Gedede
At the east Mathlai Jarmiel
Baraborat at the west Jenucene
Meratron at the north Thiel
Rael Jarhael Venabel Yebel
Abuioni Uirniel at the South
Milliel Velapan Calvel, vel
Laquel The perfume of Wednesday
Mastie

The Conjuratiō of Wednesday
I Conjure and call upon you
ye strong and Holy angels good
and Powerfull, in the
strong name of fear and

Praise Ja Adonay, Elohim,
Saday, Saday, Saday, Eie Eie Eie
Aname Aname and in the
name of Adonay the God
of Israel, who made the two
great lights and distinguished
day from Night for the benefit
of his creatures and by the name
of all deserving angels governing
openly in the second house
before the great angel Tetra
strong and powerfull and by
the name of his star which is
Mercury and by the name
of his seal which is that
of a powerfull and honoured
God I call upon thee Raphael
and by the names above men-
tioned - thou great angel who
presidest over the fourth day and
by the holy name which is
written in the front of Aaron

created the most high Priest
and by the names of all Angels
that are constant in the
grace of Christ - and by the name
and place of Annunciation that
you assist me in my labours
De &c.

The spirits of the air of Wednesday
are subject to the southwest wind
their nature is to give all sorts
of metals to reveal all earthly
things past present and to come
to pacify judges; to give victory
in war to teach experiments
and all science decayed - and to
change bodies mixed of Elements
conditionally out of one thing into
another to give health or infirmi-
ties to raise the poor cast down
the rich to bind or loose spirits
to open locks or bolts.

Such kind of Spirits have the
operations of others - but not in
their perfect power but in
virtue or knowledge

The spirit of mercury appears in a
body of a middle stature cold liquid
and moist. fair and of an affable
speech, in a human shape and
form like an knight armed. of
colour clear and bright The mothers
of them is like silver coloured clouds
for their sign they cause horror and
fear to him that calls them

Their Particular shapes are
A king riding upon a Bear

A Fair youth A woman holding
a distaff A dog a she Bear and a
magpie a garment of various
colours a rod a little staff

Consideration of Thursday

For the Angel of Thursday his
signe & see the plate.

The angels of Thursday Sathiel
Cassiel ~~assailed~~ the angels
of the Air of Thursday Iuth King
Aninotes Maguth Gertrix
The Angels of the air are under
the south wind - but because
there is no angels of the Air
to be found above the 5th Hea-
ven therefore on Thursday
say the prayers following in
the four parts of the world
at the east O Deus, magne
et. excelse et Honorate. per
infinita seculor. or O most
great and high god honoured
be thy name world without
end - at the West O most
wise pure and just God

of divine clemency I beseech
the most holy Father. that
this day I may perfectly un-
derstand and accomplish my
petition - work and labour
for the honour and glory
of thy holy name who liveth
and reigneth wth without
end, Amen. Now O God
strong mighty and powerfull
or wonderfull from everlasting to
everlasting grant that this day
I may bring to effect the thing
which I desire - through our
blesed Lord Amen. Praise O
mighty and most merciful
God hear my prayers and
grant my petition.

The perfume for Thursday
Saffron

The Conjuratiō of
Thursday

I conjure and confirm upon
you eye strong and holy Angels
by the names Cados Cados Cados
Eschereie Eschereie Eschereie
Hutum ya strong founder
of the worldes Cantire Jajm
Janie Anie Calbot Sabbac
Berisay Alnaysm and by
the name Adonai who cre-
ated fishes and creeping things
in the waters and birds upon
the face of the earth flying
toward heaven in the fifth
day and by the names of the
angels serving in the 6 host
before Pastor an holy Angel
a great and powerfull Prince
and by the name of his star
which is Jupiter and by the

name of his seal and by
the Name of Adonai the
great God creator of all things
and by the name of all the
stars and by their power and
virtue and by all the names
above said I conjure thee Sachiel
a great angel who art chief
ruler of Thursday that for
me thou labour &c - -

The spirits of the Air of Thursday
are subject to the South Wind
their nature is to procure the
love of women to cause men
to be merry and joyfull to
pacify strife and contentions
to appease enemies to. Heal
the diseased and to disease the
whole to procure losses and
to restore lost things

They appear with a body
sanguine and Choleric of
a middle stature with an
horrible fearful motion but
with a mild countenance
and a gentle speech and
of the colour of Iron their
motion is flashes of lightning
and thunder, their signs - the
will appear men as if devour
ed by lions. about the Cwile
their forms are
A King with a drawn sword
riding upon a Stag A man
wearing a tunic with long
hairment a maid with a
laurel crown adorned with
flowers A Bull a Stag A
Peacock an Azure garment
a Sword a Rose Tree

Consideration of Friday
For the Seal planet the Sign &
and name of the 3rd Heaven see
the Plate

The angels of Friday Anael
Rachiel Sackiel the Angels
of the Air Aileyan Friday Sarabots^e
King ministers Anabiel the
Abalidoth, Blaf, the wind
which the Angels are subject
to is the west The Angels of
the 3rd Heaven which are to be
called & east Setchiel
Chedusitaniel Corat Tammuel
Anaciel west Turiel Coniel
Babiel Kadie Maltiel.
Husphalviel - North Peniel
Penael Penat Raphael
Povnie Dormiel at the south
Porosa Sackiel Chevniel
Samael Santanael Samiel
The perfume of Friday Peppercorn -

The Conjuratiō of Friday

I conjure and conferre upon
you ye strong and holy Angels by
the names An Mey Heya Ya
Je Saday Adonai and in the
names Sadaï who created four
footed ^{creeping things} beasts and man in the sixth
day and gave to Adam power
over all creatures wherefore
blessed be the name of the creator
in his place And by the name
of the Angels serving in the
third host before Ragiel a great
Angel and a strong and powerful
Prince and by the name of his
star which is Venus and by
his seal which is holy and
by all the names afore said
I conjure ^{upon thee} ~~you~~ Arael who art
the chief ruler of this day
that thou labour for me &c

The spirits of the Air on Friday
are subject to the West wind
Their nature is to give silver to
incite men and incline them
to luxury to cause Marriages
to allure men to love women
to cause or take away infirmities
and to do all things which have
motion Their familiar shapes
They appear of a fair body of
middle stature with an amiable
and pleasant countenance of
colour white or green their
upper parts golden the motion
of them is like a clear star for
their signs there will appear
naked Virgins round the circle
which will strive to allure the
invoker to dalliance with them
Their Particular shapes are
A King with a Scepter riding

an a camel A naked Girl
a she Goat A Camel A Dove
A White or Green Garment
Flowers: the herb Savine

Consideration of Saturday

(For the Angel Seal & see the plate)
The Angels of Saturday Cassiel
Machatan Uriel --- The Angels
of the Air ruling this day Maymon
King his ministers Abumalith
Asaibi Balidet they are sub-
jected to the South Wind
The fumigation of Saturday is
Sulphur

There are no angels of the Air
ruling on Saturday above the
5th Heaven - therefore in the four
corners of the World in the circle
Use those Orations that are
applied to Thursday

The Conjuraton of Saturday
I conjure and confirm upon
you Raphael or Cassiel
Machator and Seraphiel strong
and powerfull angels and by the
name Adonai Adonai Adonai Eie
Eie Eie Steim Steim Steim Cados
Cados - Ima Ima Ima Salay Ja
Sar Gard and maker of the world
who rested on the seventh day
and by him who of his good pleasure
gave the same to be observed by the
children of Isreal throughout their
generations that they should keep and
sanctify the same so have there by
a good reward in the world to come
and by the names of the Angels serving
in the seventh host - before Boel a
great Angel and a powerful Prince
and by the name of his star which

in Saturn and by his holy seal
and by the names before spoken
I conjure upon thee Caphvill
who art the chief ruler of the
seventh day which is the sabbath
that for me thou labour &c &c
The spirits of the Air of Saturday
are subject to the South west
wind their nature is to sow
discord hatred evil thoughts and
cogitations to give leave to kill
and murder and to lame or maim
every member - - + -

Their Familiar Shapes

They generally appear with a tall
lean slender Body and with an
angry countenance having four
faces - one on the back one in front
& one each side - - Nosed or Beaked
likewise there appear a face on
each knee of a black shining

colour their motion is the
moving of the wind with a kind
of earth quake their sign is white
earth whiter than snow their
particular shapes are a King
bearded riding upon a Dragon
An old man with a Beard an
Old woman carrying on a crutch
a Hag a Dragon a Owl a
black Garment a hook or Sickle
a Juniper Tree. These are the
figures these spirits usually
assume - which are generally
terrible at the first coming on
of the Vision, but as they have
only a limited power beyond which
they cannot pass - so the invoker
need not to fear (provided he be
^{fortified} well) ~~with~~ those things we have
described before and above all to have
a firm and constant faith in the

mercy wisdom and goodness
of God

Those spirits who appear in a
kingly form have a much higher
dignity than those who take infer-
ior shapes and those who appear
in a human shape exceeds
in authority and power those who
comes as animals + + and these latter
surpasses in dignity those who
appear as Trees Instruments &c
so you are to judge of power
government and authority of spirits
by their assuming a more noble
and dignified apparition -

As if there should be a crown it
shews a kingly dignity if a crest
or Plume a dukedome if a horn
a countie if without these there be
a scepter sword or forked instrument

it shews rule and authority -
from the crown Judge dignity
& from the Instrument rule and
Authority - They that ride do
excell in dignity those that
appear on foot. - Thus you
may judge the excellency of the
Spirit one before another &c

The following is an extraordinary
magical qualities of herbs & I
know thee with the juice of
canabus and Archangels -- and
before a mirror of Steel call
spirits and thou shalt see them
and have power to bind & loose
them The fume of flemiculis
caseth away spirits

Take the herb Divinum and
join it to camphire and
thou shalt see spirits that
shall dread thee - it helps
much to the Achieving of secret
things

Coriandrum gathereth spirits
together a fume being made
thereof with Apionisquis and
Lazias-eicuta useth spirits
and so it is called the herb of spirits

Petersilion chaseth a way
all spirits of riches

Take comandrum of the second
kind which maketh one to sleep
and join there to croco, inagreno
and apio and grind them soft
then with the juice of Hem-
lock then make a suffuma-
gation therewith - and suffume
the place where you hide
any treasure when the Δ is
joined to the \odot in the angle of
the Earth - and that treasure
so hidin shall never be found
Saturea is an herb which
being worn about one gives
grace and good fortune

Again the Antients have two
other, ^{superior} orders of spirits answering to
the 2 spheres of Heaven distinct from
the Planetary Regions, namely
Methrathon in the 9 orb of Heaven
in the order of Seraphims, and
Ratzael in the stary Orb of
Heaven in the order of Cherubim
(which is considered the spirit of H
and is more powerfull than the spirit
of H even as H is more powerfull than H
and every one of these planetary
spirits governs the world 3 5 2 1 year
4 months - the government begin-
ing from the intelligence of Saturn
afterward in order the intelligen-
ence of Jupiter Venus Mars Sol.
Luna and Mercury the Govern-
ment again returning to the
Spirit of Saturn - - -

The proper attire of a Magician is an ephod made of white Linen Over that a priestly robe of Black bombazine reaching to the ground, with the two seals of the Earth drawn upon Virgin parchment and affixed to the breast of his outward Vestment Round his waste tied a broad Consecrated Girdle with the names Ya Ya ✕ the staves ✕ Elibra ✕ Elohim ✕ Jadaï ✕ Pah Adonai ✕ the robes cinctus sum ✕ upon his shoes must be written Tetragrammaton with crosses round about Upon his head a high crown Cap of sable Silk - and in his hand an holy Bible printed or written in pure hebrew - he must also have other articles as described elsewhere in this work

Fumigations

To spirits under ☿ fumigate with
Frankincense tree pepper wort
roots Storax and Galbanum by
these the Spirits Marbas. Corban.
Stilbon. Idas &c and all in the first
order of Astringency are appeared &
provoked when the furnes are upon
the tripod in the day and hour of ☿
according to the Planetary division
To those under Jupiter lignum Aloes
Ash-tree - keys. benjamin Storax
Peacocks feathers & Lapis lazuli
mixed with blood of a Starke Swallow
or a hart, the brains also being
added and fumed in the hour of ♃.
To Mars Aromatic gum. bdellium
euphorium load stone Helebove
white & black with an addition of
Sulphur to make them into Amalga^{me}

with mans blood and blood of a
black Cat which is said to be so
exceedingly magical that it will
make the spirits under B appear
without any ceremony

Sol being in the Order of Thrones
perfume with Saffron Musk
laurel Cinamon Ambergris Cloves
Myrrh & frankincense Balsamic
tree mixed with the Brains of Eagle
and Blood of a White Cock. made in pill

To Venus roses Coral. lignum Aloe
& Spermacety made up with
sparrows brains & blood of Pidgeons

To Mercury frankincense
mastic. Cinquefoil incorroberated
with the brains of a fox & blood
of a magpy To Luna of frogs
dried white poppy seed bulls eyes
camphor frankincense incorroberated
with gooses blood & fluxus muliebries

Having ^{made} your necessary
supplications, motto preparation
&c Describe a circle of 100 feet or
more in diameter - or as much
more or less as convenient - and
if you wish to keep all living
creatures - from within 1/2 of a mile
front you - make at the four
parts of the same E. W. N. S.
proper Crosses and thrice pronoun-
ce the following incantation
Consecration of Ground

In the name of the father
Son and Holy Ghost I bind
all mortal & Immortal Cerestial
& Terrestial Visible & Invisible beings
except those spirits who I have occasion
to call. to avoid and quit this space
of Ground which I now mark and
wherin I now stand - and with
all possible speed and despatch

I bind you to avoid and no
longer to tarry by the Unresist-
ible power of Almighty God
by the most high and mighty
name + Tetragrammaton + by
the all powerfull names +
Aglah + Iadai + Jesu + Messias +
alpha + and Omega + By all
these most high and powerful
names. I charge, adjure Bind &
Constrain both mortal & immortal
Terrestrial & Celestial Visible &
invisible beings to avoid quit &
depart this ground And do require
that none of you except those
I have occasion to call at this time
be suffered to come within these
sacred limits these things I request
in the name of the father Son
and Holy Ghost, Amen.

Then dig a certain depth at
the four parts of the compass
and bury the seals of the Earth
in each part. - - so neither
visible nor Invisible shall have
power to come near thee or
interrupt thy proceedings -

Invocation of the Spirit Egin
I conjure thee Egin Rex Borealis
and also charge thee that thou appear
before me & before this circle by the
sufficiency of almighty God and by
the virtue of his Passion and other
centances which here shall be
rehearsed to bind and constrain thee
I conjure thee Egin - by the Father
the Son and the Holy Ghost and by
the Heavens the Air the Earth the
Sea and by all that there in is
contained that thou come shortly

and appear to me and my fellows
not terrible or fearful but in
mild and peaceable form without
hurt or envy to any of us. I conjure
thee Egin by all the Holy words
which God speak in the creation of
the world and by all creatures visible
and Invisible and by the four Elements
and by the Virtue of Heaven and by
all the Holy words that God spoke
unto Moses and by all the other pro-
phets and by the incarnation
Passion death and Resurrection of
the mild and ineffable saviour of all
mankind I conjure thee Egin by the
general Resurrection and by the dread-
ful day of Judgment: I conjure thee
Egin by the coming of the holy Ghost
I conjure thee also by the Virtue of
all the Spirits of the Just, and by

most holy Patriarchs Apostles
Evangelists - and by the most holy
saints of all ages I conjure thee Egin
by the mercy Grace and power of
God I conjure thee Thou spirit Egin
under the pain of condemnation
and thy dreadful doom at the
day of Judgment, I conjure thee
Egin by the great curse of God I conj-
ure thee Egin by all thy high names
of God I conjure thee by the high po-
wer and strength of our Lord Jesus
Christ the Son of God the Heavenly
King of glory - and I conjure thee
by the whole of these - in what
soever part of the world thou art
to appear instantly before me in
the likeness of a Child 3 years old and
that without fear hurt or error
thou fulfil my request

If at the 3rd rehearsal of this mystical
ceremony - the spirit refuses to
appear prepare a Perfume of a
sweet smelling savour - Frankincense
Stoes cinamon oil olives musk netmagg
cassa roses saffron white wase which
must be burnt commixed together
on a fire consecrated . . . while
it is burning repeat what follows

I conjure thee Egin and com-
mand thee instantly to appear before
me by the virtue of the sentences
and words hereafter written, upon
the pain of the most awful and
bitter maledictions of almighty God
I conjure thee O thou spirit Egin
that thou arise and appear to us
by the might majesty and power
of the first word that our Lord
spoke in the creation of the world
when he made the light to

shine and said Lux et facta,
est lux, I conjure thee by the second
word that he spoke when he made
the firmament and said Fiat
firmamentum in medio aquarum,
et dividit aquas ab aquis ---

I conjure thee by the 3rd word. when
he gathered all the waters under hea-
ven into one place saying. Congre-
gentur aque que sub coelo sunt -
et appropia iunda

I conjure thee by 4th word which he spoke when
he made to spring forth trees and
herbs, Germinat terram herba
vereli fa centur semen solum
seminandi tempore ut super terram

I conjure thee by virtue of 5th word. when he
made the O D X X saying fiat lum-
inaria magna in firmamento
coeli ut illuminare terram

Gen... 6th v. which he spoke when
he made birds fishes &c. Producat
aque reptilia aere virentes et
voluntate super terram sub firmam
- memento coeli.

Gen... by the virtue 7th v. which he
spoke when he blessed them, saying
Crescite et multiplicamini
et reptilia aquas maris oves.
multiplicati^o super terram

Gen... 8th v. which he spoke when
he made beasts worms and serpents
Ducat terram aliam in genero
suo inuenta et reptilia secun-
dum species suas

Gen... by virtue 9th v. - when he
made man in his own image
saying Faciamus homo ad
imagine et similitudine
nostra et reperit pisces et
volantibus que coeli et

bestias terre et universa creatura
que replere que mouentur
in terra. O. Thee thou spirit
Egin instantly to appear by virtue
of the 10th word which he spake when
he placed adam and eve in Paradise
saying Crescite et multiplicamini
et replete terra sub jugate
eam et seruite vivi piscibus
maris et volatibus coeli et
bestias terre et universus anim-
alibus que quere mouentur
super terra. Et. per haec verba,
conjuro et, spiritus Egin Lastly
I conjure, charge him, and Command
Thee O thou mighty and invincible
spirit Egin by these most high
powerful and ineffible names
of the most high + Jesus + first
Saluator + Christus + Sabaoth +
Adonay + Crator + Mesias + victor

Dasamat nazarenus + Theas +
Emmanuel + Unigenitus +
Primogenitus + alpha et Omega +
and by the great supreme and
al powerful name 11772 which
all creatures obey at which
the elements are moved and
the devils fear and tremble by
all these tremendous and
awful names I charge thee
finally to appear before me fiat
fiat fiat. Amen
after which you will hear
the rushing of many waters
Terrible noise &c. &c.

To Invoke or Raise the
Spirit Oberon

This mighty Spirit is Chief
ly under the Dominion of
the Sun & Moon he appears in
great pomp and terror gene-
rally in the form of a scally
monster the face of a Woman
and a royal crown upon his
head. attended by innumerable
Legions. He that would call
him must draw out his
scal and character and the
different offices subsequent
to him in the first Monday
after the full Moon and in
the hour of the D E F or G and
when these are made he must
repeat the following ceremonial
words. O ye Angels of the O and D
I now conjure and pray you

and exorcise you, that by the
virtue and power of the most
high god A D O. and by the name
that is marvellous + E i + and
by him that made and formed
you and by these signs that
are here so drawn forth in
these resemblances, and now in
the might and virtue of your
creator, and ^{in these} the name of him
the most shining God and
by the virtue of the Holy Ghost
that now or whensoever I shall
call on Oberion whose image
is here pictured or made and
his name that is here written
and his signs here written or
drawn, that Oberion be compe
lled now to obey me and here
to appear openly before me and
fulfil my requests - -

next day write or make the
name of his first counsellor
Caberyon and that on the
right side of Oberion's charact.
saying I exorcise thee Caberyon
by the power of God. and by the
virtue of all heavenly kings
Earthly Kings and Infernal Kings
and by King Solomon who bound
you and made you subject
unto him and by all his signs
and seals and by the four
elements by which the world
is sustained and nourished and
by the Serpent which was exalted
in the wilderness that thou Cole
ryon help to give true counsel
to thy Lord Oberion, that he
do shew his will instantly to
me and fulfil my requests

This must be said three times
each day and three times each
night over the writings.

The third day in the third
hour write and make the name
of his other counsellor Cebeyron
with his signs and characters
and say as before rehearsed
this done suffume your seals
&c with Saffron Aloes Mastice
Olibanum & opient, the fire
must be made with elder wood
or thorns - then choose a secret
place and make the circle as
shewn in an other part of this work

The circle being made concentric
&c entire and with great devotion
in the hour of 9 on thy bended knees
begin thy invocation as follows

I conjure Invoke and Call thee
Oberion by the father the Son
and the Holy Ghost, and by him
who said and it was done and
commanded and it stood fast
who willed and it was created
and by his son Jesus christ in
whose name all heavenly
Earthly and Infernall creature
do bend and obey; and by the un-
utterable names of ineffable
majesty + Tetragrammaton +
O thou spirit Oberion I command
thee whosoever thou art now
whether in sea Air fire or flood
whether in the Air above or in
the regions beneath to appear in-
stantly to me and my fellows
without hurting me or them or
any other thing which God as made
this I thrice command thee in

the name of the ineffable Adona
Amem.

If at the 3rd repetition of this
invocation the spirit gives no
visible token of his appearance
for generally previous to the
appearance of the spirit, there
are heard tremendous noises
hissing tumultuous yellings
and fearful shrieks - then begin
to rehearse the following great
Bond of Enchantment and even
if he is bound in chains in Hell
he must appear :-

Stragles's

Great and Powerful
Enchantment for
compelling spirits to visible
appearance -

O thou rebellious and fear-
ful spirit prince amongst
the fallen angels Oberion (this
is equally powerful for any other
spirit) I conjure and bind thee
to visible appearance by the
following most high most terrible
and mighty invocation -

Hear O ye heavens and I will
speak saith the Lord and let the
sea and earth yea hel and all
that is there in contained mark
the words of my mouth did not
I saith the Lord fashion you

and make you. Did not I.
as an Eagle who struth up
his nest, and fluttereth over his
young with his wings and car-
ryeth them on his shoulders
have not I so nourished you
that you were fat and loaded
with plenty. Why have you
then so spurned with your
heels against me your maker?
why have you seemed to coequal
yourselves; with me? what thereby
have you reaped? have you not
purchased instead of heavenly fe-
licity helish perplexity? how have
you that fire kindled which doth
and shall forever ^{at my pleasure} burn you in
the bottomless pit of Perdition?
why art thou so unfaithful
and disobedient to my most holy
names and words?

Know you that I am God alone
and that there is none but me,
am I not the Only $\gamma\kappa\pi\iota$, Is it not
in my power to kill and make
alive to wound and to heal to
oppress and to deliver? if I wet
the Edge of my sword and any hand
take hold of it to do Justice against
them that disobey my holy name
who is able to abide the same?
to have their swords eat their
flesh and my sharp arrows of
hell fire be made drunk with
their Blood ^{that are disobedient to my law} which of you saith
the Lord is able to withstand my
anger am not I Lord of Lords and
omnipotent and none but I who
can command the heavens to
smoke the Earth to fear the water
to flow and Hell to tremble and
not the corners of them all in my hand.

O thou obstinate and stubborn
spirit why hast thou dealt
so frowardly with me Saith
the Lord to urge me to com-
mand my faithfull servant
Michael my valiant Cham-
pion to expell and put thee
out of the place where thou
was filled with wisdom and
understanding continually be-
holding my wondrous works
didst not thou see my glory with
thine eyes and did not thy ears
hear the majesty of my voice
why art thou gone out of the
way why art thou become an
open sepulchur: with thy
tongue doest thou deceive
my servants for poison is
under thy lips and thy mouth
is full of curseing and bitterness

and thy feet are swift to shed
innocent blood, is this the
obedience thou owest unto me
and the service thou offerest
verrily for this thy obstinacy
pride and rebellion thou shall
be bound and most cruelly torm-
ented with intolerable pains
and endless and eternal perdition

Then if the spirit does not
appear, make a fire of brimstone
and stinking substances throw
bricks &c - then write the name
of the spirit on virgin parchment
and burn it thrice repeating the
following adjuration

I conjure thee creature of God
- fire, by him who commanded and
all things were done, by the living
God and by the true God and by the
holy God and by him who made the
and all elements by his word
by him who appeared to Moses in
a fiery bush - and by him who
led the children of Israel in a
fiery pillar through the wilderness
and by him who shall come to
judge the world by fire and Brim-
stone that thou perform my
will upon this disobedient spirit
till he come unto me and shew
himself obedient in all things
as I shall command him

O heavenly God father and
Author of all virtue and the
invisible King of glory most
strong and mighty captain

of the strong and triumphant
arm of Angels - God of Gods and
Lord of Hosts which holdeth on
thy hands the corners of the
earth which with the breath
of thy mouth makest all things
to shake and tremble which
makest thy angles lightning
and thy spirits flames of fire
vouch safe I beseech thee O
Lord to send thy holy angels into
this place of fire to torment
vex and persecute this diso-
bedient spirit Oberon and
Overcome him as Michael the
Arch angel overcame Lucifer
the prince of darkness, he be
come to me and fulfil all
my will and desire fiat fiat
fiat Amen -

O thou most puissant prince
Radamanthus which doth
punish in thy prison of perpet-
etual perplexity the grisly
ghosts of men dying in dread-
ful dispare and also the dis-
obedient spirits. I conjure
bind and charge thee by Lucifer
Belsebut Satan Tamarill
and by their power and by the
hommage thou owest unto them
and also I charge thee by the
Cripple crown of Cerberus by
Styx and Phlegethon by the
spirit Barantus and his man-
ieters that you torment and
punish this disobedient spirit
Oberion until you make
him come corporally to my
sight and obey any will and
commandment in whatsoever

I shall command him to do
Fiat fiat fiat - Amen

These things being performed
he will appear - but after
the above incantation he
will appear terrible &c &c
attended by a violent convulsion
of the elements raging furiously

WB Remember and well secure
the circle before you use this
strong incantation

Licence to dismiss the Spirits

I conjure thee (obvion) by the
visible and holy temple of Solomon
which he did prepare to the
most holy God by all the Ele-
ments and by that most holy

name which was engraven
an Solomons Scepter that for
this time thou do depart quickly
quietly and peaceably without
Lightening Thunder Rain Wind
Storm or tempest or any noise
or terror whatsoever and when
soever I shall call thee I charge
thee that thou do come to me
and my fellows without delay
not molesting me or any other
creature that God hath made
to his glory and praise and the
use of man or without disorder-
ing any thing either pulling up
or casting down any thing or
doing hurt any other way wh-
atsoever either in thy coming or
going not hurting troubling
or molesting me or any

other creature neither by thy
self or any other spirit or spirits
for thee or at thy procurement
at any time or times now or
hereafter by the virtue of our
Lord Jesus Christ the father and
the Holy Ghost go thy way in
peace to the place which God
hath appointed for thee and
peace be between thee and me
In nomine patris + et
filii + et spiritus sancti + Amen

¶ This Licence must be repeated
thrice and then the lords pray
then leave the circle waulking
Backward - and must return
home by a different way
from which he came

Appearances of the
four Kings of the four
corners of the Earth VIZ
East West north & South

1st The Spirit Oriens
King of the East.

He appeareth with a fair and
feminine countenance and a
goodly crown upon his head he rides
upon an Elephant. having before
him a number of musical Instru-
ments (Sometimes he appeareth
in a similitude of a horse and
when he is constrained by magical
incantation he assumeth a
human shape he hath under
him 250 Legions of inferior
Spirits his power is great
and he can answer truly

to all demand both past -
present & to come - -

2nd The Spirit of Paymon
King of the West

This spirit is powerful to
evil appearing in the likeness
of an armed soldier riding upon
a Cammel or Dromedary being
crowned with a bright crown
his countenance is feminine
but his voice hoarse and
uncouth - before him goeth
all kind of musical Instru-
ments yet when constrained
by art, he readily performs
the wishes of the Invocator
and hath under him infinity
of Spirits

3rd The Spirit Eger King
of the North this spirit is high
and mighty he appeareth in the

form of a man riding upon
a dragon with a Regal crown
on each ^{side} of him are hissing
serpents, he cometh with a
fearful and tremendous noise
and with many inferiors
round him and under him
are countless Legions of mi-
ghty spirits. when constrained
by powerful incantation
this spirit assumes the form
of a child and the raising of
this spirit is less dangerous
than either of the preceding
and as proved of great use
to the Magician when rightly
invoked - he discovers treasures
of the Earth and is very trac-
table

4th The Spirit Amaymon
king of the South -- is great
high and mighty and terrible
in appearance he usually
assumeth the form of an old
man with a long Beard his
ears being like to those of an
horse with a royal diadem
upon his head his first ap-
pearance is unusu^{ally} tremendous
fork'd lightning and deep mouth
thunders - shaking the earth
apparently to the center,
announce is awfull appearance
then suddenly the earth will
appear to vomit forth gushes
of flame - musical Instrum
ents an uncooth clatter of Wheels
and hoard crashes will every
instant astound the invocator
but on a sudden will be a
gairi calm - and clothed in

all the pomp of his spiriti-
al grandeur attended by
countless Legions of invincible
spirits - A man will
be seen riding furiously on
a fierce and roaring lion he
will approach to the utmost
limits assigned him - and it
will well become Theurgist
to preserve is wonted Calmness
for if he powerfully con-
strain and urgently invoke, this
furious spirit may be bro-
ught to the most submissive
Obedience he hath power to
give knowledge, dignity and
great promotion - these
4 spirits are difficult to
be constrained - for they are
evil - and bear an inveterate
hatred toward man - they

are swift to do evil and
they will strive to delude
the invoker with lies - there-
fore you must make them
enter a pentacle or a circle
fortified with divine names
and then they will be
forced against their will to
tell the truth - the Op-
erator must be very
cautious of them --

Consecration of the Ground

I who am the servant of the
most high, do by virtue of his
holy name, ^{Immanuel, do} sanctify unto my
self the circumference of
9 feet round about me **+++**
from the east - Glaurah, from
the west. Garvon, from the
North. Cabon from the South
Berith - which ground I take
for my proper defence from
all Malignant spirits, that they
may have no power over my
soul or body nor come beyond
these limitations but answer
truly, being summoned without
daring to transgress their
bounds Worrh, Worrak harcot
Gambalon **+++**

I exorcise and conjure thee
thou spirit (here naming the
spirit you would have appear)
by the Holy and wonderfull
names of the Almighty Jehovah
Athanato ✕ thonos ✕ Dominus
sempiternus ✕ Aethrios ✕ Sadaim ✕
Jehovah. Kedesh. El-gabor. ✕
Deus fortissimus ✕ - Anapherai
Amorule Ameron ✕ ✕ ✕ Pantho
✕ Craton ✕ Murodon ✕ Jah
Jehovah Elohim pentesaron
✕ trinus et unus ✕ ✕ ✕ ☉
I exorcise and Conjure - I invoc-
ate and command thee thou
affore said spirit by the power
of Angels arch Angels Cherubim
and Seraphim by the mighty
prince Coronyon - by the blood
of Able By the righteousness of
Seth - by the prayers of

Noah - by the voices of
Thunder and dreadful day
of Judgment - and by all these
royal and powerfull words
affore said - that without
delay or Malicious intent
thou do come before me here
at the circumference of this
consecrated circle, to answer my
proposals and desires without
any manner of terrible forms
either of thy self or attendants
but only obediently fairly and
with good intent - present
thy self before me - this circle
being my defence through his
power who is almighty and
hath sanctified the name of
the father son and Holy Ghost
Amen

Licence to Discharge

Because thou hast diligent-
ly obeyed my command and
been ready to come at my
first call. I do here licence
thee to depart - unto thy pro-
per place without injury or
danger to man or beast -

Depart I say. and ever be ready
at my call - being duly exor-
cised and conjured by sacred
rites of Magic - I charge thee
to withdraw with quiet and
Peace. and peace be continued
betwixt thee and me. in the
name of the Father Son and
Holy Ghost Amen

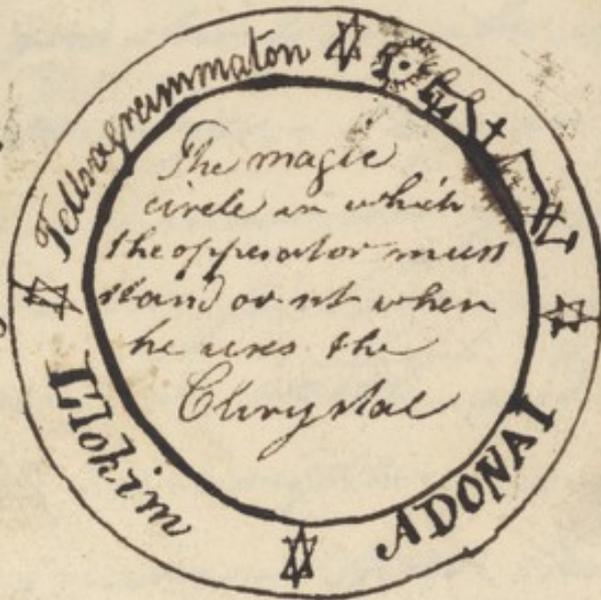
[Faint, illegible handwriting in cursive script, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

AGLA & ON & Telegraphic Station

Magic Wand - The ebony rod

AGLA # ON ☆ Tetragrammaton ✱

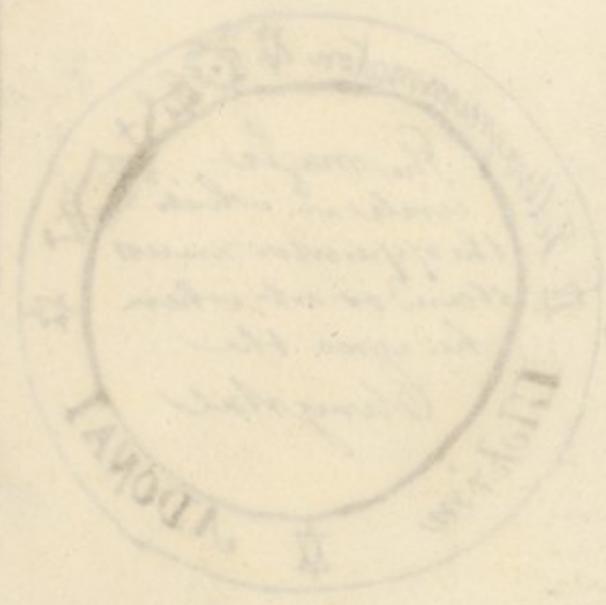
with on the other side Ego. Alpha et Omega



The Wand for Perfumes
 either to hold in the hand
 or put in the carth

The Lamen or
 Holy Table
 of the Arch
 angel

Michael



[Faint, illegible handwritten text in the left margin]

[Faint, illegible handwritten text in the right margin]

[Faint, illegible handwritten text on the adjacent page]

Invocation of Good Spirits -

The good spirits may be invoked by
us divers ways - They in sundry
shapes and manners offer them-
selves to us for they openly speak
to those that watch and do offer them-
selves to our sight - or do inform
us by dreams - those things which
we desire to know - whosoever
therefore would call any good
spirit to appear or appear in
sight - he must observe about
his disposition (Invoker)

It necessary that the person religiously
dispose him self for the space of
many days to such a misting -

at to conserve himself chaste abste-
nent and to abstract himself as mu-
ch as he can from all Business
and fast as much as shall
seem good or convenient to him
and daily between sun rising and
setting (being clothed in white linnen
seven times call upon God - and
make a deprecation to the Angels
to be called and invoked according
to the rule which is before taught

The number of days of Preparation
on is commonly a month (ie a whole
Lunation) but in the Calaba we
fast 40 days The place must
be chosen clean pure close quiet
free from all manner of noise
and not subject to any strangers
sight - it must first be
exorcised and consecrated and place
a table or Altar therein covered

with a clean white linnen cloath
and set toward the East - ^{and} of it -
^{on each side} place two consecrated wax lights -
burning the flame thereof ought
not to go out all these days in
the middle of the Altar place the
Lamens - or Holy paper - covered with
fine linnen which is not to be
opened until the end of the days
of consecration have ready a
precious perfume and pure anno
inting oil and keep them both
consecrated - and set a Sensor on
the head of the Altar - where
in you kindle the holy fire
and make a precious perfume
every day you pray

The Garment - must be
a long, white linnen closed before
and behind which must come
down quite over your feet - gird
your self about your loins with

a girdle you must have a
veil made of pure white linnen
on which must be wrote in a
gilt linnen the name Tetragram
all of this must be consecrated

you must not go into this
holy place until ^{it be} ~~you have~~
first washed and covered with
a clean ^{new} cloath - and then
you may enter with your
feet naked and bare and
when you enter you shall
sprinkle it with holy water
then make a perfume upon
the Altar and on thry knees
pray before the Altar now
when the time is expired ^{on the last} you
^{day} shall fast more strictly and
fasting on the day following at
at the rising of the Sun enter
the holy place rising the cere

ceremony before spoken of -
first sprinkle then perfume
then sign the cross with holy oil
in your forehead - anoint your
eyes with prayer in all the con-
secrations - then open the lamen
and pray before the altar upon
your knees and then an invo-
cation may be made as follows

The Invocation

In the name of the Blessed and
holy Trinity I do desire thee ~~that~~
^{Here name the Spirit you would hope}
and mighty angels that if it be
the divine will of him who is
called Tetragrammaton & the
holy God the Father - that thou
take upon thee some shape thou
best becomest thy celestial nature
and appear unto us visible in
this place - and answer our
demands in as far as we shall
not transgress the bounds of divine

mercy and goodness by requesting
unlawfull knowledge but that
thou wilt graciously shew us
those things that are most profit-
able for us to know and do, ^{to} the
Glory and Honour of his divine
Majesty who liveth and reigneth
world without ~~end~~ Amen
Lord thy will be done on earth
as it is in heaven - make clean
our hearts within us and take
not thy holy spirit from us
O Lord by thy name we have called
them suffer them to administer
unto us and that all things
may work together for thy
honour and glory to whome with
thee the Son and blessed spirit
be ascribed all might, majesty
power and dominion world with-
out end Amen

The particular form of the Lamen
(for the form of the Lamen see the plate)
The invocation being made the
good angels will appear unto you
whenever you desire, which you shall
entertain with a chaste communion
and licence them to depart

Now the Lamen which is used
to invoke any good spirit must
be made after the following manner
either in metal conformable or in
new Wax mixed with convenient
spices and odours. or it may be
made with pure white paper
with convenient colours and
the outer form of it may be either
square Circular or Triangle or of
the like sort according to the
rule of numbers. in which must
be written the divine names as
well general as special an

The middle of the lamer draw
an hexagon ^{or} character of 6 Corners
in the middle thereof write the
name and Character of the star
or of the spirit his governor. to
whome the good spirit who is to
be called is subjected and about
this character let there be placed
as many characters of 5 Corners as
the spirits you would call together
at once but if we should call
one only nevertheless there must
be four wherin the name of
the spirit or Spirit with their
characters are to be written

This lamer must be composed
when the moon is in his
Increase on those days and hours
which agree with the spirit
and if you take a fortunate
planet there with it will

be the Better for producing
the effect which table or Lamen
being rightly made in the man-
ner I have here described. must
be consecrated according to the rules
before delivered - - -

And this is the way of making
ing a general table or lamina
for the invoking of all spirits
whatever - - - the form of
one you may see the Plate
Nevertheless we make special
tables congruent to every spirit
by the rule we have before of
then concerning Holy pentacles

This another like more
easy to perform this thing -
let a man who wishes to recei-
ve an oracle from a spirit be
chast pure and sanctified

Then a place being chosen pure
clean and covered every where with
clean white linnen on the Lords
day in the new moon let him
enter into that place clothed
with white linnen - let him
exorcise the place and bless it
and make a circle therein with
a consecrated Coal - let there be
written in the outer part of the
circle the names of the angels - in
the inner part thereof write the
mighty names of God and let there
be placed within the circle
at the four parts of the world
vessels for perfumes Then being
washed and fasting let him enter
the place and pray towards the
east with this whole Psalm 119
Blessed are the undefiled in the
way & he & e & e & e -

Then make a fumigation
and deprecate the Angels by the
said divine names that they
will appear unto you and
reveal or discover that which
you so earnestly desire and do
this continually for six days
washed and fasting on the 7th day
being washed and fasting, enter
the circle perfume it and
annoint thy self with holy
oil upon the forehead eyes and
in the palms of both hands and
upon thy feet. Then with
bended knees - say the psalm afore
said with divine angelical names
which being said arise and
walk round thy circle from
east to west until thou shalt
be wearied with the giddiness
of the head and brain then

straitway fall down in the circle
Whom thou in ^{thy} rest, and thou
will be wrapped up in **ecstasy**
and a spirit will appear and
inform thee of all things necessary
for thee to know - we must observe
also that in the circle there ought
to be 4 holy candles burning at
the four parts of the world
which ought not to want light
for the space of a week - and
the manner of fasting is this
to abstain from all things
having a life of sense and from
those which proceed from them
let him drink only pure run-
ning water - neither is there
any food or wine to be taken
till the going down of the Sun

The Perfume and holy anoint-
ing oil be made as is set
forth in exodus and other
holy books of the Bible - it is
also to be observed that as often
as he enter the circle he must
have upon his ^{fore} head a golden
lamen upon which must
be written the name
Tetragrammaton in the
manner afore said -

of making the Crystal
and the form of Preparation
for a Vision

Procure of a lapidary
a good clear pellucid Crystal
of the size of a small Orange
(ie) $1\frac{1}{2}$ Inch in diameter - let it
be globular each way alike
fair and clear take a small
plate of pure gold to encompass
the crystal round one half it
must be fitted on an ivory or
ebony pedestal as you may see
in the plate) - let there be engr-
aved a circle round the crystal
with these characters round
inside next the crystal
☆.☆.✝ afterwards the name
Tetragrammaton; on the
other side of the plate engrave
Michael Gabriel Urziel

Raphael which are the 4
principal angels ruling
over the ☉, ☽, ♀ and ☿ put on
the table on which the crystal
stands the following
names characters & S^{igns} must
be drawn in order —

first the names of the 7 plan-
ets and angels ruling them
with their seals or characters
the names of the four kings of
the four corners of the earth
write them within a double
circle with a triangle on a
table on which place the
crystal on its pedestal this
being done it is complete

In what time thou would
deal with spirits by the
table and crystal thou must
observe the Planetary Hour

and what planet rules in that
hour - The Angel governing that
planet thou shalt call in the
manner following - but first
say this short prayer

O God who art the author of all good
things strengthen I beseech thee thy
poor servant that he may stand
fast without fear through this
dealing and work enlighten I
beseech thee O Lord the dark un-
derstanding of thy creature so
that his spiritually eye may be
opened to see and know thy
angelic spirits descending here
in this crystal (here lay thy
hand upon the crystal saying)
and thou O inanimate creature
of God be sanctified and consecrated
and blessed to this purpose that

no evil Phantasy may appear
in thee (or if they do again
ingress - into this creature they
may be constrained to speak in-
teligibly and truly and with-
out the least Ambiguity for
Christs sake Amens and
far as much as Thy servant
here standing before thee
O Lord - desires neither evil
treasure nor injury to his
neighbour nor hurt to any
living creature grant him
the power of descrying those
celestial spirits - or Intelligences
that may appear here in the
crystal State whatsoever
good gifts whether the power
of healing infirmities or of
imbecily, wisdom or disco-
vering any evil likely to

happen to any person or family
or any other good gift thou
mayest please to bestow upon me
enable me by thy wisdom and
mercy to use whatever I may rec-
eive to the Honour of thy holy
name grant this for thy son
Christ's sake Amen

Take your ring and pentacle
put the ring on the little finger
of thy right hand Hang
the pentacle round thy neck
make your circle with the
blackebony wand (with gilt ch-
aracters on it) as is before describ'd
in the Plate - Saying in the
name of the Blessed Trinity
I consecrate this piece of ground
for our defense so that no
evil spirit may have power
to break these bounds

prescribed here through Jesus
Christ our Lord Amen

Place the vessel of perfume
between thy circle and the
table on which the crystal
stands and having fire there
cast in thy perfumes saying
I conjure thee O thou creature
of fire by him who created
all things both in heaven and
earth - and in the sea and every
other place whatever - and
forthwith thou cast away
every phantasm from thee
that no hurt whatsoever should
be done in anything Bles
O Lord this creature of fire
and sanctify it that it may
be, blesed, and that they may
fill up the power and Virtue
of their odours so neither the
enemy nor any false in

immagination shall enter
into them through our lord
Jesus christ strength

This being done... take out
thy little book which being
made about 7 inches long of
pune paper or Yellum - -
write down the character -
names and office and the
seal or Image of what
ever spirit may appear
NB it does not happen that
the spirit you call will
not always appear -
you must try the spirit
to know wheather it be
a pure or impure being
and this you shall easily
know by a firm faith in God
now the most pure and
simple way of calling the

spirit or Spirits is by a
short Oration to the spirits
him self - which is more
effectual and easy to perform
than a table of letters - for
all celestial operations
the more pure and unmixt
they are the more they are a-
greeable to Celestial Spirits

After noticing the exact
hour of the day and what Angel
rules that hour thou shalt
say as follows

In the name of the Blessed
and holy Trinity I do desire
thee thou strong and mighty
Angel Michael that if it be
the divine will of him who
is called Tetragrammaton &c
the holy God the Father
* O carry these Spirits

That thou take upon
thee some shape that best
becometh thy celestial na-
ture and appear to us visib-
ly here in this crystal and
answer our demands in as
far as we shall not trans-
gress the bounds of divine
mercy and goodness by re-
questing unlawfull know-
ledge. but that thou wilt
graciously shew us what
things are most profitable
for us to know and do to
the honour and glory of
his divine majesty who liveth
and reigneth world without
end Amen - Lord thy
will be done on earth as it
is in heaven make clean
our hearts within us and

Take not thy holy spirit
from us O Lord by thy name
we have called him suffer
him to administer unto us
and that all things may work
together for thy Honour and
glory be to him with thee
the son and Blessed spirit
be ascribed all might majestic
power and dominion

Strength - - - - -
As there ought to
be 2 persons present for some
times a spirit is visible to
one and some times to both

let him that see him say
Oh Lord we return thee our
heartly and sincere thanks
for the hearing of our pray-
ers and we thank thee for
having permitted thy spirit

To appear unto us which
we will by thy mercy -

Interrogate to our further in-
struction through Christ Amen

Interrogations

In the Name of the holy
and undefiled spirit the
Father the Begotten Son
the Holy Ghost proceeding
from both - what is thy true
name - (if the spirit answer
Michael then proceed)

What is thy office

What is thy true sign or
Character

When are the times most
agreeable to thy nature to
hold conference with us

Wilt thou swear by the
Blood and righteousness of
our Lord Jesus Christ

that I have out Truly
Michael (here let him
swear) - then write down
his seal or character in
thy Book and against it
is office and times to be called
through gods name - also
write down any thing
he may teach thee - or any
responses he may make to
thy questions - concerning
life or death Arts or Sciences
or any other thing - -

Licence to depart

Thou great and mighty
spirit was much as thou
came in peace and in the
name of the ever Blessed and
righteous Trinity So in those
names thou mayest depart
and return to us when we

call thee in his name to whom
every knee doth bow down

Fare thee well Michael peace
be between us through our

Blessed Lord Jesus Christ Amen
(then he will depart) then say

To God the father eternal
spirit fountain of Light -
the the Son the Holy Ghost
be all honour and glory
world without end Amen

The day is divided into 12
planetary hours reckoning from
sun rise to sun set - and again
12 hours from the setting to
the rising - and to find the
planetary hour you must
divide the Natural Hour
by 12 and the quotient gives
the length of the Planetary
hour which shews you how
long a spirit bears rule on
that day - as Michael governs
the 1st (ie that is at sunrise) on
Sunday and again on the 8th hour
as the Sun does also - and you
on the 3rd hour of the night
and so for the rest - - -

NB 12 O'clock either night or day
is the end of the 6th hour

Names of the Angels and planets governing
the hours of the day through out the week

| | Sunday | Monday | Tuesday | Wednesday | Thursday | Friday | Saturday |
|---|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|
| 1 | ☉ Michael | ☽ Gabriel | ♂ Samael | ♀ Raphael | ♂ Michael | ♀ Samael | ♂ Raphael |
| 2 | ♀ Samael | ♂ Raphael | ☉ Michael | ♂ Gabriel | ♂ Samael | ♀ Raphael | ♀ Samael |
| 3 | ♀ Raphael | ♀ Samael | ♀ Samael | ♂ Raphael | ☉ Michael | ♂ Gabriel | ♂ Samael |
| 4 | ♂ Gabriel | ♂ Samael | ♀ Raphael | ♀ Samael | ♀ Samael | ♂ Raphael | ♂ Michael |
| 5 | ♂ Raphael | ☉ Michael | ♂ Gabriel | ♂ Samael | ♀ Raphael | ♀ Samael | ♂ Raphael |
| 6 | ♀ Samael | ♀ Samael | ♂ Raphael | ☉ Michael | ♂ Gabriel | ♂ Samael | ♂ Raphael |
| 7 | ♂ Samael | ♀ Raphael | ♀ Samael | ♂ Raphael | ♂ Samael | ♂ Raphael | ♂ Michael |

| | | | | | | |
|--------------|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|
| 7 ♂ Samael | ♀ Raphael | ♂ Sachiel | ♀ Anael | ♂ Gabriel | ♂ Michael | ♂ Samael |
| 8 ○ Michael | ♂ Gabriel | ♂ Samael | ♀ Raphael | ♀ Sachiel | ♀ Anael | ♂ Samael |
| 9 ♀ Anael | ♂ Gabriel | ♂ Michael | ♂ Raphael | ♂ Gabriel | ♂ Raphael | ♂ Samael |
| 10 ♀ Raphael | ♂ Sachiel | ♀ Anael | ♂ Gabriel | ♂ Sachiel | ♂ Michael | ♂ Samael |
| 11 ♂ Gabriel | ♂ Samael | ♀ Raphael | ♀ Sachiel | ♀ Anael | ♂ Raphael | ♂ Michael |
| 12 ♀ Gabriel | ♂ Michael | ♂ Gabriel | ♂ Samael | ♀ Raphael | ♀ Sachiel | ♀ Anael |

DAY

Names of the Angels and Planets governing the Hours of the
Night throughout the week

| | Sunday | Monday | Tuesday | Wednesday | Thursday | Friday | Saturday |
|---|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|
| 1 | Michael ♀ | Anael ♀ | Gabriel ♀ | Michael ♂ | Gabriel ♂ | Samael ♀ | Raphael ♀ |
| 2 | Samael ♀ | Raphael ♀ | Zachiel ♀ | Anael ♀ | Zachiel ♀ | Michael ♂ | Gabriel ♂ |
| 3 | Michael ♂ | Gabriel ♂ | Samael ♀ | Raphael ♀ | Zachiel ♀ | Anael ♀ | Zachiel ♀ |
| 4 | Anael ♀ | Zachiel ♀ | Michael ♂ | Gabriel ♂ | Samael ♀ | Raphael ♀ | Zachiel ♀ |
| 5 | Raphael ♀ | Zachiel ♀ | Anael ♀ | Zachiel ♀ | Michael ♂ | Gabriel ♂ | Samael ♀ |
| 6 | Gabriel ♂ | Samael ♀ | Raphael ♀ | Zachiel ♀ | Anael ♀ | Zachiel ♀ | Michael ♂ |
| 7 | Zachiel ♀ | Michael ♂ | Gabriel ♂ | Samael ♀ | Raphael ♀ | Zachiel ♀ | Anael ♀ |

| | | | | | | | |
|----|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|-----------|
| 7 | I Joseph | O Michael | D Gabriel | S Samael | Raphael | Z Zachiel | Q Anael |
| 8 | Z Zachiel | Q Anael | I Joseph | O Michael | D Gabriel | S Samael | Raphael |
| 9 | S Samael | Raphael | Z Zachiel | Q Anael | I Joseph | O Michael | D Gabriel |
| 10 | O Michael | D Gabriel | S Samael | Raphael | Z Zachiel | Q Anael | I Joseph |
| 11 | Q Anael | I Joseph | O Michael | D Gabriel | S Samael | Raphael | Z Zachiel |
| 12 | Raphael | Z Zachiel | Q Anael | I Joseph | O Michael | D Gabriel | S Samael |

VIGIL

A Prayer to God

Almighty and most mercifull
God we thy servants approach
with fear and trembling before
thee and in all humility
do most heartily beseech
thee to pardon our manifold
sins and wickedness and bling
transgressions by us committed
at any time and grant O most
mercifull father for his sake
who died upon the cross that
our minds may be enlightened
with the divine radiance of
thy holy wisdom for seeing O
Lord of might ^{power} majesty and dom-
inion that by reason of our
gross and material Bodies
we are scarce apt to receive
those spiritual instructions

that we so earnestly and
heartily desire. Open O blessed
spirit the spiritual eye of
our soul that we may be released
from this darkness overspreading
us by the delusion of our out
ward senses and might perceive
and understand those things that
are spiritual we pray thee
O Lord above all to strengthen
our souls and Bodies against our
spiritual Enemies by the blood
and righteousness of our Blessed
Redeemer thy son Jesus Christ
and through him and in his
name we beseech thee to
illuminate the faculties of
our souls so that we may,
clearly and comprehensively
hear with our ears and unde

stand with our hearts - and
remove far from us all hypo-
cracy and deceitful dealings
^{profaneness}
inconstancy and levity - so that
we may in word and deed become
thy faithful servants and
stand firm and unshaken ag-
ainst all attacks of our bodily
enemies likewise be proof
against all illusions of evil
spirits with whom we desire
no communication nor inter-
course but that we may be
instructed in the knowledge
of things natural and celestial
and as it pleased thee to bestow
on Solomon all wisdom both human
and divine in the desire of which
knowledge he did so please thy
divine majesty that in a dream
of one night thou didst in

and
hypo
ings
that
becom
and
e of
odely
we
denn
ente
e
ofe
sted
four
human
ch
of
dren

spire him with all wisdom and
knowledge which he did use
by prefer before the riches of
this life so may our prayers
and desires be graciously accep-
ted by thee So that by a firm
dependance on thy word we
may not be led away with the
vain and sedeculous pursuits
of worldly pleasures and delights
they not being durable nor of
any account to our immortal
happiness Grant us Lord power
and strength of intellect to carry
on this work for the Honour and
Glorie of thy holy name and to
the comfort of our neighbour
without desire of hurt or
detriment to any - we may
proceed in our labours through
Jesus Christ our Redeemer Amen

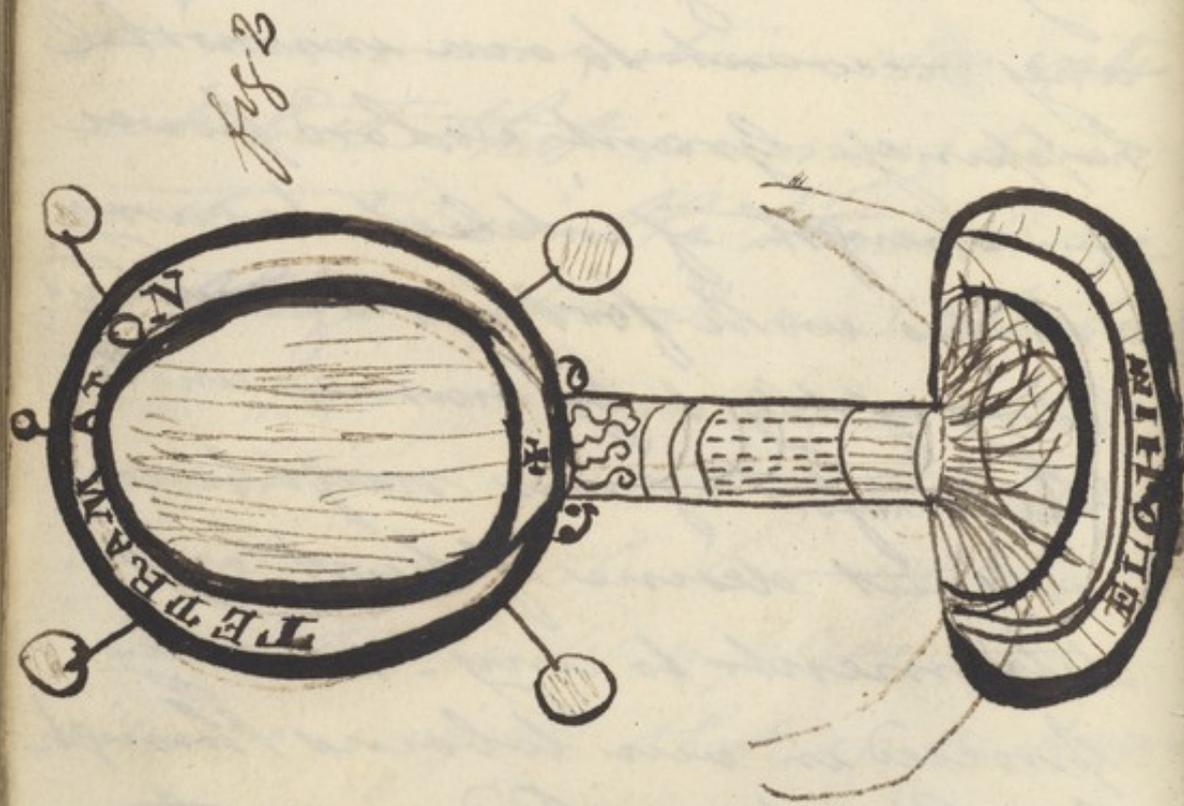
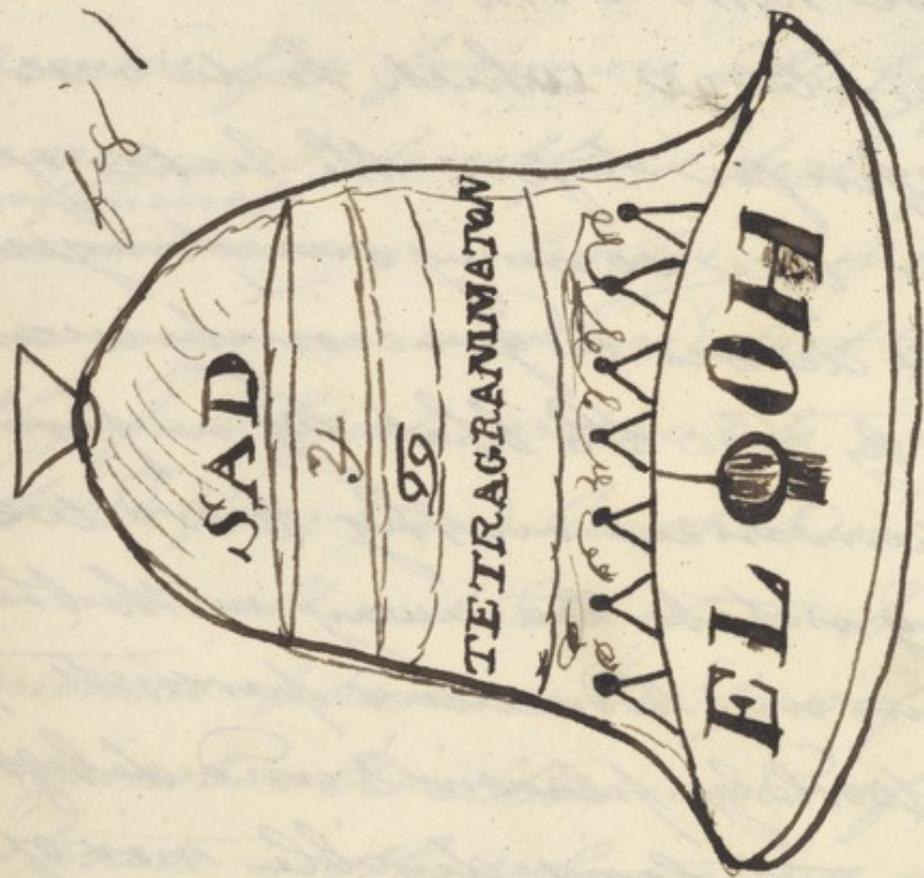


fig 2 represents a correct view
of the Urin and Thummim
it consist of a pedestal formed
According to the rule of the
magical science. of a con-
position termed by the Thew-
gists. electrum Magicum with
the word + Elohim + on the ped-
stal. in the center of this is
placed a pillar. which sup-
ports an oval crystal or po-
lished surface set in gold &
round which must be in-
scribed the mighty names
of supreme Majesty + Tetra-
grammaton round it are
5 small Crystals to represent
the Animal Vegetable Mineral
and Astral Kingdoms and the
one on top represents Δ of the
Loud the whole must be preserve

in a case free from dust -
The composition of the
Electrum Magicum
Take four half ounces of the ☉
which must be poured through
the Antimony melt it on
a Sunday in the hour of the ☉
when it is well fused throw
purified salt petre into it until
it emits sparks of all kinds of colours
when it is well purified and
take care you do this in the pro-
per hour. then pour it into
a new vessel afterwards melt it
it on a Monday in the hour of
the ☽ four half ounces of refined silver
purified with salt of Tartar which
has no culinary salt in it and
when the hour is past - cease -
on Tuesday in the hour of ☿ melt
pure clean Iron with Potashes

cleanse it further with pitch
or Tar On Wednesday in the hour of
8 melt four half ounces of Quicksilver
which purify with Pitch on
Thursday in the hour of 9 melt
3 half ounces of Tin purify it with
the fat of a Lamb - On Friday in
the hour of 10 take 4 half ounces of
Virgin copper purify it with
Vinegar and salt petre carefully
then strain it through a piece
of Leather on Saturday in the
hour of 11 - melt pure lead throw
a good deal of pitch or Tar into
it and put it by and take
care on the hour in which the
new moon is light - to melt in
the same hour all the metals
together - put the purified first
into the crucible afterwards the tin
before it is too hot - pour the Quick

silver is to it and stir it about
with a Hazel stick then put
the copper into it and give it
a strong heat. afterward the
silver and next the gold -
while all this is fusing throw
in to it the $\frac{1}{8}$ part of an ounce
of mineral steel and cast
therefrom the pedestal

After this get 2 large Chrystal
ground on a Friday and well
polished. now observe when the
sun gets into \odot place in the
same hour a crucible in the
fire which must be well
glazed therein, now take from
the same four stones which
was before put in to the lecture
run, from each one half ounce
put first the mineral in
then the Vegetable and Animal

and last of All the Astragal
and when you pour this into
the mould - it will seem as if
the stones were red hot like a
glowing coal (and it is wonderfu
l as these never change but so
continues) then make the instru
ment as seen in the drawing

The Use of this famous Secret
when you would divine by this
art. take the Urin from the case
place it on the table with 2 Wax
lights burning beside it. constrain
your imagination, fall down
before your father in heaven
with reverence, then having a
brazier set hard filled with hot
Ambers through therein frankin
cense Martie Benzoin and Myrrh
and begin to fumigate to all four

parts of the Board and with the
incense fan also 3 times toward
the Altar - then bend thyself
and devoutly say as follows
O Tetragrammaton & thou
powerful God and father we
praise love and pray to thee
we also here are collected laying
before ^{the} like poor earth and Ashes
we honour thy holy and majes-
tical name and exclaim with
all the Saints and elect three times
Holy Holy Holy - Then sing
a Song of Praise to God such as
the Psalm - We praise thee Oh
God, &c and with thy brethren
placed round the table, remain
quite still, having your eyes
directed toward the Altar and
whatever thou desirest to know
shall be manifested unto thee

and thou shalt be acquainted
with all hidden things - - & -
thou shalt be enabled to see
Any thing that is being done
in any part of the world no
matter how distant - or whether
past present or future
after you have seen this
Vision you must all fall
down and worship God -
This is the hidden mystery of the
Unus and Trinum

Fig 1st represents the Magic
Bell for invocating spirits
This Bell is to be formed
Electricum Magicum and fash-
ioned as is described in the plate
round it the words + Tetragramma
+ Lou + and + Sadaï + must be
engraved in relief and also the

Sign and planet under which
you was born also inside
thereof the ^{word} Elohimi and on
the clapper Adonai - it
must be kept in a clean
chamber, and when you would
Invoke the celestial agents or
good Spirits - make a fire with
Incense and proper perfumes
then rehearse devoutly an appro-
priate incantation and ring
the Bell thrice when the
spirit will instantly app-
ear before thee and thou will
be enabled to have thy wishes
performed

The Wonderfull ointment
for Wounds composed of
the four elemental principles
The Ingredients sympathizing
with the 7 Planets

1. The Moss of a dead mans skull 2 oz
2. of Mans fat ————— 2
3. of Mummy + ————— $\frac{1}{2}$
4. of Mans Blood ————— $\frac{1}{2}$
5. Oil of Linseed ————— 2
6. Oil of Roses ————— 2
7. Bol Armoniac ————— $\frac{1}{2}$

The 3 last ingredients is used
to bring it to a suitable
Ointment — to be all well
mixed in a mortar to an
ointment then kept from
the Air fit for use

The way to use this Ointment
to cure is as follows

Take the Blood upon the instrument
that made the wound
or otherwise dry it upon a piece
of wood and put the wood into
the ointment - or annoint
the blood being kept dry upon
the wood upon the ointment and
keep it from the Air after which
you must every day wet a rag
with the Urin of the patient and
so bind up the wound do it ever
ly every morning - also mind
the ointment which is apply
ed to the blood must be warm
it must be kept warm with
this simpaticke Urgeant.

wonderfull things may be done
with this if rightly managed

and if you place the inst-
rument in Vinigar the pain
returns

The Magical Candle

Take a quantity of Venal blood
Take warm as it came out of
the vein which being Chemicolly
prepared with Alcohol and other
ingredients - is at last made
up into a candle which being
once kindled is never extinguish'd
till the death of the person whose
blood it is composed of - for when
he is sick or in danger it burns
dim and troubled and when dead
it is quite extinguish'd

A Magic torch to produce
the Appearance of Serpents

Take the skin of a Serpent when
first killed, and twist it up like
cat gut; then take the blood and
fat thereof; and mix with some
hard Tallow to make it a substance

Then take a candle mould
and fix the skin of the Serpent
as a wick, then pour it the
prepared fat. (as before described)
then the candle is formed;
but the whole of this must be
prepared under the Aspiration
of M - This Candle must be
lighted in the hour of H - and
whenever it is thus lit in a
close room, the place will
appear to be filled with innum-
erable serpents - to the great
horror of the Spectators, and
so perfect will be the Appearance
that the Operator himself
will scarcely be able to withstand
the force of Imagination

Magical Torch to produce
the appearance of Flies
Take a quantity of flies and
boil them with a sufficient
quantity of Wax or Tallow ma-
king the same into a candle or
Torch - in manner as before
shewn, which experiment must
be performed under the Assention
of ~~the~~ and lit in the hour of 2
and the place will appear sw-
arming with Thousands of insects
and the Illusion will be so perfect
that to a spectator it will
appear the effect of Enchant-
ment -

The Magical Oil of
Grapes

Likewise Oil compounded of
Grapes - and put in a lamp
and lighted, will make the
room appear full of Grapes
and the same thing is to be
done with all plants and flow-
ers, through the Vegetable
system, by means of Chemical
analysis, whereby a simple
spirit is produced, which will
represent the herb or flower
from which it was extracted
in full bloom —————

An abstract from R. Morris's
or Dick Spott's Works

Method of securing an
House from Thieves

First consider the aught
what Planet reigns and is
lord of the Ascendant. and
these are the Characters. the
☉ on Sunday the ☽ on Monday ☿ on
Tuesday ♀ on Wednesday ♃ on Thursday
♁ on Friday ♄ on Saturday.

Now consider on what night
you do this as to these planets
and write on fair parchment
these characters B V B. and
suppose it to be on a Sunday
add the Planetary character
of ☉ with these numbers

1. 3. 5 $\frac{1}{4}$ $\frac{1}{2}$ and ^{that} a night lay
this under the earth or cover it

with a tile in the middle
of the house as near as may
be. sprinkle it over with
juice of Nightshade and so
go to sleep as soon as you have
thrice repeated them over and
if the thieves have power to
enter the House they shall not
have no power to get out again
or carry any thing away
till the sun rise and if you
be watchful you may eas-
ily apprehend them before they
are able to depart. and
thus you may do any day
in the week - by adding
the character of the Planet
that rules that day as I
have set down And what
is besides set down

A Safeguard for outhouses
Prohibit Cattle Corn &c &c
consider the day as in the
former and set down upon
a piece of clear parchment
these characters $\text{S} \text{D} \text{M}$ add
the characters of the Planets
as for Monday D and these
figures $9 \cdot 8 \cdot 5 \cdot 3 \cdot 1 \cdot 6 \cdot 7$ lay this
sprinkled with the juice of
hemlock under the threshold
of the outhouse if there be
none in some secret corner
and if any thieves enter they
will be so blinded and amazed
that they will not find
their way out again but
grope in vain till sun rise
therefore be watchfull before
that time and by changing the
Planet it will serve next night and
so on

Another
For Garden Orchard
Fields &c &c

Take a piece of curious clean
partement, ^{made} of a skin
cut it with five corners in the
form of a Star but so large
as you may write in the
corner of it what is to be
written VIZ II ♄ The character
of the signs governing these off
airs the characters of the
planets of the day as before
directed. as suppose Tuesday
♃ and this number 17. 11. 12 $\frac{1}{2}$ $\frac{1}{4}$
clue it up with virgin wax.
and sprinkle it with the juice
of fumitory, and place it in
the wall (if in a Garden) but
in a hole of a tree (if in a
field forest wood park &c

having before laid in goose
tansy (so whatsoever is taken
by any shall not be carried
off till sun rising so watch

To Restore Goods stolen

Set down the day and hour
and minute if you can when
the goods were stoln and the name
of the planet ruling the day as is
before set down - this being done
set down these following charac-
ters on a clean piece of Partem^{ment}
 $\text{D} \odot \zeta * \Delta \Sigma$ This done turn
round thrice and if you hear
no news in 44 hours of the thief
as ten to one but you will
If not prick the partement
full of holes and hang it up in
the chimney where the heat of
the fire may scorch it and the

Thief will be so wrestless in
his mind and tormented that
he or she will discover them
selves to you or bring home
your goods and through them
privately into your house or
some place appertaining to you

Other Charms to find Out Thieves

Turn your face to the east
and make a cross upon a
chrystal with oil of Olive
and under it write these words
"Saint Helen" then a Child
that is innocent a chaste virgin
born in true wedlock and not
base begotten of the Age of 10 years and
must take the chrystal in her
hand and behind her back
kneeling on thy knees thou must

devouly and reverendly say over
this prayer thrice

I beseech thee my Lady St
Helen Mother of King Constantine
which didst find the Cross where
upon Christ died and by that Holy
Devotion and invention of the
Cross and by the same Cross
and by the joy which thou
conceivest at the finding thereof
and by the love thou bearest to
thy Sonne Constantine and by
the great goodnes which thou
doest always use that thou
shew me in this Crystal (ie)
looking glass whatsoever I shall
ask or desire to know Amen
and when the child seeth the
angel in the crystal demand
what you will and the Angel
will make answer thereto This must
be done at sun rising in fair weather

How to shew a Thief In a Glass
Take a glass vial of Holy water
and set it upon a clean cloath
purified, set upon the mouth
of a vial two olive leaves must
be laid across. and these words
pronounced over by a child to wit
this *Angelus bone angele
Candide. per tuam Sancti-
tatem meamq. virginitatem
ostende mihi furem*
Now repeat three paternosters
three Aves and betwixt each
of them make a cross with
the nail of your thumb upon
the mouth of the vial and
then shall be seen Angels
as it were notes in the Sun
bearing the Thief Aft. this while
shall suffer torment and his
face shall be seen plainly

A Whip for Love
Knots Amarylls tye of
colours three these bonds I
knot for ♀ be

Bealphaves according to Mr
Scott might be invoked at any
time he is the most usefull
to a person of any other he
can tell of hidden treasure convey
you or any thing from one
place to another give gold
Silver &c he appears in likeness
of a man or woman

[Faint, illegible handwriting, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

Of
The
the
of II
and
the
to the
and
at t
mo t
The
for the
hides
conce
full
full
buye
the
in
motio

Of Buying and Selling -

He that buyeth the ☽ being from
the beginning of VS to the latter end
of II buyeth dear and selth cheap
and he that buyeth to sel again
the ☽ being from the beginning of ☽
to the latter end of ♀ buys cheap
and sells dear especially if the ☽
at his entrance in ☽ be swift in
motion and in good aspect to ♀ or ♁

The ☽ in the last quarter is good
for him that buyeth any sort of
hidden commodity which he would
conceal or would not have known

From the first quarter to the
full is best for the seller from the
full to the last quarter is best for the
buyer - Always remembering to let
the moon at his first entrance
in to the first quarter be swift in
motion and in * or Δ to ♀ or ♁

At the first 12 hours after the
new moon are bad for beginning
any undertaking but from 12 to
12 are good and successful for the
beginner provided the D be well
aspected and strong at his entrance
into the beginning of the 13 hour

He that would sell any
commodity to profit. choose a
time when the D is in δ or γ or
 ϵ and separating from the \odot ♀ or ♁
for if the D do separate from good planets
and apply to bad: it is good for the
seller but bad for the buyer and
here you should note from your
nativity which are good and which are
bad But if you would buy
cheap let the D be posited in any of
the aforesaid signs, separating from
evil planets and applying to good

for the buyer and bad for the
seller for separations and Applications
is as contrary as buying and selling

Brief rules to be Observed in making Elections upon any Occasion

1 Let this be considered that from
an Unfortunate geniture there can be
no good Elections constituted for if the
radical Ascendant or its Lord be much
afflicted how can any good be expected
to attend the body of any person.
notwithstanding the Election be made
ever so convenient for the thing desired
if the L of 5. or 5 house its self be much
viald or infortunate the Election though
ever so carefully made will prove
but of small advantage to the Nation
in point of fortune in gaming and the
like of any other thing belonging

unto the 12 celestial houses
that concerns the body and estate
of man - for Accidental good can
no way extinguish or abate or
contradict an evil threatened in the
radix of any Person
& The Radix or nativity being the
basis on which you must build
all rational Elections it will
be necessary - or at least convenient
with all to consider the Position
of the heavens at the Revolution
into its radical Point. and see
how it concurs with the radix for
if there be a sympathy between
those two figures the years actions
in general will prove the more
fortunate and all things will go
on more pleasantly with the
native but if there be an An-
-sympathy between them the Years

Actions and the natives of airo
generally go on cropp and Unfortunate
much to his discontent: and
perhaps ends with much detriment
3 Observe if there be any good
directions in forces as also good
diurnal transits of the planets
upon the most remarkable
places of the radical geniture
VIZ, how they behold the grand
angles thereof. the Luminaries
or L of Asc - consider whether
the transits be good or Bad &
also how they behold their own
radical places this will much
enlighten your Judgment and in
a natural way help you to con-
jecture at the success of your
daily concern and consequently
the whole Years Actions

4 Let not the Asc. 10 or Place of D
in the radia be evally beheld at
the time of your Elections neither:
let those places be the cusps
of the 6. 8 or 12 houses, therein but
rather if possible let them be
the cusps of those Houses that
concern your business sought after
and in particular signify that
house by which your present
desire is signified (that is) let them
be well beheld by fortunes unless
fortunes where lords of bad houses
in the radia and so unfortunate

5. Be exceeding carefull that
you begin no enterprise when
the D separates from the Lord
of the ☉ and apply to the body
and Aspect of infortunes and
especialy if that infortune where
rules of a bad house in the

maturity viz the 8 or 12 house
neither let the ☽ be posited in the
Asc for she is therein unlucky
neither is the ☉ good there unless
she be in a sign of his own nature
viz ♄ or ♃ see also that the
Luminaries be not joined to retrograde
planets (though a retrograde p-
planet is not much afflicted -

If it can be possible let the
☽ be posited in that house which
signify the thing you make your
election for especially if that house
where fortunate at Birth and
generally in all elections have an
eye to the ☽ and Asc and see if they
be free and let not infortunes be
placed in angles or behold the Asc
or its lord unless they were Lords
or Rulers of houses in the radix

and so significators of good to the
native and here note that 4 & 9
though they are generally fortunes
yet they may be sometimes Acciden-
taly (as being rulers of bad houses)
prove infortunes and 5 and 6 two
general infortunes to some men
prove fortunes being rulers of
good houses and fortunate in their
Nativity

8 If you would elect a time
for any thing requiring speed
chuse a moorable sign to Ascend
but if you elect for any thing that
requires durability then chuse
a fixed sign to Ascend provided
still that they belong to no bad
houses in the radix.

9 Fixed stars ought to be considered
in all Elections as well as in questions

That is those principal stars near
the Ecliptic having small latitude
for those principal stars that are
of a benevolent nature being joined
with particular significators do
much help in any Election
and success doth usually happen
to be more prosperous - -

10. In all Elections let the
Asc of the Nativity (if it be
possible) Ascend with this proviso
that there be no bad planet
therein or otherwise Angular
(except the L of Asc) tis also
good in such cases to have fortunate
planets in Angles also if it can
be

11 As often as the D comes to that
age she was at the birth that
day usually proves more fortunate
to him it being said to be conformable

in nature to his person an Election
then made will prove verry Effec-
tual to him if so that it be at
a time conveniently made

12. it is good the D should be strong
and potent in all Elections and in
good Aspect of those planets that
whare fortunate and L of good houses
in the radical geniture and free
from all malignant beams of such
as whare therein Unfortunate neither
should the L of the geniture be in a
Cadent house if he happens to be
an unfortunate place him in a
succeedent house and well fortify
the Asc and 10 house in the radix
(if it can be done) and it is not
amiss to make the 10 or 11 house of the
radix. Asc in the Election if they
ware fortunate and no way afflicted

Let not the D be afflicted by any pla-
nets that were unfortunate in the
nativity when you begin work of
consequence, but whatever you do
besure to fortify the D in any Election
though she were governess of a bad
house in the nativity because the
D is generally significatrix on all
things relating to the concernment
of mankind and is said to bring
down the influence of other plan-
ets upon us-

Taken from Coleys astrology-

[Faint, illegible handwriting, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

which
This
that
in
from
the
off
will
to
off
day
of
the
The
may
Fa
with
now
prop
the
a fr

which doth evacuate by sweat,
This Magnet must be so prepared
that we may transplant the same
in the Viscerae and if she apply
from that planet which is L of Use
of the Patient, or from the Planet
afflicting into one of the fortunes it
will work stronger provided the said
fortune be Antipathetical unto the
afflicting Planet - As if S afflicts let
D apply to ♀, If ♄ then let D apply to ♀.
If L of Use or afflicting Planet, be a
fortune let D apply to the other fortune

The Manner to Transplant the imbued
magnet to cure the disease - - -

Take the Imbued Magnet mix it
with reasonable quantity of Earth then
sow such seeds of Herbs which are
proper to cure the Infirmary let
the Earth &c thus mingled be placed in
a fruitful place, that it may grow ^{fastly} -

Sometimes at Δ of \odot and D you
must water it with some of the
Patients water and excrements
But you must not do it above
once a week for fear of killing the
seed

Another Take the Aforesaid Earth
and having a plant either by
simpathy or antipathy is most
propor to cure take it up clean
with its roote and water it as aforesaid
either experiment will cure
^{vide 2 Leaves further on}
How to cure Swellings warts &c

Take the flesh Heand or any part
of a man newly dead - with it rub
or stroke the place defective, its cured

How to work the same by Herbs

Take Arsmart or Aderstongue
gather it in the hour of D in D increase
let it be in Δ or \times of Q or D applying from

To ♀ or from ♀ to ♂ steep the herb in
fair water until well moistened
then apply it unto the place de-
fective until warm. then bury
it in the Earth as the herb rot
in the Earth so the Patient will recover

How to cure a wasting Limb

Bore a hole in a willow tree with
an Auger unto the Pith save the
bored shuf and apply it to the limb
defective at the new ☽ 24 hours
then take the parsing of the nails
with some of the Hair and scraping
of the skin from the limb defective
put all this into the hole of the
tree and stop them close with the
peg of the same wood do this when
☽ is weak the ☽ increasing the fortunes
in fruitful Signs & friendly Aspect to ☽
or a hole in the rood of a Hazel tree
the bark being laid on again and covered with Earth

How to cure the Hot or Cold Gout
Bore an hole in an Oak to the pith
then take the bored stuff apply it
to the part defective 3 days before
the change of Δ then take the paring
of the nails the hair of the Limb
and put it with the bored stuff into
the tree and stop it close with a
peg of the same wood do this
when ζ be weak if the gout be cold
when δ weak if the gout be hot
Let Δ in \times or Δ of ζ if heat. Δ Δ or \times
of Jupiter if Cold be shov to stop
the hole tite and cement it from Air

How to cure a plague and draw
forth venemous matter

Take a living chick apply its
fundament to the plague sore it
will draw forth the venom Kill
the chick and cure the patient

Also a dried Toad Macerated in
Vinegar and laid to the sore will
draw forth the venenous matter
and Cure the Patient - - -

How to cure a Rupture

Bore an hole in an Oak to the pith
But so take off the bark that it
may grow. Lay on the bored stuff to
the place defective 3 days and nights
before the new D. take some of the
hair from the privy parts with
the paring of the nails and bored
stuff and put it into the hole of
the Oak and stop it with a peg
of the same tree then lay on the
bark with tree wax or tempered clay
or paste cement and well stanch the
place from the Air, and as the bark
of the tree doth grow so shall the
rupture close - Also a hole in the
root of an Hazel tree will do it. This
must be done in the spring Quarter

How to know how any friend &c
doth during their absence being
traveled into any far country
You must have some veinal Blood
from him whilst warm infuse
a little Sp of wine into it and
keep it close in glass from the Air
Now if your friend be well and con-
tented ~~the~~ blood will look lively
and fresh - But if he be Ill and
discontented - the Blood will be
changed more ill &c: If he be
much perplexed or feverish the
Blood will be high coloured if Melan-
choly weak or faint the Blood will
be pale and wan and if after
sickness he recover the blood will
look fresh again as at first but
if he dies the Blood will putrify
and stink as doth the rest of his Body

Vide 2 Leaves further back

After you find the grief is
changed into a growing Vegetable
do as follows If the disease be of
heat or Combust Nature as Yellow
jaundice be Cast the earth and
Plants into running water
If the Disease be of Cold then
burn the Earth and Plants
If the Disease be Dry then
hard the Earth and Plants
in the smoke of Dry
and the Patient is finally
Cured

[Faint, illegible handwriting, likely bleed-through from the reverse side of the page.]

How
pres
of
with
way
level
the
then
pross
expe
time
sed
cross
Lang
fort
close
My
the
ari

How to know if a person be possessed of an Evil Spirit &c
If they can repeat the Lords prayer with stopping starting &c. and also say any versicle &c as I defy the Devil and all his works mention the name of God Jesus christ &c &c
Then provably they are not then possessed Then you make several experiments on them at different times &c &c for some is only possessed at certain times some are possessed of Dumb some speaking some Laughing Spirits &c &c

The Cure or how to cast them forth. Make a fume in a close room with Frankincense Myrrh and rosemary - annoint the Patient with conveniences &c and repeat as followeth

By this high and mighty Power
and name Tetragrammaton
and in the Name of the Blessed
trinity father Son and Holy Ghost
I charge and command the
Devil and Unclean spirit to come
forth out of N. and do depart
from him in peace. not to
molest or trouble him after this
(to be repeated three times)

In the name of Jesus of Nazareth
I charge thee to come forth

Or thus - - -

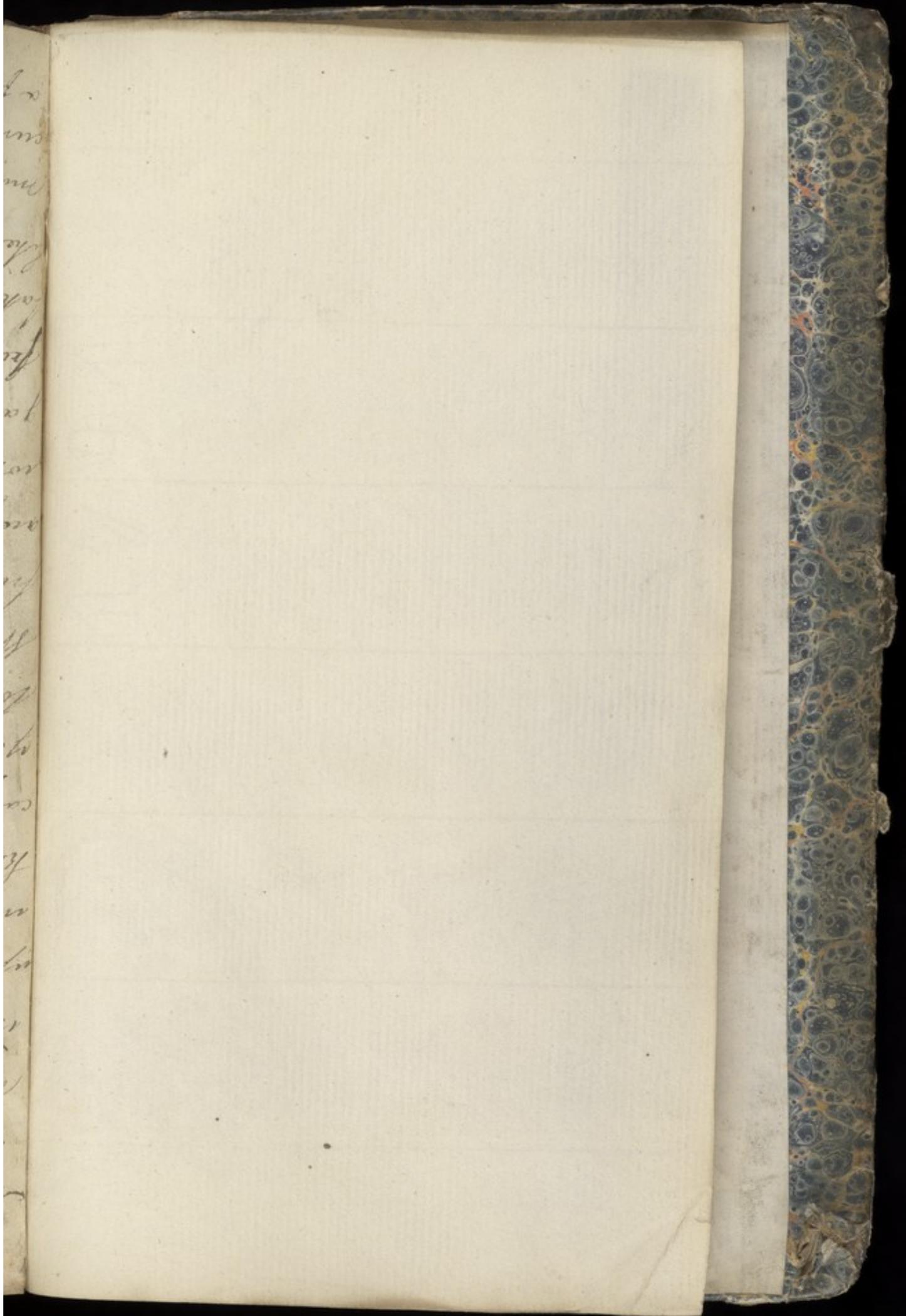
small quantity of the Patient's
into it and mix it very well
ways keeping it warm and so
make it up in a little Bag
and let the Patient wear it next their
skin

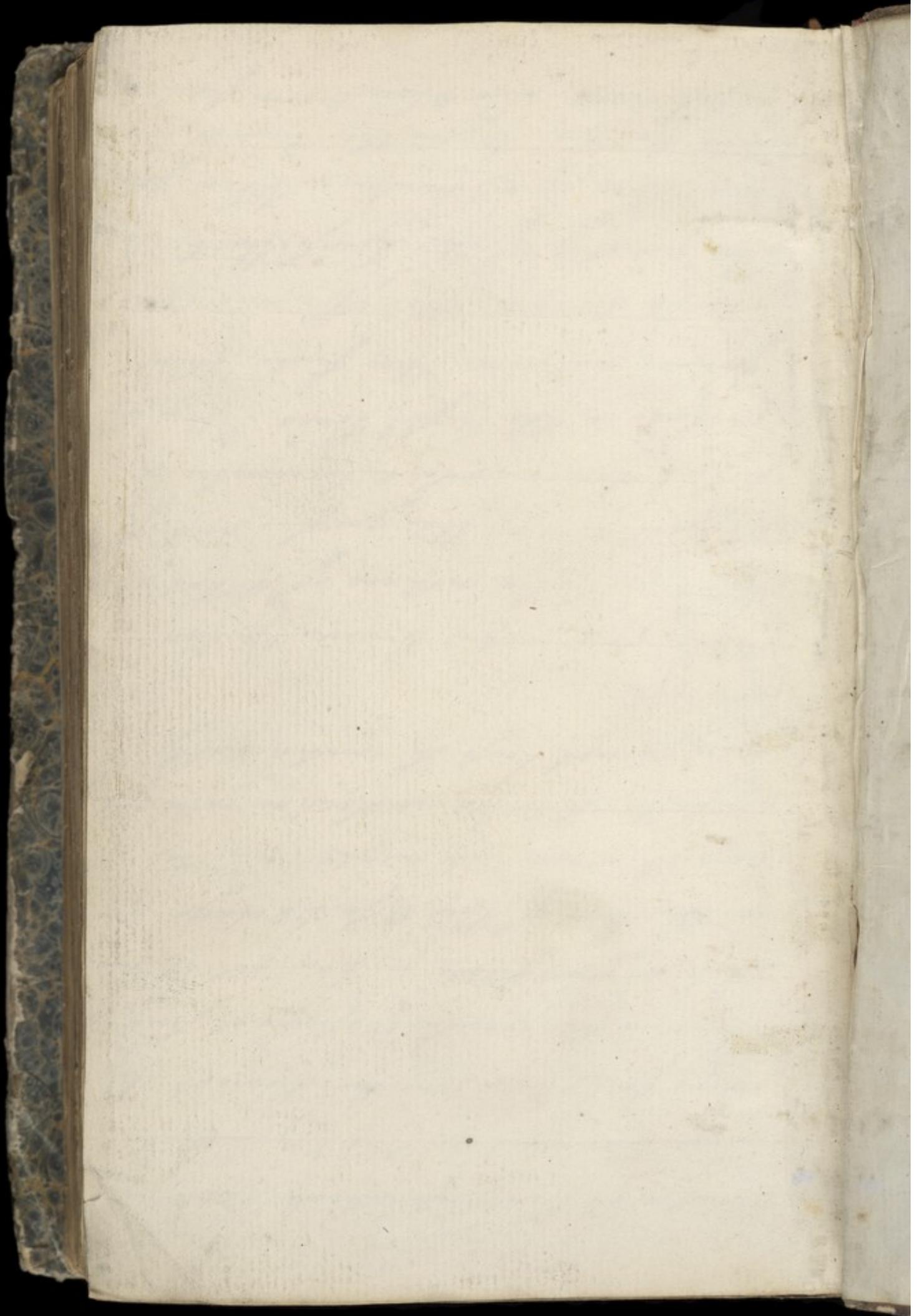
Show by the Magnet of our
Body to extract a spiritual
Humour to cure Diseases by
separation or Translocation

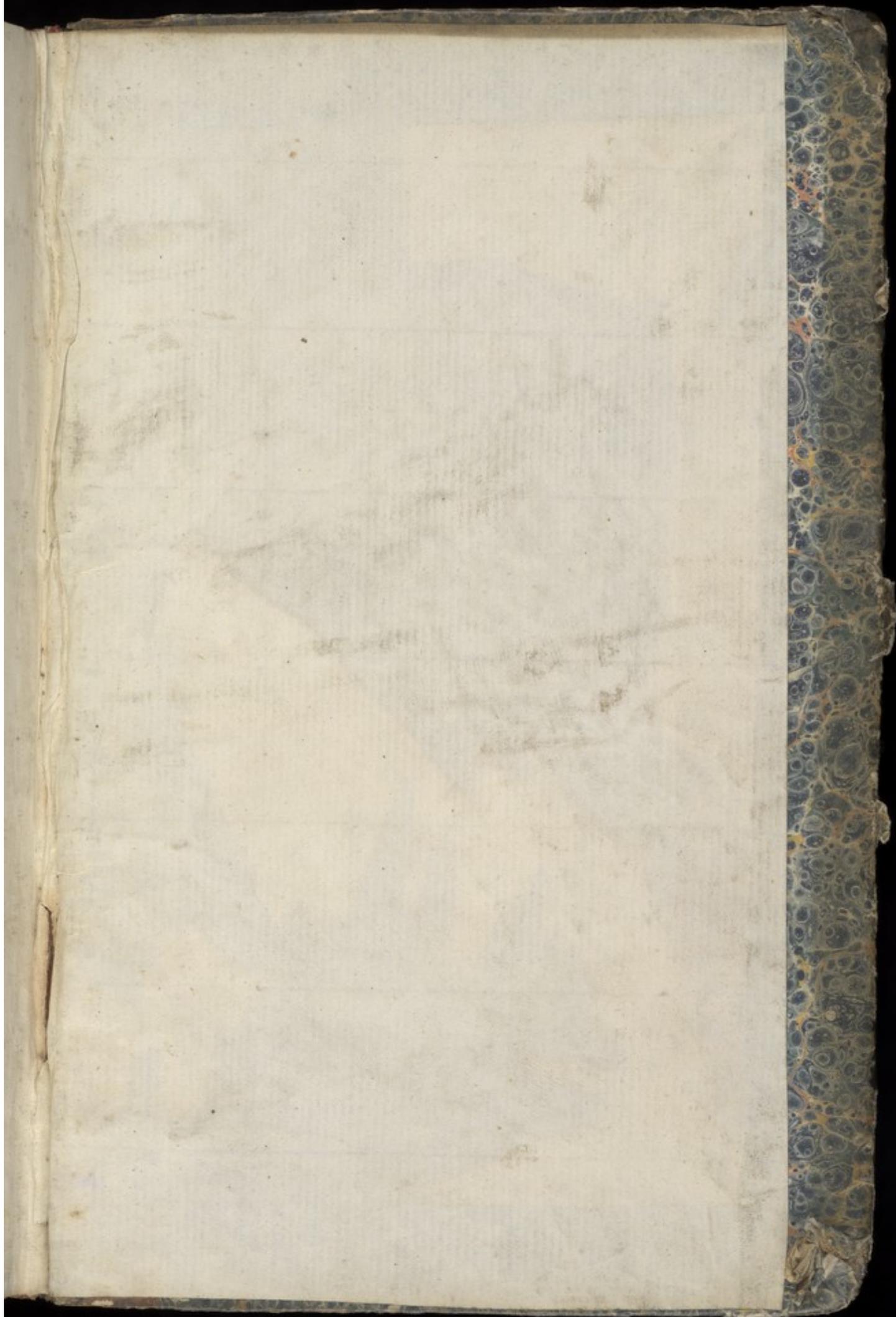
and a growing Vegetable
The Magnet of the Body is the
During which must be directed for
9 days in the shade and kept
from the heat. The Magnet
thus prepared must be laid to
the front of the Body that cloth
naturally excrete by sweat from
the Skin or Natural heat of the
Body Defecate. But if we make
a general Inducement then the
Magnet must be applied to all

from

To make the Symplicial Powder
Take Roman Wall 6 or 8 by beat it
very fine in a mortar, sieve it do
if when the center is dried it find
upon a good plate or pan set it dry
in the heat of the ☉ for 10 days &
keep it warm at night and the
confuse it takes no heat or cold after
you must keep it continually
warm
When you intend to use by this
powder. Take other of what they
are good to cure the yeast out of
which take a pint of Rummer &c
gathered in the night hours. Dry and
sieve and sieve them fine. Then
take 1/2 drachm. thereof and the
like quantity of the Symplicial Powder
mix them in a mortar. When you
use by this warm the powder over
a few coals and strike warm full a







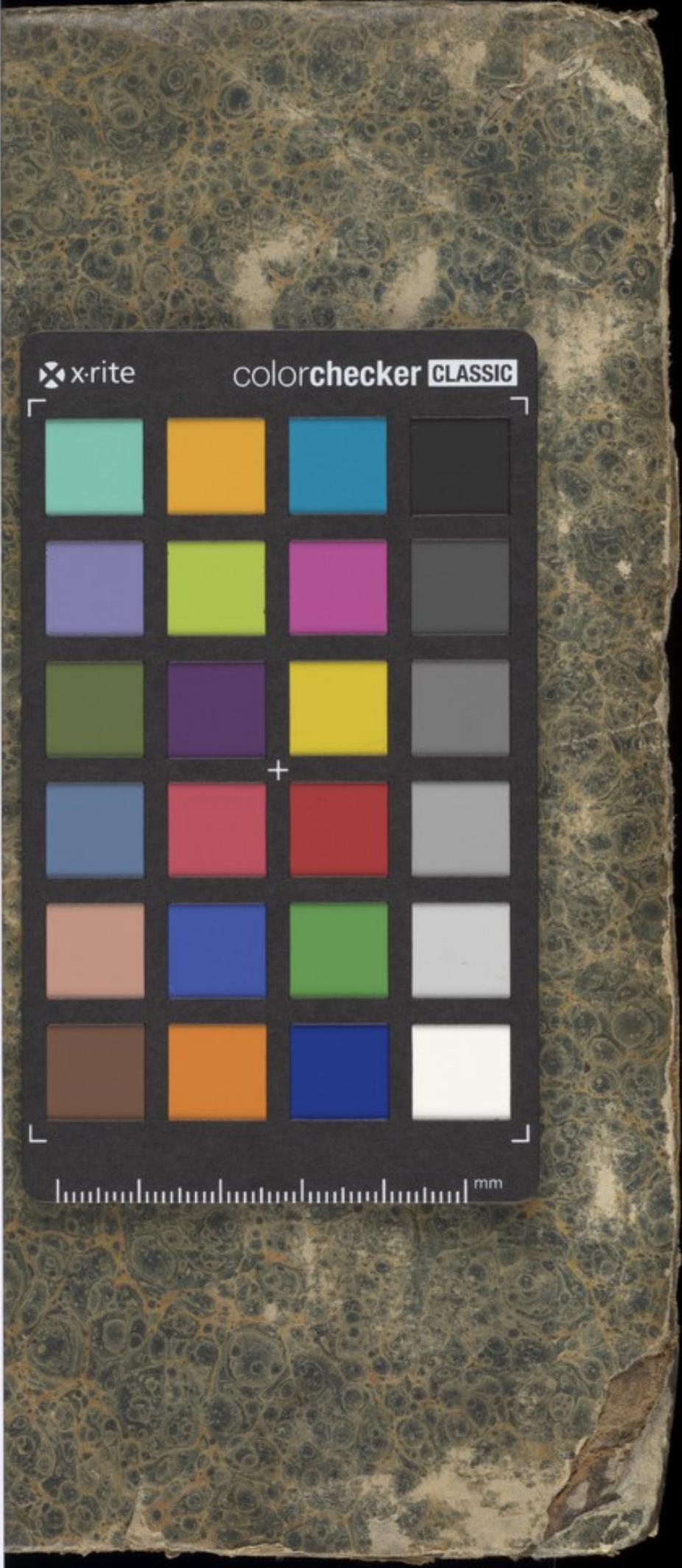














Wellcome Collection

THE

1697



327